चन्दनमाटी

(उपन्यास)

तिलकराज गोस्वामी

स्मृति प्रकाशन

१२४, शहराराबाग, इलाहाबाद-२११००३

अपने मित्रगण
डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र
व
प्रो० फूलचन्द मानव
को
सप्रेम भेंट

●

प्रस्तावना

•

प्रस्तावना-रूप में कुछ शब्द लिखने से पूर्व अपने शीघ्र प्रकाश्य काव्य-संग्रह 'सूरज की शहादत' में सम्मिलित कविता 'एक अनुभूति' का कुछ भाग प्रस्तुत कर रहा हूँ—

एक दीर्घ अन्तराल के बाद
मेरे घुटनभरे कमरे के वातायन खोल
दूर बसे मेरे गाँव की हवा ने प्रवेश किया है
पूरे कमरे मे व्याप्त हो गयी है
मेरी नस-नस को गुदगुदाती
महुए और अम्मियों की महक
फर्श पर यहाँ-वहाँ आ गिरे हैं
सरसों व बबूल के नन्हें बसन्ती फूल
मेरे सामने धुंधलके मे से उभर रहे हैं कुछ दृश्य
सामने पहाड़ी पर पेड़ों के झुरमुट से झाँकता शिवालय
रंग-बिरंगी पोशाकें पहने
शिवालय को जाते कुछ यात्री
पगडंडी के बग़ल बरगद पर लटके झूलों पर
हवा में लहराती कच्ची उम्र की मदहोश तरंगें
पास की तलैया में सिर झटकती डुबकियाँ लगाती
काली-भूरी भैंसें
थोड़ा हटके सोंधी बालू के घरौंदे बनाते-तोड़ते
पाँच-सात अबोध बच्चे
और यह सब निहार कर
मेरे भीतर कलियाँ चटखने लगी हैं
मैं कुछ अजीब प्रकार की
सरल अनुभूतियों से भीगने लगा हूँ······

मेरा यह उपन्यास पंजाब के ग्रामीण जीवन के बारे में है। मेरा जन्म मनोरम पर्वतीय नगर जम्मू में हुआ। पिताजी जम्मू कश्मीर राज्य में अध्यापक थे। प्रायः दूसरे-तीसरे वर्ष उनका स्थानान्तरण होता रहता था। इस कारण मेरा बचपन व लड़कपन रियासी, रणबीरसिंह पुरा व मनावर सरीखे गाँवनुमा कस्बों मे व्यतीत हुआ। मेरा पैतृक घर पंजाब के ज़िला गुजराँवाला में स्थित

गाँव बद्दोकी गुसाईंयाँ में तथा ननिहाल स्यालकोट ज़िले में सिहोकी नामक गाँव में था। भारत-विभाजन तक मैं अपने गाँव व ननिहाल से भी जुड़ा रहा। ननिहाल मे खेती होती थी। वर्ष मे दो-तीन महीने वहाँ ही बीतते थे। ननिहाल-परिवार के सदस्यों मे रहकर मुझे भी कृषि-कार्य करने पड़ते थे। खेती सम्बन्धी लगभग सभी काम जैसे हल चलाना, पाटा चलाना, गुड़ाई करना, मशीन से चारा काटना, रहट व गन्ने का रस निकालने वाले वेलन में जुते बैलों को हाँकना आदि काम मैं करता था। कभी-कभी खेतों में पशु भी चराने पड़ते थे। इस तरह वर्षों तक गाँव के सीधे-साधे मेहनतकश लोग, उनकी बातचीत व रहन-सहन के अंदाज, रीति-रिवाजो के प्रति उनका अनुराग तथा वहाँ के प्राकृतिक वातावरण से मैं प्रभावित होता रहा।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भी वर्षों तक गाँव व गाँवनुमा कस्बों से जुड़ा रहा हूँ। अब ननिहाल के सदस्य उत्तर प्रदेश में आल्हा व ऊदल के ऐतिहासिक कस्बे महोबा में रहते हैं। व्यापार के साथ-साथ वे खेती भी करवाते हैं। हाँ देश-विभाजन से पहले वे हल से स्वयं खेती करते थे पर अब ट्रैक्टर से खेती करवाते हैं। सन् १९५६ से मैं इलाहाबाद मे महालेखाकार कार्यालय मे सेवारत हूँ। पर चूँकि अपनी भी कुछ ज़मीन महोबा में है इसलिये उसकी देखभाल के लिये कभी-कभी वहाँ जाना ही पडता है। मतलब यह कि अब भी किसी न किसी रूप मे गाँव व खेती से सम्बन्ध कायम है। आज़ादी के बाद हमारे यहाँ अनेक प्रकार के सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। नगरों के साथ-साथ हमारे ग्रामीण जन-मानस पर इन परिवर्तनों के जो प्रभाव पडे हैं उनको पहचानने तथा अपनी रचनाओं द्वारा अभिव्यक्ति देने के मैंने प्रयास किये हैं। देश के सर्वहारा एव शोषित समाज के भीतर जो अन्तर्विरोध करवटें ले रहे हैं तथा सही मानवीय मूल्यों को स्थापित करने हेतु उसके भीतर जो आकांक्षाएँ मचल रही हैं, उनसे मेरा हृदय प्रभावित होता रहा है। अपनी रचनाओं के माध्यम से मैंने उन्हीं प्रभावो को व्यक्त करने की कोशिश की है। मेरा यह उपन्यास आपको कैसा लगा, यह जानने के लिये मैं आपके विचारो का स्वागत करूँगा। आशा है विज्ञ पाठक अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाओ से अवगत कराने की कृपा करेंगे।

८/७, अलोपीबाग कॉलोनी,
इलाहाबाद-६

—तिलकराज गोस्वामी

चन्दनमाटी

एक

गाड़ी अपनी गति से दौड़ती जा रही थी। खिड़की के पास बैठा बलदेव प्रकाश विचारों में खोया हुआ था। एक सप्ताह पूर्व उसे अपने गाँव के सरदार प्रताप सिंह का पत्र प्राप्त हुआ था। प्रताप सिंह गाँव के शहीद भगतसिंह मिडिल स्कूल के सचिव हैं। गत माह स्कूल के प्रधानाध्यापक का एक बस दुर्घटना में निधन हो गया था। नये प्रधानाध्यापक की नियुक्ति हेतु कतिपय जिन प्रार्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था बलदेव भी उनमें से एक था। बलदेव बी० एड० करने के बाद गत एक वर्ष से अमृतसर में एक हाईस्कूल में अध्यापन-कार्य कर रहा था। पर वहाँ उसका मन नहीं लगता था। प्राय: वह सोचता रहता कि यदि उसे अपने गाँव के स्कूल में ही नौकरी मिल जाए तो कितना अच्छा रहे। तब वह अपने गाँव मे, अपने परिवार के लोगों मे, अपने मित्रों मे व अन्य परिचितों के मध्य रह सकेगा। सचिव के पत्र के साथ ही उसे अपने मामा पडित दीवान चन्द का पत्र भी मिला था। मामा ने उसे लिखा था कि साक्षात्कार के लिये वह अवश्य ही गाँव पहुँच जाए। प्रधानाध्यापक के पद पर उसकी नियुक्ति की काफी सम्भावना नजर आ रही है। स्कूल की प्रबन्ध-समिति के अधिकांश सदस्यों का यही विचार है कि हेड मास्टर के रूप मे बलदेव को नियुक्त करने से स्कूल तथा गाँव का हित होगा। इन सदस्यों ने सोच रखा था कि साक्षात्कार के समय नियुक्ति हेतु वे बलदेव को ही प्राथमिकता देंगे।

गाड़ी में बैठे बलदेव को आज अपना गाँव राणीपुर बहुत याद आ रहा था। अमृतसर से लगभग चालीस किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित ऐतिहासिक नगरी बाबा बकाला से चार किलोमीटर दूर राणीपुर गाँव है। गाँव के पास ही व्यास नदी प्रवाहित है। वैसे तो राणीपुर में बलदेव की ननिहाल है, पर वह इसे अब अपना गाँव ही मानता है। उसकी आज तक की जिन्दगी का अधिकांश भाग इसी गाँव में ही व्यतीत हुआ है। उसका जन्म अपने पैतृक नगर गुजरांवाला में हुआ था। उसके पिता वहाँ डी० ए० वी० हाईस्कूल में अध्यापक थे। भारत-विभाजन के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों में गुंडों द्वारा उनकी हत्या कर दी गयी थी। तब उसकी

माता पुष्पा देवी अनेक तरह के कष्टों को झेलती हुई अपने इकलौते पुत्र को साथ लिये किसी प्रकार अपने मायके राणीपुर पहुँच पायी थी। तब बलदेव पाँच-छः माह का अबोध बालक था। उसका पालन-पोषण अपने ननिहाल मे ही हुआ। उसे अपने मामा दीवान चन्द से भरपूर प्यार मिलता रहा। मामा ने उसे कभी इस बात का एहसास नही होने दिया कि उसके सिर पर पिता का संरक्षण नहीं है।

खिड़की मे से दोनों ओर के दृश्य निहार कर उसके मन-प्राण पुलकित हो रहे थे। प्रकृति तथा मानव द्वारा निर्मित तरह-तरह के नज़ारे चलचित्र की फिल्म की भाँति कुछ क्षणो के लिये अपना रूप दिखाकर सन-सन करते दूर पीछे कही छुपते जा रहे थे। दूर-दूर तक विस्तीर्ण खेतो में सरसो के पौधे शीतल पवन के झोको से किसी नशे से विभोर होकर मस्ती में झूमते दृष्टिगोचर हो रहे थे। ढलते सूर्य की उजली पीली धूप मे सरसों के असंख्य बसन्ती फूल यों लग रहे थे मानो वे अभी-अभी स्वर्ण-जल में नहाए हों। हवा की गति के साथ-साथ वे कभी झुक जाते तो कभी एकदम सीधे तन जाते और फिर कभी अपने दाँये-बाँयें आगे-पीछे झुक-झुक कर नृत्य की मुद्राएँ अपनाने लगते। रेल-पटरी के आसपास कही कोई पोखर दिखाई पडता, कहीं छोटी सी सर्पीली सरिता मन को गुदगुदा जाती। कही-कही पशु चरते हुए दिखाई पडते। कच्चे-पक्के मकानों व झोपड़ो वाले गाँव-टोले बलदेव को कही हल्का सा गुदगुदा देते। दूर किसी मकान से उठता हुआ धुआँ उसे भला लगता। किसी अनजुते खेत मे पडी खाद व गोबर की ढेरियाँ उसके मस्तिष्क मे एक काल्पनिक गंध सी भर देती। लहलहाते सरसों के खेतो में बनी वीथिकाओ से जाते हुए लोगों की वेशभूषा व उनकी चाल-ढाल देखकर वह हर्षित हो रहा था।

बलदेव को अनेक खेतो मे नलकूप दिखाई पड़े, कहीं-कहीं ट्रैक्टर नजर आए। पहले की अपेक्षा अब पक्के मकानों की संख्या कही ज्यादा हो गयी थी। गाँवों मे कई मकानों पर उसे टी० वी० के एन्टीना दिखाई पड़ रहे थे। स्कूल-भवन अब पहले की तरह कच्चे कम ही दिखाई पड़ते थे। शहरो की भाँति अब गाँवो मे भी रोज़गार की सुविधाएँ बढ गयी थी। लोगों के जीवन-स्तर मे आए परिवर्तन का भी उसे एहसास हो रहा था। उसे लग रहा था कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के उपरान्त अवश्य ही देश मे तरह-तरह के परिवर्तन आए हैं। देश की दशा मे अनेक प्रकार के सुधार हुए हैं। तभी सहसा उसे उन लोगो की बातें याद आने लगी, जो अपनी खुली आँखो से सब

कुछ देखते हुए भी कुछ नहीं देखते। जिन्हें प्रकाश में भी सर्वत्र ही अन्धेरा नजर आता है। ऐसे लोगों के मन में धारणा सी जम चुकी है कि आजादी पाने के बाद देश प्रगति की ओर अग्रसर होने के बजाए पतन की ओर ही बढा है। उसे लगने लगा कि इस प्रकार की मानसिकता के लोग वास्तव में राष्ट्र के शत्रु हैं। सत्य से मुँह चुराना कौन से न्याय की बात है, दिन को रात कहना क्या उचित है। लोगों को बहकाना, उनके दिलदिमाग में जहर भरना क्या एक प्रकार का देश-द्रोह नहीं माना जा सकता। हाँ ऐसे लोग देश के दुश्मन ही हैं। हो सकता है कि देश के कुछ नेता असत्य बोलते हों, बातों को गलत अथवा बढ़ा-चढ़ा कर कहते हों। पर वे नेता क्यो झूठ बोलेगे, लोगों से धोखाधडी करेगे जिनका पूरा जीवन ही देश-सेवा मे बीता है, जिन्होंने स्वाधीनता-प्राप्ति के लिये क्या-क्या कष्ट नही झेले। फिर सारे चिह्न सारे परिवर्तन तो जनता के सामने हैं। क्या देश मे हुई प्रगति को वह नही समझती। फिर उसे लगता है कि यह जरूर है कि जैसा होना चाहिये था वैसा कुछ नही हुआ। पर फिर भी कुछ तो हुआ ही है। शताब्दियों की गुलामी के कारण देश में जो अज्ञानता, ग़रीबी, पिछडापन व अनेक प्रकार की बुराइयाँ व कमज़ोरियाँ उत्पन्न हो गयी थी, उन सबको समाप्त होने में समय तो लगेगा ही। हवा में खाली बाते उछाल देना और बात है और जनता के लिये कुछ करके दिखाना और बात है।

तभी गाड़ी जब एक छोटे से स्टेशन से चलने को हुई तो एक किशोर व किशोरी ने डिब्बे में प्रवेश किया। वे दोनों साथ-साथ खड़े हो गये। लड़की के हाथ में एक कटोरा था और लड़का गले में एक छोटी-सी ढोलक लटकाए था। जाहिर था कि वे दोनों भीख माँगने के लिये ही वहाँ प्रविष्ठ हुए थे। दोनों की वेशभूषा भी वैसी ही थी जैसी प्रायः भिखमगों की होती है। डिब्बे में बैठे लोगों पर एक सरसरी निगाह डालने के बाद वे दोनों समवेत स्वर में फिल्मी धुन पर वैष्णों माता की भेंटें गाने लगे। लड़का अपने गले में लटकी ढोलक पर थाप दे रहा था और लड़की दाहिनी कलाई में पड़े लोहे के कड़े से ताल मिलाकर अपने कटोरे को बजा रही थी। गा चुकने के बाद लड़की ने अपना कटोरा और लड़के ने अपनी हथेली लोगों के आगे फैलानी शुरू कर दी। उनके मुख तथा भूखी आँखों मे एक अजीब तरह की वेदना व याचना नजर आ रही थी। कतिपय लोगों ने उन्हें पाँच-दस पैसे के सिक्के दिये, कुछ ने उन्हें हाथ के इशारे से आगे बढ़ जाने को कहा। उन भिखमंगों को देखकर बलदेव को अपने भीतर कहीं चुभन-सी महसूस हुई। बेशक डिब्बे

में बैठे कुछ यात्रियों के चेहरों पर सन्तोष व हर्ष दिखाई पड़ रहा था पर अधिकांश की भाव-भंगिमाओं से उनकी उदासी तथा निरीहता ही प्रकट हो रही थी। कहीं नहीं लगता था कि वे अपने वर्तमान जीवन से सन्तुष्ट हैं।

अब वह बाहरी दृश्यों व डिब्बे में बैठे यात्रियों से असम्पृक्त होकर अपने भारतीय समाज तथा राजनीतिक परिवेश के सम्बन्ध में मनन कर रहा था। उसे लग रहा था कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद देश में जो वातावरण बना है, उससे कहीं भी हर्ष अथवा गर्व की कोई विशेष अनुभूति नहीं होती, बल्कि स्थितियों का सही अवलोकन करने पर निराशा ही हाथ लगती है। आज़ादी से पहले जनता ने क्या-क्या सपने मन में संजोये थे, क्या-क्या कल्पनाएँ की थीं कि जब हम स्वतन्त्र होंगे तो बड़ी तीव्रता से आर्थिक व सामाजिक प्रगति होगी, समाज का नैतिक उत्थान होगा, तब हम अपने दायित्वों व कर्तव्यों को समझकर आदर्श स्वतन्त्र नागरिक की तरह व्यवहार करेंगे, दूसरे देशों के सामने अपनी नैतिकता के उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। पर आज हम कैसी नैतिकता प्रस्तुत कर रहे हैं। हर कहीं भ्रष्टाचार का बोलबाला है। राजनीति का रूप दिनों-दिन कितना घिनौना होता जा रहा है। पद-प्राप्ति अथवा अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए कैसे-कैसे हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। हर कोई इसी फेर में रहता है कि कौन-सा रास्ता अपनाकर आम जनता को मूर्ख बनाया जाए, किस तरकीब से अधिक से अधिक धन बटोरा जाए, कैसे-कैसे आश्वासन तथा मोहक नारे हवा में उछालकर भोली-भाली जनता को सब्ज़ बाग दिखाये जायें। फिर बलदेव के मन में विचार आया कि राष्ट्र को स्वाधीनता-प्राप्ति हेतु किस-किस रूप में बलिदान नहीं देने पड़े। स्वाधीनता की देवी के स्वागतार्थ हमारे कितने ही वीरों ने हँसते-हँसते फाँसी के फंदों को चूम लिया था, कितनी माँगों के सिन्दूर मिट गये थे, कितनी ही बहनों के भाई सदैव के लिए उनसे बिछुड़ गये थे, कितनी कलाइयों के लाल चूड़े टूट गये थे, कितने हाथों की मेंहदी मिट गई थी, गलियों-बाज़ारों तथा जेलों में रक्त की कितनी नदियाँ बही होंगी। क्या ये सब बलिदान उस पथ को पाने के लिए दिये थे जिस पर आज हम चल रहे हैं? क्या उन देशभक्त बलिदानियों ने इस प्रकार के स्वतन्त्र भारत की कल्पना की थी?

ऐसे ही विचारों की उधेड़बुन में वह खोया हुआ था कि गाड़ी एक हल्के से धक्के के साथ बाबा बकाला स्टेशन पर रुकी। उसने जल्दी से अपना अटेचीकेस उठाया और प्लेटफार्म से बाहर आ गया। स्टेशन के बाहर

पाँच-सात ताँगे व रिक्शे खड़े थे। वह अभी कुछ सोच ही रहा था कि इधर-उधर खड़े ताँगे के कोचवान ने उसे आवाज देकर अपने पास बुलाया। बलदेव ने तुरन्त उसे पहचानते हुए पूछा—कहो भाई लाभसिंह, क्या राणीपुर ही चल रहे हो?

—आओ, पंडित जी, मत्था टेकता हूँ। पिण्ड (गाँव) ही तो चल रहा हूँ। आओ यहाँ आगे बैठ जाओ। बस दो-एक सवारी और देख लूं तो चलता हूँ।

बलदेव अटैचीकेस को आगे टिकाकर सीट पर बैठ गया। ताँगे में उसके अलावा तीन यात्री और बैठे थे। वह जानता था कि नियमानुसार ताँगे में चार ही सवारियाँ बैठाई जा सकती हैं। पर आज नियमों की किसे कोई परवाह है। जब हर कहीं कायदे-कानून का मुँह नोचा जा रहा है तो बेचारे गरीब ताँगे वाले ही क्यों नियमों की खातिर अपने पेट बांधे। उसने कोई आपत्ति नहीं की और इस बारे में मौन ही रहा। वैसे उसने गाँव के बारे में गाँव-वालों के बारे में उससे दो-चार बाते अवश्य की।

आठ-दस मिनट गुजरने पर भी जब कोई सवारी न मिली तो मजबूर होकर कोचवान ने घोड़े की लगाम को एक हल्का सा झटका दिया, साधारण सा साँटा (चाबुक) उसकी पीठ पर लहराते हुए बोला—चल पुत्तर पिण्ड नूं। और वह मरियल सा घोड़ा कुछ क्षण अटकने के बाद गाँव को जाने वाली उबड़-खाबड़ सड़क पर मंद गति में दौड़ने लगा। घोड़ा तो खैर क्षीण-काय का था ही, लाभसिंह का ताँगा भी शायद महाराजा रणजीत सिंह के जमाने का था। उस वृद्धा पीठ-छिली सड़क पर अंजर-पंजर ढीला ताँगा बार-बार हिचकोले खाने से अजीब तरह की मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहा था। प्रत्येक हिचकोले पर सवारियों को स्वयं को सम्भालना पड़ रहा था। थोड़ा आगे जाने पर पुनः जब एक जबरदस्त झटका लगा तो पिछली सीट पर बैठे एक मनचले युवक ने थोड़ा हँसकर कहा—लोग परिवार-नियोजन के लिए गर्भपात करने के लिए मालूम नही क्या-क्या उपाय करते हैं। भाई, जिस किसी औरत का हमल गिराना हो उसे लाभसिंह के इस ताँगे मे बैठाकर सवारी करवा देनी चाहिये। भगवान की कृपा से अवश्य ही मन-वाछित फल मिल जाएगा। उसके ये शब्द सुनकर ताँगे में बैठे सभी मुसाफ़िर खिलखिलाकर हँस पड़े। बेचारा लाभसिंह भी अपनी खिसयानी हँसी न रोक पाया।

फिर सहसा बलदेव की निगाह घोड़े से हटकर लाभसिंह पर गयी। उसे लगा कि यही लाभसिंह जो अभी कुछ वर्ष पहले तक अच्छा तन्दरुस्त लगता

था अब पूरी तरह वृद्धावस्था में प्रवेश कर चुका है। वह बचपन से उसे देखता आ रहा था। अनेक बार यह उसके तांगे में बैठकर स्टेशन तक आया-गया था। अब उसका हुलिया कितना बदल चुका है। कभी यह गांव में कैसा खडखडाता तहमद, रेशमी कुरता और तुर्रेदार साफा बांधकर निकला करता था। पर अब वह वैसा लग रहा है। कैसी ढीली-ढाली रस्से की तरह पगडी सिर पर लपेटे हुए है। खुली हुई खिचड़ी दाढी बया के घोंसले की तरह लग रही है। गाल पिचक चुके हैं, आँखें भीतर धँस गयी है। पाँव में चमरौधा जूते की जगह घिसी हुई हवाई चप्पल है। शायद यह सब समय का ही फेर है। यह समय का चक्र किसे बख्शता है। अपनी लपेट में यह हर किसी को ले लेता है।

अब सूर्य अस्ताचल की ओर तेजी से बढ रहा था। पाँच-सात फर्लाङ्ग की दूरी पर पेडों में घिरा गाँव अब बलदेव को नजर आ रहा था। पश्चिम की ओर सरदारों के बाग व छम्भ (पेडों के समूह) के ऊपर बादलों की कुछ टुकड़ियाँ नीलाम्बर मे तैर रही थी। दीप्तिमान सूर्य का स्वर्ण-थाल पश्चिमी क्षितिज मे छुपने के लिये धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था। नारंगी वर्ण मेघखंड अब कजरारे होते जा रहे थे। गाँव के कच्चे-पक्के मकानों की प्राचीरों, कंगूरों तथा ममटियों पर अभी सलेटी-पीली रोशनी नजर आ रही थी। बलदेव कुछ क्षणो के लिये सब कुछ भूलकर अपने प्यारे गाँव का यह मोहक दृश्य, निहारकर मन ही मन विभोर हो रहा था। तांगा आगे बढ़ रहा था और उसके साथ-साथ राणीपुर गाँव बलदेव की आँखो व मन-प्राणों के निकट आता जा रहा था। कुछ अजीब तरह की सिहरन वह अपने भीतर अनुभव कर रहा था।

थोड़ा और आगे जाने पर अब तांगा बलकारा सिंह के रहट के पास से गुजर रहा था। सडक पर रहट के चलने की रूँ-रूँ की आवाज और रहट के चक्के पर तुक्के की टकटक उसे बडी प्यारी लग रही थी। धुंधकले में भी उसे गाँव की तीन-चार महिलाएँ पानी भरे घड़े उठाए नजर आ रही थी। रहट के पास शीशम, बबूल व शरीह के ऊँचे-ऊँचे पेड़ धीरे-धीरे उतर रहे अन्धेरे में खामोश खडे थे। सड़क के किनारे की झाडियों व खेतो से झींगुरों व टिड्डों की आवाजें आ रही थीं। थोड़ा आगे उसे पीर बन्नेशाह का मजार दिखाई पड़ा। मजार पर किसी ने चिराग जला दिया था। आज उसे यह मजार देखकर भी मन को कुछ अच्छा लग रहा था। उसे याद है जब वह छोटा था तब वह इस मजार की कल्पना मात्र से सहम जाता था। मजार

सम्बन्धी कोई डरावनी कथा उसे कँपकँपा देती थी। तभी उसकी निगाह ठठ्ठी के बगल वाली पगडंडी पर गयी। वहाँ कोई साँडनी सवार गाँव की ओर जा रहा था। सवार की डील-डौल से वह समझ गया कि वह सरदार जोधा सिंह का लड़का शेरसिंह ही होगा। वह किसी आस-पास के गाँव से लौट रहा होगा।

अब तांगा ठठ्ठी (चमारों व पिछड़ी जातियों का मुहल्ला) के साथ वाली पगडंडी से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। पगडंडी के दाहिनी ओर बड़ा सा जोहड़ था। जोहड़ के तट पर धरेक, बबूल व ललूडे आदि के अनेक पेड़ थे। अन्धेरा उतरना शुरू हो चुका था और अब ये पेड़ बेतरतीब ऊँची-नीची काली दीवार की तरह दिखाई पड़ रहे थे। बाईं ओर ठठ्ठी के कच्चे मकान नज़र आ रहे थे। ठठ्ठी में रहने वाले अधिकांश लोग हरिजन हैं। कुछ परिवार इसाई धर्म के अनुयायी हैं। चर्च के छोटे से भवन को छोड़कर लगभग शेष सभी मकान कच्चे थे। चर्च से थोड़ा हटके एक कुँआ था जिस पर लोहे की चरखड़ी लगी हुई थी। चरखड़ी के साथ एक लोहे का डोल बँधा था। कोई औरत चरखड़ी को घुमाकर कुँए से पानी निकाल रही थी। पास खड़ी दो और महिलाएँ आपस में कुछ बातचीत कर रही थीं। उनके घड़े कुँए की कच्ची मुंडेर पर पड़े थे। कुँए के चबूतरे के नीचे गंदे पानी व कीचड़ का एक गड्ढा सा बना हुआ था। कुछ घरों में जलते हुए दिये व चूल्हे उसे नज़र आ रहे थे। चूल्हों तथा तन्दूरों में धीरे-धीरे जलते व धुँआ छोड़ते उपलों की जानी-पहचानी गंध का उसे एहसास हो रहा था। औरतों व बच्चों की मिली-जुली ऊँची आवाजें उसके कानों में पड़ रही थी। बलदेव सोच रहा था कि जब-जब भी वह इस बस्ती के पास से निकलता है तब-तब उसे एक अजीब-सी दुर्गन्ध सूँघने को मिलती है। कब वह समय आयेगा जब इस पिछड़ी बस्ती में बहार आयेगी, कब यहाँ के लोगों के चेहरों पर गुलाब खिलेंगे, खुशियाँ नाचेंगी।

दारे (चौपाल) के समीप मूले की भट्ठी के पास वह तांगे से उतर गया। आगे वह गली थी जिसमें उसका घर था। गली इतनी तंग थी कि उसमें तांगे का जा पाना कठिन था। मूले की भट्ठी में अभी कुछ आँच शेष थी। शीत से बचने के लिए भट्ठी के पास तीन-चार कुत्ते दुबके बैठे थे। बलदेव को वहाँ से जाते देखकर वे हल्का-सा भौंके और पुनः अपनी टाँगों में सिर दबाकर दुबक गये।

अभी वह अपने मकान से चालीस-पचास गज की दूरी पर ही था कि

उसे गली में रहने वाले बग्गासिंह बढई की आठ-दस वर्षीया बिटिया पाशो ने देखा और तुरन्त उसके घर की ओर भाग गयी। शायद वह बलदेव की माँ व मामी को उसके आने का शुभ समाचार सुनाने गयी थी। जैसे ही वह अपने मकान के ओसारे के सामने पहुँचा उसने माँ तथा मामी को प्रसन्न मुद्रा में प्रतीक्षारत पाया। उन दोनों को देखकर वह पुलकित हो उठा। तुरन्त आगे बढकर हर्ष व आदर से वशीभूत होकर उसने बारी-बारी दोनों के चरण छुए। माँ व मामी ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा, उसका सिर चूमकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। ओसारे में टँगी लालटेन की पीली-मद्धिम रोशनी में उसने माँ के मुख की ओर देखा। माँ की क्षीण बुझी-बुझी आँखों में अश्रुकण तैर रहे थे।

कुछ क्षणों बाद वे तीनों सामने वाले बडे पसार (बैठक) में बैठे थे। बलदेव पलंग पर बैठा कभी माँ व मामी को तो कभी कमरे में रखे सामान को देख रहा था। कमरे की चीजों के रख-रखाव में उसे कोई परिवर्तन नजर नहीं आ रहा था। दोनों बडी पेटियाँ व ट्रन्क-सूटकेस आदि यथास्थान पडे हुए थे। पेटियों के पीछे वाली दीवार पर दो बडे-बडे हाथ वाले पखे टँगे हुए थे। पखों के सिरों पर बूटियों वाले कपडे की झालर लगी हुई थी। गर्मी के दिनों में घर में खुशी-गमी के मौकों पर आए लोगों को हवा करने के लिये इन पखों का उपयोग किया जाता था।

फिर मामी ने बात शुरू करते हुए कहा—बलदेव बेटे, बहुत दिनों बाद गाँव आए हो। भगवान करे तुम्हारा काम बन जाए, तुम्हारी नौकरी गाँव के स्कूल में ही लग जाए। सचमुच कितना अच्छा रहेगा जब तुम यहाँ रहने लगोगे, हम लोगों की आँखों के सामने रहोगे। बेटा, जो सुख-आराम अपने घर में होता है वह बाहर कहाँ।

—हाँ मामी, तुम ठीक कह रही हो। मेरा मन भी कहाँ लगता है शहर में। हर समय आप लोगों की व अपने गाँव की बातें ही याद आती रहती हैं। मामा जी की चिट्ठी पाकर मुझे खुशी व तसल्ली हुई। अगर आप बुजुर्गों के आशीर्वाद से काम बन गया तो मैं अपने आपको भाग्यशाली समझूँगा। वैसे मामा जी के पत्र से लगता है कि उन्हें मेरी नौकरी लग जाने की बहुत आशा है।

—हाँ उसे आस तो बहुत है। वह कह रहा था कि स्कूल की कमेटी के कई लोग उसकी ही बात का पक्ष लेंगे और तुम्हें हेड मास्टर बनवाने के लिए पूरा जोर लगाएँगे, ये शब्द उसकी माँ ने कहे।

—माँ ! मुझे तो उम्मीद है मामा जी की व उन्हें मलोगों की आस पूरी होगी। मामा जी का सब मे उठना-बैठना है, उनको अच्छा-खासा रसूख है प्रभाव है। बस थोड़ा खटका है तो वह सरदार जोधा सिंह व उसके दो-एक साथियों से। वह पुरानी शत्रुता को कहाँ भुलाने वाला है। जैसा वह स्वयं है वैसे ही उसके लड़के-बच्चे व खानदान के अन्य लोग हैं। वैसे वह मुझसे हमेशा बड़ी शिष्टता से वातचीत करता है, पूरा स्नेह-प्यार दर्शाने की कोशिश करता है। और आप लोग देखते होंगे कि मैं भी उसे एक बुजुर्ग की तरह आदर-मान देता हूँ, मामा जी की तरह मानता हूँ।

उसके ये शब्द सुनकर माँ ने कहा—बेटा, जोधा सिंह मन का मैला है। ऊपर से बेशक वह प्रेम व आदर का दिखावा करता है पर मन में खोट भरा है। तुम्हारे मामा को नीचा दिखाने के फेर मे हमेशा रहता है। पर मुझे जब भी मिलता है बड़े प्यार से बात करता है। गाँव की बेटियों को आदर-मान देने की जो परम्परा है उसका वह निर्वाह पूरी तरह करता है। मुझे भरोसा है कि तुम्हारी इस नौकरी के लिये वह कोई विरोध नहीं करेगा। आखिर तुम इस गाँव के नाती हो, तुम्हें तो हर किसी का प्यार मिलना चाहिये। खैर जो होगा देखा जायेगा। अच्छा तुम हाथ-मुंह धो लो। मैं अभी थोड़ी देर मे तुम्हारे लिए खाना लाती हूँ।

—माँ ! हाथ-मुंह धुला हुआ है। भोजन मैं यहाँ पसार में नही चौके में बैठकर करूँगा। तुम्हारे पास चौके में बैठकर खाने में जो सुख है वह यहाँ इस कमरे मे कहाँ। तुम चलो खाना लगाओ, मैं अभी आता हूँ। मामी, तुम भी वहाँ हमारे पास बैठना। सोचता हूँ मामा जी या जीता भैया आ जाते तो उनके साथ बैठकर भोजन करता। पर मालूम नही वे लोग कब आएँ। मामा जी तो प्रायः देर से लौटते है। और मुझे भूख लगी हुई है। तुम तो जानती ही हो कि मैं सब कुछ बर्दाश्त कर लेता हूँ किन्तु भूख नही।

माँ चौके मे बैठी भोजन परोस रही थी। मामी भी पास पडे मुड्डे पर बैठी थी। बलदेव के मुख पर प्रसन्नता व सन्तोष की आभा नज़र आ रही थी। वह सोच रहा था कि इस रसोई का वातावरण कितना पावन कितना सुखद है। किसी प्रकार की कोई कृत्रिमता नही। गोबर से लिपा-पुता यह कैसा मोहक भोजन-कक्ष है। सामने लकड़ी की पडछत्ती व खुली आलमारी मे करीने से रखे फूल व पीतल के चमचमाते बर्तन आँखों को कितने भले लग रहे हैं। वातावरण मे कैसी सोंधी-सी खुशबू रची हुई है। क्या शहर की रसोई इसका मुकाबला कर सकती है। शहरों के डाईनिंग रूम अर्थात भोजन के

कमरो में कितना नकलीपन कितना दिखावा होता है। वहाँ की कोरी शिष्टता व तौर-तरीका कभी-कभी कितना बोझिल-सा लगने लगता है। यहाँ के सादे भोजन में जो जायका है वह शहरो के तेज-मसालेदार व्यंजनों में कहाँ।

माँ ने भोजन का थाल उसके सामने रख दिया। मक्का की रोटियाँ थी जिनको भली प्रकार मक्खन से चुपड़ा गया था। एक बड़ी-सी कटोरी मे सरसों का साग था। साग के ऊपर भी ताजे सुगंधित मक्खन की परत चढ़ी हुई थी। एक कटोरी मे चने की दाल थी। सरसों के साग, मक्कई की रोटी व मक्खन की सुगन्ध से उसके मुँह मे पानी भर आया। बहुत दिनो बाद आज उसे इस प्रकार का भोजन मिला था।

दो-तीन कौर खाने के बाद बलदेव ने मामी से कहा—मामी ! यहाँ तुम लोगो के पास बैठकर भोजन करने मे कितना अच्छा लगता है, कितना सुख मिलता है। फिर इस तरह का भोजन, यह मकई की रोटी, यह सरसों का साग, यह मक्खन की परत। ऐसा शुद्ध मक्खन शहरो में कहाँ मिलता है। वहाँ तो मक्खन मे भी लोग मिलावट कर देते है। फिर सबसे बड़ी बात यह है मामी कि इसमे तुम्हारा व माँ का प्यार मिला है। तुम दोनो जिस स्नेह व लाड से खाना खिलाती हो ऐसे कोई शहर मे खिलाने वाला है।

बेटे के शब्द सुनकर माँ हर्षित हो उठी। उसने कहा—बेटा, इसीलिये तो लोग कहते हैं कि बाहर की सारी रोटी के बजाए घर की आधी अच्छी। परिवार मे रहने का सुख कुछ और होता है। दुख-सुख में लोग एक-दूसरे के निकट ता रहते हैं। फिर आज के जमाने मे जो समय साथ-साथ रहकर बीत जाए वही अच्छा। भगवान करे हमारी मनोकामना पूरी हो, तुम्हे अपने गाँव मे ही नौकरी मिल जाए।

भोजन करने के उपरान्त बलदेव पसार में आकर बिस्तर पर सुसताने लगा। उसकी माँ और मामी चौके का काम-काज समेटती रही। पहले उसके मन में आया कि थोड़ी देर के लिये वह बाहर घूम आए, अपने यार-दोस्तों को मिल आए। पर वह नहीं गया। सोचा कि मामा व इन्द्र भैया व जीता आने ही वाले होंगे। उनसे बिना मिले इस समय बाहर जाना ठीक न होगा।

उसे लेटे अभी पाँच-सात मिनट ही हुए थे कि बाहर ओसारे मे प्रविष्ट होते व बातें करते हुए दो व्यक्तियों की आवाज उसे सुनाई पड़ी। दोनों की आवाज से वह समझ गया कि मामा व इन्द्र भैया आए है। वह तुरन्त बिस्तर से उठकर बाहर आँगन मे आ गया। तब तक उसके मामा पंडित दीवान चन्द और इन्द्र सिंह आँगन मे पहुँच चुके थे। उसने "मामा जी पैरी पौना" कहकर

उनके चरणस्पर्श किये। पंडित जी ने उसे आसीष देते हुए अपनी बाँहों में भर लिया। उसके बाद अपने ममेरे भाई इन्द्र सिंह को 'सत सिरी अकाल' कहा और उसके पांव छुए।

इन्द्र सिंह को बलदेव नमस्कार अथवा प्रणाम कहने के बजाए प्रायः 'सत सिरी अकाल' ही कहता है। इस सम्बोधन का प्रयोग शायद वह इस लिये करता है क्योंकि इन्द्र सिंह केशधारी सिख है। वह जन्म से हिन्दू है। उसके माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्य हिन्दू हैं। उसके जन्म के कोई पाँच वर्ष उपरात उसके माता-पिता ने उसे सिख धर्म की दीक्षा दिलवा दी थी। सिख धर्म में दीक्षा दिलवाने का विशेष कारण था। दीवान चन्द व लछमी देवी का व्याह हुए पाँच-छः वर्ष हो चुके थे। पर उनके यहाँ अभी तक कोई सन्तान उत्पन्न नही हुई थी। उन दोनो ने कई प्रकार के उपाय किए, श्रद्धापूर्वक व्रत--उपवास किये, कथा-कीर्तन करवाए, गंडे-तावीजों का प्रयोग किया, पर संतान का मुख देखना न हो पाया। आखिर एक पहुँचे हुए संत के कहने पर बाबा बकाला के ऐतिहासिक गुरुद्वारे में जाकर मनौती मानी कि यदि गुरु महाराज की कृपा से उन्हे पुत्र प्राप्त हुआ तो उसे गुरुमुख अर्थात् सिख बनाएंगे। संयोग ऐसा हुआ कि मनौती मानने के एक वर्ष बाद लछमी देवी की गोद भर गयी। उसे पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। पुत्र का नाम इन्द्र सिंह रखा गया। समयान्तर मे उसे बाबा बकाला के गुरुद्वारे मे ले जाकर सिख के रूप मे सजाया गया।

भोजनोपरान्त दीवान चन्द, इन्द्रसिंह व बलदेव आपस मे बातें करते। गत कुछ वर्षों से गाँव मे क्या कुछ होता रहा है, परस्पर लोगों मे किस प्रकार का मेल-जोल रहा है, एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिये कैसी-कैसी पैंतरेबाजी होती रही है, गाँव की राजनीति में क्या-क्या नये मोड आए है, इस प्रकार की बातो का विवरण दीवान चन्द तथा इन्द्र सिंह देते रहे। प्रधानाध्यापक के चुनाव के समय क्या-क्या सम्भावनाएँ हो सकती है इसका उल्लेख भी दीवान चन्द ने किया। वैसे बलदेव को उनकी बातो से मन मे थोड़ा विश्वास हो गया कि उसकी नियुक्ति की बहुत सम्भावना है। लगभग एक घटे तक बातें करने के बाद दीवान चन्द व इन्द्र सिंह अपने कमरे मे सोने के लिये चले गये। तरह-तरह के विचारों मे खोये बलदेव को बहुत रात गये आँख लगी।

● ●

दो

प्रात. करीब पाँच बजे बलदेव की आँख खुली। रसोई में उसकी मामी दही बिलो रही थी। बड़ी सी चाटी (मटकी) में शीशम की बनी मथनी से दही मथा जा रहा था। घम-घम की मधुर ध्वनि बलदेव को बड़ी अच्छी लग रही थी। यह ध्वनि वह बचपन से सुनता आ रहा है। उसे याद है जब वह छोटा था तब भी अक्सर वह माँ अथवा मामी को दही बिलोते देखकर बड़ा खुश होता था। तब उसे ऐसा लगता था मानो वह कोई सुन्दर सा खेल-तमाशा देख रहा हो। ताज़े दही और मथने के बाद चाटी की सतह पर तैर रहे मक्खन-कणो की सुगन्ध आज भी उसके मन-मस्तिष्क में रची हुई है। आटे की लोई की भाँति श्वेत मक्खन का बड़ा सा गोला देखकर वह कैसा चकित सा हो उठता था। फिर जब माँ या मामी बासी रोटी के ऊपर मक्खन की बड़ी सी गोली रखकर उसे देती थी तो उसे खाने मे कितना आनन्द मिलता था। आज भी वह बिस्तर से उठकर मामी के पास रसोई मे आ गया। मामी उसे देखकर हर्षित हो उठी और बोली—क्यों बेटा, थोड़ा लस्सी-मक्खन लोगे?

—मामी! मन तो कर रहा है, पर अभी नही लूँगा। जानती हो न आज लोहड़ी का त्योहार है। अभी मुँह झूठा नही करना चाहता। सोचता हूँ स्नान करके गुरुद्वारे होता आऊँ। हाँ जीता कहाँ है? वह दिखाई नही पड़ा।

—वह ऊपर चौवारे मे सो रहा है। रात देर में लौटा था। तब तक तुम सो चुके थे। उस समय तुम्हे जगाना उसने ठीक नही समझा। जाओ ऊपर जाकर उससे मिल लो। और फिर स्नान कर लेना। चाहो तो सहन में लगे हाथ वाले नल पर नहा लेना या फिर दोनों भाई रहट पर चले जाना।

—मामी! पहले मैं जीते को मिल लूँ। यहाँ नल पर नहाने में वह सुख नहीं मिलेगा जो सुख बाहर रहट पर होगा। मैं और जीता रहट पर ही जाएँगे और वहाँ से सीधे गुरुद्वारे चले जाएँगे। वापस आने पर ही नाश्ता-पानी करेंगे।

और इतना कहकर वह ऊपर चौवारे मे आ गया। जीता अभी तक लिहाफ ओढ़े सो रहा था। बलदेव ने धीरे से जाकर उसका लिहाफ हटाते हुए कहा—अबे जीते उठ, क्या कुम्भकरण की तरह सो रहा है।

जीता आँखें मलता हुआ और बलदेव को अपने बिस्तर पर बैठा देखकर स्नेह-भाव से उससे लिपट गया और बोला—बलदेव भाई, मैं जब रात को लौटा तब तक तुम सो चुके थे। मैं तो तुम्हे जगाना चाहता था पर इन्द्र भैया ने मना कर दिया। कहने लगा कि तुम यात्रा के कारण थके हुए होगे। इस कारण उस समय मैंने तुम्हें जगाना उचित नही समझा। और कहो क्या हाल-चाल है। वहाँ अमृतसर मे कैसी कटती रही ?

—बस किसी तरह समय कट जाता था। पर जीते, सच्ची बात तो यह है कि मेरा मन वहाँ नही लगता। और मुझे लगता है कि वहाँ ही क्या मुझे किसी भी बडे से बडे शहर मे भी रहना अच्छा नही लगेगा। नगरो का कोलाहलपूर्ण मशीनी जीवन तथा वहाँ के लोगों की मानसिकता देखकर मुझे वहशत सी होने लगती है। अपना यह प्यारा गाँव, यहाँ के भोले-भाले सीधे लोग व यहाँ का खुला वातावरण मेरी नस-नस मे बसा हुआ है। यहाँ के पावन माहौल मे लहराती सुमधुर ध्वनियाँ प्रायः मेरे भीतर बजती रहती है। यह गाँव मुझे सदैव बुलाता रहता है।

—गाँव बुलाता है, क्या देने के लिये तुम्हे बुलाता है, यहाँ क्या रखा है गाँव मे। क्या कहते हो कि यहाँ के लोग भोले-भाले सीधे हैं ? लगता है तुम उन्हे भूल गये हो। एक से एक हरामी यहाँ पडे हैं। अगर उन्हे मौका लगे तो कच्चा ही चबा जाएँ। जब यहाँ रहने लगोगे तो पता चल जाएगा। आज तुम जिन्हे अपना हितैषी अपना दोस्त समझते हो वही कभी तुम्हारी पीठ में छुरा घोंपने की ताक मे रहेंगे।

—मेरी पीठ में छुरा क्यो घोंपेंगे। मैंने किसी का क्या बिगाडा है, मैंने किसके माह (उरद) उखाडे हैं। फिर जीत भाई, अपना तो यह सिद्धान्त है कि न काहू से दोस्ती न काहू से बैर। खैर यहाँ आने तो दो, जैसा होगा देखा जाएगा। अब उठो, चलो रहट पर स्नान करने चलें। वहाँ से ही सीधे गुरुद्वारे चलेंगे। बाकी बाते रास्ते मे होती रहेंगी।

कुछ देर बाद दोनों अपने रहट की ओर जा रहे थे। रहट गाँव से मुश्किल से तीन-चार खेत की दूरी पर ही था। गाँव के कच्चे रास्ते से होते हुए अब वे खेतों के मध्य बनी पगडंडी से आगे बढ़ रहे थे। अँधेरा अब लगभग समाप्त हो चुका था। रात के तीसरे पहर हल्की सी वर्षा हो जाने के कारण मौसम अब धुला-धुला स्वच्छ लग रहा था। शीत की तीव्रता मे कुछ वृद्धि अवश्य हो गयी थी। आकाश पूरी तरह साफ-नीला था। बादलों का नामोनिशान तक नही था। सामने पूर्व दिशा में व्यास नदी की ओर सूर्योदय की लालिमा

धीरे-धीरे घुलती जा रही थी। पेड़ों व खेतों में दूर-दूर तक फैली कोहरे की परतें बड़ी तेजी से छटती जा रही थी। माघ मास की सुनहरी नर्म-नर्म तन-मन में गुदगुदी उत्पन्न करने वाली धूप हरे-भरे वृक्षों तथा दूर-दूर तक विस्तीर्ण गन्ने, गेहूँ व सरसो के खेतो पर पसरती जा रही थी। पगडंडी संकरी थी। दोनो ओर उगी हरी-नर्म घास पर पड़ी ओस की बूंदों से उन दोनो के पाँव व पिंडलियाँ भीग गयी थी। अगल-बगल की झाड़ियों, पेड़ों व लहलहाते खेतों में पक्षी कलरवनाद कर रहे थे। ऐसे मनोहारी वातावरण को देखकर बलदेव को अपने भीतर अजीब तरह के सुख की अनुभूति हो रही थी।

अब जीत लाल अर्थात जीता तथा बलदेव रहट पर पहुँच गये थे। गाँव वाले इस रहट को पडता दा खू (पंडितो का कुँआ) कहते हैं। इस रहट से बिल्कुल सटा हुआ 'लम्बड़ां दा खू' (नम्बरदारों का कुँआ) है। आज से तीन पीढ़ी पूर्व इस रहट का स्वामी गाँव का नम्बरदार था। उस नम्बरदार ने ही इस रहट का निर्माण करवाया था। तभी से यह 'लम्बड़ा दा खू' के नाम से जाना जाता है। दोनो रहटो के बीच तीस-पैंतीस गज लम्बी लाहोरी ईंटों की पुरानी दीवार है जो अब जर्जर हो चुकी है। बीच के कई स्थानो से ईंटे हट जाने के कारण बडे आराम से आर-पार देखा जा सकता है। 'पंडतां दा खू' जीते-बलदेव का अपना रहट है। रहट के पूर्व की दिशा मे एक बड़ा सा छप्पड़ (जोहड) है जिसमे प्रायः पशु नहलाए जाते हैं। हाँ जब कभी रहट आदि बंद होते है तब अनेक लोग इसमें स्नान करते है, तैर कर खुश होते हैं। रहट के दो ओर शहतूत, फल्लाही और धरेक के कई पेड़ हैं। ठीक कुँए के ऊपर पीपल का विशाल वृक्ष है जिसकी घनी छाया बडी सुखद लगती है। दीवान चन्द के ब्याह से कुछ माह पहले तक यह रहट कच्चा था। तब इसका चर-खड़ा, तुक्का व गाधी (चालक के बैठने की गद्दी) आदि लकड़ी के बने हुए थे। मोटे-मोटे मूँज के रस्सो की दो समान्तर माहिलें थी जिन पर मिट्टी की पकी टिंडे सैकड़ों की संख्या मे लगी हुई थी। आज उस प्रकार के रहट शायद ही कही देखने को मिले। पंडित दीवान चन्द व उनके बडे भाई पंडित भगवान दास के परस्पर सहयोग से उस रहट का रूप बदल गया था। उन्होने रहट मे लगा लकड़ी का सब सामान हटवाकर उसके स्थान पर लोहे का सामान लगवा दिया था। टिंडे भी लोहे की सफेद चादर की लगवा दी थी।

इस रहट का पानी बहुत मृदुल है। गर्मी के दिनो में बहुत शीतल तथा शीतऋतु मे हल्का गुनगुना-सा लगता है। नहाने के लिये क़रीब चार वर्ग गज

आकार का एक पक्का चौबच्चा (हौज़) बना हुआ है। इसकी गहराई डेढ़-दो फुट होगी। पर जब कभी किसी की थोड़े और गहरे पानी में नहाने की इच्छा होती है तब पानी के निकास वाला छेद बन्द कर दिया जाता है। ऐसा करने से चौबच्चा पानी से लबालब भर जाता है। तब सिर तक भरे हुए चौबच्चे मे नहाने का कुछ और ही सुख होता है। और जब बाद में पानी का निकास-छेद खोला जाता है तो दो-चार मिनटो के लिये आगे बने औलू (घिरे हुए पानी का गड्ढा) मे बाढ़-सी आ जाती है। इस क्षणिक आयी बाढ को देखकर लड़के-बच्चे हर्षित होते है। प्रायः औलू व चौबच्चे में पीले-भूरे छोटे-बड़े मेढक पानी मे तैरते अथवा किसी कोने मे दुबके बैठे नज़र आते है। औलू के तट पर पड़े लकड़ी के पटरे अथवा शिला पर लोग कपड़े आदि धोते हैं।

जैसे ही बलदेव व जीता रहट पर पहुँचे उन्हें रहिमी तथा दारू सहाई (ईसाई) ने बारी-बारी से अपने माथे पर हाथ लगाकर 'साहब सलाम' कहा। उस समय रहिमी लकड़ी के बड़े से फौड़े से इधर-उधर बिखरा-पड़ा गोबर समेट रहा था और दारू गाधी पर बैठा बैलों को हांक रहा था। रहिमी और दारू सगे भाई है। दारू तीस-बत्तीस साल का होगा जबकि रहिमी की उम्र चालीस के आस-पास होगी। दोनों का रग सांवला है और शरीर गठे हुए मजबूत हैं। वे ईसाई धर्म के अनुयायी हैं और ठठ्ठी मे रहते हैं। इनका बाप मौला भी जिन्दगी भर पडित-परिवार का करिन्दा रहा था। अपने बाप की तरह ये दोनो भाई भी बड़े परिश्रमी व ईमानदार हैं। रहट के काम के अलावा ये हलवाहे का काम भी करते हैं। रहट से थोड़ा हटके दाहिनी ओर बेलना (गन्ने का रस निकालने का कोहलू) चल रहा था। आज बेलने को चलाने के लिये उसमें ऊँटनी जुती हुई थी। वैसे आम तौर पर बैल ही उसे चलाते हैं। बेलने के पास बैठा इन्द्र सिंह एक साथ पाँच-सात गन्ने लगाता जा रहा था। कोहलू से निकल रहा रस गड्ढे में रखे बड़े से मटके में इकट्ठा हो रहा था। बेलने के पास ही गन्ने के दो बड़े-बड़े ढेर पड़े हुए थे। ये गन्ने पूरी तरह साफ थे। उनकी छोई व आग आदि पहले से हटा दिये गये थे।

कोहलू से निकल रहे ताजे रस को देखकर जीत लाल ने बलदेव से कहा—तुम तो सनकी आदमी हो। गुरुद्वारे में मत्था टेकने से पहले कुछ खाओ-पिओगे नही। पर मैं तो थोड़ी रौह (गन्ने का रस) और ताजा गुड़ खाकर ही गुरुद्वारे जाऊंगा।

—भाई, मुझे माफ करो। तुम रौह पीनी चाहो तो पी लो, बलदेव ने उत्तर मे कहा।

जीते ने लोटा भर कर रोह पी, अगोंछे से मुंह पोंछा और बलदेव को साथ लेकर कुड़ह (बडा-सा कच्चा कमरा) में प्रविष्ट हुआ। कुडह का वातावरण भी विचित्र सा था। लगता था पूरा कमरा मानो धुएं से भरा हो और वहाँ पड़ी वस्तुओं को देख पाना कठिन हो। पर वास्तविकता ऐसी नहीं थी। वह धुंआ नहीं था बल्कि बड़े से कढ़ाहे में पक रहे गुड से उठ रही भाप थी। इस भाप से उत्पन्न हो रही सोंधी-सोंधी गन्ध पूरे कमरे में फैली हुई थी। कुडह के एक कोने मे कच्ची दीवार के साथ सटा तरह-तरह का सामान रखा हुआ था। पांच-सात टूटी हुई पञालियां (बैलों के जूए) थीं। मरम्मत योग्य तीन चार हल थे। बैलगाडी के दो पहिये थे। कुछ खुरपियों, दरातियों व फावडों का एक छोटा-सा ढेर पड़ा था। उस धुंआ भरे मटमैले से कमरे में एक भट्ठी पर बडे से कढ़ाहे मे गुड पक रहा था। भट्ठी से थोडी दूरी पर लकडी के बड़े-बडे तीन काठकड़ों (काठ के थाल) व लोहे के बडे थाल में जमने के लिये गुड़ रखा हुआ था। यह गुड़ अभी कुछ गरम व नर्म था। पर खाने में यह ताज़ा बना गुड बडा जायकेदार होता है। जीते ने बरगद के एक बड़े से पत्ते पर थोड़ा गुड लिया और फिर दातून-स्नान आदि से निवृत्त होकर दोनों गुरुद्वारे की ओर चल पड़े।

राणीपुर गाँव का पूर्वी भाग जोगियों का मुहल्ला कहलाता है। देश-विभाजन से पूर्व इस मुहल्ले मे पचीस-तीस परिवार मुसलमानों के रहते थे। इनमें आठ-दस घर जोगियों के थे। जोगी शब्द सम्भवतः योगी शब्द का ही रूप है। खानकाहो, मस्जिदों व मज़ारों की व्यवस्था के लिये ये जोगी फकीर आस-पास के गाँवों से दान-दक्षिणा व भीख आदि माँगने का काम करते थे। इसी आय से वे अपने परिवार की गुज़र-बसर भी करते थे। जोगी का पहनावा व रूप-सज्जा देखने योग्य होती थी। वे प्रायः काले अथवा हरे रंग का लंबा कुरता, तहमद व पगड़ी पहने रहते थे। दाहिनी कलाई में तसबीह, हाथ में क़रीब दो फुट मोटा चमचमाता डंडा रहता था। तसबीह वाली कलाई में लोहे का मोटा-सा कडा होता था। खुदा की इबादत में भजन गाते समय उस डंडे को कलाई वाले कडे से बजाकर दान आदि माँगते थे। उनके बाँए हाथ में काले रंग का नौकानुमा भिक्षापात्र रहता था। गले मे तरह-तरह के रंग-बिरंगे मोटे-मोटे मनकों की दो-चार मालाएँ होती थीं। इन मालाओं के अलावा तांबे व चाँदी के गंडे-तावीज आदि भी गले व बाजुओं में लटकते नज़र आते थे। सिर पर बँधी छोटी-सी हरी या काली पगडी अथवा रूमाल से बाहर निकले उनके लम्बे पट्टे दोनों कन्धो पर झूलते बडे अजीव से लगते

थे। उनकी एक-डेढ़ इंच लम्बी दाढ़ियाँ आम तौर से कैंची से तराशी रहती थीं। कानों में बड़े-बड़े लाख के बाले रहते थे। गाँजे व सुल्फे के नशे के कारण उनकी आँखें लाल जलती हुई दिखाई पड़ती थीं। गाँव के लोग प्रायः इन्हें खुदा के बन्दे मानकर आदरमान व भिक्षा आदि देते थे। उनको नाराज करके कोई उनकी बद्दुआ लेना नहीं चाहता था। छोटे बच्चे उनकी शक्ल सूरत व उनकी भारी भरकम आवाज से बहुत डरते थे। और जैसे ही वे किसी जोगी को अपने घर की ओर आते देखते वे तुरन्त घर के अन्दर घुस जाते। गाँव के अवारा कुत्ते उन्हें देखते ही दूर-दूर रहकर भौंकने लगते। जोगी के हाथ में पकड़े मोटे डंडे को देखकर उन भौंकते कुत्तों की उनके निकट आने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। देश के बटवारे के समय हुए साम्प्रदायिक दंगों में गाँव के कुछ मुसलमान परिवारों की हत्या कर दी गयी और शेष बचे लोग पाकिस्तान चले गये। अब उस मुहल्ले में पाकिस्तान से आए हिन्दू-सिख शरणार्थी लोग ही रहते हैं। यद्यपि अब उस मुहल्ले में एक भी मुसलमान या जोगी परिवार नहीं रहता पर मुहल्ले का नाम अब भी जोगियों का मुहल्ला ही कहलाता है।

जोगियों के उसी मुहल्ले में एक पुराने विस्तृत सरोवर के तट पर भव्य गुरुद्वारा अवस्थित है। कहा जाता है कि सिख शिरोमणि नवमें गुरु तेग बहादुर गुरु-पद-प्राप्ति के उपरान्त एक बार राणीपुर गाँव पधारे थे। जिस स्थान पर उन्होंने अपना प्रवचन दिया था वहीं पर कतिपय श्रद्धालुओं ने एक गुरुद्वारा निर्मित करवाया था। प्रारम्भ में गुरुद्वारे की इमारत साधारण सी थी। पर समयान्तर में इसके रूप में काफी परिवर्तन किया गया। आज यह पक्का गुरुद्वारा देखने योग्य है।

वैसे तो इस गुरुद्वारे में प्रति दिन कुछ न कुछ भक्तजन आते ही रहते हैं पर चूंकि आज लोहड़ी का पर्व था इस कारण अपेक्षाकृत अधिक चहल-पहल थी। हारमोनियम व तबले की थाप पर शब्द-कीर्तन चल रहा था। श्रद्धालुजन यह पावन वाणी श्रवण करके अपने-अपने भाग्य को मन ही मन सराह रहे थे। श्वेत वस्त्रधारी ग्रन्थी उच्चासन पर विराजमान गुरु ग्रन्थ साहब का मन ही मन पाठ कर रहा था। उसके पीछे खड़ा एक सेवक मंद गति से चांवर हिला रहा था। मंच के दाहिनी ओर सैकड़ों पुरुष उजली व रंग-बिरंगी पोशाकें पहने मन में श्रद्धायुक्त भावनाएँ संजोए कीर्तन का आनन्द ले रहे थे। बाईं तरफ भड़कीले-चमकीले कपड़े पहने महिलाएँ बैठी थी। उन्ही में सजी-धजी कुछ युवतियाँ भी थी। पन्द्रह-बीस लड़के-बच्चे भी थे। साफ लग

रहा था कि वहाँ चुपचाप बैठे उनका मन ऊब रहा था। यदाकदा उनमें से कोई एक जगह से उठकर दूसरी जगह बैठ जाता अथवा अपनी माँ या बहन से कोई इशारा या बात करने लगता। बच्चे तो इस प्रतीक्षा में थे कि कब ग्रन्थी अर्दास करे और फिर उन्हें प्रसाद रूप में हलवा खाने को मिले।

बलदेव और जीता चूंकि थोड़ी देर मे वहाँ पहुँचे थे इस कारण उन्हें बैठने के लिए जगह कुछ पीछे ही मिली थी। वे दोनो अगल-बगल बैठे लोगों से निगाहे चुराकर कभी-कभी महिलाओ की तरफ देख रहे थे, कुछ खोज रहे थे। उनके मुख पर आ रहे भावों से साफ प्रकट हो रहा था कि जिसकी वे दोनो तलाश कर रहे है वह वहाँ नजर नही आ रही। आखिर कुछ देर बाद जीते ने बलदेव के कान म कुछ कहा और फिर वे दोनों धीरे से वहाँ से उठकर बाहर आँगन मे आ गये।

बाहर आकर बलदेव ने जीते से कहा—प्रीतो वहाँ दिखाई नही पड़ रही। उसकी बीबी तो वहाँ बैठी है पर वह कहाँ चली गयी। ऐसा न हो कि वह घर से ही न आयी हो।

—*अबे वह आयी तो जरूर होगी। यही-कही होगी। कही पीछे फुलवाड़ी* या लगर वाले स्थान पर न हो। माया भी तो दिखाई नही पड़ रही। लगता है वे दोनो कही एक साथ ही बैठी गपबाजी कर रही होंगी। पर मुझे विश्वास है कि वे दोनो आयी अवश्य होंगी और देखना कभी कही न कही नजर आ जाएँगी।

—भगवान करे तुम्हारी बात सच निकले। भई! मैं तो प्रीतो का दीदार करने के लिये तरस गया हूँ। कई महीनो से उसको देखा नहीं। अमृतसर मे जो मेरा मन नही लगता उसका बडा कारण प्रीतो से दूरी ही है। तुम्हे तो अपनी माया अक्सर मिलती ही रहती होगी?

—अक्सर तो नही, हाँ कभी-कभी छुप छुपाकर उससे मुलाकात हो जाती है। वह मन से चाहते हुए भी मुझसे दूर-दूर रहने की कोशिश करती है। पता नही उसके मन मे कैसा डर सा बैठा हुआ है। वह मेरे बापू, माँ और गांव के अन्य कई लोगों से आतंकित सी रहती है। बलदेव! मैं तो यह मानता हूँ कि या तो किसी से प्रेम न करो और अगर कर ही लिया है और वह पूरी तरह से सच्चा है तो फिर डरने की क्या बात है। भई, मैं तो उस मंत्र का कायल हूँ कि जे तोहे मोहे मिलन का चाओ सिर रख तली गली मोरी आओ।

—वाह बरखुरदार! जब तुम इस हद तक सोचते हो तो अवश्य ही एक

न एक दिन अपनी मनवांछित वस्तु को पाओगे, तुम्हे माया मिलकर ही रहेगी। हाँ यह मैं मानता हूँ कि प्यार करने के मामले मे आम तौर पर अधिकाश लड़कियाँ डरपोक व दब्बू ही होती हैं। पर मेरा विचार है कि प्रीतो वैसी नही है। वह तो इस मामले मे बोल्ड है। उसका भाया (पिता) पढ़ा-लिखा है, विचारों की दृष्टि से कुछ उदार भी है। प्रीतो को भरोसा है कि वह किसी न किसी तरह अपनी बीबी और पिता को मना लेगी। अगर वह किसी से डरती है तो वह है उसका ताया सरदार जोधा सिह।

—यह साला जोधा सिंह, एक नम्बर का हरामी है। मिलने पर तो मुँह से बड़ी मीठी-मीठी बातें करेगा पर मन का बडा काला है। और जितना बदमाश-कमीना वह है उससे कहीं ज्यादा बदमाश उसके लड़के हैं। किसी न किसी लड़ाई-झगड व खुराफात के फेर मे ही रहते हैं। जब तक इन हरामजादों के दाँत व हाथ-पैर नही तोड़े जाएँगे तब तक ये सही रास्ते पर नही आएँगे।

—जोधा सिह तो वहाँ अन्दर संगतो मे आगे बैठा है। मुन्चा सिह भाटिया भी उसके पास ही है। जीते ! जोधा सिह का भतीजा मोहर सिह कहाँ नजर नही आया। गाँव मे ही है या कही बाहर या जेल······

—अरे क्या बार-बार जेल ही जाएगा। एक बार कही गल्ती से फँस गया और पन्द्रह-बीस दिन बडे घर की रोटियाँ तोड़ आया। बातें तो वह बहुत इधर-उधर की नेताओं जैसी करता है। पर वह भी बड़ा चालाक-होशियार है। दूसरो को फँसा देगा पर खुद बड़ी चालाकी से बच निकलेगा। अभी पिछले दिनों चंडीगढ गया हुआ था। बता रहा था कि वहाँ कैम्यूनिस्टों की बहुत बड़ी सभा हुई थी। साला, अब अपने अपको नेता समझने लगा है। दीन-धर्म व मन्दिर-गुरुद्वारे मे उसकी कोई आस्था नही रह गयी। बिना मतलब सतो-ज्ञानियों को बुरा-भला कहता रहता है। अपने लोगों और अपने मुल्क की कोई बात उसे ठीक नही लगती। अक्सर रूस और वहाँ के लोगों की प्रशंसा के पुल ही बाँधता रहता है।

बलदेव ने तनिक हँसकर व सिर हिलाकर कहा—जीते ! तुम जैसे गाँव के अनेक लोग मोहर सिह को नही समझ सके। दरअसल वह बहुत ऊँची चीज है और उसकी बातें भी बहुत ऊँची होती हैं। मेरे पास अमृतसर [illegible] आ चुका है। मेरी उससे खुलकर बातें हुई है। उसके विचारों मे कहीं कोई गड़बडी नहीं। बस उसके बात करने का अंदाज़ थोड़ा बेढंगा सा लगता है। भई, मैं तो उसकी दिल से इज़्ज़त करता हूँ। और वह भी मुझे आदर-मान देता है। उसे लगता है कि मैं उसके विचारों को अच्छी तरह समझता हूँ और किसी

हद तक उन से सहमत भी हूँ। अच्छा हटाओ मोहर सिंह को। उसका जिक्र बेकार हम ने इस समय छेड दिया। अब यह बताओ कि प्रीतो को कहाँ खोजा जाए। वह दिखाई क्यो नही पड़ रही।

—अबे मिल जाएगी, सब्र कर, सब्र का फल मीठा होता है।

—मुझे फल नही प्रीतो चाहिए प्रीतो। अगर उससे आज मुलाकात न हुई तो लोहडी का त्योहार मेरे लिए बेकार हो जाएगा।

—वाह! तुम्हें केवल अपनी प्रीतो की पडी है। उसके लिए पागल हो रहे हो। मेरा भी तो कुछ ख्याल करो। मेरा मन भी तो माया को मिलने के लिए, उस से दो प्यार भरी बाते करने को बेचैन हो रहा है। मेरी बेचैनी की तुम्हें कोई चिन्ता नही। बलदेव, सच तो यह है कि हम दोनों की हालत एक जैसी ही है, हम दोनों एक ही तरह के रोग से पीड़ित हैं।

बातचीत करते हुए दोनो गुरुद्वारे से सटी छोटी सी फुलवाड़ी में आए। फुलवाडी के मध्य एक पक्का कुँआ था। कुंए के चारो ओर चबूतरा निर्मित था। कुँए की लोहे की चरखडी मे लोहे का एक डोल इस प्रकार बांध रखा था कि कोई उसे आसानी से खोल न पाए। चबूतरे पर आठ-दस युवतियाँ और दो-चार अधेडावस्था की औरते थी। कोई कुए से पानी निकाल रही थी तो कोई मुंह-हाथ धो रही थी। कोई किसी खुरदरे पत्थर से अपनी ऐडी को रगड़ कर उसे साफ कर रही थी तो कोई चबूतरे के पास बनी पक्की नाली के समीप बडी अनोखी अदा से अपनी सलवार का पायंचा थोड़ा ऊपर सरकाकर अपनी गोरी-चिट्टी लौकी की तरह मुलायम-चिकनी पिंडली को मल-मल कर धो रही थी। चबूतरे पर इस प्रकार बिखरी सौन्दर्य-सामाग्री को निहारकर जीते के मन मे कुछ-कुछ होने लगा। शायद कुछ ऐसी ही दशा बलदेव की भी हो रही थी। पर वह फुलवाडी मे इधर-उधर देख रहा था, कुछ खोज रहा था। इस बगिया मे स्थित हरे-भरे पेड़ो व कुंजो के पास पांच-सात मनचले मंडरा रहे थे। उनकी भाव-भंगिमाओं से लगता था कि वे भी शायद किसी चक्कर मे है, किसी की टोह मे हैं।

तभी जीते की दृष्टि बगिया के पूर्वी कोने में चम्बे के घने पेड़ो के छोटे से समूह की ओर गयी। उसने तुरन्त बलदेव के कंधे पर हाथ रखते हुए उसे उधर देखने को कहा। वहाँ का दृश्य देखकर बलदेव के मन मे एक मीठी सी गुदगुदी उत्पन्न हुई। प्रीतो अपनी सहेली गुरमीत के साथ वहाँ खड़ी बाते कर रही थी। तब तक प्रीतो ने भी उन दोनो को देख लिया था। गुरमीत के मुख पर भी कोई चंचल भाव उभर आया था। प्रीतो के अलावा उसने भी चेहरे पर शरारतपूर्ण मुसकान बिखेरकर बलदेव की ओर देखा।

कुछ क्षणों के बाद गुरमीत के संकेत करने पर बलदेव उन दोनों के पास पहुँच गया। जीता वहीं कुंए की पास वाली दीवार के पास खड़ा रहा। बलदेव जानता था कि प्रीतो के साथ उसका जैसा सम्बन्ध है उसकी जानकारी गुरमाती को भी है। प्रीतो ने अपनी उस प्यारी सहेली को अपना हमराज़ बना लिया था। बलदेव से उसकी कब भेंट हुई थी, क्या-क्या बातें हुई थी, वे दोनों किस सीमा तक एक दूसरे के निकट आ चुके थे, ऐसी बातो का विवरण उसने गुरमीत को दे रखा था।

बहुत दिनो बाद आज बलदेव ने प्रीतो को देखा। पहले की अपेक्षा आज वह उसे कही अधिक मोहक खिलती हुई लग रही थी। प्याज़ी रंग के बूटीदार रेशमी कुरते व सफेद शलवार मे उसकी संदली सडौल देह बडी प्यारी लग रहीं थीं। गले मे गोटा लगी काली चुनरी लहरा रही थी। बडी-बड़ी चमीली-कजरारी आँखो पर दूज के चन्द्रमा के समान भवे, सन्तरे की छोटी सी फाँक जैसे चिकने-गुलाबी होंठ, सुराहीदार गर्दन, उजले स्वच्छ कपोल तथा मस्ती मे आयी कबूतरी की तरह अठखेलियाँ करती उसकी मोहक अदाएँ निहार कर बलदेव के हृदय की गति मे भी वृद्धि होने लगी थी।

बलदेव के वहाँ पहुँचने पर प्रीतो व गुरमीत ने हाथ जोडकर उसे 'सत सिरी अकाल' कहा। फिर बलदेव ने उन दोनो से उनका तथा उनके परिवार का कुशलक्षेम पूछा। इस शुरू के अभिवादन के उपरान्त प्रीतो ने अपने मुख पर तनिक कृत्रिम नाराजगी लाते हुए कहा—इतने दिनों बाद तुम्हें गाँव आने का समय मिला है। तुम्हे किसी की क्या चिन्ता है। कोई कैसे समय काट रहा है कैसे किसी को याद में तड़पता रहता है, तुम्हारी बला से।

—ऐसा क्यों सोचती हो प्रीतो ! तुम क्या समझती हो कि मुझे तुम्हारी याद न आती होगी। तुम तो यहाँ अपने घर मे हो, अपने माता-पिता अपनी सहेलियो के पास हो। पर मेरा वहाँ कौन है। बस तुम्हारी यह मोहक सूरत और तुम्हारी बाते ही याद कर-कर के किसी तरह अपना वक्त गुज़ार लेता हूँ।

—मेरी तुम्हें कितनी याद आती होगी यह तो ऊपर वाला ही जाने। खैर अब तुम आए हो तुम्हारा स्वागत है। वैसे मुझे कल ही पता चल गया था कि अब तुम यहाँ अपने गाँव मे ही स्कूल में नोकरी करोगे।

—प्रीतो ! मेरी मनोभावनाएँ तुम जानती ही हो। मेरा दिल तो यहीं रहने को करता है। आगे देखो किस भाग्यशाली का चुनाव होता है। परसों स्कूल के हेड मास्टर का चुनाव होगा।

—बलदेव ! तुम्हारा चुनाव तो हुआ ही हुआ है। कल ही दारजी बीबी से बात कर रहे थे। उन दोनों की बातचीत से ही मुझे पता चला था कि तुम गाँव में आए हो। दारजी बीबी को बता रहे थे कि वे कमेटी के दूसरे लोगों से मिल-मिलाकर बात पक्की करने की कोशिश कर रहे है। हाँ ताया जी और दो-तीन अन्य सदस्यों का रुख उन्हे अनुकूल नजर नही आ रहा। फिर भी उन्हें आशा तो है। वे कुछ ऐसी कोशिश में लगे हैं कि तुम्हारा काम भी बन जाए और ताया जी भी नाराज न होने पाएँ। वैसे मुझे तो विश्वास है कि गुरु महाराज की कृपा से सब ठीक ही होगा।

—भगवान करे तुम्हारा विश्वास कायम रहे। अच्छा अब चलता हूँ। फिर मुलाकात होगी। वैसे दिल तो यही करता है कि तुमसे बातें करता ही रहूँ, तुम्हारे इस कोमल मुख को निहारता ही रहूँ, तुम्हारे इन झील सरीखे गहरे सुरमई वंकिम नयनो मे झाँकता ही रहूँ। पर इस समय तो जाना ही होगा। वह देखो कुँए के पास खड़ा जीता मेरा इन्तजार कर रहा है। प्रीतो ! आज तो लोहड़ी का त्योहार है। हो सकता है इस पर्व के बहाने दिन में किसी समय कही तुमसे भेंट हो जाए। अच्छा अब चलूँ वरना जीता कुछ बड़बड़ाने लगेगा।

बलदेव जीते के पास आ गया और दोनों एक बार फिर गुरुद्वारे के हाल में आ गये थे। उस समय सभी श्रोतागण नतमस्तक अपने-अपने स्थान पर खड़े थे। शुभ्र कुरता-पायजामा पहने तथा गले में लंबा सफेद अंगोछा धारण किये ग्रन्थी जी अर्दास कर रहे थे। वे बड़े आदरभाव से दस गुरुओं की कीर्ति का गुणगान कर रहे थे। बीच-बीच में बड़े से नगाड़े पर चोट पड़ती थी और संगत में बैठा कोई भक्त बुलन्द आवाज में 'जो बोले सो निहाल' का जयकार बोलता था और जवाब में पूरे हाल में श्रोताओं की 'सत सिरी अकाल' की पुरजोर आवाज गूँज उठती थी। ग्रन्थीजी ने पाँच-सात मिनटों तक धर्म व देश की बलिवेदी पर अपने प्राणो की आहुतियाँ देने वालों का बड़े उत्साह, जोश व आदरभाव से उल्लेख किया। बीच-बीच में थोड़ी-थोड़ी देर के बाद संगत जयकारे लगाती रही। इस अर्दास-समारोह के दौरान पूरे हाल में अजीब तरह का सुखद व प्रेरणादायक वातावरण छाया रहा।

अर्दास के उपरान्त अब वह समय आया जिसकी वैसे हर कोई पर बच्चे विशेष रूप से प्रतीक्षा कर रहे थे। अब कुछ ही क्षणों बाद कड़ाह-प्रसाद (हलुआ) का वितरण होने वाला था। ग्रन्थी ने एक बड़ी सी परात पर रखे उजले वस्त्र को हटाया। फिर कुछ शब्द बोलकर छोटी सी कृपाण उस हलुए के ठीक बीचोबीच फेरी। तब तक हर कोई अपनी-अपनी जगह बैठ चुका था।

चार-पाँच भक्तों ने थालों में प्रसाद डाल लिया था और वे वह गर्मागर्म हलुआ मुट्ठी-मुट्ठी भर लोगों में बाँट रहे थे। प्रसाद की सुगन्ध पूरे हाल में फैल गयी थी। लोग प्रसाद खाकर खुश हो रहे थे। खाने के बाद [illegible] दोनों हाथों को एक दूसरे से मल रहे थे। कई पुरुषों ने अपने हाथों पर लगे घी को अपनी दाढ़ी पर मलकर हाथों को साफ कर लिया। इस प्रकार उनके हाथों पर लगी चिकनाई दाढ़ी के बालों पर आ गयी थी। दाढ़ी के केशों में अब पहले की अपेक्षा अधिक चमक आ गयी थी। अब धीरे-धीरे लोग अपने घरों को लौटने लगे थे। हर किसी के मन में लोहड़ी-पर्व मनाने की चाह बलवती हो रही थी।

जैसे ही बलदेव और जीता गुरुद्वारे के प्रवेश-द्वार से बाहर आए उन्हें अपने पाँच-सात साथियों के साथ सरदार जोधा सिंह दिखाई पड़ा। अधेड़ावस्था का जोधा सिंह उस समय बादामी रंग का रेशमी कुरता, उस पर बन्द गले की ऊनी वास्कट और चूड़ीदार पायजामा पहने था। कलफ लगी मूंगिया रंग की पगड़ी सिर पर सज रही थी। पगड़ी का बालिश्त भर ऊंचा शमला मुर्गे की शानदार कलग़ी की तरह उठा हुआ था। दाढ़ी के खिचड़ी बाल एक जाली से कसे हुए थे। आँखें कुछ गहरी थीं पर उनमें साँप की आँखों जैसी चमक नज़र आ रही थी। गौरवर्ण मुख पर लालिमा टपक रही थी। वह कुछ हर्षित मुद्रा में अपने साथियों से बातें कर रहा था। उसका पूरा व्यक्तित्व काफी रौबदार लग रहा था। सिख-धर्म के प्रचार के मामले में तथा गुरुद्वारे की व्यवस्था में वह प्रायः अपनी रुचि दर्शाता रहता था। हालांकि गाँव के के अनेक लोग जानते थे कि उसकी इस प्रकार की रुचि में श्रद्धा कम और दिखावा कहीं ज्यादा होता है। उसकी चालाकियों व धूर्तता से लोग अच्छी तरह से परिचित थे। उसका मन कितना मैला है यह जानते हुए भी लोग उसके विरोध में कुछ कहने का साहस नहीं कर पाते थे। वे जानते थे कि जोधा सिंह मीठी छुरी की तरह है। पर उस छुरी की धार को मोड़ने की हिम्मत किसी में नहीं थी। बिना मतलब कोई भी उससे तथा उससे भी दो-चार हाथ आगे उसके लड़कों से दुश्मनी मोल लेने को तैयार नहीं था।

बलदेव जोधा सिंह के स्वभाव व उसकी मानसिकता से अच्छी तरह से परिचित था। पर वह ऊपर से उसके प्रति अपना आदर-भाव ही दर्शाता था। जोधा सिंह उसके मामा व उसके परिवार का जानी दुश्मन था। लेकिन इसके साथ-साथ वह उसकी प्रेमिका प्रीतो का ताया भी था। उसे प्रीतो का लिहाज़ तो करना ही पड़ता था। वह प्रकट रूप से उसे इज़्ज़त-मान देता

रहता था। उस समय जैसे ही उसकी दृष्टि जोधा सिंह से मिली उसने तुरन्त आगे बढकर तनिक झुककर उसे सत सिरी अकाल कहा। जवाब में जोधा सिंह ने भी होंठों पर मुसकराहट बिखेरते हुए उसे आशीर्वाद दिया, उसका हाल-चाल पूछा। एक-आध मिनट तक उससे बात करके वह अपने साथियों के साथ आगे बढ़ गया।

दस बजे के क़रीब जब बलदेव और जीता गुरुद्वारे से वापस गाँव पहुँचे तो लड़के-लड़कियाँ लोहड़ी का त्योहार बड़े चाव तथा उत्साह से मना रहे थे। लड़के-लड़कियाँ टोलियों के रूप में घर-घर जाकर लोहड़ी पर्व की मोह-माई माँग रहे थे। मोहमाई उस देन को कहते है जो रुपये-पैसे, कोई खाने की वस्तु अथवा लकड़ी-उपले के रूप में लड़कों-लड़कियों को दी जाती है। टोलियो मे सम्मिलित अधिकांश लड़कों ने बैहरूपिए की तरह अपना-अपना स्वांग बना रखा था। कुछ ने चेहरो पर तवे की कालिमा मल रखी थी। कोई अपना चेहरा लाल, नीले अथवा हरे रंग से पोते हुए था तो कोई मुख पर मुखौटा लगाए हुए था। इन नक़ाबों पर किसी जानवर या राक्षस आदि का चित्र बना था। ये बहुरूपिये बने लड़के पाँव तथा कमर आदि में घुंघरू बाँधे हुए थे। बारी-बारी प्रत्येक घर के द्वार के सामने पहुँचकर ये लड़के-लड़कियाँ लोहड़ी सम्बन्धी गीत समवेत स्वर में गा रहे थे। ये टोलियाँ उन घरों में नहीं जाती जहाँ गत एक वर्ष में कोई गमी आदि हो चुकी हो। जिन घरों में पिछले एक वर्ष में शादी या पुत्र का जन्म हुआ हो वहाँ से वे अधिक माता में मोहमाई की अपेक्षा करते है और आम तौर पर उन्हे अपेक्षाकृत अधिक पैसे व खाने की सामग्री मिल जाती है। लोहड़ी के दिन प्रायः माता-पिता व परिवार के अन्य बड़े लोग अपने परिवार के बच्चों को मोहमाई रूप से रुपये-पैसे देते हैं। शादीशुदा लड़कियों को उनके ससुराल रुपये तथा मिठाई आदि भिजवाई जाती है।

जैसे ही लौटते हुए बलदेव व जीता अपनी गली के समीप सरदार राम सिंह के खरास (बैलों अथवा ऊँटनी द्वारा आटा पीसने की चक्की) के पास पहुँचे तो लोहड़ी माँगने वाली एक टोली उनके सामने पड़ गयी। टोली के लड़कों ने उन दोनों को घेर लिया और मोहमाई का तकाज़ा करने लगे। बलदेव ने जेब से एक रुपये का नोट निकालकर उन्हे दिखाते हुए कहा—"यह मिलेगा पर तब जब मोहमाई माँगोगे।" उसके ये शब्द सुनकर मारे उत्साह के लड़के चीखे और फिर मोहमाई माँगना शुरू कर दिया। मोहमाई माँगने का भी एक अपना अंदाज होता है। टोली का मुखिया एक पंक्ति ऊँची आवाज में

बोलता है और जवाब में दूसरी पंक्ति शेष लडके चिल्लाकर बोलते हैं। मुखिया ने ज़ोर से कहा—

हीरिया हरणा।

लडके—उधार नहीं करना।

मुखिया—लोही आयी साल दी।

(लोहडी-पर्व साल भर बाद आया है)

लड़के—दे पडोपी दाल दी।

(पाव भर दाल दो)

मुखिया—लोही आयी मकर दी।

(मकर-संक्राति पर लोहडी-पर्व आया है)

लड़के—दे पडोपी शक्कर दी।

(पाव भर शक्कर दो)

लड़के फिर दूसरा बोल शुरू करते हैं। इसमें केवल मुखिया ही बोलता है। शेष लडके उत्तर मे वडे जोर से केवल 'हो' शब्द का उच्चारण ही करते हैं।

मुखिया—सुन्दर मुन्दरिये (अरी सुन्दर लड़की)

लड़के—हो

मुखिया—तेरा कौन वेचारा (तुम्हारा किस वेचारे से व्याह हुआ है)

लड़के—हो

मुखिया—दूल्हा भट्टी वाला (क्या दूल्ला भट्टी वाला से तुम्हारा व्याह हुआ है ?)

लडके—हो

मुखिया—कम्म कौन समेटे चाचा गाली देसे (अव घर के काम कौन समेटेगा। काम न करने पर चाचा गाली देगा)

लडके—हो

मुखिया—तेरे जीवन सारे पुत्तर (तेरे जब पुत्र हो तो भगवान उन सबको लबी आयु दे)

लडके—हो

मुखिया—तेरे पुत्तरां दी कमाई सानू झोली भर-भर पायी (तेरे पुत्र जब कमाने लगेगे तो हमें झोली भर-भरकर अनाज आदि देना।

लडकों की भाँति लड़कियाँ भी टोलियाँ बनाकर मांहमाई माँगने जाती है। वे सभी एक साथ गाती है—

हुल्ले नी माए हुल्ले, दो बेरी पत्तर झुल्ले (बेरियों पर बहार आ गयी है इसलिए माँ खुशियाँ मनाओ)
दो झुल पेईयाँ खजूरां खजूरां सुट्टेया मेवा (खजूर के दो पेड़ मेवों से लदे झूलने लगे हैं)
इस मुंडे दा करो मगेवा (माँ ! अब तुम अपने बेटे का ब्याह रचाओ)
इस मुंडे दी वोहटी निक्की ओ खांदी चूरी मिठ्ठी (इसके लिये बिल्कुल छोटी-सी ऐसी बहू लाना जो मीठी चूरी खाना पसन्द करती हो)
कुट-कुट भरे थाल वोहटी वंडे ननानां नाल (बहू अपनी ननदों के साथ मिलकर भरे हुए थालों से मिष्ठान आदि बाँटे)
पा माई पा काले कुत्ते नूं वी पा (ए माँ, हमें भी कुछ दो, काले कुत्ते को भी कुछ खाने को दो)
काला कुत्ता देवे वधाईयाँ तेरियाँ जीवन मज्जी-गाइयाँ (काला कुत्ता भी तुम्हें वधाई दे रहा है और भगवान से तेरी गाय-भैंसों की लम्बी आयु की कामना करता है)

रात होते ही लोहड़ी का त्योहार कुछ दूसरे रूप से मनाया जाता है। तब लकड़ियों व उपलो का ढेर जलाकर अग्नि-देवता की पूजा की जाती है। हिन्दू-सिख सभी अपने-अपने घरों में पूजा करते हैं, रेवड़ियाँ, भुनी हुई मकई के दाने व चिड़वे आदि आग में डालते हैं, इसके बाद ये वस्तुएँ स्वयं खाते हैं, भेंट-स्वरूप अपने रिश्तेदारों, परिचितो को भिजवाते हैं, पास-पड़ोस में बाँटते हैं।

अन्य घरों की तरह उस रात सरदार प्रताप सिंह के घर के खुले आँगन में लोहड़ी मनाने के लिए बहुत गहमा-गहमी थी। परिवार के सदस्यों के अलावा अगल-बगल के कुछ लोग भी आ गये थे। आँगन के ठीक बीच में लकड़ियों, उपलों का ढेर लगा हुआ था। उस ढेर के निचले भाग में मनछिट्टी (कपास की सूखी लकड़ियाँ) की छोटी-छोटी लकड़ियाँ रखी हुई थी। आँगन के एक सिरे पर दरी बिछी हुई थी जिस पर कुछ लोग बैठे हुए थे। रेवड़िया, मकई के भुने हुए दानो, चिड़वो व लाई आदि से भरा हुआ एक टोकरा पड़ा हुआ था। प्रताप सिंह व उसकी पत्नी प्रसन्न कौर घर आने वालो का आदर-सत्कार कर रहे थे। प्रताप सिंह अपनी पत्नी को प्रसन्न कौर के बजाए प्रसिन्नी कहकर ही सम्बोधित करता है। पति-पत्नी दोनों ने नये वस्त्र पहन रखे थे। बेशक प्रताप सिंह की उम्र इस समय पचास से अधिक हो चुकी थी पर वह अब भी अकड़कर सिर उठाकर चलता था, सीधा तनकर बैठता था। उसके गोरे भरे-भरे मुख पर चेचक के कुछ निशान थे। पर उनसे किसी भी प्रकार की कुरूपता उसकी

शक्ल मे नजर नहीं आती थी। मोटे-काले धागे से बँधी हुई सफेद दाढ़ी और गुप्फेदार सफेद मूँछें, बड़े सधे ढंग से बँधी शुभ्र पगड़ी और गले में सोने की जंजीर, ये सभी उपकरण उसके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए काफी थे। प्रसन्न कौर अर्थात प्रसिन्नी ने सलेटी रंग की ऊनी कमीज और सफेद सलवार पहन रखी थी। इधर कुछ वर्षों से उसकी देह कुछ थुलथुली सी हो गयी थी। कनपट्टियों के केश पूरी तरह सफेद हो चुके थे। बातचीत करते समय बीच-बीच में प्राय: 'सतनाम वाहे गुरु' के पावन शब्द बोलती रहती थी। गुरुघर में उसकी पूरी आस्था थी। प्रत्येक छोटे-बड़े पर्व पर वह गुरुद्वारे जाती थी। गुरुवाणी के अलावा वह हिन्दुओं के धर्म-ग्रन्थों को आदरपूर्वक सुनती थी। पिछले कुछ वर्षों में पति के साथ दो बार वैष्णोदेवी की यात्रा पर हो आयी थी। उस रात लोहड़ी-पर्व मनाने के लिए अपने पड़ोस की महिलाओं को आमन्त्रित कर आयी थी। प्रीतो भी अपनी तीन-चार सहेलियों के साथ दरी पर बैठी थी। उसने वही पोशाक पहन रखी थी जो वह सुबह गुरुद्वारे पहनकर गयी थी। हाँ अब उस गोटा लगी चुनरी के ऊपर गहरे नीले रंग का शाल ओढ़ रखा था।

आँगन में लगा ढेर प्रज्वलित हो चुका था। वहाँ उपस्थित लोग जलती अग्नि में रेवड़ियाँ, मकई के दाने आदि डाल रहे थे। अग्नि के चारों ओर लोटे से थोड़ा-थोड़ा पानी गिराते हुए परिक्रमा की जा रही थी। सभी एक-दूसरे को बधाईयाँ दे रहे थे। सबको लोहड़ी का प्रसाद मिल चुका था। कोई रेवड़ियाँ मुँह में डालकर कट-कट कर रहा था तो कोई मक्का के दाने मजे में चबा रहा था।

तभी बलदेव वहाँ पहुँचा। उसने आदरपूर्वक प्रताप सिंह तथा प्रसन्न कौर को सत सिरी अकाल कहकर लोहड़ी की बधाई दी। प्रताप सिंह ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—कहो बेटा, कैसे हो। अच्छा किया जो आ गये। परसों तुम्हारा इन्टरव्यू होगा। भगवान की कृपा हुई तो तुम्हारा काम बन जाएगा। वैसे दो-एक मेम्बर अपने-अपने कैंडीडेट के लिए कोशिश कर रहे हैं। बड़ी-बड़ी सिफारिशें उनके पास पहुँची हैं।

बलदेव ने उत्तर में कहा—मामा जी, जब आप और बड़े मामा (सरदार जोधा सिंह) मेरी सिफारिश बने हुए हैं तब मुझे किस बात की चिन्ता है। आप दोनों की बात को टालने की किस में हिम्मत है।

तभी बीच में प्रसन्न कौर ने बोलते हुए कहा—बलदेव बेटे! आज दोपहर में ही तुम्हारे सम्बन्ध में बातें हो रही थीं। मैंने तो इन्हें साफ कह दिया था कि बलदेव अपना बेटा है, अपने ही गाँव का है, उससे अच्छा हेड मास्टर और

कहाँ मिलेगा। तुम विश्वास रखो। यदि किसी को यह नौकरी मिलेगी तो वह तुम्हे ही मिलेगी।

बलदेव निगाह चुरा-चुरा कर कभी-कभी प्रीतो की ओर भी देख लेता था। प्रीतो के मुख पर आ रही भावनाओ को भाँपकर वह जान रहा था कि ये बातें सुन-सुन कर वह भी मन में आशा अनुभव कर रही है, हर्षित हो रही है। कुछ क्षण रुकने के बाद उसने प्रीतो से पूछा—कहो प्रीतो, तुम इन दिनो क्या कर रही हो। पढाई क्यो छोड दी। तुम मैट्रिक की प्राइवेट रूप मे परीक्षा क्यों नही दे देती ?

—पर मैं कैसे पढ पाऊँगी। पढते समय अनेक बातें ऐसी आ जाती हैं जो मेरी समझ मे नही आतीं। वैसे मैट्रिक की किताबें मैने खरीद रखी हैं। लेकिन बिना किसी के पढाए मेरे लिए उन किताबों को समझ पाना थोड़ा कठिन है। सबसे बडी कठनाई मेरे लिए अँग्रेजी भाषा की है।'

—प्रीतो ! इसमे क्या परेशानी है। इस मामले में मामा जी तुम्हारी मदद कर सकते हैं।

प्रताप सिंह ने एक हल्का सा ठहाका लगाते हुए कहा—अरे बलदेव क्या कह रहे हो। मैं इसे पढ़ा पाऊँगा ? किसी तरह नकल-नुकल करके मिडिल पास कर लिया था। यह ठीक है कि हमारे जमाने में पढ़ाई का दर्जा ऊँचा था। तब के पुराने मिडिल पास लोग आज के बी० ए० पास लड़कों से कहीं अच्छा-खासा पढ-लिख लेते हैं। पर बेटा, यह मेरे बस का नही है। अब तो मैं बुड्ढा तोता होता जा रहा हूँ। मैं इसको कैसे पढा सकूँगा। न बाबा न, यह मेरे बूते का नही है।

पति की बात सुनकर प्रसन्न कौर ने कहा—गुरु महाराज की कृपा से तुम्हारी नौकरी यहाँ लग जाए। और अगर ऐसा हो गया तो यह काम तुम्हे ही अपने जिम्मे लेना होगा। तुमसे अच्छा पढ़ाने वाला इस गाँव में और कौन मिल सकेगा। तब तुम ही इसकी कुछ मदद करना। मैं भी चाहती हूँ कि यह कम से कम दस जमातें तो पास कर ही ले। आजकल अनपढ लड़की की कहाँ कद्र है।

तभी बलदेव ने एक बार फिर प्रीतो की ओर देखा। प्रीतो के चेहरे पर हल्की सी चंचल मुसकान बिखर आयी थी। उसे लगा मानो उसकी बडी-बडी शरारतपूर्ण आँखे उससे पूछ रही हो कि बोलो अब क्या जवाब देते हो, क्या हाँ कहने की हिम्मत है तुम मे। उसने फिर प्रसन्न कौर से कहा—प्रीतो पढाई शुरू तो करे। मुझसे जो बन पडेगा मैं इसके लिए करूँगा। आपकी बात को मैं

कैसे टाल सकता हूँ। आपका आदेश मेरे सिर-माथे होगा। इसके बाद दो-चार मिनट और रुकने के बाद लोहड़ी का प्रसाद लेकर वह अपने घर लौट आया। आज वह बहुत प्रसन्न था। प्रसन्न कौर द्वारा कहे गये शब्द उसे भीतर ही भीतर गुदगुदा रहे थे।

● ●

तीन

सरदार जोधा सिंह को गाँव [illegible] दी जाती है [illegible] ऊपरी तौर पर लोग उसका आदर-सत्कार करते हैं [illegible] के मौके पर उसको आमंत्रित किया जाता है। गाँव में समय-समय पर होने वाले समारोहों में उसे उचित पद दिया जाता है। गाँव सम्बन्धी मामलों पर उससे परामर्श लेना लोग जरूरी समझते हैं। तहसील व जिले के अनेक अधिकारियों व गणमान्य व्यक्तियों तक उसकी पहुँच है। अपने इस परिचय के बूते वह प्राय: लोगों के अटके हुए काम करवा देता है। दो परिवारों अथवा दलों में जब कभी कोई लड़ाई-झगड़ा हो जाता है तो व दोनों पक्षों को समझा-बुझा कर आपस में मेल-मिलाप करवाने की कोशिश करता है। पर यह सब होने पर भी लोग उसकी धूर्तता से अच्छी तरह परिचित हैं। लोगों का प्रयास यही रहता है कि उससे दूर-दूर ही रहा जाए।

जोधा सिंह का पिता सरदार सुजान सिंह राणीपुर गाँव का बड़ा धाकड़ जमींदार था। उसका न केवल अपने गाँव मे बल्कि आसपास के इलाके में भी काफी दबदबा था। अपने गाँव के अतिरिक्त उसने दूसरे अनेक गाँवों में भी भाड़े के गुण्डे पाल रख थे। अंग्रेजी सरकार का वह बहुत बड़ा कद्रदान था। उन दिनों गाँव में जो भी अधिकारी आता था वह उसके यहाँ ही टिकता था। तहसीलदार, थानेदार या कानूनगो जैसे किसी अफसर की मेजबानी करके उसे बेहद गर्व की अनुभूति होती। गाँव के पुराने बुजुर्गों को आज भी याद है कि दूसरे महायुद्ध में अंग्रेजी सरकार के आवाहन के जवाब में गाँव तथा आसपास के गाँवों के पचासों युवकों को उसने सेना मे भर्ती करवाया था। उसकी सेवाओं को देखते हुए अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर ने उसे सोने का तमगा दिया था। कभी-कभी विशेष अवसरों पर वह अपने लंबे कोट पर यह तमगा भी लगा

लिया करता था। कांग्रेसी लोगो तथा क्रांतिकारियों का वह प्राय: मज़ाक उड़ाया करता था। उसे अपने मन में पूरा विश्वास था कि अंग्रेज़ों का राज्य इस देश में इतना सुदृढ है कि मुट्ठीभर कांग्रेसियों अथवा सिर-फिरे इनक्लाबियों के कुछ करने से वह टस से मस होने वाला नही। अंग्रेज़ी साम्राज्य का सूर्य कभी अस्त नही होगा।

चरित्र की दृष्टि से वह विलासी और शराबी था। धन का किसी प्रकार का अभाव नही था। उसकी हवेली मे प्राय: उस जैसे ऐय्याश लोगो की महफिले जमती रहती थी। कभी-कभी शहर से किसी गाने वाली नर्तकी को बुलवाया जाता था। ऐसे अवसर पर रातभर शराब के जाम चलते थे, परस्पर छेड़खानी होती थी, मज़ाक होते थे। यह नर्तकी वेश्या होती थी। उसके साथ उसके साज़िन्दे भी रहते थे।

ठठ्ठी की कितनी ही हरिजन व गरीब ईसाई महिलाओं की देह से वह खेल चुका था। उन लोगो मे इतनी शक्ति व साहस कहाँ था कि उसकी इस प्रकार की बर्बरता का विरोध कर पाते। उन दिनों ठठ्ठी के अधिकांश लोगो मे धारणा बन चुकी थी कि हर कहीं ज़मींदार लोग ऐसा ही करते हैं और पिछड़ी जातियों के निर्धन लोग उनकी इच्छा-पूर्ति में कोई रोड़ा नही अटकाते। उच्च जातियों के लोग सुजान सिंह के स्वभाव व चरित्र से अच्छी तरह परिचित थे। वे उसकी शक्ति को भी पहचानते थे। बिना मतलब कोई उससे बिगाड़ उत्पन्न करना नही चाहता था। उसकी विलासिता को देखते हुए भी ये लोग अनदेखा कर देते थे। सुजान सिंह भी ऊँची जाति के लोगों की मानसिकता, उनकी परम्पराओं को भली प्रकार से समझता था। वह उनके स्वाभिमान को चुनौती देने का साहस कभी नहीं कर पाता था। वह जानता था कि उच्च जाति की औरतें अपेक्षाकृत सुन्दर हैं। पर उनसे छेड़छाड़ करना साँप के मुँह मे उंगली देने के समान होगा, बिना मतलब खून-खराबे को दावत देनी होगी।

पर मालूम नही वह कौन सी अशुभ घड़ी थी जब पंडित दीवान चन्द की विधवा युवा बुआ सतवती उस लम्पट ज़मींदार सुजान सिंह की आँखो में चढ़ गयी, उसकी रातों की नींद हराम हो गयी। पिछले कई महीनों से वह उस मोहक तरुणी को अपने चंगुल मे फँसाने के लिए तरह-तरह के उपाय कर चुका था। पर उसे सफलता नही मिली थी। अंत में उसने उससे ज़ोर-ज़बरदस्ती करने का इरादा कर लिया था। अब वह उचित अवसर की तलाश मे था। संयोगवश कुछ दिनों बाद वह अवसर आ गया।

शाम का धुंधलका खत्म हो चुका था। रात की कालिमा चारों ओर फैल चुकी थी। सतवती अपनी एक सहेली राजो के साथ गाँव के पास कपास के खेत मे निवृत होने के लिए गयी। खेत मे दोनो सहेलियाँ एक दूसरे से थोडी दूरी पर बैठी हुई थी। कुछ क्षणों बाद राजो को एक चीख सुनाई पडी। उसकी दृष्टि तुरन्त उधर गयी जहाँ सतवती बैठी हुई थी। उसने देखा कि दो व्यक्ति सतवती का मुँह कपडे से बद करके उसे जबरदस्ती सेवाँवाले पुराने तालाब की ओर ले जा रहे है। वह दवेपाँव वहाँ से उठी और बड़ी फुरती से पंडितो के रहट पर जाकर वहाँ बैठे दीवान चन्द के चाचा मूलराम को इस दुखद स्थिति से अवगत कराया। मूलराम की उम्र उस समय तीस वर्ष के आसपास रही होगी। गेहुँए रग के उस बाँके जवान का शरीर जंगली सुअर की तरह कसा हुआ था। उसने आव देखा न ताव तुरन्त हाथ मे भाला थामा और विजली की गति से सेवाँवाले तालाब की ओर लपका। खून उसके सिर पर सवार हो चुका था।

अपराधियो को खोजने मे उसे कोई दिक्कत नही हुई। सेवाँवाले तालाब के निकट मडियो (श्मशानभूमि) के पास घनी झाडियों की ओट में उसे कुछ खुसर-फुसर की आवाज सुनाई पड़ी। भाला थामे तेजी से वह वहाँ पहुँचा। चन्द्रमा के प्रकाश में उसने सुजान सिंह को पहचान लिया। पूर्व इसके कि सुजान सिंह तनिक सम्भल पाता मूलराम का लपलपाता भाला उसकी पसली मे पूरी तरह उतर चुका था। तभी उसकी दृष्टि दूसरे व्यक्ति पर पड़ी जो गाँव की ओर भाग रहा था। तेजी से दौड़कर मूलराम ने उसे भी जा दबोचा। भाले के एक ही वार से उसकी आँतें भी बाहर आ गयी थी। यह अभागा व्यक्ति जमीनदार सुजान सिंह का मुनीम बाँकेलाल था। एक-आध मिनट मे ही दोनो व्यक्ति ढेर हो चुके थे। फिर वह वेचारी सतवती को खोजता रहा। पर वह वहाँ कही नही मिली। रात के अन्धेरे मे मालूम नही वह कहाँ लुप्त हो गयी थी।

राजो वात को अपने तक न रख पायी। गाँव में लौटकर, उसने जो कुछ देखा था किया था उसका विवरण अपने परिवार के लोगो को बता दिया। कुछ ही देर मे बात पूरे गाँव मे दावानल की भाँति फैल गयी। मृतक सुजान सिंह का छोटा भाई दीदार सिंह अपने कुछ सहयोगियों को साथ लेकर घटना-स्थल दोनों की लाशें उठवा लाया। अगले दिन बावा बकाला से पुलिस की एक टुकडी ने राणीपुर आकर मूलराम को पकड़ लिया था। तीन वर्षों तक मुलजिम मूलराम के खिलाफ मुकदमा चलता रहा। दोनों पक्षों के

गवाह अदालत में पेश होते रहे। पंडितों और सरदारों के परिवारों के बीच जबरदस्त दुश्मनी पैदा हो चुकी थी। मुकदमे के फैसले के अनुसार दो व्यक्तियों के कत्ल के अपराध में मूलराम को आजीवन कारावास हो गया। लगभग दस वर्षों उपरान्त अम्बाला-जेल में किसी रोग के कारण उसकी मृत्यु हो गयी थी। सतवती कहाँ चली गयी थी इसका कोई सुराग नहीं मिल पाया। लोगों का अनुमान था कि उस अभागी ने व्यास नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली होगी। इस प्रकार दोनों परिवारों में उत्पन्न हुई शत्रुता निरन्तर चलती रही। कभी उसका रूप उग्र हो उठता था तो कभी कुछ शान्त। तब से वर्षों तक दोनो दलों के बीच कई छोटी-छोटी बातों को लेकर आपस में झगड़े हुए लाठियाँ चली। शिवालय के बगल वाली जमीन के एक भाग को लेकर दोनों परिवारों के बीच वर्षों से मुकदमा चल रहा था।

हाँ यह अवश्य हुआ कि समय के इतने लंबे अन्तराल के उपरान्त इधर कुछ वर्षों से ऊपरी तौर पर परस्पर बदले की भावना व घृणा में कुछ कमी नज़र आ रही थी। दोनों परिवारों के लोग एक-दूसरे से मिलते, बातें होतीं, समारोह में एक दूसरे को सहयोग देते। पर यह सब कुछ मात्र दुनियादारी तथा औपचारिकता के तहत ही होता। भीतर उपजी प्रतिशोध व घृणा की अग्नि कहीं शीतल नहीं हो रही थी। दीवान चन्द थोड़ा पढ़ा-लिखा था, समझदार था। विचारों की दृष्टि से भी वह कुछ उदार था। लेकिन जोधासिंह व उसके लड़के वैसे नहीं थे। वे जब भी अपने अनुकूल कोई मौका देखते दीवान चन्द के परिवार को नीचा दिखाने के लिए तैयार हो जाते।

ज़मींदारी-उन्मूलन के बावजूद जोधा सिंह के परिवार के पास लगभग साठ एकड़ उपजाऊ भूमि थी। गाँव से कोई एक मील की दूरी पर इस परिवार का एक बाग था। सुजान सिंह की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद तक इस बाग का रूप साधारण सा था। आम, जामुन, अनार, नींबू व खट्टे आदि के बीस-पच्चीस पेड़ बेतरतीबी से उगे हुए थे। बाग के चारों ओर बनी कच्ची मुंडेर के अन्दर की ओर भाँग के पौधे फैले रहते थे। बाग के उत्तरी कोने में एक हल्टी लगी हुई थी। हल्टी रहट का ही लघु रूप होती है। इसका चरखड़ा, माहिल, टिंडें तथा अन्य उपकरण अपेक्षाकृत छोटे होते हैं। इसे एक बैल, भैंसे अथवा ऊँटनी से चलाया जाता है। यह हल्टी इतनी हल्की होती है कि बवक्त ज़रूरत आदमी दोनों हाथों से धकेल कर इसे चला सकता है। बाग में बनी हल्टी का पानी एक चौबच्चे में जाकर गिरता था। चौबच्चे से सटी हुई एक पक्की टेंकी थी जिसमें चार टोंटियाँ लगी थीं। इन टोंटियों की ऊँची धार के

नीचे लोग खडे होकर आराम से स्नान आदि कर सकते थे। समयान्तर में जोधा सिंह ने इस पुराने बाग के बिल्कुल बग़ल में एक और बडा बाग लगवा दिया था।

यह नया बाग बहुत सुन्दर है। बीच बनी वीथियों के दोनो ओर बराबर फासले पर करीने से तरह-तरह के पेड़-पौधे लगाए गये। नये बाग मे ज्यादातर वे पेड़ लगाए गये जो पुराने बाग में नही थे। तीस-बत्तीस पेड़ माल्टे के हैं। गुजरावाला ज़िला अपने माल्टों के लिए प्रसिद्ध है। वहाँ के केसरिया रग के माल्टे बेहद मीठे-रसीले होते हैं। इस बाग मे लगाने के लिए जोधा सिंह ने गुजरांवाला से माल्टे के पौध मँगवाए थे। जोधासिंह ने एक प्रयोग और किया था जो बहुत सफल रहा था। इससे पहले पंजाब मे बादाम के पेड़ कोई नहीं लगाता था। लोगों का विचार था कि पंजाब की धरती में बादाम के वृक्ष ठीक रूप मे पैदा नही हो सकते। पर जोधा सिंह ने जो प्रयोग किया वह कामयाब रहा था। उसने रावलपिंडी से कुछ दूर मरी के पहाड़ी इलाके से बादाम के पौधों की पनीरी मँगवाई। इस पनीरी को बड़े कायदे से अपने बाग में लगवाया। इन पौधो की बड़ी सावधानीपूर्वक देखभाल की। और तीन-चार वर्षों मे ही, परिणाम सामने आया। बाग मे लगे ये पचासों पेड़ मौसम आने पर बादामों के भार से झुक जाते है। माल्टे, बादाम के वृक्षों के अलावा कई पेड़ आड़ू, सन्तरे, आलूचे व खूमानी के हैं। आड़ू के पेड़ भी खूब फलते हैं। पर सन्तरे, आलूचे व खूमानी के फल आते तो है पर वे आकार मे बढ़ नहीं पाते। और न ही उनमे वह ज़ायका आ पाता है जैसा इन फलों में होता है। फलदायक पेड़ों के अलावा इस बाग़ मे कई स्थानों पर पुष्पदायक पौधे व रसवन्ती लताएँ भी द्रष्टव्य हैं। पुराने बाग के पास ही लछमनजती नाम का एक छोटा सा प्राचीन मन्दिर है। किंवदन्ती के अनुसार अपने वनवासकाल मे भगवान राम, सीता व लक्ष्मण इस इलाके में पधारे थे। कहा जाता है कि लक्ष्मनजती मन्दिर उसी स्थान पर निर्मित है जहाँ लक्ष्मणजी ने कुछ समय के लिए निवास किया था। जोधा सिंह तथा उसके परिवार के सदस्यों की इस मन्दिर के प्रति सदैव निष्ठा रही है।

खेती व बाग से जोधा सिंह को अच्छी-खासी आय हो जाती थी। कृषि के काम के आलावा वह सूद पर धन देने का धंधा भी करता। ब्याज की दर इतनी ऊँची रहती कि प्राय: धन लेने वाला व्यक्ति जीवनभर ब्याज ही चुकाता मर जाता। कोई ही ऐसा भाग्य-शाली होता होगा जो मूल व ब्याज

का भुगतान करके गिरवी रखे अपने आभूषण अथवा जमीन आदि जोधा सिंह के चंगुल से मुक्त करवाने में सफलता पा लेता। ब्याज वसूल करने के लिए वह हर प्रकार के हथकंडे इस्तेमाल करने में किसी प्रकार का कोई संकोच अनुभव नही करता। अपने इस धंधे के लिए उसने राणीपुर तथा आसपास के गाँव में अपने दलाल रखे हुए थे। जोधा सिंह के भतीजे मोहर सिंह की बलदेव से खूब पटती थी। दोनो पढ़े-लिखे थे और दोनों के विचारों में किसी सीमा तक समानता थी। यह सुखद संयोग ही था कि जमीनदार-पूँजीपति परिवार में पला यह युवक साम्यवादी विचाराधारा से बहुत प्रभावित हो चुका था। उसके विचारों को सुनकर कुछ लोग उसे उग्रपन्थी तक मानने लगे थे। जोधा सिंह उसका ताया था, उस परिवार का वह मुखिया था। इस नाते मोहर सिंह ऊपरी तौर पर उसे आदर-मान देता था। पर उसकी पूँजीवादी मानसिकता के कारण मोहर के मन में उसके प्रति रोष की भावना दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी।

अपने ताया के व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए एक बार मोहर ने अपने मित्र बलदेव से कहा था—बलदेव! सरदार जोधा सिंह मेरे ताया हैं, हमारे परिवार के सबसे बडे बुजुर्ग हैं। पर मालूम नही वे मुझे अच्छे क्यों नही लगते। जिस ढंग से वे गरीब-विवश लोगो का शोषण करते हैं उसे देखकर मेरे अन्तर्मन मे उनके प्रति घृणा बढ़ती जा रही है। हवेली के पिछले कमरे में पड़ी उनकी लोहे की आलमारी व बड़े से सन्दूक को देखकर मेरे खून की गति तेज होने लगती है, अपने आप ही दाँत पिसने लगते है। दोस्त, मेरा वश चले तो मैं उस आलमारी व सन्दूक को गाँव के चौपाल मे लाकर लोगो से तुड़वा दूं। उन निरीह निर्धन लोगो का आह्वान करते हुए कहूँ—भाइयों, इस अलमारी व सन्दूक में जो कुछ पड़ा है उस सब पर आप लोगों का अधिकार है। इसमे रखे बहीखातो में तुम्हारे ही रक्त से लिखे तुम्हारे जीवन का हिसाब-किताब पड़ा है। इसमे तुम्हारे घरों-झोंपडियों के गिरवी रखने सम्बन्धी दस्तावेज है, तुम्हारे अंगूठे लगे पचासों परनोट हैं, तुम्हारी माताओं के मंगलसूल हैं, तुम्हारी बहनो की पाजेबे हैं, तुम्हारे प्यारे अबोध बच्चों की पेंजनियाँ हैं। इसे लूट लो, यह सब तुम्हारा है, इसको लूटना, इस पर अधिकार करना कोई अपराध नही। मोहर सिंह के इस प्रकार के बेबाक विचारों व उसकी निर्भीकता की छाप किसी हद तक बलदेव के मन-मस्तिष्क पर भी पड़ती जा रही थी। मोहर की संगति उसे भली लगने लगी थी। इस बार जब वह गाँव पहुँचा था तो मोहर सिंह वहाँ नही था। वह उत्सुकता से उसकी वापसी की बाट जोह रहा था।

● ●

चार

जोधा सिंह शाहवेला (सुबह का नाश्ता) कर रहा था कि बाहर दरवाज़े पर दस्तक हुई। दस्तक सुनकर उसने चौके में बैठी अपनी बेटी तेज कौर से कहा—पुत्तर तेजी! ज़रा देखो कौन आया है। मेरा ख्याल है सरदार शंगारा सिंह होगा। अगर वही हो तो उसे अन्दर बुलाकर पसार में बैठने के लिए कहना। पिता के शब्द सुनकर तेज कौर ने गले में पड़ी चुनरी को सिर पर सलीके से ओढ़ा और जाकर दरवाज़े की कुंडी खोली। जोधा सिंह का अनुमान सही था। शंगारा सिंह ही आया था। तेज ने सत सिरी अकाल बोलने के बाद उसे भीतर आकर बैठने के लिए विनम्र भाव से कहा। शंगारा सिंह जैसे ही आँगन से होकर पसार में दाखिल होने लगा कि सामने चौके में बैठे जोधा सिंह ने उससे कहा—आ भाई शंगारे, थोड़ा शाहवेला कर ले।

शंगारा सिंह ने जोधा सिंह को तहमद-कुर्ता पहने हुए देखा, तो बोला—बस तुम जल्दी से छको (खाओ)। मैं अभी-अभी खा-पीकर ही आ रहा हूँ। मेरा ख्याल था कि अब तक तुम तैयार हो चुके होगे। पर तुम तो वैसे ही बैठे हुए हो। बस फटाफट करो और कपडे पहनकर स्कूल चलो। दूसरे मेम्बर अब तक पहुँच गये होंगे।

शंगारा सिंह पसार में आकर बड़े-बड़े रंगीन पायों वाले पलंग पर बैठ गया। दो-तीन मिनटों बाद जोधा सिंह भी वहाँ उसके पास पहुँच गया। आते ही सबसे पहले उसने दाढ़ी पर बँधा हुआ ठाठा खोला और फिर लुंगी की जगह चूड़ीदार पायजामा पहनने लगा। उसका चूड़ीदार पायजमा डोगरे पायजामे जैसी काट का था। जो लोग कभी डोगरी काट का पायजामा पहने है वे अच्छी तरह जानते है कि उसको पहनना अखाड़े में उतरने के समान होता है। ज़मीन पर बिछी दरी पर बैठे जोधा सिंह की हालत भी वैसी ही हो रही थी। एक पायंचा तो किसी तरह उसने ऊपर चढा लिया था, पर दूसरा टखने के ऊपर जाने का नाम नही ले रहा था। वह मोज़े की तरह उसे ऊपर खींचता, कभी पायंचे को हाथ से दाएँ-बाएँ करता और फिर ऊपर खींचने के लिए ज़ोर लगाता। ऐसा करते समय उसके चेहरे पर अजीब तरह की खीज नज़र आ रही थी। कुछ पलों तक तो शंगारा सिंह उसकी यह ज़ोर आजमाई देखता रहा।

पर अब उससे रहा न गया और हँसकर बोला—यह क्या बला पाले हुए हो। क्या किसी हकीम ने बता रखा है कि इस शिकन्जे में अपने आपको कसकर अपनी तन्दुरुस्ती बनाओ। क्यों नही मेरी तरह गाढ़े का तहमद बाँधते। लगता है तहमद की खूबियाँ तुम शायद नही जानते।

—वाह भाई शंगारा सिंह। तुम तो ऐसे दावा कर रहे हो जैसे तुम अकेले ही तहमद बाँधते हो। भाई मैं भी बाँधता हूँ। पर तुम्हारी तरह हर समय हर मौसम में नही। मौका देखकर मैं पोशाक पहनता हूँ। तुम्हारा क्या मतलब है कि मैं भी तुम्हारी तरह तहमद पहनकर ही स्कूल चलूँ। वहाँ एक से एक सूट-बूट पहने बी० ए०, एम० ए० लड़के आए होंगे। भाई हम लोगो ने उनसे बातचीत करनी है, उनका इन्टरव्यू लेना है। हम लोगो को भी तो उनके सामने जरा ठाठ-बाठ से रहना चाहिए।

फिर कुछ क्षण चुप रहने के बाद बंद गले का भूरे रंग का लंबा कोट पहनते हुए उसने कहा—इस लंबे कोट के साथ तो चूड़ीदार पायजामा ही फबता है। जानते हो पडित नेहरू भी मेरी तरह लंबे कोट के साथ ऐसा ही चूड़ीदार पायजामा पहनते थे। कितने जमते थे वे उस पोशाक में।

ठहाका मारते हुए शंगारे ने कहा—वाह-वाह! कितनी ऊँची बात बोल रहे हो कि पंडित जी तुम्हारी तरह कोट-पायजामा पहने थे। अबे, वे तुम्हारी तरह नही बल्कि तुम उनकी नकल कर रहे हो, तुम उनकी तरह यह कोट-पायजामा पहनकर खुद को नेहरू जी समझ रहे हो। पर मेरे यार, कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगवा तेली। बताओ कभी साबुन से धोने से कोई राणीपुरी गधा अर्बी घोड़ा बन सकता है।

जोधा सिंह ने हँसकर जवाब दिया—अबे राणीपुरी गधे, अब रेंकना बंद कर और आ स्कूल चलें। वहाँ लोग आँखें बिछाए हुए मेरा इन्तजार कर रहे होंगे। सच बताओ यार फब रहा हूँ न इस पोशाक में?

—सच भाई, खूब फब रहे हो। इस समय ऐसे जम रहे हो मानो मेरी बारात में जाने वाले हो। आ चलें। तुमने पहले ही बहुत देर करवा दी है। और यह आज की बात नही। तुम जिन्दगी भर ही लेट-लतीफ रहे हो। दुश्मनों को जब-जब नीचा दिखाने के मौके आए तब-तब तुम्हारी सुस्ती व देरी के कारण वे हाथ से निकलते रहे।

—खैर छोडो अपनी इन बिना मतलब की बातो को। काम की बात सुनो। देखो, तहसीलदार साहब ने अपने एक दोस्त के लडके लिए सिफारिश भेजी है। लड़के का नाम सन्तोख सिंह है। सिख है। चूँकि हमारा स्कूल एक

सिख वीर शहीदे आज़म भगतसिंह की याद में बना हुआ है इसलिए मैं दिल से चाहता हूँ कि स्कूल का नया हेड मास्टर भी कोई सिख ही हो। तुम्हारा इस बारे में क्या विचार है ? जोधा सिंह ने पूछा।

—मेरा विचार तुमसे कोई अलग थोड़े ही हो सकता है। जो तुम्हारा फैसला होगा वही मेरा भी होगा। हम दोनों आपस में मज़ाकबाजी में एक दूसरे का चाहे जैसा भी विरोध कर लें पर बाहर बिरादरी-पंचायत मे तो हम दोनों साथ-साथ ही रहेंगे। हम दोनो की राय एक ही होगी। पर जोधा सिंह, मेरे कानों में यह भनक भी पडी है कि चौधरी गोविन्द शाह अपने साले मदन लाल को यह नौकरी दिलवाना चाहता है। जानते ही हो कि यह गोविन्द शाह भी एक नम्बर का हरामी है। यह बाहमन का बच्चा परले दर्जे का फिरकापरस्त है। जब देखो हर छोटी-बड़ी बात मे बाहमनो का ही पक्ष लेगा। मालूम नहीं इस कमीने को उस दूसरे कमीने बाहमन दीवान चन्द से क्या मिलता है जो हमेशा उसके आगे-पीछे घूमता-फिरता है, उसकी मूँछ का बाल बना हुआ है।

—हाँ-हाँ शंगारे, तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। कहा जाता है कि बाहमन बाहमन का वैरी होता है। पर इन दोनों मे तो कहीं ऐसा कुछ नज़र नही आता। दोनों घी-शक्कर बने नज़र आते हैं। पर याद रखो, उसके साले का चुनाव हरगिज़ नही होना चाहिये। मौका देखकर सरदार गोपाल सिंह को भी धीरे से कान मे समझा देना। मैं भी इस बारे मे उसे पक्का कर दूँगा। हम सरदारो के रहते स्कूल का हेड मास्टर कोई बाहमन का बच्चा बन जाए, यह बर्दाश्त करना हमारे लिये कठिन व लज्जाजनक होगा। शंगारा सिंह ! दूसरा खटका मुझे अपने छोटे भाई प्रताप सिंह से भी है। मालूम नही दीवान चन्द के भांजे बलदेव ने उस पर कौन सा जादू कर रखा है। सुन रहा हूँ कि प्रताप उसके लिये कई सदस्यों से मिलकर बात कर चुका है।

जवाब में शंगारा सिंह बोला—भाई, मैंने भी कुछ ऐसा ही सुना है। समझ मे नही आता कि सिख होकर वह उस हन्दे (दान में मिला भोजन) खाने वाले बाहमन की पक्षदारी क्यों कर रहा है। तुम एक बार फिर उससे बात करके उसे पक्का कर देना।

अब वे दोनो स्कूल पहुँच चुके थे। स्कूल-समिति के दीगर सदस्य भी आ चुके थे। एक कमरे में वे लोग आपस में बातें कर थे। हर कोई दूसरे को पटाने की कोशिश कर रहा था। स्कूल के विशाल आहाते में टाली के पेड़ के नीचे पड़े दो बेंचो पर आठ उम्मीदवार आपस में बातें कर रहे थे। उनमे से कभी कोई हाथ मे ली अपनी फाइल के पन्ने पलटने लगता तो कोई रूमाल से

अपना मुंह पोंछ लेता, कंघी से सिर के बाल ठीक कर लेता था। अभी दो-चार मिनट पहले उन उम्मीदवारों को बताया गया था कि इन्टरव्यू कोई एक घंटे बाद शुरू होगा। यह एक घंटे का समय उन लोगों के लिए काटना मुश्किल हो रहा था।

बेंच के सिरे पर बैठा बलदेव विचारों में खोया हुआ था। वह कल्पना करके तनिक हर्षित हो रहा था कि यदि सौभाग्यवश प्रधानाध्यापक के रूप में उसकी नियुक्ति हो गई तो उसे कितना अच्छा लगेगा। तब उसके अपने इस गाँव में कितने ठाठ होंगे। तब हर कोई उसे इज्जत-मान देगा। अभी तक जो लोग उससे बात तक नहीं करते थे फिर मतलब पड़ने पर उसके आगे-पीछे घूमेंगे, अनेक तरह से उसका अभिवादन करेंगे। यह भी सम्भव है प्रीतो की निगाह में उसका स्थान कुछ ऊँचा हो जाए, वह उसे पहले से अधिक प्यार करने लगे। यहाँ नौकरी लग जाने पर उससे अक्सर मेल-मुलाकात होती रहेगी। माँ की आकांक्षा भी पूरी हो जाएगी। वह भी तो चाहती है कि उसका इकलौता बेटा उसकी आँखों के सामने रहे। इधर तीन-चार वर्षों से उसका स्वास्थ्य भी ऐसे ही चल रहा है। ऐसी दशा मे उसकी देखभाल के लिए मेरा उसके पास रहना जरूरी है।

फिर उसकी दृष्टि स्कूल की इमारत पर गयी। उसने पहली कक्षा से मिडिल तक की शिक्षा इसी स्कूल में प्राप्त की थी। उसे याद है जब वह इस स्कूल में पढ़ता था तब इसमें मात्र चार कमरे थे। प्रायः एक कमरे मे दो कक्षाओं के बच्चे बैठते थे। तब केवल हैड मास्टर का कमरा पक्का था और उस पर अंदर-बाहर पलस्तर किया हुआ था। शेष तीन कमरे पतली ईंटों के बने थे। उन तीन कमरों की खिड़कियों में चौखटें तो लगी थीं पर उन पर पल्ले नहीं थे। तब चारों कमरों के फर्श कच्चे थे और हफ्ते में एक बार स्कूल के लड़कों को गोबर से उन फर्शों की लिपाई करनी पड़ती थी। उन दिनों आठ कक्षाओं के लिये प्रायः पाँच-छः अध्यापक ही होते थे। किसी-किसी अध्यापक को एक साथ दो कक्षाओं की पढाई व व्यवस्था देखनी पड़ती थी। उन दिनों यह स्कूल किसी पाठशाला की अपेक्षा पशुओं के कांजीहाउस की तरह नजर आता था। बरसात के दिनो मे पंडितों वाले रहट अर्थात् उनके अपने रहट के पास वाले छप्पड़ का पानी स्कूल के सामने वाले रास्ते तक पहुँच जाता था। अरुड़ मल्ल की दुकान के सामने वाले कच्चे रास्ते पर बहता हुआ बरसाती पानी स्कूल के सामने से होता हुआ उस छप्पड़ मे जा मिलता था। इस तरह तीन-चार महीनों के लिए स्कूल के सामने एक छोटी-सी नहर बनी रहती थी। इस नहर

को पार करने के लिये आम की एक गेली (पटरा) रखी रहती थी। सावधानी बरतने पर भी कभी-कभी कोई लड़का नीचे पानी में गिर पड़ता था और उसके कपड़े गदले पानी व कीचड़ से गंदे हो जाते थे। पर जब से उस जगह पर छोटी-सी पक्की पुलिया बन गयी तब से ऐसी कोई घटना नही हुई। चार-पाँच वर्ष पूर्व सरकार से कुछ सहायता मिल जाने पर इस स्कूल के हुलिये में कुछ परिवर्तन आ गया। चार पक्के कमरे बन गये। पुराने कमरों की भी मरम्मत हो गयी। स्कूल के लिये कुछ मेज-कुर्सियाँ भी खरीद ली गयी।

सोचते-सोचते उसके मानस-पट पर हेड मास्टर मुन्शी दयाल सिंह की सूरत उभर आती है। इतने वर्षों बाद आज भी उसे याद करके उसे अपने शरीर में कपकपी सी होने लगती है। उफ! कैसे डरते थे लड़के उसे देखकर। नाम तो था दयाल सिंह पर उसमें दयालुता कहाँ थी। लड़के उसे भूत समझते थे। सयोगवश उसकी शक्ल-सूरत भी किसी भूत से कम न थी। उन दिनों उसकी अवस्था चालीस वर्ष के ऊपर ही रही होगी। उसका शरीर लम्बा-ऊँचा और थुलथुल था। आगे निकला पेट ऐसा लगता था मानो उल्टे घड़े को कपड़े से ढक रखा हो। आम तौर पर वह चौड़ी धारियों वाली लम्बी ढीली-ढाली कमीज के नीचे लट्ठे की फूली हुई सलवार पहनता था। सिर पर जामुनी या काले रंग की कल्फलगी पगड़ी रहती थी। मोर-पंख की तरह फैला हुआ शमला प्रायः सीधा तना रहता। पगड़ी का पीछे वाला लड़ भी डेढ़ हाथ से कम नहीं होता था। सलवार का लाल या हरे रंग का रेशमी आज़ारबंद जानबूझ कर थोड़ा बाहर लटकाए रखता था ताकि देखने वालों की नजर उस पर पड़ सके। चेचक से छलनी हुए साँवले मुख पर शेर के अयाल की तरह दाढी और बिच्छू के डंक की तरह ऊपर उठी हुई मोटी मूँछे उसकी भंगिमा को और भयानक बनाए रखती थी। हाथ में हमेशा शहतूत अथवा अनार की छड़ी रहती जिसका उपयोग अक्सर लड़कों पर होता रहता। और यदि संयोगवश कभी छड़ी न होती तो पाँव से भारी चमरौदा जूता उतारकर उसी से लड़कों की धुनाई कर देता। जूते से की जाने वाली इस प्रकार की धुनाई को वह 'चाटा-चखाना' कहा करता था। जरा-जरा सी भूल होने पर वह लड़कों को चाटा चखाने की धमकी देता रहता था। यह तो गनीमत रही कि बलदेव को केवल दो वर्ष उससे पढना पड़ा। जब वह कक्षा छः पास करके सातवी में आया या तभी मुन्शी दयाल सिंह की उस स्कूल में नियुक्ति हुई थी। गत माह एक वस-दुर्घटना मे उसकी मृत्यु हो गयी थी। उसकी मृत्यु के परिणामस्वरूप रिक्त हुए स्थान पर नियुक्ति हेतु ही बलदेव साक्षात्कार के लिए आज स्कूल आया हुआ

था। स्वर्गीय दयाल सिंह सरदार जोधा सिंह की पत्नी का कोई दूर का रिश्तेदार था। अपने कार्यकाल में उसे जोधा सिंह से हर प्रकार का सहयोग व समर्थन मिलता रहा था।

बलदेव के विचारों का सिलसिला अचानक टूट गया। उसके बग़ल में बैठे टेरीवूल का गहरे नीले रंग का सूट पहने व गले में नेकटाई लटकाए हुए युवक ने उससे कहा—लगता है इन्टरव्यू बहुत देर में शुरू होगा। दस बजे का समय दिया था और अब बारह बजने को है। मालूम नहीं ये मेम्बर लोग भीतर घुसे कौन सा पहाड़ तोड़ रहे हैं। मुझे तो लगता है कि यह इन्टरव्यू दिखावा मात्र ही होगा। जिस किसी एक का चुनाव करना है उसी के बारे में ही आपस में बहस कर रहे होंगे। यह गाँव और यहाँ का यह स्कूल भी मुझे फटीचर सा ही लगता है। यहाँ आकर नौकरी करना चिड़ियाघर में फँसने वाली बात ही है।

—मेरे भाई, गाँव तो फिर गाँव ही होता है। देश के दीगर गाँवों की तरह यह भी वैसा ही है। रहा स्कूल तो वह हमारे सामने है। दरअसल जगह का चुनाव अपनी-अपनी पसन्द की बात होती है। किसी को शहरों की चहल-पहल, शोर-शराबा व तरह-तरह की जगमगाहट अच्छी लगती है तो किसी को गाँव का शान्त, प्राकृतिक व सादा माहौल रुचता है। रही चिड़िया घर में फँसने की बात, तो भाई आप क्यों फँसने के लिये चले आए। अच्छा होता किसी बड़े सिटी में ही ट्राई करते।

—ट्राई करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। मैं तो आलरेडी जालन्धर में डी० ए० वी० हाई स्कूल में काम कर रहा हूँ। वहाँ असिस्टेन्ट टीचर हूँ। यहाँ हेड मास्टर की पोस्ट है। इस पोस्ट का अपना रुतबा होता है रौब होता है। बस इसी मोह से आया हूँ। आप कहाँ से तशरीफ लाए हैं?

—आया तो मैं भी शहर से ही हूँ, गुरु की नगरी यानी अमृतसर से। पर मैं हूँ इसी गाँव का ही। यह स्कूल जो आपके सामने है इसी में मैं मिडिल तक पढ़ा हूँ।

बलदेव के ये शब्द सुनकर सामने वाले बेंच पर बैठा कोई दूसरा उम्मीदवार बोला—इसका मतलब यह हुआ कि हम लोगों का यहाँ आना बेकार हुआ। जब आप इसी गाँव के हैं, इसी स्कूल के स्टूडेन्ट रहे हैं तो यकीनन आपको ही चुना जाएगा।

उस उम्मीदवार के साथ बैठे एक सिख नौजवान ने कहा—आप कैसे गारन्टी कर सकते हैं। हो सकता है हम आप में से कोई इनसे ज्यादा क्वाली-

फाइड हो या उसके पास कोई तगड़ी सिफारिश हो। फिर यह क्यों भूल रहे है कि घर का जोगी जोगडा बाहर का जोगी सिद्ध। चूंकि यह हुजरत इसी गाँव के हैं इसलिये काफी सम्भावना है कि इनका विरोध करने वाले भी इस गाँव मे हों।

उस सिख युवक के ये शब्द सुनकर बलदेव को लगा जैसे किसी ने उसके हृदय पर कोई सुई चुभो दी हो। उसने चौंकते हुए उससे कहा—जनाब आपका ऐसा सोचना बहुत हद तक सही हो सकता है। मेरा विरोध करने वाले इस गाँव मे ही नही बल्कि इस चुनाव-समिति में भी उपस्थित है। वैसे वाई दा वे आपका शुभ नाम क्या है। इस वक्त आप कहाँ कार्यरत है?

उस सिख युवक ने अपने दाएँ हाथ से अपनी मूंछों को तनिक सहलाते हुए जवाब दिया—बंदे को सन्तोख सिंह कहते है। अंग्रेज़ी में एम० ए० हूँ। तहसीलदार सरदार रजिन्दर सिंह मेरे अंकल है। मेरी तो यहाँ आने की कोई खास इच्छा नही थी। पर तहसीलदार साहब के दबाव डालने पर मुझे आना पड़ा। उन्होने थोडा विश्वास दिला रखा है कि शायद मेरा यहाँ काम बन जाए।

बलदेव ने तनिक आँखें झपकाते सिर हिलाते हुए उससे कहा—अब समझा कि अभी जो आपने घर का जोगी जोगड़ा और बाहर का जोगी सिद्ध वाली बात क्यों कही थी, उसका वास्तविक आधार क्या था। तो आप हुजरत ही हैं वह सिद्ध जोगी। चलिये सिद्ध योगी जी महराज; हमारी दुआएँ आपके साथ हैं।

सन्तोप सिंह की बात सुनकर कुछ क्षणों के लिए बलदेव को लगा कि अब उसका चुना जाना शायद मुश्किल हो गया है। तहसीलदार रजिन्दर सिंह का सिफारिश रूपी चाकू उसके पत्ते को काट फेंकेगा। पर तभी उसे अपने भीतर से कोई संकेत सा मिला। उसने मन ही मन स्वयं को कहा कि साक्षात्कार तो महज दिखावा है, एक प्रकार का सदस्यों का तमाशा है। ये सभी उम्मीदवार मन में जो आशाएँ और विश्वास पाले यहाँ बैठे हुए है अभी घंटे-दो घंटे बाद मुँह लटकाए हुए खाली हाथ अपने-अपने घरों को लौट जाएँगे। तहसीलदार की सिफारिश रखी की रखी रह जाएगी। किसमें इतना बूता व साहस है जो स्कूल के सचिव सरदार प्रताप सिंह व मेरे मामा पडित दीवान चन्द की बात का विरोध कर सके। थोडा खतरा सरदार जोधा सिंह व उसका चमचा शगारा सिंह पैदा कर सकते हैं। पर यह भी तो हो सकता है कि वे मेरे नाम का विरोध करने म संकोच करे। जोधा सिंह की दुश्मनी मामा जी व उनके लड़कों से हो

सकती है मेरे साथ तो नही । मैंने आज तक कभी उसका अनादर नही किया, कभी कोई अपशब्द नही बोला । मुझे तो भरोसा है कि वह यदि मेरा पक्ष नही लेगा तो विरोध भी नही करेगा । खैर देखा जाएगा, बिना मतलब चिन्ता करने से क्या होने वाला है। दो-चार घंटे में ही दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा, चुनाव का परिणाम सामने आ जाएगा ।

साक्षात्कार मे अधिक समय नही लगा । दो घंटे में ही आए उम्मीदवारों से पूछताछ कर ली गयी । अब प्रधानाध्यापक के कक्ष में सदस्यों का आपस में बहस-मुबाहिसा चल रहा था । स्कूल समिति के अध्यक्ष लाला हीरालाल बतरा बडे सुलझे हुए व्यक्ति थे । वर्षों से जोधा सिंह व दीवान चन्द के परिवारो के बीच जो दुश्मनी चली आ रही थी उसके लगभग सभी पक्षों से वे भली-भाँति परिचित थे । किसी ओर लगाने-बुझाने का काम उन्होंने आज तक कभी नही किया था । बल्कि जब भी उन्हे मौका मिलता वे दोनों पक्षों के बीच मेल-मिलाप करवाने का ही प्रयास करते । उनकी ईमानदारी पर किसी को शक नही था । पर लाला जी अभी तक खामोश बैठे हुए थे । वे सभी सदस्यों के विचार सुन लेने के उपरान्त ही अपनी राय देना चाहते थे । हाँ उन्होंने मेम्बरों से इतना निवेदन जरूर कर दिया था कि जो भी बात वे कहना चाहें यहाँ सबके सामने कहें, कही खुसर-फुसर व कानाफूसी करने की जरूरत नही ।

अभी तक हुई बहस से सरदार जोधा सिंह ने अनुमान लगा लिया था कि तराजू का पलड़ा पंडित दीवान चन्द के भाजे बलदेव प्रकाश की ओर ही झुक रहा है । उसे इस बात से भी दुख हो रहा था कि स्कूल-समिति का सचिव उसका अपना छोटा भाई प्रताप सिंह भी उसके सुझाव का समर्थन नही कर रहा बल्कि बेसिर-पैर के दो-चार शब्द बोलकर गहरी चुप्पी मार लेता है । उसके इस प्रकार के रुख से उसे साफ लग रहा था कि वह भी भीतर से बलदेव का ही पक्ष ले रहा है । स्थिति की पूरी तरह जायजा लेने के बाद उसने अपना आखिरी भरोसेदार तीर छोड़ना ही उचित समझा । उसे मन मे विश्वास था कि चूंकि समिति के अधिकांश सदस्य सिख है इसलिये बहुत सम्भावना है कि उसके द्वारा छोड़ा यह अन्तिम अस्त्र अपना प्रभाव दिखा दे ।

उसने तनिक गम्भीरता ओढते हुए कहा—स्कूल की कमेटी के मेम्बरो से मेरी प्रार्थना है कि यह स्कूल एक महान सिख वीर शहीद भगत सिंह की पवित्र याद में खोला गया था। भगत सिंह सिख पंथ के अनुयायी थे । इस स्कूल को बनाने व चलाने में दूसरे लोगों से कही ज्यादा मदद सिखो ने की है । इस स्कूल के पहले हेडमास्टर स्वर्गवासी मुन्शी दयाल सिंह भी सिख थे ।

मेरा यह सब कहने का मतलब यह है कि आज तक स्कूल मे सिख-पंथ की परंपराओ का निर्वाह होता रहा है और आगे भी इसका पालन होना चाहिये। मेरा यह सुझाव है कि आए हुए सभी उम्मीदवारो मे सन्तोख सिंह सबसे ज्यादा पढा है, वह अंग्रेजी मे एम० ए० पास है। मुझे मालूम है कि वह पूरी तरह धर्मनिष्ठ सिख है। सन्तोख सिंह की तहसीलदार साहब ने सिफारिश भिजवाई है। इस स्कूल के लिये और गाँव के अनेक कामो के लिये हमे तहसीलदार साहब की मदद की जरूरत पड सकती है। उनकी सिफारिश को नकारना ठीक न होगा। इसलिये सभी मेम्बरो से प्रार्थना करता हूँ कि स्कूल के हेड मास्टर का पद सरदार सन्तोष सिंह को ही देने का फैसला ले।

जब जोधा सिंह यह सब बोल रहा था तब लगभग सभी सदस्य आँखें बचाकर एक दूसरे की ओर देख रहे थे, चेहरे पर तनिक हल्की सी मुसकान लाकर आँखों ही आँखों से कुछ संकेत कर रहे थे। अधिकांश सदस्य उसके इस चालाकीभरे भाषण का मतलब समझ रहे थे। उन्हें लग गया था कि जोधासिंह हिन्दू-सिख का सवाल खड़ा करके अपने मन की बात सब पर थोपना चाहता है।

जोधा सिंह के बाद शंगारा सिंह ने बोलना शुरू किया। वह बडे उत्साह व जोश से जोधा सिंह के सुझाव का समर्थन कर रहा था। बोलते समय उसके मुँह से निकल रहे थूक के कण हवा में दिखाई पड़ रहे थे। सभी सदस्य उसकी भाव-भंगिमा को देखकर कुछ चकित से हो रहे थे। वे सोच रहे थे कि इस छोटी सी बात को कहते हुए वह बार-बार अपनी मुट्ठियाँ क्यो भीच रहा है।

अब तक चौधरी गोबिन्द शाह सदस्यों की मनोभावनाओं को पढ़ चुका था। माहौल का जायज़ा लेने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि यहाँ उसकी दाल गलने वाली नही। उसने अपने साले मदनलाल के पक्ष मे बोलने का विचार छोड़ दिया। पर वह पंडित था, ब्राह्मण था। वह नही चाहता था कि पंडितों के जानी दुश्मन जोधा सिंह का कोई सम्बन्धी या परिचित हेड मास्टर होने पाए। अत: सोच विचार करके उसने अपनी बात पंडित दीवान चन्द के भांजे बलदेव प्रकाश के पक्ष मे कही। बेशक गोविन्द शाह अपने विद्यार्थी-जीवन में दो बार फेल होकर भी मैट्रिक पास नहीं कर पाया था पर बाद मे उसके मन में पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में रुचि पैदा हो गयी थी। वह देश के सामाजिक व राजनीतिक हालात को किसी सीमा तक समझता था। उसने जोधा सिंह के सुझाव का खुलकर विरोध करते हुए कहा—मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि सरदार जोधा सिंह जी हिन्दू-सिख

का सवाल उठाकर स्कूल के माहौल को गंदा कर रहे हैं। हमारे देश में सैकूलर सरकार है। कानून के तहत धर्म के नाम पर लोगों को भड़काना-बरगलाना अपराध है। हम जोधा सिंह जी जैसे सुलझे हुए बुजुर्ग से इस तरह की बातों की आशा नही करते थे। मैं समझ नही पा रहा कि हेड मास्टर के चुनाव के लिए वे शहीद भगत सिंह का नाम क्यों ले रहे है। बेशक शहीदे आज़म भगत सिंह एक सच्चे सिख थे। लेकिन सिख होने से कहीं ज्यादा वे निष्ठावान भारतवासी थे। राष्ट्र उनके लिए सबसे बड़ा था। उनका कहना था कि जब देश ही नहीं होगा तो अपना धर्म कहाँ रह पाएगा। इतिहास गवाह है कि धर्मनिष्ठ होते हुए भी उन्होंने देश-निष्ठा को प्राथमिकता दी। देश की आज़ादी के लिए क्रांतिकारियों का पथ अपनाने के लिए उन्हे अपनी वेश-भूषा बदलनी पड़ी थी। वे गुप्तचरों व पुलिस द्वारा पहचाने न जा सकें इसके लिए उन्होंने अपने केश कटवाकर सिर पर फेल्ट हैट लगानी शुरू कर दी थी।

अब तक खामोश बैठे समिति के अध्यक्ष लाला हीरालाल बतरा ने चौधरी गोविन्द शाह की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा—यह सच है कि भगतसिंह जी के लिये देश पहले था धर्म बाद मे। दरअसल वे देशसेवा को, मानव-सेवा को ही सच्चा धर्म मानते थे। वे हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई आदि शब्दों से बहुत ऊपर उठ चुके थे। वे धर्म के वास्तविक अर्थ जान चुके थे। लगता है सरदार जोधा सिंह जी शहीदे आज़म के सम्बन्ध में पूरी जानकारी नहीं रखते। खैर अब मेरा आप सबसे यह निवेदन है कि जिस उम्मीदवार के पक्ष मे आपने अपने मन में निर्णय लिया हो कृपा करके गुप्त रूप से एक पर्ची पर उसका नाम लिखकर मुझे दें।

वहाँ उपस्थित बारह सदस्यों ने जल्दी से पर्ची पर अपने उम्मीदवार का नाम लिखकर अध्यक्ष को दे दिया। अध्यक्ष ने तुरन्त पर्चियों को पढ़कर बलदेव प्रकाश के नाम की घोषणा कर दी। परम्परा के अनुसार सब सदस्यों ने ताली बजाकर अध्यक्ष के निर्णय का स्वागत किया। सभी सदस्य मन ही मन समझ रहे थे कि यह निर्णय पंडित दीवान चन्द की विजय का प्रतीक है और जोधा सिंह को मात खानी पड़ी है। पर तब अपनी इन भावनाओं को व्यक्त करना किसी भी तरह से उचित नही था। सब लोग जलपान करने के उपरान्त अपने-अपने घर को चले गये।

● ●

पांच

इन्द्र सिंह पंडित दीवान चन्द का सबसे बड़ा बेटा था। उसे बचपन में ही सिख-धर्म की दीक्षा दी गयी थी। अब उसकी उम्र पच्चीस-छब्बीस वर्ष की हो चुकी थी। उसका व्यक्तित्व सपाट न होकर कदरे उलझा हुआ था। जन्म से वह ब्राह्मण था। ब्राह्मण परिवार में रहता था। पर उस पर अपने परिवार के संस्कारों की छाप अपेक्षाकृत बहुत कम पड़ पायी थी। लोगों की धारणा थी कि चूंकि वह सिख यार-दोस्तों की संगति में अधिक रहता है इस कारण वह उनकी आदतों व संस्कारों से प्रभावित होता रहता है। उसके पिता दीवान चन्द का उठना-बैठना प्रायः भले लोगों में ही होता था। दीवान चन्द कुछ पढ़ा-लिखा भी था। अपनी मान-मर्यादा तथा स्वाभिमान की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी तक लगा देने को तैयार हो जाता था। गांव के लोग भी उसे उचित आदर-सत्कार देते थे। पर ऐसा कुछ इन्द्र सिंह के साथ नही था। इन्द्र सिंह स्वयं जरायमपेशा प्रवृत्ति का नही था। पर उसे दूसरों के लड़ाई-झगड़ों, चोरी-डाके, अपहरण, प्रेम-काण्ड व अन्य प्रकार के अपराधों के वृत्तांत सुनने में बड़ा रस मिलता था। दीवान चन्द स्वभाव से शान्त व शान्ति-प्रिय था, झगडे-फसाद को मिटाने की कोशिश करता था। पर उसका बड़ा बेटा उसका बिल्कुल उल्टा था। इधर की उधर लगाकर, जलती आग मे घी डालकर व दो पक्षों को अच्छी तरह लड़वाकर उसे सुख की अनुभूति होती थी। जोधा सिंह व उसके लड़के इन्द्र सिंह की इस प्रकार की दुर्बलताओं को भली प्रकार से समझते थे। वे कोशिश भी करते कि उसे किसी तरह भड़काकर किसी बडे जुर्म मे किसी डाके या कत्ल के मामले में फँसा दे। लेकिन अभी तक उन्हे कोई सफलता नही मिल पायी थी। बुद्धि से इन्द्र कही कमजोर नही था। वह जोधा सिंह के खानदान के बच्चे-बच्चे को जानता था, उनके स्वभाव को पहचानता था। जोधा सिंह परिवार के प्रत्येक हरबे-पैन्तरे को वह पहले से ही ताड़ लेता था। उसे मन मे पूरा भरोसा था कि उन लोगों का वार उसके पिता, भाइयों अथवा उसके फूफेरे भाई बलदेव पर कभी चल सकता है लेकिन उस पर नही।

इन्द्र सिंह मे कुछ कमजोरियाँ रही होंगी। पर अपने परिवार के दायित्वो

को निभाने में तथा खेती सम्बन्धी कार्यकलापों की देखभाल करने में वह कभी कोई कोताही नहीं करता था। बल्कि इस मामले में वह अपने पिता व भाइयों से थोड़ा आगे ही रहता था। खेती के औज़ार खरीदना, पुराने उपकरणों की मरम्मत करवाना, खाद खरीदना तथा अनाज आदि बेचने के लिए उसे मंडी पहुँचाना, इस प्रकार के काम ज्यादातर उसके ज़िम्मे ही रहते थे।

स्वभाव व आदतों से वह जैसा भी था पर उसका व्यक्तित्व दर्शनीय था। कद छः फुट से ऊपर ही निकलता था। नख-शिख तीखे तथा लुभावने थे। चेहरे का रंग तांबे की तरह था और उस पर एकदम झीनी सी सिलेटी रंग की परत चढ़ी हुई थी। मोटी-चमकीली आँखों के नीचे उठी हुई नाक कुछ लम्बी थी। तनी हुई मूँछों के नीचे ज़रा मोटे पर पुष्ट होंठ देखने में आकर्षक लगते थे। चेहरे-मोहरे से वह भोला-भाला सीधा व्यक्ति ही लगता था। देखने पर कहीं नहीं लगता था कि वह अपराध-प्रवृत्ति का व्यक्ति है। कोई भी मौसम हो वह आम तौर पर तहमद और घुटनों तक आता लम्बा कुरता ही पहनता था। खेतों में काम करते समय, रहट पर तथा सुबह-शाम घर पर वह खद्दर के कुरते में ही नज़र आता पर यार-दोस्तों की महफ़िल में, गुरुद्वारे-मन्दिर में, मेले-त्योहारों जैसे अवसरों पर वह सिल्क का कुरता व पट्टेदार तहमद पहने रहता। पाँव में नर्म चमड़े के बादामी रंग के देशी जूते रहते। हाथी की सूँड की तरह उठी हुई जूते की अगली नोक पर पीला या गुलाबी रंग का छोटा सा रेशमी डोरे का फूल लगा रहता। जूते नर्म रहें इसके लिये उन्हें प्रायः तेल से चुपड़ता रहता।

पैसे का अभाव उसने ज़िन्दगी में कभी देखा नहीं था। बड़ा बेटा होने के कारण उसे माता-पिता का लाड़-प्यार भी मिला था। अपने से कहीं अधिक अपने यार-दोस्तों के खातिर पैसा खर्च करके उसे ज्यादा खुशी हासिल होती थी। धन को वह आने-जाने वाली माया समझता था। कभी-कभी दोस्तों को हँसी की मुद्रा में कह भी देता था कि रुपया-पैसा तो हाथ का मैल होता है, भगवान करे मेरे दोनों हाथ हमेशा मैले ही रहें। स्वभाव से मज़ाकिया था। कभी-कभी अनजाने में गंदे-अश्लील मज़ाक भी कर जाता था। पर जानबूझ कर अपने दोस्तों व परिचितों को परेशान नहीं करता था। किस समय उसमें अक्खड़पन आ जाए, बिना कोई विशेष कारण किसी ज़िद को पकड़ ले अथवा कोई सनक सवार हो जाए, इसका अनुमान लगाना घर के व बाहर के लोगों के लिये मुश्किल हो जाता था।

वह उम्र के उस भाग में पहुँच चुका था जिसमें आम तौर पर ब्याह आदि

हो जाता है। पर मालूम नही किस धारणा के तहत वह अभी तक स्वयं को विवाह-सूत्र मे बंधने से दूर रह रहा था। उसके लिये दो-तीन जगह शादी की बातचीत चली भी, माता-पिता व भाइयो ने उसे मनाने की कोशिश भी की, पर वह बात को टालता रहा, हँसी में उड़ा देता रहा। एक बार हँसी के मूड मे उसने बलदेव से कहा भी था—बलदेव तुम अपना ब्याह करवाओ, कहीं जीते का इन्तजाम कराओ, मेरी चिन्ता छोड़ दो। मैं तो जंगली घोड़े की तरह आजाद रहना चाहता हूँ, किसी के खूंटे पर बंधकर रहना मेरे लिये मुश्किल होगा। दीवान चन्द व उसकी पत्नी लक्ष्मी देवी उसकी इस सनक का कारण समझ नही पा रहे थे।

स्कूल से पचास-साठ गज की दूरी पर सरदार शब्देश सिंह के शफाखाने के बिल्कुल बगल वाले पक्के मकान में सरदार वरियाम सिंह जेतली रहता है। बचपन से ही उसके दीवान चन्द के साथ बड़े दोस्ताना सम्बन्ध रहे हैं। मकान के बाहरी भाग में उसकी किराने की दूकान है। दूकान के अलावा राणोपुर गाँव से लगभग एक मील की दूरी पर उसका ईंटों का भट्टा है। भट्टे का काम उसके दोनो लड़के देखते हैं। बड़े बेटे सोभा सिंह का ब्याह हुए तीन वर्ष हो चुके हैं और वह एक बच्चे का पिता है। छोटा गुरनामसिंह अभी जालधर मे इन्टर मे पढ रहा है। वह अभी कवाँरा है। सरदार वरियाम सिंह की एक मात्र बिटिया बसन्त कौर अब ब्याह-योग्य हो चुकी है। बसन्त कौर को हर कोई वसन्ती कहकर ही बुलाता है। बसन्ती की आयु अभी अठारह वर्ष के ऊपर नहीं हुई है। हालाकि पंजाब मे सरदारों-जाटों मे आम तौर पर लड़की का विवाह बीस-बाईस वर्ष की उम्र होने पर ही किया जाता है पर वरियाम सिंह व उसकी पत्नी बेटी की जिम्मेदारी से जल्दी से जल्दी मुक्त हो जाना चाहते थे।

अभी कुछ माह पहले वरियाम सिंह अपनी पत्नी हरदई के साथ दीवान चन्द के घर पर आया था। दोनो पति-पत्नी चाहते थे कि बसन्ती का ब्याह इन्द्र सिंह से हो जाए। अपनी दो-एक कमजोरियों के बावजूद इन्द्र सिंह उन्हे हर प्रकार से पसन्द था। इन्द्र सिंह मे उन दोनों की रुचि का एक विशेष कारण और भी था। बसन्ती की सहेली छल्लो से बातों-बातो मे हरदई को पता चला था कि बसन्ती इन्द्र सिंह में दिलचस्पी रखती है, वह उसे पसन्द है और अगर कभी उसका ब्याह उससे हो गया तो वह अपने आपको बड़ी भाग्यशाली समझेगी। बसन्ती ने ही छल्लो के माध्यम से अपनी माँ को बात चलाने के लिये प्रेरित किया था। वरियाम सिंह व हरदई दीवान चन्द परिवार के

आर्थिक व सामाजिक रुतबे को अच्छी तरह से जानते थे। उन्हें विश्वास था कि उस घर में जाकर उनकी बेटी सुख से जीवन व्यतीत करेगी। परिवार की बड़ी बहू का दर्जा उसे प्राप्त होगा।

वरियाम सिंह ने कुछ देर तक अपने गाँव की राजनीति सम्बन्धी इधर-उधर की बातें करने के बाद अपनी इच्छा को व्यक्त करते हुए कहा—भाई दीवान चन्द ! एक बात कई दिनों से मेरे मन में आ रही है। पर वैसे ही संकोचवश कह न पाया। बसन्ती की बीबी के बहुत जोर देने पर आज वह बेनती करने आया हूँ।

—अरे भाई वरियाम सिंह ! बेनती किस बात की। तुम आज्ञा दो। क्या आज तक मैंने तुम्हारी किसी बात से मुँह मोड़ा है। तुम इस घर के लिये, मेरे लिये कोई गैर थोडे ही हो। क्या मेरे किसी बच्चे से कोई बदकलामी या गलत हरकत हुई है ? जो बात कहना चाहो, बिना किसी संकोच के कहो।

—तुम्हारे बच्चे मेरे साथ कोई बदकलामी क्यों करेंगे। वे तो हमेशा मुझे आदर सत्कार देते हैं। जब भी कहीं मिलते हैं हाथ जोड़कर सत सिरी अकाल बोलते हैं। भाई, बसन्ती अब ब्याह योग्य हो गयी है। बेटी चाहे लाख भली हो पर जब तक वह ससुराल नहीं चली जाती तब तक वह माता-पिता के सिर पर जिम्मेदारी व चिन्ता का भारी बोझ बनी रहती है। मैं चाहता हूँ कि बसन्ती का संबंध किसी दूसरे गाँव में करने के बजाए यदि अपने ही गाँव में हो जाए तो कहीं अच्छा रहेगा। वह हमारी आँखो के सामने रहेगी। मेरा कहने का मतलब यह है कि हम दोनों बचपन के मित्र हैं, एक-दूसरे के खानदान को अच्छी तरह से जानते हैं, इतने वर्षों में साथ-साथ रहने पर भी कभी किसी बात को लेकर जरा सा भी मन-मुटाव नहीं हुआ। गाँव की सभाओं-समारोहों में एक-दूसरे को सहयोग दिया है हाथ बटाया है।

—वरियाम सिंह तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। बल्कि सच्ची बात तो यह भी है कि दुश्मनों ने बहुत हाथ-पाँव मारे, एक-दूसरे के कान भरे। पर उनके ये हरबे हम दोनों के बीच तनिक सी दरार भी पैदा न कर पाए। भगवान करे यह अच्छे सम्बन्ध मेरे-तुम्हारे तक ही नहीं बल्कि बाद में हमारे बच्चों के बीच भी कायम रहें।

—वाह ! दीवान चन्द, यही तो मैं भी चाहता हूँ। जो बात मैं कहने आया हूँ वह ऐसे ही सम्बन्धों को और अधिक मजबूत करने के लिये ही है। इस मकसद को पूरा करने के लिये अगर हम रिश्तेदारी के सूत्र में बँध जाते हैं तो कितना अच्छा रहेगा। इन्द्र सिंह हमें पूरी तरह से पसन्द है। बसन्ती भी

तुम लोगों की देखी-भाली है। मैं समझता हूँ वह हर प्रकार से इस घर की बहू बनने योग्य है। स्वभाव से वह बड़ी सीधी है। दूसरों की सेवा-सहायता करने के लिये वह हरदम तैयार रहती है। उसके पिता के नाते मेरी आप लोगों से बेनती है कि बेटे इन्द्र सिंह के लिये उसका रिश्ता स्वीकार करें।

—भाई वरियाम सिंह ! तुम्हारी यह बात मेरे सिर-माथे है। इस रिश्ते के लिये तुमसे बढ़कर इस गाँव में कौन है। हम दोनों तुम्हारे परिवार को जानते है, उसकी परम्पराओं व मर्यादाओं से परिचित हैं। तुम लोगो से नाता जोड़कर हमारी बाहें मजबूत होंगी। पर भाई, पता नही इन्द्र के दिमाग़ में कौन-सी सनक घुसी हुई है कि विवाह के नाम से दूर भागने लगता है। जब भी उससे इस बारे में बात की है उसने हँसकर कोई न कोई बहाना बनाकर उसे उड़ा दिया है। खैर अब तुम दोनों मेरे ग़रीबखाने पर यह रिश्ता लेकर आए हो इसका मुझे लिहाज है। मैं एक बार फिर उससे बात करूँगा, उसे यह सम्बन्ध स्वीकार करने के लिये विवश करूँगा। भगवान ने चाहा तो हम दोनों की मनोकामना पूरी होगी।

इसी बीच उधर दूसरे कमरे में हरदई और लक्ष्मी में भी इस सम्बन्ध में बातें होती रहीं। पति की तरह लछमी भी चाहती थी कि उसका बेटा इस बात को मान ले और बसन्ती इस घर की बहू बन जाए। उसने भी हरदई को विश्वास दिलाया कि वह अपने बेटे को मनाने के लिये हर प्रकार से चेष्टा करेगी। दोनों की बातें सुनकर वरियाम सिंह व हरदई प्रसन्न व सन्तुष्ट होकर अपने घर लौटे।

उन दोनों के जाने के बाद दीवान चन्द ने पत्नी से कहा—लछमी ! इस तरह के प्रस्ताव बड़े सौभाग्य से आते है। वरियाम सिंह के खानदान में, उसकी बेटी में किसी तरह की कमी नही।

—तुम कमी की बात करते हो। वह लड़की तो बड़ी गुणवती व सुघड़ स्वभाव की है। इन्द्र चिराग लेकर ढूँढ़ता रहे तो बसन्ती जैसी लड़की कहीं नही मिलेगी।

—यही तो मैं कहता हूँ। पर उस हरामजादे की खोपड़ी में पता नहीं कौन सी बात घुसी हुई है। बिना मतलब ज़िद पर अड़ा हुआ है। लछमी ! मुझे तो लगता है कि उसे उसके यार-दोस्तों ने चौपट कर रखा है। उन नकारे-आवारों की संगति का ही यह नतीजा है। रुपया-पैसा तो उसके हाथ में रहता ही है। कहीं बाहर जाकर न झक मारता-फिरता हो। खैर अब मुझे उसके

साथ सख्ती से पेश आना होगा, उसे मनाना ही होगा। वरना वरियाम सिंह व उसके घर के लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे।

पति के भाव को समझते हुए लछमी ने कहा—एक बात और है जिस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। ये लोग यह प्रस्ताव लेकर जोधा सिंह के पास भी जा सकते है। उसके लडके भी जवान हैं। पर वे उसके पास नही गये। उनको छोडकर वे हमारे घर पर आये है। उनको हमारा खानदान ऊँचा लगता है। और यह बात याद रखो कि अगर ईश्वर की दया से यह बात पक्की हो गयी तो जोधा सिंह व उसके बेटो के मुँह इत्ते से हो जाएँगे। उनके दिलों पर साँप लोटने लगेंगे। हमारे दुश्मनों को गहरी चोट लगे इसलिये भी मैं यह सम्बन्ध बनाना चाहती हूँ।

—बिल्कुल ठीक कहती हो। मेरा भी तो यही विचार है। फिर वरियाम सिंह जोधा सिंह की तरह फिराकापरस्त-कट्टर सिख नही है। वह बड़े खुले विचारो का है। शायद तुम्हे पता न हो कि दो पीढ़ी पहले तक उसका परिवार भी हमारी तरह ब्राह्मण ही था। जेतली जात ब्राह्मणों की होती है।

पति-पत्नी अभी बातें कर ही रहे थे कि इन्द्र सिंह घर में प्रविष्ट हुआ। आते ही लछमी से बोला—माँ ! ये सरदार वरियाम सिंह और उसकी औरत हमारे यहाँ क्यों आए थे। अभी-अभी वे दोनों अपनी गली के मोड़ पर मुझे मिले है।

पूर्व इसके कि लछमी कुछ बोल पाती दीवान चन्द ने कहा—वे बड़ी आस से अपनी बेटी बसन्ती का रिश्ता लेकर आए थे। वे दोनो बहुत ज़ोर डाल रहे हैं कि हम तुम्हारा ब्याह उनकी बिटिया से कर दें। बेटा, सच पूछो तो यह सम्बन्ध हम दोनों को भी पसन्द है। लड़की अपने ही गाँव की है, अच्छी तरह से देखी-भाली है, शक्ल-सूरत से भी बहुत अच्छी है। तुम्हारी माँ को भी हर तरह से पसन्द है। और मैं समझता हूँ कि तुम्हे भी पसन्द ही होगी।

—वह लडकी किसे अच्छी नहीं लगेगी। उसमें कोई कमी नहीं है। चाचा वरियाम सिंह भी भला आदमी है, इज़्ज़तदार है। पर भाया (पिता) मेरी मर्जी नही है। मैं ब्याह-शादी के झंझटो मे पडना नही चाहता। मुझे तुम लोग ऐसे ही रहने दो। जैसे मैं इस समय हूँ उसी मे खुश हूँ।

उसको बात सुनकर लछमी ज़रा प्यार दर्शाती हुई बोली—पर पुत्तर ज़िन्दगी ऐसे नही काटी जा सकती। औरत ही आदमी के दुख-सुख की सबसे बड़ी भागीदार होती है। फिर यह भी सच है कि अब घर का काम-धंधा

मुझ अकेली से नही हो पाता । बहू आ जाएगी तो मुझे भी कुछ सहूलियत रहेगी, मेरी भी सेवा-टहल होगी ।

माँ की बात सुनकर इन्द्र सिंह ने तनिक मुस्कुराते हुए कहा—बहू ही चाहिये तो जीते का, तेजे का व्याह कर दो । तुम्हारी मन की इच्छा पूरी हो जाएगी ।

बेटे के ये शब्द सुनकर दीवान चन्द का मुख तमतमा उठा । उसने अक्रोश भरे लहजे मे कहा—मैं तुम्हारी सब चालबाजी समझता हूँ । तुम साले हरामी, तुम इधर-उधर झक मारना चाहते हो । आवारा-शोहदे लड़को के साथ रह-रह कर तुम भी आवारा-गुडे बनते जा रहे हो । यह तुम्हारी मित्र-मडली तुम्हे ले डूबेगी । उन सालों के साथ शहर तो जाते ही रहते हो । क्या मालूम वहाँ जाकर क्या-क्या खुराफात-बदमाशियाँ करते होगे ।

—भाया ! तुम बिना मतलब मुझ पर शक कर रहे हो, दोष लगा रहे हो । बस सौ बात की एक बात, मुझे अभी शादी नही करनी है । जब कभी मन मे इच्छा जागेगी तुम लोगों को बता दूंगा ।

—जा हरामी, अपनी मर्जी कर । मेरे लिये तो तू होने न होने के बराबर है । तुम जैसी औलाद का तो न होना ही अच्छा······

पति के ये शब्द सुनकर लछमी को मन मे कुछ धक्का-सा लगा । उसने थोडे विनम्र भाव से कहा—तुम अकारण बच्चे को बुरा-भला कह रहे हो । तुम जाओ अपना काम देखो । मैं बाद मे इसे समझा-बुझा लूगी । हरदई से भी बात कर आऊँगी । उसे समझा दूँगी कि वह बेटी की बात-चीत कही और न चलाए । फिर इन्द्र सिंह को बोली—पुत्तर, तू भी रहट पर जाकर वहाँ का कामकाज देख । पर हमारी बात पर फिर ठंडे मन से ध्यान देना । हम जो कह रहे हैं तुम्हारी भलाई के लिये ही कह रहे है । तुम अभी बच्चे हो, जमाने की ऊँच-नीच को नही समझते । इतना कहकर वह वहां से उठकर रसोई मे चली गयी । इन्द्र सिंह भी बाहर निकल गया ।

• •

छः

बलदेव प्रकाश को गाँव के शहीद भगत सिंह मिडिल स्कूल में हेड मास्टर के रूप में काम करते हुए एक माह से अधिक हो चुका था । अपनी इस नौकरी

में वह पूरी तरह प्रसन्न व सन्तुष्ट था। जिस प्रकार की नौकरी और जिस तरह के वातावरण में रहना चाहता था वह उसे प्राप्त हो चुका था। अब वह अपने गाँव मे था, अपने घर के लोगो में, अपने मित्रों-परिचितों के मध्य रहने लगा था। उसके मामा-मामी तथा उसके ममेरे भाई आदि भी उसके गाँव मे आ जाने पर प्रसन्न थे। बलदेव की माँ पुष्पा देवी के स्वास्थ्य में प्रायः कोई न कोई गड़बड़ी लगी ही रहती थी। अब उसके मन को सन्तोष था कि उसका बेटा उसकी आँखो के सामने रहेगा। उसे अपने पुत्र के स्वभाव, चरित्र तथा योग्यता पर अभिमान था। उसे भरोसा था कि बलदेव हर प्रकार से उसके स्वास्थ्य व उसकी अन्य आवश्यकताओं की ओर ध्यान देता रहेगा। जब बलदेव की गाँव मे नौकरी लगने की सम्भावना होने लगी थी तो उसने अपने मन में भगवान को यादकर संकल्प किया था कि यदि उसकी मनोकामना पूरी हो गयी तो वह मन्दिर में कीर्तन करवाएगी। उसकी इच्छा की पूर्ति हो चुकी थी। उसने अपने भाई व भाभी से सलाह करके गाँव के मन्दिर में कीर्तन करवाने की व्यवस्था करवा ली।

पंजाब के अधिकांश गाँवों मे पूजा-स्थल के रूप मे मन्दिर नहीं गुरुद्वारे ही होते है। बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के गुरुद्वारों मे हिन्दू-सिख दोनों धर्मों के अनुयायी जाते हैं। सत्य तो यह है कि पंजाब के हिन्दू तथा सिख स्वयं को एक-दूसरे से अलग नही मानते। दोनो वर्गों के रीति-रिवाज समान हैं, परस्पर रिश्ते-नाते होते हैं। पढ़े-लिखे लोग जानते हैं कि सिख धर्म हिन्दू धर्म से अलग धर्म नही। हिन्दुत्व की रक्षा हेतु ही दसवें पादशाह गुरु गोविन्द सिंह ने हिन्दुओं के हो एक ही वर्ग को खालसा का रूप प्रदान किया था। जिस भाव से हिन्दू गुरुद्वारे जाते हैं उसी भाव के तहत सिख मन्दिरों मे जाते हैं, हिन्दुओं के तीर्थ-स्थानो की श्रद्धापूर्वक यात्रा करते हैं। हिन्दुओ के लिए गुरुद्वारा भी मन्दिर ही है। गुरुद्वारे मे बैठे हिन्दुओ को लगता है जैसे वे मन्दिर मे ही बैठे हो। गुरु ग्रन्थ साहब के प्रति वही आदरभाव है जो भगवद्-गीता, रामायण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों के लिये होता है। गाँव में गुरुद्वारा रहते उन्हे अलग से मन्दिर निर्मित करवाने की आवश्यकता अनुभव नही होती। किसी-किसी गाँव में गुरुद्वारे के अतिरिक्त मन्दिर भी बने हुए हैं। देश-विभाजन के बाद राणीपुर में बसे हिन्दुओ ने परस्पर सहयोग से एक छोटा-सा मन्दिर बनवाया था। यह मन्दिर श्रीराम मन्दिर के नाम से जाना जाता हैं। इधर कुछ वर्षों से दशहरे के अवसर पर एक सप्ताह के लिये इस मन्दिर से संलग्न विशाल आहाते में गाँव के कतिपय उत्साही युवक रामलीला का

आयोजन करते हैं। हिन्दुओं के अलावा कई सिख युवक भी इस रामलीला में सहयोग देते हैं, राम-कथा सम्बन्धी भूमिकाएँ निभाते हैं।

गाँव के इसी राम-मन्दिर में पण्डित दीवान चन्द ने कीर्तन करवाने की व्यवस्था करवायी थी। अमृतसर से एक कीर्तन-मंडली को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। चौबीस घंटे के इस अखण्ड कीर्तन मे बहुत गहमा-गहमी रही थी। गाँव के सैकड़ों लोगों ने इसमें सम्मिलित होकर अपनी धार्मिक भावनाओं को व्यक्त किया। कीर्तन-मंडली को दीवान चन्द के अलावा गाँव के अन्य कई लोगों ने भी अपनी-अपनी क्षमतानुसार धन देकर उसके प्रति आदर दर्शाया था।

आहाते के सामने वाले भाग मे लकडी के दो बडे तख्त रखकर कीर्तन-मंडली के लिये एक मंच बनाया गया था। श्रोताओं के लिये सामने दरियाँ बिछाकर बैठने का प्रबन्ध किया गया था। मन्दिर मे सुशोभित भगवान राम, लक्षमण और सीता जी की प्रतिमाओं का शृंगार किया गया था। गेंदे तथा गुलाब के पुष्पों की मालाएँ प्रतिमाओं के गले मे डाली गयी थी। कीर्तन-मंडली के प्रत्येक सदस्य के गले मे भी माला सुशोभित थी। कई प्रज्वलित दीपों के प्रकाश में मूर्तियों के आस-पास का भाग जगमगा रहा था। आहाते के दाहिने भाग मे पुरुष बैठे थे और बाएँ में महिलाएँ। बलदेव की माता इस आयोजन को देख-देख कर मन ही मन पुलकित हो रही थी। उसने हृदय मे श्रद्धायुक्त भावनाएँ लिये दुखों का विनाश करने वाले व सुख-सम्पदा देने वाले अपने इष्टदेव भगवान श्रीराम की अर्चना करके अपने भाग्य को सराहा। उसके बेटे बलदेव ने कितनी ही देर तक नतमस्तक होकर, आँखें मूँद कर भगवान को धन्यवाद दिया, भविष्य के लिये मंगल-कामना की।

महिला-श्रोताओं मे गाँव की अनेक युवतियाँ भी बैठी थीं। उनमें प्रीतो, बसन्ती, उसकी सहेली छल्लो और सरदार जोधा सिंह की बेटी तेज कौर अर्थात् तेजी भी एक सिरे पर टोली-सी बनाकर बैठी थीं। उनकी भाव-भंगिमाओं से लग रहा था जैसे कीर्तन की अपेक्षा उन्हें परस्पर धीरे-धीरे बात-चीत करने में अधिक रस मिल रहा हो। पुरुष-श्रोताओं मे बैठे बलदेव की निगाह कभी-कभी प्रीतो की ओर चली जाती थी। प्रीतो की चंचल नजरों में उसे कुछ शब्द कोई सन्देश नजर आ जाता था। प्रीतो को मालूम था कि इस कीर्तन का नायक बलदेव वहाँ अवश्य होगा। इस कारण वह ज़रा शृङ्गार करके बन-सँवर कर आयी थी। उसके इस रूप तथा मुख पर बिखरी हुई चंचलता को निहारकर बलदेव भीतर कहीं गहरी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था। मन बार-

वार चाह रहा था कि उसके पास पहुँच जाए, उससे कुछ बातें करे, उसका हाल-चाल पूछे, अपना सुनाए। पर ऐसा कुछ कर पाने के लिये वहाँ माहौल कहाँ था, एकान्त कहाँ था।

सरदार वरियाम सिंह अपने मित्र दीवान चन्द के पास ही बैठा हुआ था। थोडा पीछे इन्द्र सिंह अपने पाँच-सात हमजोलियो के साथ धीरे-धीरे कुछ कानाफूसी मे लगा था। वहाँ बैठी उसकी मित्र-मंडली मे दो-चार ऐसे व्यक्ति थे जिनकी गणना गाँव के आवारा-बदमाश लोगों मे की जाती थी। उनमे दो-एक ऐसे बदनाम युवक थे जो दीवान चन्द को फूटी आँख नही भाते थे। उसने इन्द्र सिंह को कई बार मना भी किया था कि वह उनकी सगति छोड दे। पर इन्द्र पर बाप के शब्दों का कोई प्रभाव नही पडा था।

इन्द्र सिंह के उन साथियों मे एक सुच्चा सिंह जालधर का रहने वाला था। सुच्चे की ननिहाल राणीपुर में थी और वह अक्सर वहाँ आता-जाता रहता था। एक बार दगा-फसाद करने तथा एक बार एक डकैती के अपराध मे जेल की हवा भी खा चुका था। उसका एक धधा और भी था। वह उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान से औरतें भगाकर लाता और उन्हे पंजाब व हिमाचल प्रदेश में बेच देता। दूसरा भाग सिंह था जो कच्ची शराब बनाकर चोरी-छुपे बेचता था। उसके बारे मे यह भी सुना गया था कि लुधियाना मे जुआखाना भी चलाता है। पिद्दी नामक एक युवक राणीपुर का ही था। वह रसिक स्वभाव का था। लडकियो से छेड-छाड करने मे वह बहुत रुचि लेता था। अभी कुछ माह पहले बाबा बकाला मे एक मेले मे उसने किसी लड़की पर आवाजाकशी की थी और परिणामस्वरूप वहाँ लोगो ने उसकी जमकर पिटाई की थी। दीवान चन्द की तरह वरियाम सिंह भी चाहता था कि इन्द्र सिंह इस प्रकार के बदनाम युवको की सगति छोड दे। एक वार बातों-बातों मे उसने इन्द्र सिंह से कहा था—बेटा! तुम खुद इतने भले हो। एक प्रतिष्ठित पिता के पुत्र हो। गाँव में तुम्हारी इज्जत है। पर तुम्हारे ये साथी इस गाँव मे ही नही पूरे इलाके मे बदनाम हैं। मैं जानता हूँ तुम्हारा अपना चरित्र ऊँचा है, उसमे कोई कमी नही। पर ऐसे शाहदों के साथ रहकर तुम्हारी बदनामी होने की संभावना हो सकती है। मैंने, पडित दीवान चन्द ने दुनिया को देखा है समझा है, हमारे पास जिन्दगी के तरह-तरह के अनुभव हैं। उसी अनुभव के आधार पर एक बुजुर्ग के नाते मेरी यही राय है कि तुम इन लोगो की सगति मे उठना-बैठना छोड़ दो। मैंने तुम्हारे लिये बहुत कुछ सोच रखा है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी जिन्दगी सुख से बीते, मान-मर्यादा से बीते। वरियाम सिंह के

इन शब्दों का इन्द्र के पास कोई जवाब नहीं था। पहले तो उसके मन में आया कि वह उसे कठोर शब्दों मे कह दे कि वह कौन होता है उसे नसीहत देने वाला, उसे समझाने वाला, वह अपना भला-बुरा अच्छी तरह समझता है। लेकिन वह चुप ही रहा। वह आज तक वरियाम सिंह को मानता आया था, उसे हमेशा आदर-मान दिया था। अतः उसने उसकी बात को हाँ-हाँ कह कर ही सुन लिया था। कोई अपशब्द कहकर उसका अनादर करना उसे उचित नहीं लगा था।

बलदेव और जीते को भी मालूम था कि वरियाम सिंह और उसकी पत्नी घर पर अपनी बेटी बसन्ती के रिश्ते की बात करने आए थे। बसन्ती को उन दोनों ने अनेक बार देखा था। वे जानते थे कि बसन्ती सुन्दर है, सुशील है और हर प्रकार से एक कुशल घरेलू लड़की है। ऐसी लड़कियाँ पत्नी रूप मे बड़े सौभाग्य से ही मिलती है। इन्द्रसिंह तो उनका भाई था। भाई मे जो दुर्बलताएँ थी उनकी जानकारी भी उन्हे थी। वे दोनो भी चाहते थे कि बसन्ती का ब्याह इन्द्र से हो जाए, वह उनकी भाभी के रूप में उनके परिवार मे आ जाए। इस बारे में वे इन्द्रसिंह से खुलकर बात नहीं कर सकते थे। एक तो वे उसका अपने से बड़ा होने का लिहाज करते थे दूसरे वे उसके स्वभाव से भी डरते थे। उसे इस बारे में बात करने की उन्हे हिम्मत ही नही पड़ती थी। हाँ वे घर में लछमी देवी व पुष्पा देवी से सरदार वरियाम सिंह के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने के लिए कह चुके थे। पर वे दोनो क्या कर सकती थी। इन्द्र सिंह दीवान चन्द तथा उन दोनो की कहाँ सुनता था।

कीर्तन-समाप्ति के उपरान्त बसन्ती हाथ मे प्रसाद लिए अपनी सहेलियों में घिरी मन्दिर के गलियारे में खड़ी थी। वैसे तो बलदेव और जीता उसे पहले भी कई बार देख चुके थे पर उस समय उसकी शक्ल-सूरत देखकर वे चकित से रह गए। आसमानी रंग के फूलदार चुस्त कुरते व सफेद सलवार मे वह खूब खिल रही थी। तीखे नयन-नक्श वाले गोरे-लालिमायुक्त मुख पर गुलाब की कली सरीखी ताजगी व मासूमियत दृष्टव्य थी। रेशम की लच्छी की तरह उसके काले लंबे केश ढीली-ढाली चोटी के रूप में उसके नितम्बों तक लहरा रहे थे। उसके बनाव-शृङ्गार मे किसी प्रकार की कृत्रिमता नजर नही आ रही थी। उसकी चाल-ढाल व भाव-भंगिमा में सरलता और अद्‌भुत प्रकार का भोलापन दृष्टिगोचर हो रहा था। और शायद उसकी यह सादगी यह मासूमियत ही उसके आकर्षण का मुख्य कारण थी। बेशक वह उस समय अपनी सहेलियों के साथ थी पर जैसे ही जीता और बलदेव उसके पास से

निकलने लगे और परस्पर नज़रें मिली तो तुरन्त तनिक हलके से मुसकराते हुए उसने उन दोनों को 'सत सिरी अकाल' कहकर उनका अभिवादन किया।

मन्दिर से बाहर आकर जीते ने बलदेव के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा —बसन्ती आज कितनी अच्छी लग रही है। देखने मे अच्छी लगती है पर देह से क्या कुछ दुबल-पतली नही लगती ? भैया इन्द्र सिंह तो लंबा-ऊँचा भरे-कसे जिस्म का है। उसके लिये यह दुबली-दुर्बल लड़की क्या ठीक रहेगी ?

—अरे भाई जीते, उस बेचारी की अभी उम्र ही क्या है। मेरे ख्याल मे अठारह से अधिक न होगी जबकि इन्द्र भैया छब्बीस-सत्ताईस के आसपास है। बसन्ती का शरीर उम्र के साथ-साथ भरता जाएगा, खिलता जाएगा। ऐसी दुर्बली-लबी लड़कियां आम तौर पर विवाह के कुछ ही महीनों बाद भरपूर खिले हुए गुलाब की तरह मोहक लगने लगती हैं, सुगन्ध बिखेरने लगती हैं। अभी दो-एक वर्ष बाद ही देखना इसकी दुबली-पतली काया में कैसा भराव, कैसा निखार आ जाएगा। मेरे विचार मे वह हर प्रकार से इन्द्र भैया के लिए ठीक है। देखना दोनों की जोडी खूब सुन्दर लगेगी। बस हम दोनो की यही कोशिश होनी चाहिए कि किसी भी तरह इन्द्र को इस रिश्ते के लिए राजी कर ले।

बलदेव और जीता चले गए लेकिन बसन्ती अभी तक सहेलियो के साथ वही खड़ी बाते कर रही थी। जीते को देखकर उसे सत सिरी अकाल कहकर अब उसे इन्द्र सिंह की याद आ गयी। वह सोच रही थी कि जीता कितना खुश दिल कितने खुले स्वभाव का लगता है। पर इसका भाई इन्द्र सिंह मालूम नही किस पर गया है, किस मिट्टी का बना हुआ है। वह कितना निष्ठुर कितना जालिम है। किसी के चित्त को चुराकर किसी के मन-प्राणों पर डाका डालकर कैसी बेपरवाही से अपने दोस्तो में मस्त बैठा हुआ था। कोई उसके लिए कितनी बेकरार रहती है, बिना जल मछली की तरह कैसी तड़पती है, क्या-क्या मन में सपने सजाती है इन बातों की उसे कोई परवाह ही नही। कभी-कभी तो कई-कई दिनों के लिए पता नही गाँव से बाहर कहाँ चला जाता है, बाहर जाकर क्या-क्या करता है। कैसे मुझसे मुँह मोड़े अपने यार-दोस्तो मे मस्त बैठा हुआ था। एक बार भी मेरी ओर मुड़कर नही देखा निर्दयी ने। बात न करता पर कम से कम एक-आध बार मुसकराकर देख तो सकता था। माना वह बड़ा सुन्दर है बाँका गबरू जवान है पर क्या मेरी ओर देख भर लेने से उसका रूप कही बिगड़ जाता, मैं कोई ऐसी तो नहीं हूँ जिसकी उसको नज़र लग जाए। मेरा बस चले तो मैं उसके गले में अपनी

बाँहों का हार डालकर, उसके चौड़े माथे पर काजल का टीका लगाकर उस पत्थर-दिल की नजर उतार दूं।

बसन्ती के पास खड़ी उसकी सहेली छल्लो ने उसके मुख पर आयी भावनाओं को पढ़ लिया था। कीर्तन में बैठी वह कभी-कभी कनखियों से बसन्ती के चेहरे को देख लेती थी। उसने देख लिया था कि बसन्ती कैसे अगल-बगल बैठी लड़कियों की निगाहें बचाकर कैसी भावुक नजरों से कभी-कभी इन्द्र की ओर देख लेती थी। उसने धीरे से उसकी कमर में चुटकी काटते हुए कहा—आज मैंने अपनी आँखों से देख लिया। बड़ा बेरहम है तेरा रसिया। कैसे पत्थर की मूर्ति बना बैठा था। एक बार तो इस चुलबुली कबूतरी इस सजी-सँवरी कूंज की ओर देख लेता।

—छल्लो! तुम ठीक कहती हो। वह पत्थर का बुत ही लग रहा था और पत्थर के बुत का दिल भी तो पत्थर का ही होता होगा। पर पत्थर की मूर्ति तो केवल मेरे लिए ही था, दूसरों के लिए तो नहीं। अपने यार-दोस्तों के साथ तो खूब चहक-चहक कर हँस-हँस कर बातें कर रहा था। छल्लो! मैं बेकार में उसकी याद में घुलती रहती हूँ। वह पत्थर है और लगता है पत्थर ही रहेगा। उसका दिल मेरे लिये कभी नहीं पिघलेगा।

—ऐसा नहीं है मेरी बसन्ती! देखना पिघलेगा और जरूर पिघलेगा। वह सब ऊपर-ऊपर से दिखावा करता है। इस तरह के प्रेमी नारियल की तरह होते हैं। इनका बाहरी खोल नारियल के खोल की तरह कठोर होता है। पर उनके भीतर मक्खन की तरह सफेद गरी होती है, मीठा मृदुल रस होता है। तुम अभी थोड़ा और सब्र करो। देखना कभी वह स्वयं अपने खोल को तोड़ कर अपने शुद्ध सफेद हृदय में सुरक्षित रखे हुए अमृत का तुम्हें पान करवाएगा, खुद कच्चे धागे में बँधा हुआ तुम्हारे सामने उपस्थित होगा।

—छल्लो! पता नहीं तुम्हें उस पर क्यों इतना विश्वास है। क्या गुरु महाराज ऐसा करेंगे, क्या तुम्हारा अनुमान सत्य सिद्ध होगा। पर मुझे तो ऐसा नहीं लगता। मुझे तो लगता है कि जब मेरा यौवन खत्म हो जाएगा, यह सौन्दर्य, अंग-अंग में थिरकती बिजलियाँ, यह मस्ती खत्म हो जाएगी तब कहीं तुम्हारी बात सच होगी। मेरी छल्लो, अब मुझसे नहीं रहा जाता, मुझसे यह प्रतीक्षा नहीं हो सकती, मैं जल्दी ही घुट-घुट कर मछली की तरह तड़प-तड़प कर मर जाऊँगी।

—अरी अब छोड़ तड़पने-मरने की बेकार की बातों को। पगली, किसी की याद में तड़पने में, बूंद-बूंद पिघलने का भी अपना सुख होता है। किसी

ने कहा है कि इन्तजार की घड़ियाँ मिलन की घड़ियों से कही ज्यादा सुखद होती है। मेरा तो यही कहना है कि अभी इन्तजार का सुख भोग, अभी अपने भीतर सुलग रही प्यार की नन्ही-सी चिनगारी को दहकता अंगारा तो बनने दे। फिर देखना उस अंगारे की आँच से उस जालिम का दिल मोम की तरह पिघलेगा। आ अब घर चलें, देर हो गयी तो बिना मतलब डाँट सुननी पड़ेगी।

• •

सात

करीब डेढ़ माह बाद मोहर सिंह राणीपुर लौटा था। इस अवधि में एक सप्ताह तक वह अम्बाला में रहा था। वहाँ तीन दिनो तक कम्युनिस्ट पार्टी का विराट सम्मेलन आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए देश के अनेक राज्यो से कई जाने-माने नेता तथा प्रतिनिधि आए थे। मोहर सिंह इस सम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिए कई दिनो से इन्तजार कर रहा था। वहाँ पहुँचकर उसने इस आयोजन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उसके सहयोग तथा कार्यकुशलता की हर किसी ने प्रशसा की थी। आयोजन मे सम्मिलित हुए अनेक लोगो से मिलने का उसे अवसर मिला था। उनके विचार सुनकर व उनसे विचार-विमर्श करके उसकी जानकारी मे काफी वृद्धि हुई थी। इस सम्मेलन के बाद उत्तर-प्रदेश से आए अपने एक सरदार मित्र बलवन्त सिंह के साथ वह कुछ दिनो के लिए नैनीताल चला गया था। वहाँ का प्राकृतिक वातावरण उसे इतना अच्छा लगा था कि वह कुछ समय के लिए वही रुक गया था। वहाँ तराई के इलाके मे रहने वाले किसानों व मजदूरो की कुछ समस्याएँ थी जिनको सुलझाने मे वह वहाँ के साम्यवादी कार्यकर्ताओं को सहयोग देता रहा। वहाँ के किसानों की समस्याओं को लेकर वहाँ के साम्यवादी कार्यकर्ताओ ने सरकार के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। आन्दोलन के दौरान कतिपय कार्यकर्ता बन्दी बना लिए गये थे और उन्हें तीन सप्ताह के लिए बरेली जेल मे रखा गया था। बन्दी बनाए गए उन लोगो में मोहर सिंह भी शामिल था। जेल से मुक्त होने के बाद ही वह राणीपुर वापस आया था।

गाँव में पहुँचने पर उसे पता चला कि बलदेव प्रकाश वहाँ के मिडिल स्कूल के हेड मास्टर के रूप में कार्य करने लगा है। यह समाचार पाकर वह खुश हुआ। उसने सोचा कि बलदेव के गाँव में आ जाने पर अब उसे वहाँ एक अच्छे सुशिक्षित मित्र की संगति का लाभ मिलेगा। वह जानता था कि इस गाँव में बलदेव ही एक ऐसा व्यक्ति है जो अच्छी तरह से उसके विचारों को समझता है, उसका प्रशसक है। बेशक कई मुद्दों पर दोनों के विचार एक दूसरे से अलग होते है पर वे फिर भी एक दूसरे की बात को ध्यान से सुनते है समझने का प्रयास करते है। अब वे दोनो जिन बातो पर सहमत होंगे उन बातों का प्रचार-प्रसार तो गाँव के लोगो में कर सकेंगे।

दोपहर में बलदेव से मिलने वह स्कूल पहुँचा। बलदेव उस समय अपने कमरे मे बैठा हुआ था। जैसे ही उसने मोहर सिंह को दरवाजे पर खड़ा पाया उसने तुरन्त उठकर उसका स्वागत करते हुए कहा—आओ-आओ मोहर सिंह! तुम तो गाँव से इस प्रकार अचानक गायब हो जाते हो जैसे गधे के सिर से सीग। किसी को कुछ बताकर भी नही जाते कि कहाँ जा रहे हो।

—घर में तो मालूम था कि मैं अम्बाले गया था। हाँ उसके बाद का कार्यक्रम उन्हें मालूम नही था। दरअसल तब मुझे भी नही पता था कि मुझे वहाँ से ही उत्तर प्रदेश जाना पड जाएगा।

—वहाँ से उत्तर प्रदेश जाने का प्रोग्राम कैसे बन गया? फिर यदि तुम वहाँ चले भी गये थे तो वहाँ पहुँचकर कम से कम घर में अपने वहाँ पहुँचने के बारे मे पत्र तो लिख सकते थे। उन लोगो को तुम्हारे ठौर-ठिकाने की जानकारी रहती। बेकार मे दूसरो को चिन्ता मे डाले रखना कहाँ की अक्लमन्दी है।

—बलदेव भाई, किसको चिन्ता है हमारी। यह सब ऊपर से कहने की बातें है। हमें तो घर के गाँव के अनेक लोग पागल समझते हैं आवारा मानते हैं। उनको बताने न बताने से कोई फर्क नही पडता। खैर छोडो इस बात को और अपनी कहो, कैसा लग रहा है यहाँ इस गाँव मे, गाँव के लोगो मे। मुझे तो जैसे ही तुम्हारे यहाँ आ जाने के बारे में पता चला मेरा हृदय तो गद्गद् हो उठा। सोचा चलो कम से कम एक साथी तो मन मुआफिक का मिला।

मोहर सिंह की इस प्रसन्नता को देखकर बलदेव का मन भी खुश हुआ। उसने उत्तर मे कहा—भई, मेरी तो यहाँ आकर रहने की, काम करने की

बहुत दिनो से साध थी, सो अब पूरी हुई। तुम्हारी कमी अभी तक अखर रही थी। अब तुम आ गये हो, अब यहाँ और अच्छा लगेगा।

मोहर सिंह बोला—भाई, मुझे तो तुम पर भरोसा है, तुम्हारी योग्यता व तुम्हारे विचारो पर विश्वास है। तुम्हारे नेतृत्व मे इस स्कूल का, यहाँ के बच्चो का और साथ ही साथ गाँव वालो का भला होगा। उन्हे नयी दिशा मिलेगी। मुझे अपने कामों मे भी तुम्हारा सहयोग मिलता रहेगा। तुम्हें गाँव वाले मानते है तुम्हारी बातो पर उन्हे यक़ीन आता है। मेरे विचारों को, मैं आगे जा करना चाहूँगा, उसे लोगो को अच्छी तरह से समझा तो सकोगे। मुझे क्या करना चाहिए, किस-किस ढंग से गाँववालो को अपने साथ लेकर आगे बढ़ना होगा उस बारे मे मुझे तुम्हारा सहयोग मिलता रहेगा।

—बिल्कुल मिलेगा। जो कुछ मुझ से बन पडेगा मैं इस गाँव के लिए करने को तैयार रहूँगा।

इसके बाद कुछ देर तक मोहर सिंह ने बलदेव को संक्षिप्त रूप में बताया कि पिछले डेढ़ माह मे वह कहाँ-कहाँ रहा, किस-किससे उसकी मुलाकातें हुईं और उसने क्या-क्या काम किये। उसकी बातो को सुनकर बलदेव को तसल्ली हुई। उसे जानकर सन्तोष हुआ कि मोहर के मन में सचमुच कुछ अच्छा करने की लगन है। वह अपने समाज को एक नया रूप देने के लिए उत्सुक है। अपने गाँव की अपने देश की वर्तमान हालत से बहुत दुखी है। वह लोगों के जीवन मे, उनकी मानसिकता में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने का इच्छुक है। वह बैठा उसके बारे मे सोच ही रहा था कि मोहर सिंह बोला—इस स्कूल की हालत आजतक जैसी रही है उसके बारे मे तुम जानते ही हो। मैं समझाता हूँ जो दशा इसकी आठ-दस वर्ष पहले थी वैसी ही लगभग अब भी है। तुम्हें याद होगा जब हम दोनों इस स्कूल में पढते थे तब इस स्कूल के मास्टर लोग लड़कों से कैसे-कैसे काम करवाते थे। किसानों के लड़कों को उनके लिए साग-सब्जी, गुड, दालें व गेहूँ-मक्का तक लाकर देना पडता था। उनके घर के लिए चक्की से आटा पिसवाना पडता था, सप्ताह मे एक-दो बार स्कूल के कमरो को गोबर से लीपना पडता था। स्कूल के बच्चो की दशा जैसी पहले थी वैसी ही आज भी है। इनके कपडे देखो, इनकी सेहत देखो। क्या किसी आज़ाद मुल्क के बच्चे ऐसे ही होते हैं। इनकी देखने मे ये हँसती हुई सूरतो के पीछे कितनी दुखद कहानियाँ कैसी-कैसी वेदनाएँ छुपी हैं उनकी जानकारी क्या किसी को है। इनकी भोली-भाली हँसती हुई आँखों से कितने आँसू बहते हैं उनको क्या कोई देखने की, उन्हें पोछने की कोशिश करता है। हमारे ये बच्चे क्या पहनते हैं,

किस प्रकार का भोजन करके स्कूल आते हैं, इनके माता-पिता को किस प्रकार अपनी भूखी आँतों को सहलाना पड़ता है, कैसे इनकी फीस आदि का जुगाड करना पडता है उसका कुछ आभास हमारे देश के नेताओं को हैं। दोपहर की छुट्टी में, घर से मैली सी पोटली में लाया हुआ नाश्ता आदि जो ये बच्चे खाते है उसे रूस या अमेरीका जैसे देशों के कुत्ते भी न खाते होंगे। इन बेचारो के पेट की भूख को, ऐंठन को किसी ने पहचानने की कोशिश की है। हमारे अध्यापक भी क्या अपने कर्तव्य को पूरी तरह समझते हैं। वे अपने दायित्वो का निर्वाह कितना करते हैं इस बात की निगरानी क्या इमानदारी से की जाती है ?

मोहर सिंह की बाते बलदेव को अच्छी लग रही थी। समाज को नया रूप देने के लिए, व्यवस्था मे परिवर्तन लाने के लिए मोहर के भीतर जो उत्साह है जो आग है उसकी आँच का एहसास उसे हो रहा था। उसका विचार था कि इन सामाजिक कुरूपताओं का सबसे बडा कारण शताब्दियों से चली आ रही गरीबी ही है। गरीबी समाज का सबसे बड़ा अभिशाप होती है। पेट तो आदमी को भरना ही होता है। जब आदमी को सही रास्ता अपनाने पर भी उदर-भट्टी के लिए ईंधन नहीं मिल पाता तो वह उसे पाने के लिए दूसरी तरह के गलत उपाय करता है। यह पेट की ज्वाला कभी-कभी आदमी को बडे से बडा अपराध करने के लिए विवश कर देती है। अपने विचार को व्यक्त करते हुए उसने मोहर सिंह से कहा—भाई, जब तक आदमी को भरपेट भोजन नही मिलता तब तक उसे नैतिकता का उपदेश देना बेकार होता है। आदमी की पहली पूजा, उसका सबसे बड़ा भगवान रोटी ही होती है। पेट के लिए रोटी सबसे बडी आवश्यकता है। और इसी रोटी के पेट से आदमी की इमानदारी, उसकी कर्तव्य-निष्ठा व उसका समाज-प्रेम, देश-भक्ति और मानव-उत्थान के विचारो का जन्म होता है···

—वाह भई बलदेव, आज तो तुम मेरी भाषा बोल रहे हो। इस समय तुम किसी बडे से बडे क्रांतिकारी से किसी भी रूप मे कम नही लग रहे। तुम्हें देश की गरीब जनता के कष्टों का भास है, उनकी हर प्रकार की भूख को तुम समझते हो, यह जानकर मुझे अच्छा लग रहा। रोटी की समस्या का तुम्हें एहसास है। लेकिन मेरे भाई, इस समस्या का निदान तभी होगा जब रोटी का लोगो मे समान रूप से वितरण होगा। जब हर किसी को बराबर मात्रा मे रोटियाँ मिलेगी। क्या यह विडम्बना नही है कि हमारे समाज मे कई लोग कुछ भी न करके केवल अपने बाप-दादा की बनाई हुई सम्पत्ति पर पूरी-कचौडी, मिठाइयाँ व फल-मेवे भरपेट खाते हैं तो दूसरी ओर अनेक लोगों को कठिन

परिश्रम करने पर भी पेट के लिए साधारण भोजन नहीं मिलता, तन-ढकने को वस्त्र नही मिलते, रहने को मकान नही मिलता। और मैं समझता हूँ कि यह विडम्बना तब तक कायम रहेगी जब तक हम पूँजिवादी व्यवस्था से चिपके रहेंगे, जब तक हम अमरीका व इंगलैन्ड सरीखे पूंजीवादी देशों को अपना खुदा मानकर उनके मार्ग पर चलते रहेंगे। बलदेव! हमारे मुल्क मे कुछ लोगों में यह धारणा है कि हम गरीब इसलिए हैं क्योंकि हमारे यहाँ के मजदूर-किसान मेहनती नही हैं। पर मैं समझता हूँ यह विचार बहुत बड़ी हद तक गलत है। परिश्रम के क्षेत्र मे हमारा मेहनतकश वर्ग दूसरे देशों के मेहनतकशो के मुकाबले में कही भी कम नही है। पर उसे अपनी मेहनत का पूरा फल कहाँ मिल पाता है। इस पूँजीपति-व्यवस्था में हमारे शहरों से लेकर गाँवों तक एक षड्यंत्र फैला हुआ है। शहरों में उस षड्यंत्र को बड़े-बड़े सरमायादार चलाते हैं तो गाँवों मे ज़मीनदार तथा दूसरे धनी लोग। हमारे यहाँ का मेहनतकश मशीनो की अपेक्षा हाथो से कही ज्यादा काम लेता है। वह कड़ी मेहनत करके ज़मीन से कोयला निकालता है, लोहा निकालता है, खेतों को पसीने से सींचकर सोना पैदा करता है, रिक्शा लिए सड़को पर दौड़ता है। वह ऊपर वाला जिसे तुम लोग खुदा कहते हो भगवान कहते हो, पता नही है अथवा नही। पर इस धरती पर तो खुदा है। और वह खुदा है धरती का मजदूर। वह अपने परिश्रम से हमारी धरती का शृंगार करता है, उसे सँवारता है। पर उस बेचारे का अपना कितना शृंगार हो पाता है, वह स्वयं को कहाँ तक सँवार पाता है। वह जो कुछ अर्जित करता है उसका अस्सी-नब्बे प्रतिशत भाग तो उसका पूँजीपति मालिक अथवा उसका ज़मीनदार ही हड़प लेता है। और इस तरह ग़रीब ग़रीब ही बना रहता है।

मोहर की बातें बलदेव के मन को कहीं छू रही थीं। उसे लग रहा था कि वह जो कुछ कह रहा है उचित ही कह रहा है। लेकिन जो कुछ वह करना चाहता है, जिस प्रकार के समाज की व्यवस्था की वह कल्पना करता है, वह नयी प्रकार की व्यवस्था हमारे यहाँ कैसे आ सकती है। हमारे यहाँ तो लोग कष्ट झेल रहे हैं। कोई उनका शोषण कर रहा है, उनकी कमाई पर डाका डाल रहा है पर उन्हे इस बात का एहसास नही है। वे इसे केवल अपने भाग्य की बात कहकर मन में सन्तोष कर लेते हैं। वे वास्तविकता को जानते ही नहीं। अपनी इसी भावना को व्यक्त करते हुए उसने मोहर से कहा—तुम जो कुछ कह रहे हो उससे मैं सहमत हूँ। तुम्हारी तरह मैं भी ऐसे ही सोचता हूँ। पर तुम्हारी तरह मेरी तरह सोचने वाले, मनन करने वाले कितने लोग हैं। कितने लोग हैं जो

अपने स्वार्थों को तजकर आम जनता के बीच मे आकर उसे स्थितियों का वास्तविक ज्ञान कराने के काम मे लगे है। मेरे भाई, हमारे यहाँ सबसे बडी विडम्बना यही है कि हम समाजवाद, साम्यवाद तथा सामाजिक क्राति की बाते तो बहुत करते है लेकिन समाजवाद क्या होता है, साम्यवादी विचारधारा का कैसे प्रचार-प्रसार होना चाहिये, ससार मे बड़ी-बड़ी क्रांतियाँ कैसे आयी है इन बातो का ज्ञान लोगो को तथा हमारे समाजवादी नेताओं को कहाँ है। खाली रूस अथवा चीन सरीखे साम्यवादी देशो का, वहाँ के नेताओ का नाम ले लेने से समाजवाद नही आने वाला। भाई, मैंने तो यह अनुभव किया है कि हमारे यहाँ के अधिकाश लोग मार्क्स, लेनिन अथवा माओसेतुग का नाम सुनकर ही नाक-मुँह सकोड़ने लगते हैं। इन महापुरुषो की सेवाओं का उल्लेख करने वालो को ये लोग विदेशी-दलाल और ग़द्दार समझने लगते है। ऐसा क्यो है, इसके कारणो की खोज करना जरूरी है। और सबसे बडी बात यह है कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद हमारे यहाँ 'राजनीति का रूप जिस प्रकार घिनौना हुआ है उसे देखकर मन मे दुख व अक्रोश उत्पन्न होता है। प्रायः सभी दलो का रूप विकृत ही हुआ है। हमारे समाजवादी व साम्यवादी दल ऐसी कुरूपताओं से कहाँ बचे रहे है। सत्ता-प्राप्ति के लिये जिस प्रकार के हथकंडे कांग्रेसी, जनसघी, मुस्लिमलीगी अपनाते हैं वैसे ही हरबे हमारे साम्यवादी-समाजवादी नेता इस्तेमाल करते है। समान सम्पत्ति समान धन के वितरण का प्रचार करने वाले इन साम्यवादी नेताओं के पास धन की क्या कमी है। मैंने तो अमृतसर मे देखा है। वहाँ के जौहर साहब जो भारतीय साम्यवादी दल के स्थानीय अध्यक्ष है वे नगर के माने हुए सरमायादार है। उनका शानदार बँगला देखकर दाँतो तले उँगली दबानी पड़ती है। उनकी चमचमाती विदेशी कार तथा उनके घर का साज-सामान तुम कभी देख लो तो तुम्हे उनकी साम्यवादिता का वास्तविक ज्ञान हो जाएगा।

अमृतसर के जिस साम्यवादी नेता जौहर साहब का उल्लेख बलदेव ने किया उसके बारे मे मोहर सिंह अच्छी तरह से जानता था। उसने उसे देखा-सुना ही नही था बल्कि एक बार उनके बँगले पर गया भी था। बलदेव की तरह वह भी उसके परिवार के ठाठ-बाट देखकर चकित रह गया था। जौहर साहब जैसे साम्यवादी-समाजवादी अन्य कई नेता उसने देश के शहरों में देखे थे। वह मन ही मन अनुभव कर रहा था कि हमारे यहाँ ईमानदारी नही है। हमारा राजनीतिक परिवेश कितना घिनौना कितना भ्रष्ट हो चुका है। हमारे इस भ्रष्ट नेताओं के गंदे व्यवहार के परिणामस्वरूप ही हमारे राष्ट्रीय चरित्र

का पतन हो रहा है। ये धूर्त-स्वार्थी नेता मुँह से कुछ बोलते हैं और करते कुछ और है। इन्ही के कारण हर कही भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सभी इसी फिराक में रहते है कि कौन-कौन सा हथकंडा अपनाकर जनता को मूर्ख बनाया जाए, कैसे सीधे-सीधे लोगों को झूठे नारे देकर व खोखने आश्वासनों का मायाजाल दिखाकर उन्हें उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जाए। जनता के ये तथाकथित शुभचिन्तक, हितैषी व कल्याणकर्ता भीतर से कितने बेईमान कितने कुरूप हैं। मोहर ये हकीकत समझ रहा था। पर उसे मन में कही विश्वास भी था कि आज हालात चाहे जो भी हो, इस देश में कभी न कभी तो साम्यवाद आकर ही रहेगा। अपनी इसी भावना का व्यक्त करते हुए उसने बलदेव से कहा—इसमें कोई शक नही कि हमारा राजनीतिक व सामाजिक परिवेश बहुत गन्दा हो चुका है, जनता में निराशा है और गरीबी है, बेहद असमानताएँ हैं, हर कही लूट-खसूट और भ्रष्टाचार है, हर तरह से लोगों का शोषण हो रहा है। पर मेरे भाई, ऐसी ही परिस्थितियों से तो साम्यवाद का प्रादुर्भाव होता है, ऐसे ही वातावरण से क्रान्तियाँ उपजती हैं, बडे-बडे इन्कलाब आते हैं। मुझे तो लग रहा है कि हमारे यहाँ जल्दी ही साम्यवाद आ जायगा।

—मोहर सिंह ! पता नही तुम किस खुशफहमी मे रह रहे हो। मुझे तो लगता है कि तुम अभी तक अपने देश के लोगों की मानसिकता को ही नही समझ पाए। तुम शायद नही जानते कि यहाँ के अधिकांश लोग धर्मनिष्ठ व संस्कृति-निष्ठ हैं। साम्यवाद धर्म-विरोधी है। साम्यवादियो की दृष्टि मे किसी देश की अपनी संस्कृति का कोई महत्व नही होता। वे तो उन्ही विचारो का प्रचार-प्रसार करते हैं जो मार्क्स के हैं ऐंगल्स, लेनिन और माओ के है। और विडम्बना यह है कि हमारी आम जनता ही नही बल्कि पढे-लिखे लोग भी इन विचारको के सम्बन्ध में विशेष कुछ नही जानते। कितने हैं जिन्होने उनके विचारों को पढा है समझा है।

—पर भाई, यह बताओ कि हमारे कष्ट कैसे कटेंगे, हमारी व्यवस्था मे कैसे बदलाव आएगा। सच पूछो तो कभी-कभी मेरे मन में निराशा छा जाती है। मुझे भी भीतर से कहीं आवाज आने लगती है कि हमारे यहाँ साम्यवाद नही आएगा, हम ऐसे ही पूँजीपतियो के हाथो मे खेलते रहेंगे, उनके शोषण की चक्की में पिसते रहेंगे।

—नही मोहर भाई ! इस तरह निराश होने की जरूरत नही है। काली अन्धेरी रात के बाद खुशगवार उजली-पीली सुबह अवश्य आती है। वह

सुबह हमारे यहाँ भी आकर रहेगी। अपने देश में जो इन्कलाब आएगा उसका रूप रूस के या चीन के इन्कलाब की तरह नही होगा। हमारी क्रांति का रूप मैं समझाता हूँ अपना ही अनोखा रूप होगा, वह भारतीय रूप होगा। वह रक्तरंजित क्रांति न होकर सुगन्ध-महकभरी क्रांति होगी। वह ऐसी क्रांति होगी जो हमारे स्वभाव, हमारे अनेक ग्रन्थों, हमारे महान विचारकों, हमारे पर्व-त्योहारों, हमारे रीति-रिवाजों, हमारी अपनी मिट्टी से जुडे हमारे लोकगीतों व संस्कृति के अनेक रसों से भीगी होगी। उसका रूप विदेशी नही भारतीय होगा। वह ऐसी क्रांति होगी जिसे देखकर संसार के समाजवादी-साम्यवादी देश चकित रह जाएँगे। विश्वास रखो अपने ही देश की मिट्टी से कोई दूसरा मार्क्स, कोई लेनिन, कोई गांधी, कोई लोहिया अथवा कोई जयप्रकाश पैदा होगा। मेरे भाई, अभी आवश्यकता है जनता को सचेत करने की, पूरी ईमानदारी व निष्ठा से कार्य करने की। खैर अब छोड़ो इन राजनीति व देश-समाज की बातों को। फिर भी होती रहेंगी। देखो तुम्हारी इन बातों में मुझे स्कूल का ध्यान ही नही रहा। अब मुझे इजाज़त दो। मैं थोड़ी देर कक्षा आठ को देख लूँ। बलदेव के यह शब्द सुनकर मोहर उस से विदा लेकर घर लौट आया।

• •

आठ

तीन माह पूर्व राणीपुर मे स्वतंत्र रूप से डाकघर खुल गया था। इससे पहले गाँव मे डाक-सम्बन्धी कार्य स्कूल के हेड मास्टर के जिम्मे रहता था। इस अतिरिक्त काम के लिए उसे सरकार की ओर से भत्ता मिलता था। गाँव के लोग कार्ड-लिफाफे आदि स्कूल जाकर ही खरीदते थे। प्रतिदिन उस क्षेत्र का डाक-हरकारा आता था, राणीपुर गाँव की डाक स्कूल मे दे जाता था और वहाँ से बाहर जाने वाली डाक का बैग बाबा बकाला डाकघर में पहुँचाता था। लगभग बीस वर्षों तक उस हल्के मे हरकारा घसीटा राम डाक बाँटता रहा। राणीपुर व उस हल्के के अन्य गाँवों का लगभग प्रत्येक व्यक्ति उसे जानता था। उसका हुलिया तथा उसकी चाल-ढाल देखकर हँसी आती थी। गाँव के

लोगों का कहना है कि जैसा वह आज से बीस वर्ष पहले था वैसा ही आज है। वह हमेशा खाकी रंग की कमीज व पायजामा पहने रहता। जाड़े के दिनों में शरीर पर खाकी कोट भी रहता। सिर पर छोटी सी कभी लाल तो कभी खाकी मैली सी ढीली-ढाली पगड़ी रहती। हाथ में छः फुट के करीब एक लाठी रहती जिसके ऊपरी सिरे पर घुंघरू बँधे रहते। जब वह डाक का झोला कंधे पर लटकाए बड़ी तेज़ी से एक गाँव से दूसरे गाँव को चलता होता तो लाठी पर बँधे घुंघरुओं की बड़ी प्यारी छन-छन की आवाज़ आती। चूंकि पिछले कुछ वर्षों से डाक का काम बढ़ गया था इसलिए गाँव के लोगों के बहुत अनुरोध करने पर सरकार की ओर से अलग से डाकघर खोल दिया गया था।

इस डाकघर का पोस्ट मास्टर था बाबू हरनाम सिंह। हरनाम सिंह की उम्र चौबीस-पचीस वर्ष से अधिक नहीं था। उसका शरीर गठीला, चुस्त और लगभग छः फुट ऊँचा था। हल्के साँवले मुख पर नक्श तीखे व रौबीले थे। मोटी-काली आँखों में बला की चमक थी। भरी-भरी काली दाढ़ी तथा उठी हुई मूँछें उसके चेहरे पर खूब फबती थी। हल्के रंग की पगड़ी वह बड़े सलीके से बाँधता था। डाकघर में प्रायः कमीज-पतलून पहने रहता। पर घर में अथवा गाँव में कुरते व तहमद पहने नजर आता। बातचीत बड़े सलीके से करता था। गांव वालों के साथ उसका व्यवहार प्रशंसनीय था।

जाति के लिहाज से हरनाम सिंह मज़हबी सिख था। जो स्थिति हिन्दुओं में हरिजनों की होती है वैसी ही स्थिति सिख-धर्म में मज़हबी सिखों की है। पेशे के दृष्टि से भी मज़हबी सिख लगभग वही काम-काज करते हैं जो हरिजन करते हैं। हरिजनों की भाँति मज़हबी सिखों को भी सरकार से सारी सुविधाएँ प्राप्त हैं। नौकरियों में उनके लिए भी स्थान सुरक्षित रहते हैं। सिद्धान्त रूप में सिख धर्म में जातपात के लिए कोई स्थान नहीं। मानव की जात एक समान इस धर्म का एक विशेष सिद्धान्त माना गया है। लेकिन इस सिद्धान्त का पालन पूरी तरह से नहीं किया जाता। सिखों में भी ऊँची व छोटी जातियों का अन्तर माना जाता है। रिश्ते-नाते करते समय व सामाजिक सम्बन्ध बनाते वक्त प्रायः लोग जातपात का विचार रखते हैं। उच्च वर्ग के सिखों का व्यवहार मज़हबी सिखों से आम तौर पर वैसा ही होता है जैसा सवर्ण हिन्दुओं का हरिजनों से। व्यक्तिगत रूप से हरनाम सिंह भला आदमी था। जहाँ तक उनसे बन पड़ता था डाकघर में आने वालों की सहायता करता था। अनपढ़ लोगों के पत्र लिख देता था, मनीआर्डर फार्म भर देता था। पर उसका मज़हबी सिख होना उसके आड़े आ जाता था। उच्च जाति के हिन्दू व सिख

उसे हरिजन मानते थे, उसे अपने से छोटा समझकर किसी सीमा तक घृणा की दृष्टि से देखते थे।

हरनाम सिंह का बड़ा भाई सतनाम सिंह शंगारा सिंह का कारिन्दा था। सतमाम अपनी किशोरावस्था में अपने बाप के साथ शंगारा सिंह के रहट तथा खेतो पर काम करता था। हरनाम जब छोटा था तब प्रायः वह अपने बडे भाई सतनाम के साथ शंगारा सिंह के रहट पर आता रहता था। रहट पर शंगारा सिंह की बेटी जसवन्त कौर यानी जस्सी भी आती रहती थी। जस्सी हरनाम से दो-तीन वर्ष छोटी थी। हमउम्र होने के कारण हरनाम व जस्सी आपस मे साथ-साथ खेलते थे, शरारतें करते थे। उन दोनो की यह मित्रता चार-पाँच वर्षो तक चलती रही थी। उम्र बढ़ने के साथ-साथ दोनो में परस्पर दूरी का बढते जाना भी स्वाभाविक ही था। युवा होने पर तो यह परस्पर बातचीत व भेंट आदि होना लगभग खत्म हो चुका था। पर दोनो एक दूसरे को पहचानते थे समझते थे। कभी आमना-सामना हो जाने पर केवल 'सत सिरी अकाल' के शब्दों का आदान-प्रदान ही हो पाता था। उनकी युवावस्था उनके बीच दीवार सी बन गयी थी। फिर कुछ समय के लिए हरनाम सिंह जालन्धर आगे पढ़ने के लिए चला गया था। तब तक उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। बड़ा भाई सतनाम तो पढा-लिखा नही था पर अपने कुछ शुभचिन्तको के समझाने पर उसने अपने छोटे भाई को शिक्षा-प्राप्ति के लिए जालन्धर भेज दिया था। उसे मालूम था कि मैट्रिक पास कर लेने पर मजहबी सिख होने के कारण उसे सरकारी नौकरी मिल जाएगी। उसके भाई का भविष्य अच्छा बन जाएगा और परिवार की आर्थिक दशा मे सुधार हो जाएगा, गाँव में उनके परिवार की इज्जत बढ़ जाएगी। उसकी योजना सफल हुई थी और हरनाम की नौकरी उसके अपने गाँव राणीपुर मे ही लग गयी थी।

गाँव मे नौकरी लग जाने के बाद यों तो हरनाम सिंह ने दो-चार बार जस्सी को देखा था पर बातचीत करने का कोई अवसर नही मिल पाया था। संयोगवश यह अवसर अभी कुछ दिन पहले उसे मिला था। दोनों की भेंट हो गयी थी।

सयोग ऐसा हुआ था कि शंगारा सिंह अपने एक मित्र की बेटी के विवाह में शामिल होने के लिए दो-तीन दिनो के लिए होशियारपुर चला गया था। जाते समय वह दस रुपये जस्सी को दे गया था और कह गया था कि वह डाकघर जाकर वे रुपये मनीआर्डर द्वारा अपनी बड़ी बहन को अमृतसर भिजवा दे। ये रुपये लोहड़ी की मिठाई के लिए थे।

जस्सी जानती थी कि उसका बचपन का हमजोली हरनाम सिंह उस डाकघर का बाबू है। वहां जाने पर उससे भेंट ही नहीं होगी बल्कि उससे ही मनीआर्डर का फार्म भी भरवाना पड़ेगा। ऐसा नहीं था कि जस्सी एकदम अनपढ़ थी। उसने अपने बाप से घर पर ही पंजाबी भाषा लिखनी-पढ़नी सीख ली थी। पर मनीआर्डर फार्म आदि लिखने का ढंग उसे मालूम नहीं था। जाते समय शंगारा सिंह उससे कह गया था कि फार्म किसी से लिखवा लेना। डाकघर जाने से पूर्व उसने सोच रखा था कि फार्म वह हरनाम सिंह से ही भरवा लेगी। पता नहीं किस भावना से वशीभूत होकर वहां जाने से पहले अपना तनिक बनाव-शृंगार भी कर लिया था। हरनाम से मिलने की चाह का एहसास उसे अपने भीतर कहीं हो रहा था।

दोपहर का समय था। हरनाम खिड़की के पास बैठा काम कर रहा था कि अचानक उसे जस्सी डाकघर की ओर आती हुई दिखाई पड़ी। सौभाग्यवश उस समय वह वहां अकेला ही था। डाकघर का पैकर गंगाराम उस दिन छुट्टी पर था।

बनी-संवरी जस्सी को देखकर उसे अपने भीतर कोई खुशी की तरंग मचलती हुई सी महसूस होने लगी। जस्सी ने खिड़की के सामने पहुँचकर उसे देखा, हल्की सी मुसकराई-लजाई और फिर दोनों हाथ जोड़कर धीरे से सत सिरी अकाल कहा। जवाब में तनिक मुसकराकर हरनाम ने भी उसका अभिवादन किया। बीस-बाईस वर्ष की अल्हड़ जस्सी आज अपने भरपूर सौन्दर्य तथा वेशभूषा में खूब खिल रही थी। उसकी लंबी-सुगठित देह पर गुलाबी रंग का ढीला-ढाला कुर्ता और जामुनी रंग का तहमद था। कुर्ता कुछ महीन था और उसके भीतर उसके मरमरी शरीर की ऊँची-नीची रेखाएँ साफ नजर आ रही थीं। उस समय वह किसी स्वप्न-सुन्दरी की तरह हरनाम को बड़ी मनोहर लग रही थी। उसके गोरे-उजले मुख के नक्श बड़े तीखे थे। उसकी कजरारी सुन्दर आंखें, नाक व होंठों की बनावट को देखकर लगता था मानो किसी कुशल शिल्पी ने बड़े मनोयोग से उन्हें तराशकर गढ़ा हो। वह एक पूर्ण आकर्षक तसवीर की तरह लग रही थी। उसके हल्के गुलाबी होंठों में मक्की के कच्चे दानों की तरह उजले दांत बेहद प्यारे लग रहे थे। उसकी वसन्ती रंग की चुनरी में किनारे पर गोटा व थोड़े-थोड़े फासले पर छोटे-छोटे गोल शीशे टँके हुए झिलमिला रहे थे। जस्सी ने जैसे ही हरनाम को देखा उसे लगा जैसे उसके रेशे-रेशे में बिजली की कोई लहर दौड़ गयी हो। उसने तनिक विचलित होकर अपने तहमद के आँचल को ठीक किया, चुनरी को जरा अपने वक्ष पर

सरकाया। उसकी यह मोहक हरकत देखकर हरनाम को मीठी गुदगुदी सी अनुभव हुई।

हरनाम ने जल्दी से एक सरसरी नज़र अपने पर डाली। हाथ से थोड़ा पगडी को ठीक किया। दाहिने हाथ से मूंछो को जरा सेट किया और फिर मन में थोड़ा संकोच अनुभव करते हुए जस्सो से बोला—आओ जस्सी, यहाँ भीतर कमरे मे आकर बैठो, बाहर क्यो खडी हो। उसके ये शब्द सुनकर वह भीतर आकर सामने पडे छोटे से बैन्च पर बैठ गयी। फिर हरनाम ने उससे पूछा—कहो कैसे आना हुआ। तुम्हारे भाया शंगारा सिंह जी का क्या हालचाल है? आज बहुत दिनों बाद तुम्हे अपने सामने देख रहा हूँ।

—भायाजी किसी काम से होशियारपुर गये हुए है। लाजो बहन को लोहड़ी की मिठाई के लिए मनीआर्डर करने के लिए वे दस रुपये दे गये थे। वही मनी-आर्डर करने के लिए ही आयी हूँ। नामे ! जब तुम्हारी यहाँ नौकरी लगी थी तभी तुम्हारी पड़ोस वाली शीला भाभी ने मुझे बता दिया था। चलो बड़ा अच्छा हुआ जो अपने गाँव मे आ गये। तुम्हारे आ जाने से गाँव वालो को भी आराम रहेगा और तुम्हारे घर के लोगों को भी अच्छा लगेगा।

हरनाम ने तनिक शरारतपूर्ण भाव से पूछा—और जस्सी तुम्हें कैसा लगेगा यह बताओ? जस्सी ने कभी सोचा नही था कि हरमान एकदम इस प्रकार का सवाल उससे पूछ बैठेगा। फिर भी कुछ क्षण रुककर उसने उत्तर दिया—मै गाँव वालों से अलग थोडे ही हूँ। जैसे उनको अच्छा लगा है वैसे ही मुझे भी।

—जस्सी ! तुम केवल गाँव वाली ही नही हो बल्कि मेरे लिए उससे कुछ ज्यादा हो। याद है जब हम दोनो बचपन मे साथ-साथ खेलते थे, मिट्टी के घरौंदे बनाते थे, गोबर से छोटे-छोटे उपले थापते थे······

—और फिर कभी-कभी तुम मेरी चुटिया पकड़कर खीच भी लेते थे, मेरे साथ लडाई-झगडा भी करते थे। और जब कभी मै रूठ जाती थी तो बड़े प्यार से मना भी लेते थे।

जस्सी के ये स्नेहपगे शब्द सुनकर हरनाम हँस पड़ा। कुछ पल चुप रहने के बाद फिर बोला—जस्सी, वह बचपन का ज़माना था। सचमुच कितने प्यारे कितने सुहावने थे वे दिन। आज भी जब कभी उन दिनों की याद आती है तो मन पुलकित हो उठता है। तुम्हे याद है एक बार शीरीशाह के चबूतरे के पास तुम मेरी सीटी लेकर भागी थी तो तेजी से मैंने तुम्हारा पीछा किया था। कुछ कदम दौड़ने पर तुम्हे ज़बरदस्त ठोकर लगी थी और तुम गिर पडी थी। गिरने

से तुम्हारी टाँग पर किसी पत्थर से गहरा घाव हो गया था। तब कितना लहू बहा था उस घाव से।

हरनाम द्वारा उस दुर्घटना का उल्लेख सुनने पर जस्सी आँखों ही आँखों में मुसकरा दी। फिर धीरे से अपनी टाँग से तहमद को थोड़ा सा ऊपर सरकाकर बोली—*नामे ! देखो उस समय हुए घाव का निशान अब भी बना हुआ है।* जब कभी इस निशान पर नज़र पड़ती है सहसा वह दिन आँखों के समाने आ जाता है और उसके साथ ही तुम्हारी वह बचपन की सूरत।

—तो इसका मतलब यह हुआ कि अब भी कभी-कभी तुम मुझे याद कर लेती हो। सचमुच मैं कितना भाग्यशाली हूँ। एक-दो पल चुप रहने के बाद वह फिर बोला—पर जस्सी यह न समझना कि मै तुम्हें कभी याद नहीं करता। तुम्हारी वह भोली-भाली मुसकराती मोहनी शक्ल भी अक्सर मेरे मानस-पट पर उभर आती है। जस्सी ! तुम्हारी तब की शक्ल-सूरत और आज के इस रूप में कितना अन्तर है। तब जो छोटी सी सुगन्धभरी बंद कली थी आज खिले हुए ताजे गुलाब की तरह मेरे सामने हैं।

हरनाम के ये शब्द सुनकर उसके गोरे मुख पर लाज की एक बड़ी मोहक सी परत नाच उठी। हरनाम को लगा मानो ओस से धुले ताजे गुलाब उसके कपोलों पर खिल उठे हों। वह उस लालिमा को निहारकर गदगद हो उठा। वह मजबूत दिल का था। पर उस समय उसे लग रहा था कि उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धक-धक कर रहा है। कुछ ऐसी ही दशा जस्सी की भी हो रही थी।

उस दिन सुबह से ही आकाश मे बादल मँडरा रहे थे। पर तब ऐसा नहीं लग रहा था कि वे बरसेंगे। जब वे दोनों डाकघर में बैठे बातों में खोए हुए थे कि बाहर आकाश में बादल तेज़ी से गहरे होते जा रहे थे। तेज शीत पवन बहने लगा था। रुक-रुक कर बादलों ने सिंह-नाद करना शुरू कर दिया था। कभी-कभी बिजली लपलपाने लगती थी। लग रहा था कि किसी भी क्षण वर्षा शुरू हो सकती थी। मौसम में अनायास आए इस परिवर्तन को देखकर जस्सी ने हरनाम से कहा—देखो पानी बरसने वाला है। जल्दी से मनीआर्डर करो ताकि पानी गिरने से पहले-पहले मैं घर पहुँच जाऊँ।

जस्सी के अनुरोध को देखते हुए वह मनीआर्डर का फार्म भरने लगा। हालांकि वह मन से चाह रहा था कि अभी तुरन्त ही घूम-घुमाकर पानी बरसने लगे ताकि जस्सी उसके पास उस कमरे में ही बैठी रहने पर विवश हो जाए। वह धीरे-धीरे फार्म भर रहा था और साथ ही साथ जस्सी से बातें

भी करता जा रहा था। अब जस्सी बेंच से उठकर हरनाम के पास पड़े स्टूल पर बैठी हुई थी। उसकी देह की नशीली गन्ध का एहसास हरनाम को हो रहा था। उसे लग रहा था जैसे उस पर कोई नशा तारी होता जा रहा हो। फिर सहसा आकाश मे इतने जोर से बिजली कड़कडाई मानो पचासों गोले एक साथ फट गये हो। अचानक हुई उस भयानक आवाज को सुनकर जस्सी एकदम डरकर चीख पडी। ऐसे मे उसे पता ही न चला कि वह कब डरकर हरनाम के जिस्म से लिपट गयी और कब हरनाम की सुदृढ बाँहों ने उसे अपने घेरे मे ले लिया। वे दोनों कुछ देर तक वैसे ही एक दूसरे के साथ सटे रहे। उस समय दोनों को एक विचित्र सी किसी तेज नशे से भरपूर स्थिति की अनुभूति हो रही थी। वे कमरे की खिडकी के पास बैठे थे। हवा के वेग के कारण तेज वर्षा से छिटक रहे फुहार-कण उन दोनों के मुख को स्पर्श कर रहे थे। दोनों को लग रहा था जैसे वे जलकण उन दोनों के अंग-अंग को, उनके भीतर रेशे-रेशे को भिगो रहे हों, उन्हे मीठी-नशीली सुईयाँ चुभोकर गुदगुदा रहे हों। कुछ देर तक उसी स्थिति में रहने के बाद अब वे दोनों एक दूसरे से अलग हो चुके थे। मूसलाधार बरसता पानी, बार-बार चमकती बिजली और बादलों की घड़घड़ाहट आज उन दोनो को बडी सुखद बडी मादक लग रही थी। वे दोनो मन ही मन चाह रहे थे कि यह वर्षा निरन्तर ऐसे ही होती रहे, मेघ ऐसे ही सिंह-गर्जना करते रहें, बिजलियाँ ऐसे ही चमक-चमक कर सिलेटी आकाश को प्रकाशित करती रहें।

लेकिन जस्सी के मन के किसी कोने में एक भय भी समाया हुआ था। उसे आए बहुत देर हो गयी थी। अब तक उसे घर वापस पहुँच जाना चाहिये था। मालूम नही माँ उसके बारे में क्या-क्या सोचकर चिंतित हो रही होगी। हरनाम ने उसके चेहरे पर उत्पन्न हुए उस भाव को पढ लिया और दिलासा देते हुए बोला—*जस्सी, घबराओ नही, पानी जल्द ही बन्द होने वाला है।* उधर पूर्व दिशा की ओर देखो, बादल पूरी तरह छँट चुके हैं। सच पूछो तो दिल यही चाहता है कि वर्षा ऐसे ही होती रहे, तुम ऐसे ही मेरे सामने बैठी रहो, मैं तुम्हे ऐसे ही निहारता रहूँ, तुमसे बातें करता रहूँ। जस्सी! आज का दिन कितना शुभ रहा जो तुम यहाँ मेरे पास पहुँच गयी, इतने दिनो बाद तुमसे बातें हुईं। काश हमारी जिन्दगी मे ऐसे सुनहले अवसर बार-बार आते रहे। जस्सी! बोलो, बताओ, क्या इस तरह के मौके लाने मे तुम भी सहयोग दोगी। मुझसे इसी तरह मिलते रहना पसन्द करोगी।

जस्सी ने शरमाकर तनिक मुसकराकर जवाब दिया—नामे! क्या

तुम्हारी बात का जवाब मुझे बोलकर ही देना होगा ? अभी तक के मेरे भाव, मेरी आँखो ने तुमसे कुछ नही कहा ? नामे, मुझे तुम पर भरोसा है। तुम हमेशा मेरी खुशी ही चाहोगे। पर मालूम नही मन क्यों डरता है। इस तरह हम दोनो के आपस में मिलने पर किसी ने देख लिया, कोई ऐसी-वैसी बात फैला दी तो क्या होगा। बात मेरे माता-पिता तक पहुँच गयी तो उसका परिणाम क्या होगा।

—तुम ऐसी बातो के लिए चिन्ता न करो। मुझे तुम्हारी व अपनी इज्जत का पूरा ध्यान रहेगा। कोई ऐसी-वैसी बात नही होगी। और अगर कभी ऐसा मौका आ भी गया तो डटकर उसका सामना किया जाएगा। जिस रास्ते पर चलने के लिए हम दोनो सोच रहे हैं उस पर फूल भी मिलेंगे और काँटे भी। लेकिन मुझे विश्वास है कि रास्ता जैसा भी भयानक होगा यदि तुम मेरे साथ रहोगी तो वह रास्ता कटता जाएगा, मंजिल हमें मिल ही जाएगी।

—घर से चली थी तो मन मे कही आभास तक नही था कि तुमसे इतनी बातें होंगी, इतनी देर तक तुम्हारे इतने निकट बैठी रहूँगी। देखो, पानी अब बहुत कम हो गया है, अब मैं चलती हूँ। फिर कभी मुलाकात होगी। और इतना कहकर वह कमरे से बाहर आ गयी। अब भी हल्की-हल्की बूँदे पड़ रही थी। उसने चुनरी से सिर को अच्छी तरह ढका। हरनाम की ओर एक बार फिर देखकर हल्के से मुसकराकर अपने घर की ओर बढ़ गयी। हरनाम खड़ा उसे तब तक देखता रहा जब तक वह आगे वाली गली में मुड़ नही गयी।

जस्सी के जाने के बाद डाकघर मे भी और फिर रात ने बिस्तर पर लेटे हुए भी हरनाम को अपने भीतर कोई हल्का सा तूफान मचलता हुआ महसूस हो रहा था। क्या उस ने कभी सोचा था कि किसी दिन अचानक जस्सी उसके जीवन मे इस तेजी से आ जाएगी। उसका व्यक्तित्व इस प्रकार उसके मन-प्राणों पर छा जाएगा। उस मूसलाधार वर्षा मे डाकघर में जो कुछ हो गया था उसको याद करके वह मन ही मन पुलकित हो रहा था। जस्सी का शरमाता हुआ उल्लसित चेहरा, उसकी बंकिम आश्चर्यान्वित जादूभरी आँखें, उसके उजले स्वच्छ कपोल, कुरते में से झांकता उसका शुभ्र कठोर वक्षस्थल, किसी शराब से लबालब भरे उसके भरे-भरे अंगों का सौष्ठव, वाह ! इन सारे उपकरणों से निर्मित उसका व्यक्तित्व किसी के भी मन-प्राणों पर छा जाने की क्षमता रखता है। जस्सी की भाव-भंगिमाओं को याद करके, उसके स्पर्श-सुख की

कल्पना करके उसके शरीर में सनसनी पैदा हो रही थी। उसके रोम-रोम को जस्सी की याद गुदागुदा रही थी। वह समझ नही पा रहा था कि यह कैसी व्याकुलता है, कैसी उत्तेजना है। इस प्रकार का हल्का-हल्का नशा, नस-नस मे चुभने वाला अनूठा मीठा-मीठा दर्द उसने इससे पहले तो कभी महसूस नही किया था। वह लेटा-लेटा सोच रहा था कि काश इस समय उसकी प्यारी जस्सी उसके पास आ जाए, वह एक बार फिर उसकी आंखो मे झांकने लगे, उसके गोरे कोमल कपोलों, उसके रसीले होंठो व उसकी मरमरी-संदली सुडौल देह के अग-अंग का सुख भोगे। उसे अपने पास बैठाकर, उसको अपनी बांहो मे भरकर अपने भीतर मचल रहे जजबात का एहसास उसे भी कराए। उसके स्वच्छ कोमल हाथों को अपने हाथों मे लेकर सहलाए, गीले कोयले के समान उसकी काली घनेरी जुल्फो से खेले, उसके ललाट पर लहराती लट को संवारे, उसके खिलते हुए यौवन की सुगन्ध उसके दिल-दिमाग पर छा जाए। इसी प्रकार की कल्पनाओ मे खोकर वह विभोर हो रहा था, पुलकित हो रहा था।

उधर जस्सी का हाल भी कुछ ऐसा ही था। रात का दूसरा पहर बीत चुका था। पर नीद उसकी आंखो से कोसों दूर थी। उसके मन-मस्तिष्क पर भी हरनाम का आकर्षक रूप छाया हुआ था। वह सोच रही थी कि आज दिन मे जो कुछ हो गया क्या वह ठीक था, उचित था। क्या उसे नामे को इस प्रकार की अनुमति, ऐसी स्वतन्त्रता देनी चाहिए थी। क्या उससे कोई बहुत बडी भूल तो नही हो गयी, कोई अपराध तो नही हो गया। पर कुछ ही देर बाद उसे लगा कि नही अपराध कैसा भूल कैसी। क्या किसी से प्रेम करना पाप होता है। प्रेम को तो भगवान का रूप माना जाता है। उस दिन एक संत गुरुद्वारे में आए थे। उन्होने संगत को बताया था कि आदमी का जीवन एक फूल के समान होता है और प्रेम उस फूल की खुशबू होता है। प्रेम का मतलब है अपनी प्रसन्नता को दूसरों की प्रसन्नता में लीन कर देना। जिन्दगी में प्रेम वैसे ही होना चाहिये जैसे प्याले मे भरी शराब। जीवन का मधुरतम आनन्द प्रेम करने पर ही तो मिलता है। उसे लग रहा था कि उस संत ने ठीक ही तो कहा था। वह भी उस प्रेभ का सुख लेगी, वह अपने नामे को भरपूर प्रेम देगी, उसका प्रेम पाएगी।

फिर वह सोचने लगी कि पता नही इस समय उसका हरनाम क्या कर रहा होगा। जैसी इस समय मेरी दशा है क्या उसका भी ऐसा हाल होगा। क्या वह भी इस समय मेरी याद मे खोया होगा। जिस तरह मेरा मन उसको

मिलने के लिए, उससे प्रेमभरी बातें करने के लिए उत्सुक हो रहा है क्या ऐसा कुछ वह भी महसूस कर रहा होगा, क्या अपने तन से लगा लेने की आकांक्षा उसके भीतर भी मचल रही होगी।

सोचते-सोचते कभी-कभी उसकी आंखो के सामने उसके पिता की, माँ की शक्ल आ जाती। वह थोडी कांप-सी जाती। सोचती यदि उन्हे पता चल गया तो उसका क्या परिणाम होगा। क्या वे दोनों हमारे सम्बन्धों को सहन कर पायेंगे, क्या वे हमें भविष्य मे आपस मे मिलने की अनुमति देंगे। पता नही उन दोनो का रुख क्या होगा। पर कुछ ही देर बाद वह इस तरह के चिन्तायुक्त विचारों को परे हटा देती। स्वयं को कहती कि नही उन्हें कहाँ पता चल पाएगा, वह हरनाम से लुकछुप कर ही मिला करेगी। खैर जो होगा देखा जाएगा। वह हर प्रकार की स्थिति का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार रखेगी। जीवन मे उसे किस राह पर चलना है इस बात का फैसला वह स्वयं ही लेगी, किसी दूसरे के फैसले के नीचे वह नही दबेगी।

● ●

नौ

सरदार प्रताप सिंह स्वय कोई विशेष पढ़ा-लिखा नहीं था। बड़ी मुश्किल से वह मिडिल ही कर पाया था। पर वह शिक्षा के महत्व को समझता था। यह अलग बात थी कि उसके प्रयास करने के बावजूद भी उसके बच्चे ऊँची शिक्षा प्राप्त नही कर पाए थे। बेटा मोहर सिंह दसवी पास करने के बाद आगे नही पढ पाया था। यह जरूर था कि उसने किसी कालेज से बी० ए०, एम० ए० नही किया था। पर पढने का शौक उसे था। राजनीति ने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। राजनीति तथा इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें उसे जहाँ से भी मिलती वह उन्हें बड़ी रुचि लेकर पढता। राजनीति मे रुचि रखने वालो के सम्पर्क में रहने के कारण भी उसका सामान्य ज्ञान काफी बढ गया था। धीरे-धीरे वह साम्यवादी विचारधारा का पक्का समर्थक हो गया था। प्रताप सिंह की बेटी प्रीतो मिडिल पास करने के बाद आगे नही पढ पायी थी। उसे पढने का शौक था। पर गाँव मे हाई स्कूल न होने के कारण उसकी आगे की शिक्षा का सिलसिला खत्म हो चुका था। बलदेव के समझाने पर उसके मन मे पढाई को फिर से शुरू करने के लिए उत्साह पैदा हो

गया था। प्रताप सिंह व उसकी पत्नी प्रसिन्नी भी चाहते थे कि उनकी बेटी किसी तरह मैट्रिक पास कर ले। बलदेव को हेड मास्टर का पद दिलवाने में प्रताप सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उसके इस सहयोग को बलदेव हृदय से स्वीकार करता है।

प्रीतो ने प्राईवेट रूप में मैट्रिक की परीक्षा देने की तैयारी शुरू कर दी। प्रताप सिंह व प्रसिन्नी के अनुरोध पर बलदेव सप्ताह में दो-तीन बार उनके घर आकर उसे पढा जाता था। बलदेव और प्रीतो मन ही मन खुश थे। पढाई के बहाने वे दोनों एक दूसरे से मिल लेते थे और अवसर मिलने पर प्रेम सम्बन्धी अपनी भावनाएँ व्यक्त कर लेते थे। पर वे दोनों हर समय चौकन्ने भी रहते थे। वे नही चाहते थे कि कभी कोई उन्हे रंगे हाथो पकड पाए।

प्रताप सिंह अपने खेती सम्बन्धी कामों मे लगा रहता था। वह प्रायः रात को देर मे ही घर लौटता। मोहर सिंह भी घर पर कम ही टिक पाता था। जब कभी इच्छा हुई तो कुछ देर के लिए रहट पर अथवा खेतों मे चला जाता। खेती के कामों में उसे कोई दिलचस्पी नही थी। कई वर्ष पहले ही प्रताप सिंह अपने बडे भाई जोधा सिंह से अलग हो गया था। खेतों का बटवारा कर लिया गया था और दोनों भाई स्वतन्त्र रूप से अपनी-अपनी खेती की देखभाल कर रहे थे। बेशक दोनो परिवार अलग-अलग रह रहे थे पर दोनों में परस्पर सम्बन्ध किसी सीमा तक ठीक ही चल रहे थे। दोनों घर आपस में दुनियादारी निभा रहे थे। दोनों परिवारों के सदस्यों का एक दूसरे के घर आना-जाना बना हुआ था।

बलदेव सायं छः बजे के क़रीब प्रीतो को पढाने आता। उस समय प्रायः प्रताप सिंह खेतों में होता। कभी-कभी ही उसकी बलदेव से अपने घर पर भेंट हो पाती। जोधा सिंह स्वभाव से बडा बातूनी था। दुनिया भर की बातों, गाँव की राजनीति, लड़ाई-झगडो व अनेक प्रकार के प्रपंचों का उसके पास अच्छा-खासा भंडार था। उसकी बातें खत्म होने को नही आती थीं। लेकिन उसके छोटे भाई प्रताप सिंह का स्वभाव उससे लगभग उल्टा था। जरूरत से ज्यादा बातें करना उसे पसन्द नही था। और फिर जो कुछ बोलता भी था तो बहुत सोच-समझकर, मामले के सभी पहलुओं पर दृष्टि रखकर। लड़कों-बच्चों से वैसे भी वह कम ही बात करता था। पर उसके स्नेह-प्यार में किसी प्रकार का अभाव नही था। बलदेव से जब भी मिलता, उसका व उसके घर के अन्य लोगो की कुशलक्षेम पूछ लेता। स्वभाव से मृदुल व शान्त था। किन्तु उसके

इस शान्त तथा बात को तौल-तौल कर बोलने के स्वभाव का जोधा सिंह कुछ और ही मतलब लेता था। वह कभी-कभी अपनी पत्नी व लड़कों से कह भी देता था कि प्रताप सिंह बड़ा चुप्पू और घुन्ना है, उसकी इस चुप्पी तथा घुन्नेपन के पीछे कैसे-कैसे भयानक तूफान व षड्यन्त्र छुपे होते हैं वे तुम लोग नही जानते। वह मेरा भाई है। मैं उसके इस चालाकी भरे स्वभाव को उसके बचपन से जानता हूँ। उसकी मुसकराहट मे कितना जहर भरा रहता है यह मैं भली प्रकार से जानता हूँ समझता हूँ।

प्रताप सिंह को पैसे का कोई अभाव नही था। छोटा सा परिवार था। खेती से अच्छी-खासी आय हो जाती थी। इसके अलावा गत आठ-दस वर्षों से उसे चीनी, मिट्टी का तेल व अन्य प्रकार के राशन का कोटा भी मिला हुआ था। राशन की इस दूकान के लिये उसने एक कारिन्दा रखा हुआ था। इस दूकान से भी उसे प्रति माह पाँच-सात सौ रुपये की आमदनी हो जाती थी। राशन की दूकान से होने वाली आय वह अपनी पत्नी प्रसिन्नी व बेटी प्रीतो को दे देता था। इस धन मे माँ-बेटी परिवार के छोटे-मोटे खर्चे करती रहती थीं। अपने कपड़े-लत्ते व अन्य प्रकार के शौक पूरे कर लेती थी।

बलदेव प्रीतो को जब पढा रहा होता तब कभी-कभी प्रसिन्नी उसके लिये दूध-नाश्ता आदि दे जाती। बलदेव को अमृतसर मे रहकर चाय पीने की आदत पड चुकी थी। जब तक वह गाँव में रहा था तब तक उसने शायद ही कभी चाय पी थी। पर शहर मे रहकर अपने मित्रो की संगति के कारण उसके मन मे चाय-काफी पीने का शौक पैदा हो गया था। वह प्रीतो के यहाँ भी दूध की अपेक्षा चाय को ही प्राथमिकता देता। किन्तु प्रसिन्नी आम तौर पर उसे दूध ही देती। घर मे दूध बहुत रहता था। चाय पीने का उसे कोई लगाव नही था। इसके अलावा घर आए मेहमान को दूध के बजाए चाय देना वह अपनी परिवार की शान व मर्यादा के खिलाफ मानती थी। घर के दूध का जायका रबडी से कम न होता। उपलों की हल्की आँच पर दिन भर पकने के कारण दूध का रंग हल्का भूरा सा हो जाता। उस पर मलाई की मोटी परत जम जाती। उसे पके-गाढे दूध को कटोरे मे भरकर, उसमें भूरी शक्कर मिला-कर बलदेव को देती। साथ मे एक-दो पिन्नियाँ (उरद के लड्डू) या कोई दूसरी मिठाई रहती। न चाहते हुए भी बलदेव को यह दूध-नाश्ता लेना पडता। प्रसिन्नी व प्रीतो के असरार के सामने उसे नतमस्तक होना पडता।

उस दिन बलदेव हाथ मे कटोरा लिये दूध पी रहा था। प्रीतो भी नाश्ता कर रही थी। प्रसिन्नी आम तौर पर रसोई मे ही कामकाज देखती थी। लेकिन

उस दिन वह भी उन दोनों के पास बैठी दाल बीन रही थी। तभी प्रताप सिंह किसी काम के लिये कमरे में प्रविष्ठ हुआ। बलदेव ने हाथ जोड़कर उसका अभिवादन किया। उसे आशीष देने के बाद पूछा—कहो बलदेव बेटे, बिटिया की पढाई कैसी चल रही है, पढने में कोई दिलचस्पी दिखा रही है, पास हो जाएगी न?

—जरूर पास होगी और अच्छे नम्बर लेकर पास होगी। इसका दिमाग बहुत तेज है। इसकी अक्ल का लोहा तो मुझे भी मानना पड़ रहा है। यह कभी-कभी ऐसे प्रश्न पूछ लेती है कि मुझसे जवाब देते नही बनता।

बलदेव के ये शब्द सुनकर प्रताप सिंह ठहाका मारकर हँस पडा और बोला—आखिर किस माँ की बेटी है। प्रसिन्नी के बहुत से सवालों के जवाब मैं भी नही दे पाता। इन दोनो के सामने मुझे भी अक्सर लाजवाब होना पड़ता है।

प्रसिन्नी के लिये अब चुप रहना मुश्किल था। पति की बात के उत्तर मे हल्के से मुसकराकर वह बोली—तुम मेरे या प्रीतो के सवालों का ही जवाब नही दे पाते बल्कि अपने बड़े भाई के सामने भी चुप्पी मार जाते हो। वह बातों मे कितना होशियार है। क्या बातों में कोई उसे मात दे सकता है। हाँ शान्त व घुघ्घू बनकर रहने मे तुमसे कोई पार नहीं पा सकता।

माँ की बात सुनकर बाप का पक्ष लेते हुए प्रीतो बोली—तो क्या भाया जी तुम्हारी निगाह मे घुघ्घू हैं? यह ठीक है कि घुघ्घू (एक पक्षी) अधिकतर चुप ही रहता है। पर जब बोलता है तो उसकी आवाज कितनी प्यारी कितनी मधुर लगती है।

बेटी के शब्द सुनकर प्रताप सिंह और प्रसिन्नी खिलखिलाकर हँस पडे। बलदेव भी अपनी हँसी रोक न पाया। पर तभी प्रताप सिंह बोला—प्रसिन्नी घुघ्घू परिन्दे की बात नही कर रही। आटा पीसने की मशीन पर जो घुघ्घू लगा रहता है, यह उसका जिक्र कर रही है। इसकी नजर में मैं वह मशीन वाला घुघ्घू हूँ।

तभी बलदेव ने उससे कहा—मशीन के घुघ्घू का क्या कम महत्व होता है। यह सही है कि जब मशीन नही चलती होती तब वह भी खामोश रहता है। पर जैसे ही मशीन चालू होती है वह अपनी प्यारी आवाज में 'तुक-तुक' बोलने लगता है। उसकी वह मधुर ध्वनि केवल गाँव वालो को ही सुनाई नही पड़ती बल्कि गाँव से बाहर खेत-खलिहानों में काम करने वालो को, पगडंडियों

व सड़कों पर जाने वाले मुसाफिरों के कानों में भी मन्दिर की घंटियों की तरह बजती सुनाई पड़ती है।

—वाह बेटा बहुत खूब ! फिर प्रसिन्नी को सम्बोधित कर बोला—देखा बलदेव ने कितनी बड़ी कितनी ऊँची बात कही है। हम उसी प्रकार के घुग्घू हैं। जब भी बोलेंगे घुग्घू की तरह मीठा ही बोलेंगे।

फिर बाहर जाते-जाते उसने बलदेव से कहा—अच्छा बेटे चलता हूँ। रहट पर बहुत सा काम पड़ा है। प्रीतो बेटी को हमने तुम्हारे हवाले कर दिया है। इसकी पढ़ाई-लिखाई इसका अच्छा-भला देखना अब तुम्हारे ही जिम्मे है। हां इससे कभी शिकायत हो तो मुझे बताने मे संकोच न करना। जानते हो न कि यह हमारी लाडली बेटी है और लाडले बच्चे आम तौर पर ज्यादा मुँह लगे होते हैं। यह कभी-कभी हँसी-मजाक मे ऐसा बोल जाती है कि सुनने वाले को बुरा लग सकता है।

—नहीं मामा जी, मुझे तो प्रीतो नें ऐसा कभी कुछ नही लगा। मुझसे तो हमेशा ठीक ढंग से ही बात करती है। ;और आप इसकी चिन्ता न करें। कोई ऐसी भूल करेगी तो मैं इसे सम्भाल लूंगा।

प्रताप सिंह रहट को चला गया। प्रसिन्नी भी उठकर रसोई में आ गयी। प्रीतो सिर झुकाए कापी पर कुछ लिख रही थी। और बलदेव सोच रहा था कि यह प्रीता कितनी तेजी से चमेली के फूलों की सुगन्ध की भांति मेरे मन-प्राणों मे बसती जा रही है। इसकी कल्पना मात्र से ही मेरा हृदय गुदगुदाने लगता है, किसी कविता का जन्म होने लगता है, किसी संसार की रचना होने लगती है, कोई सुमधुर सी तान सुनाई पड़ने लगती है। यह सब क्यों होता है। क्या प्रत्येक प्रेम करने वाले को दशा ऐसी होती होगी। फिर सहसा उसके मन में विचार उपजता है कि वह एक स्कूल का हेड मास्टर है। उसकी गाँव में इज्जत है, उसका अपना रुतवा है। सरदार प्रताप सिंह भी उसे बहुत मानते हैं, अपने बेटे जैसा स्नेह देते हैं। और वह एक अध्यापक के रूप में उनके घर आता है, प्रीतो के लिये उसका स्थान एक गुरु का है। प्रीतो उसकी शिष्या है। प्रीतो को जिस रूप मे वह देखने लगा है क्या वह एक गुरु के लिये शोभनीय है। क्या वह प्रताप सिंह व उसकी पत्नी से विश्वासघात तो नही कर रहा। जब कभी उसकी चोरी पकड़ी जाएगी, जब उसका वास्तविक रूप उन दोनों के सामने प्रकट होगा तब उसकी क्या मान-मर्यादा रह जाएगी, तब अपनी ही दृष्टि मे उसका क्या स्थान होगा। क्या उसे यह राह तज देनी चाहिये ?

वह स्वयं को एक अजीब तरह की उधेड़बुन में पा रहा था। वह सोच रहा था कि जब से उसने प्रीतो को पढ़ाना शुरू किया है तब से गाँव वालो ने भी उसके व प्रताप सिंह के बारे में कुछ सोचना शुरू कर दिया होगा। वह जानता था कि शहरों की अपेक्षा गाँवों में इस प्रकार की बातें तेजी से फैलती है। अभी उस दिन बातों-बातो मे प्रसिन्नी ने उसे बताया था कि गली की चार-पाँच महिलाएँ उससे पूछ चुकी है कि प्रीतो बलदेव के पास क्यों पढ़ने लगी है। क्या और पढ़कर नौकरी करेगी, किसी स्कूल में मास्टरनी या अस्पताल मे डाक्टरनी बनेगी। वे सोचती है कि वह मिडिल पास है बहुत है। लडकियो को ज्यादा पढ़ाने की क्या जरूरत है। केवल दूसरे लोग ही इस तरह नही सोचते बल्कि उनके अपने परिवार वालो का भी ऐसा ही नजरिया है। प्रताप सिंह का बड़ा भाई जोधा सिंह तथा उसकी पत्नी भी ऐसी ही बातें कहते रहते हैं। उन दोनों को तथा उनके लड़को-बच्चो को भी प्रीतो के आगे पढ़ने पर आपत्ति है।

प्रसिन्नी ने इस सम्बन्ध मे जोधा सिंह-परिवार की गंदी मानसिकता का उल्लेख करते हुए बलदेव से कहा था कि चूंकि उसके घर के लोग अनपढ हैं इसीलिये उनके मन मे डाह है कि दूसरों के लड़के-लड़कियाँ क्यो पढ रहे हैं। उनके लड़के तो बैलो में रहकर एकदम बैल हो गये हैं। उनकी बुद्धि भी बैलो जैसी ही है। वह कहते हैं न कि अक्ल बडी या भैंस। उनके घर वालों के लिये भैंस ही बडी है। लेकिन हम लोग इस मामले मे उनकी बातो की परवाह क्यो करें। वे मन मे जलते हैं तो जलें हमारी जूती से। बेशक वे हमारे घर के है पर हैं तो हमारे शरीक (पट्टीदार) ही। और सभी जानते है कि शरीकों का काम तो जलना-भुनना ही होता है। प्रीतो हमारी लाडली बेटी है, सुशील है, दिमाग की तेज है, पढ़ने-लिखने का उसके मन में शौक है। हम माँ-बाप उसकी इच्छा को पूरा नही करेंगे तो और कौन करेगा। फिर ऐसी बात भी नही है कि केवल हमारी बेटी ही पढ़ रही है। गाँव की और भी तो आठ-दस लड़कियाँ आगे पढ रही हैं। व ऊँची पढाई करने के लिये शहरों मे जाकर रहती हैं। उन सबके बारे में लोग क्यों नही बोलते। उनके लिये इनके मुँह क्यो सिल जाते हैं। पढ़ाई तो आदमी का गहना होती है। शिक्षा को तो बहुत बड़ा धन माना गया है। खाली जमीन-पैसा होने से क्या होता है। पैसा तो कंजरों के पास भी बहुत होता है। पर क्या उनकी कोई इज्जत होती है। हम तो अपनी बेटी को पढाएँगे, लोग जो सोचते हैं सोचें।

सोचते-सोचते सहसा बलदेव को प्रतापसिंह के शब्द याद आ गये। कुछ दिन हुए प्रताप सिंह ने उससे कहा था—बेटा, शिक्षा का कितना अधिक महत्व

होता है। मैं देख रहा हूँ कि गाँव वाले अब तुम्हे किन नजरों से देखते हैं। तुम ऊँची शिक्षा पा चुके हो, अपने ही गाँव में हेड मास्टर के रूप में काम करने लगे हो। अब यहाँ के लोग तुमको बहुत बड़ा आदमी मानने लगे है। बेटा, जिस निगाह से लोग तुम्हे देखते हैं, मैं चाहता हूँ वैसी ही उनकी नजर हमारी बेटी के लिये रहे।

प्रीतो कापी पर कुछ लिख रही थी। पर वह कुछ हैरान भी थी कि आज बलदेव चुप-चुप क्यो हैं, कोई बात नहीं कर रहा, अवश्य ही कोई खास बात होगी। पहले तो मौका पाकर एकान्त देखकर कुछ न कुछ मीठी-मीठी बातें बोलने लगता था। उसने धीरे से निगाह उठाकर उससे पूछा—बलदेव, क्या बात हैं, इतने खामोश क्यों हो। क्या किसी ने कुछ कह दिया है या तबियत ठीक नही है ?

बलदेव ने उत्तर दिया—नही प्रीतो, कोई विशेष बात नही है। बस वैसे ही अकारण ही चुप हूँ। पता नही कभी-कभी कैसी-कैसी बातें दिमाग मे आने लगती हैं। खैर छोड़ो, वे तुम्हारे मतलब की नही हैं। अच्छा अब चलता हूँ। फिर मुलाकात होगी। और इतना कहकर वह उठकर चला गया।

बलदेव के जाने के बाद प्रीतो सोचती रही कि आज क्या खास बात हो गयी जो बलदेव कुछ चुप-चुप सा रहा। उन दोनो के बीच कैसा मौन छाया रहा। क्या वह मेरी किसी बात से नाराज तो नही हो गया। पर मैंने तो कुछ ऐसा-वैसा नही कहा था। स्कूल मे कोई बात न हो गयी हो। भाया जी या माँ ने कोई चुभने वाली बात न कह दी हो। पर नहीं वे लोग उसे कभी नाराज नही कर सकते। वे तो हमेशा उसकी इज्जत ही करते हैं, उसे प्यार देते है।

रात में भी बहुत देर तक उसे नीद न आयी। विचारों में खोई वह अपने बलदेव के बारे में ही सोचती रही। वह सोचती कि उसे क्या हो गया है, दिनोदिन क्या होता जा रहा है। उसे लगता कि प्रेम को लोग एक प्रकार का रोग मानते हैं यह बात सच ही है। उसकी स्थिति भी तो एक रोगिनी जैसी हो गयी है। वह अपने भीतर कैसी बेचैनी, कैसी उदासी, कैसी आँच, कैसा दर्द महसूस करती रहती है। पर इस बेचैनी इस पीड़ा में भी उसे कही कोई मीठा-मीठा दर्द कोई गुदगुदाती चुभन का एहसास होता है। जब बलदेव उसके सामने होता है उससे बातें करता है तब भी वह मन ही मन हर्षित होती रती है, गर्व की अनुभूति उसे होती रहती है। और जब वह उसके पास नहीं

होता तब भी उसको याद करके, उसकी प्रतीक्षा करके एक अद्भुत प्रकार के सुख को अनुभव करती है।

इधर कुछ समय से उसे लग रहा था कि प्रेम सम्बन्धी बाते करने मे, प्रेम-कहानियाँ पढ़ने में उसे बड़ा रस सा मिलता है। अपनी किसी विवाहित सहेली से उसके अनुभव सुनने में उसे मज़ा मिलता है। उसकी सहेलियाँ जब कभी दो प्रेमियों की चर्चा करती है, प्रेम सम्बन्धी छेड़छाड़ करती है, मज़ाक करती हैं तो वह उनको ऐसी हरकतें देखकर प्रसन्न होती है। जब दूर कही कोई वंशी बजाता है, कोई संगीत छेड़ता है, कोई गीत गाता है तो उसे लगता है मानो वह कार्यकलाप उसके लिये ही किया जा रहा हो। आम के पेड पर कोयल उसके लिये ही कूकती है, पपीहा उसे ही पुकारता है, भँवरा फूल पर उसके लिये ही मँडराता है, पुष्प उसके लिये ही अपनी सुगन्ध बिखेरते हैं, तितलियाँ उसका मन बहलाने के लिये ही फूलो पर नृत्य करती हैं।

फिर वह सोचने लगी कि गाँव में और भी कई युवक हैं। उनमें दो-चार उसे ललचाई हुई नजरों से देखते हैं। पर वह स्वयं उनसे कतराती रहती है। उनसे बात करने की कोई इच्छा उसमें उत्पन्न नही होती। किन्तु बलदेव में ऐसा क्या है जो उसे सदैव अपनी ओर आकर्षित करता रहता है। शायद वह आकर्षण बलदेव के भीतर का इन्सान है। देखने मे तो वह सुन्दर है ही पर उसकी सूरत में कही मोहक उसकी सीरत है। कभी-कभी उसके व्यवहार व उसकी बातों से कैसी दिव्यता कैसी सरलता व पावनता की अनुभूति होने लगती है। तब लगता है मानो वह इस धरती का आदमी न होकर कोई देवता हो या कोई महापुरुष हो। सचमुच वह कितनी भाग्यशाली है जिसे बलदेव जैसा नेकदिल व्यक्ति प्यार करता है, जो उसके लिये कुछ भी करने को तैयार है। उसकी किस्मत में क्या लिखा है, उसका दाम्पत्य जीवन कैसा होगा यह तो भविष्य ही बताएगा। पर आज जो कुछ उसके पास है वह उसके लिये एक अमूल्य निधि है। वह उसे पाने के लिये हर सम्भव उपाय करेगी और उसे विश्वास भी है कि उसे इसमें सफलता भी मिलेगी। लेकिन अगर कही स्थितियों ने उसे अपने मन के मीत से अलग कर दिया तब भी वह जिन्दगी भर उसे कहाँ भूल पाएगी, उसकी मधुर याद जीवन के अंतिम क्षणों तक उसके साथ क़ायम रहेगी, उसे प्रेरणा तथा बल देती रहेगी।

प्रीतो गाँव की सीधी-साधी युवती थी। वह गाँव में प्रकृति की गोद में पलकर जवान हुई थी। भगवान ने उसे भावुक व संवेदनशील हृदय दिया

था। वह उस समय अपनी आयु के उस भाग में प्रविष्ट हो चुकी थी जब अविवाहित युवतियाँ सपनों के संसार में विचरण किया करती है, जब उनकी यौवन से परिपूर्ण देह किसी की मजबूत बाँहों का पाश पाने के लिए उत्सुक रहने लगती है, जब उन्हे अपने अंग-अंग से एक विचित्र प्रकार की गन्ध का एहसास होने लगता है, जब वे आइने के सामने खड़ी होकर स्वयं से बातें करने लगती हैं, अपने प्रतिबिम्ब को निहारकर जब उन्हे लाज लगने लगती है। जब ऐसा सब कुछ प्रीतो के साथ भी था तब यदि वह बलदेव जैसे युवक को अपने मन के सिंहासन पर बैठा चुकी थी तो ऐसा होना स्वाभाविक ही था, इसमे कोई आश्चर्य की बात नही थी।

इधर कुछ समय से बलदेव के मन मस्तिष्क पर भी प्रीतो की छवि पहले से कही अधिक निखरे हुए रूप मे उजागर हो रही थी। वह सोचता कि उसे यह क्या होता जा रहा है। वह तो खूब सुशिक्षित है, दुनियाँ को भली प्रकार से समझता है, उसे इस प्रकार भावनाओ मे नही बहना चाहिये। वह अपना ध्यान मोड़ने के लिये अपने साथ जबरदस्ती करता, कभी किसी पुस्तक-पत्रिका को पढने की चेष्टा करता, पर उसमें मन लग न पाता। पृष्ठो पर प्रीतो के तरह-तरह की भाव-भंगिमाओं के चित्र उभरने लगते। पुस्तक उसके सामने खुली रहती पर उसका मन कही और पहुँच चुका होता। अपनी प्रीतो का हाथ थामे किसी स्वप्नलोक मे विचरता होता। वह ऐसे लोक मे पहुँच जाता जहाँ हर कही बहार ही बहार बिखरी दृष्टिगोचर होती, जहाँ की प्रत्येक वस्तु यौवन के नशे मे मदहोश उसे बेहद प्यारी लगने लगती। वह उस कल्पनालोक मे अपनी प्रीतो को अपने समीप सरका लेता, उसे अपनी बेचैन बाँहो मे भरकर उसके हृदय की धड़कने सुनने लगता। वह उसके दर्शन-दीप्त आनन को निहारकर अपने भाग्य को सराहने लगता, उसके सुकोमल गुलाबी कपोलो व होठों की लावण्यता का रस लेने लगता। उसकी झील सरीखी गहरी आँखों में झाँककर कुछ अनूठा सुख पाने की चेष्टा करता। फिर सहसा वह स्वयं ही मुस्कुरा देता और उसके होठो से 'प्रीतो' का प्यारा शब्द निकल जाता। भावनाओं मे बह कर वह कह उठता—सच मानो प्रीतो तुम मुझे बेहद प्यारी लगती हो, अब तुम ही मेरी जिन्दगी हो, अब तुम्हारा स्थान कोई दूसरी औरत नही ले पाएगी। तुम ही मेरा सब कुछ हो। तुम्हें पाकर मैं स्वयं को भाग्यशाली मानूँगा। हाँ मैं तुम्हें हर हालत मे पाकर ही रहूँगा।

दो दिनों बाद आमोद-प्रमोद एवं आनन्द का प्रतीक होली पर्व शुरू होने वाला था। सरदार जोधा सिंह के मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि इस बार राग-रंग, हास-परिहास रंगीनी व मस्ती का होली-पर्व आनन्दपुर साहब जाकर देखा जाए। उसके कहने पर उसकी पत्नी, उसका बड़ा बेटा शेर सिंह, उसका दोस्त शगारा सिंह व उसका परिवार यह त्यौहार आनन्दपुर साहब जाकर देखने के लिये तैयार हो गये। जोधा सिंह ने अपने छोटे भाई प्रताप सिंह से भी कहा कि वह भी अपने परिवार के साथ उन लोगों के साथ आनन्दपुर चले। प्रताप सिंह ने आनन्दपुर के होला-मोहल्ला के महत्त्व के सम्बन्ध मे बहुत सुन रखा था पढ़ रखा था। पर आज तक उसे यह पर्व देखने का अवसर नहीं मिला था। भाई के कहने पर उसने सोचा कि मौका अच्छा है, घर के लोगों का साथ रहेगा, वह भी जाने के लिये तैयार हो गया। प्रीतो ने इस कार्यक्रम के बारे में बलदेव को बताया और उससे अनुरोध किया कि वह भी उन लोगों के साथ चले। बलदेव के स्कूल मे होली की छुट्टियाँ थी। प्रीतो के अनुरोध को टालना उसने उचित नहीं समझा। उसने भी साथ चलने के लिये अपनी सहमति दे दी। मोहर सिंह वैसे तो धार्मिक उत्सवों मे कम ही रुचि लेता था पर आनन्दपुर के होला पर्व का रूप धार्मिक होने से कही अधिक सांस्कृतिक होता है, इस कारण बलदेव के दबाव डालने पर वह भी जाने के लिये राजी हो गया। अगले दिन वे लोग एक मिनी बस द्वारा आनन्दपुर साहब पहुँच गये। बस की यात्रा बहुत सुखद रही। रास्ते भर वे लोग गपशप व वाद-विवाद करते वहाँ पहुँचे। बलदेव और प्रीतो भी बहुत खुश थे। बस में वे आपस में ज्यादा बातचीत तो नहीं कर पाते थे। लेकिन वे एक दूसरे को देख सकते थे, आँखों-आँखों मे मुस्कुरा सकते थे। इतने भर से वे सन्तोष व हर्ष अनुभव कर रहे थे।

वहाँ गुरुद्वारे के बाहर निर्मित विशाल पंडाल मे उनके रहने की व्यवस्था हो गयी थी। वहाँ का वातावरण बड़ा ही उल्लासपूर्ण व उत्साहवर्द्धक था। पूरे नगर तथा वहाँ के ऐतिहासिक गुरुद्वारे के आसपास के पूरे क्षेत्र में किसी भव्य मेले जैसी गहमा-गहमी छायी हुई थी। पंजाब के अनेक अंचलों से हजारों की संख्या में लोग वहाँ पहुँच चुके थे या पहुँच रहे थे। भीड़ के कारण गली-मुहल्लो मे निकलना मुश्किल हो रहा था। इस विशाल जन-समूह में बच्चों के

खो जाने की तथा बड़ो के एकदूसरे से विछुड जाने की सम्भावना बनी हुई थी। इसलिये बाजारो मे चलते समय लोग एक दूसरे के साथ-साथ चलते थे। शिशुओं को माताएँ उठाए हुए थी और अनेक बालक पुरुषों के कंधों पर बैठे हुए थे।

वैसे तो होली का त्यौहार पूरे उत्तर भारत में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। पर आनन्दपुर साहब के होली-पर्व का अपना अनूठा महत्त्व है। उसका रूप ही कुछ दूसरा होता है। सिख शिरोमणि गुरुगोविन्द सिंह से पूर्व अन्य सिख गुरुओं ने होली के लाल रग तथा गुलाल-अबीर को प्रेम-रंग में रंगने के साधन के रूप मे स्वीकारा है। उन्होंने इस पर्व को साधु-सन्तो की सेवा एवं प्रभु-अर्चना का पर्व माना है। पंचम गुरु अर्जुनदेव ने कहा है कि वह व्यक्ति बडा भाग्यशाली होता है जो प्रभु-भक्ति एवं संत-सेवा रूपी गुलाल-अबीर के रंगों मे रंग जाता है। अपने इस विचार को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा है—

आज हमारे बने फाग
प्रभु सगी मिल खेलन लाग
होली कीनी संत-सेव
रंग लागा अति लाल देव।

किन्तु गुरु गोविन्द सिंह जी ने सैकड़ों वर्षों से चली आ रही परतन्त्रता एवं समकालीन परिस्थितियो को दृष्टि में रखकर इस परम्परागत होली-पर्व को एक नया रूप प्रदान किया। वे भली-भाँति जानते थे कि इस भारत भूमि पर बार-बार विदेशियो के आक्रमण, उनकी लूट-खसूट, हमारी संस्कृति में दिनो-दिन आ रही गिरावट का मूल कारण हमारी आपसी फूट तथा जातीय भेदभाव की नीति ही रही है। अतः समाज मे समानता लाने एवं दलित व भयभीत लोगो मे स्वधर्म, स्वभाषा तथा शौर्य को भावना को जाग्रत करने के लिये उन्होने होली-पर्व को रंग-कीचड़ फेंकने, अश्लील मजाक करने व मदिरापान करने के बजाए पुरुषत्व-पर्व के रूप मे मनाने के लिये आह्वान किया। उन्होंने युवकों से कहा कि वे शत्रु तथा अत्याचारियों पर बाण रूपी पिचकारियाँ चलाएं, बंदूक रूपी पिचकारियों से बारूद रूपी कुंकुम व गुलाल फेंकें, उनके ढोल-ढफ उनकी ढाल बनें। आह्वान करते हुए उन्होंने कहा—

बान चले तेहि कम मानह मूठ
गुलाल की साग प्रहारी
ढाल मलो ढफ माल बनो
हयनाल बंदूक छूटे पिचकारी

खेलत फाग कि वीर लरे
नवला सो लिये करवार कटारी।

गुरु गोविन्द ने होली-पर्व को जो रूप दिया वह श्रीकृष्ण की ब्रज में प्रचलित की गयी होली से भिन्न है। दशम गुरु द्वारा प्रारम्भ किये गये होली के नये रूप का उल्लेख करते हुए कवि निहालसिंह ने लिखा है—

कान्हा जो मचाई होली
ब्रज त्यो गोविन्द सिंह
थी आनन्दपुर में मचाओ
खूब होली है।

प्रातः स्नान आदि करके राणीपुर से आए जोधा सिंह, प्रताप सिंह व शंगारा सिंह आदि अपने परिवार के सदस्यों के साथ आनन्दपुर साहब के ऐतिहासिक गुरुद्वारे मे दर्शनार्थ पहुँच गये। वहाँ बाहर से आए संतों-विचारको के प्रवचन हो रहे थे। श्रद्धालुजन उनके प्रवचनों को श्रवण कर अपने भाग्य को सराह रहे थे। धर्म तथा देश की बलिवेदी पर हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुतियाँ देने वालों का बड़े उत्साह से उल्लेख किया जा रहा था। लोगों का अद्भुत प्रकार का उत्साह देखने योग्य था। प्रवचनों के बीच-बीच कभी-कभी कोई श्रोता बडे जोर से जयकारा 'जो बोले सो निहाल' बोलता था और उसके उत्तर मे पूरा हाल 'सत सिरी अकाल' के बुलन्द नारे से गूंज जाता था। दोपहर करीब एक बजे तक प्रवचनों का सिलसिला चलता रहा। उसके बाद अर्दास हुई और प्रसाद वितरण किया गया। प्रसाद-वितरण के उपरान्त गुरुद्वारे के भीतर हो रहा कार्यक्रम समाप्त हो गया। उसके बाद अपराह्न में दूसरा कार्यक्रम शुरू होने वाला था।

गुरुद्वारे से बाहर आने पर जोधा सिंह ने बलदेव से पूछा—बेटे ! यहाँ जो समारोह होता है इसे पुरुषतत्व-पर्व क्यों कहा जाता है ? जोधा सिंह जानता था कि बलदेव ही उनमें सबसे अधिक पढा-लिखा है और वह ही उसकी बात का ठीक तरह से उत्तर दे पाएगा, भलीभाँति समझा सकेगा।

जोधा सिंह के प्रश्न के उत्तर मे बलदेव ने बताया—गुरु गोविन्द सिंह जो महाराज महान संत होने के साथ-साथ महान योद्धा भी थे। वे चाहते थे कि लोगों मे नई चेतना जागे, उनमें ज्ञान के साथ-साथ बल तथा पुरुषत्व का संचार भी हो। विदेशी आक्रमणकारियों व देश के भीतर रह रही राष्ट्र-विरोधी शक्तियों से लोहा लेने के लिये ही उन्होंने होली पर्व को एक नया रूप दिया था। उन्होंने होली के अवसर पर विशाल पैमाने पर शस्त्र-विद्या के

प्रदर्शन व अनेक प्रकार के शौर्यपूर्ण खेल-तमाशो के कार्यक्रमों के आयोजन की प्रथा आरम्भ की। हमारा इतिहास हमें बताता है कि उन्होंने स्वयं अनेक बार इस प्रकार के कार्यक्रमों को संरक्षण प्रदान किया। उनकी इस प्रथा की स्मृति मे यहाँ आनन्दपुर साहब में, जिसे खालसा पंथ की जन्मभूमि कहा जाता है, पुरुषत्व पर्व का आयोजन किया जाता है। इस भव्य उत्सव को होला मोहल्ला भी कहा जाता है। अभी थोडी देर बाद खेलों के अद्भुत प्रदर्शन होंगे, नगर मे रंग-बिरगा अनूठा विशाल जुलूस निकलेगा। यह जुलूस देखने योग्य होता है। अभी कुछ देर तक आराम करने के उपरान्त हम लोग इन खेल-तमाशों को देखने चलेंगे।

अपराह्न करीब तीन बजे नगर मे जुलूस निकलने लगा था। वे लोग तैयार होकर उसे देखने के लिये चल पडे। शौर्यपूर्ण खेलों के प्रदर्शन देखकर वे लोग चकित रह गये। वहाँ निकले जुलूस का संचालन निहंग सिख कर रहे थे। निहंग सिख धर्म का ही एक छोटा सा सम्प्रदाय है। निहंगो की विचित्र वेशभूषा देखकर प्रीतो ने बलदेव से पूछा—ये निहंग लोग कौन होते हैं और ये क्या काम करते हैं?

प्रीतो द्वारा पूछा गया प्रश्न बलदेव को अच्छा लगा। उसने समझाते हुए बताया—निहंग भी सिख ही कहलाते हैं। इस सम्प्रदाय का सदस्य वही व्यक्ति होता है जिसने सांसारिक मोहमाया का परित्याग कर दिया हो और जो धर्म तथा गुरुद्वारों की सुरक्षा के लिये सदैव तैयार रहता हो। युद्ध के समय निहंगों का जत्था बलिदान देने के लिये सबसे आगे रहता था। गुरु गोविन्द सिंह जी ने मुसलमान आक्रमणकारियों के 'जानबाज़' अर्थात् 'जान-फरोश' जत्थों को देखा था, उसके सम्बन्ध मे पढा था। ये जानफरोशो की टोली सिर पर कफन बाँधकर सब से आगे स्वयं को युद्ध मे झोक देती थी। उनके बलिदान के अद्भुत उत्साह को देखकर शेष सैनिकों में भी जोश की ज़बरदस्त लहर दौड़ जाती थी और वे दुगने उत्साह से विरोधी सेना से लड़ते थे। उन्ही जानबाज़ों की तरह का बलिदानी जत्था 'निहंग' के नाम से गुरु महराज ने चलाया था। शेरे पजाब महाराजा रणजीत सिंह की सेना मे निहंगों ने जो महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई थीं उसका उल्लेख इतिहास की पुस्तकों मे मिलता है। महाराजा के सेनापति सरदार हरिसिंह नलवा तथा शेरसिंह अटारीवाला के नेतृत्व में इन निहंगों ने जमरूद तथा पेशावर मे हुए भयानक युद्धों मे अपनी वीरता के अद्भुत कौशल दिखाए थे। उन युद्धो मे महाराजा को जो विजय प्राप्त हुई थी उसमें निहंगो का बहुत योगदान था।

—लेकिन अब तो उस प्रकार के युद्ध होते नहीं। अब ये निहंग क्या काम करते हैं ? प्रताप सिंह की पत्नी प्रसिन्नी ने बलदेव से पूछा।

—अब उस तरह की लड़ाइयाँ ही नहीं होती। अब तो युद्ध का रूप ही बदल गया है। अब तलवारों-भालों के बजाए बंदूकों, तोपों व टैंको से युद्ध होते हैं। आज के युद्धों में ये निहंग क्या कर सकते हैं। अब तो युद्धों के लिए निहंग बेकार हो गये हैं। पर आज भी उन्होंने अपनी उस पुरानी परम्परा को छोड़ नहीं दिया। आज भी ये किसी भी तैयार सैनिक की तरह नजर आते हैं। हाथ में कृपाण, खन्डा या भाला लिये रहते हैं। उनकी पोशाक भी अजीब तरह की होती है। सिर पर बँधी नीली पगड़ी में लोहे का चमकीला चक्र लगा रहता है, गहरे नीले रंग का घुटनों तक लम्बा कुरता, नीले ही रंग का पायजामा रहता है। कमर में पेटी रहती है। इस पेटी में भी कोई छोटा सा शस्त्र टँगा रहता है। पीठ पर ढाल शोभायमान रहती है। और वे किसी चुस्त-फुर्तीले सैनिक की तरह एकदम तैयार दिखाई पड़ते हैं। सेवाभाव के तो ये जीवन्त पुतले होते हैं।

इन निहंगों के रहने तथा भोजन आदि की व्यवस्था गुरुद्वारे की ओर से ही की जाती है। वे जब किसी गाँव में पहुँच जाते हैं तो वहाँ के लोग उन्हें बहुत आदर-मान देते हैं, उन्हें दान-दक्षिणा देकर उनके प्रति अपना आदर दर्शाते हैं। निहंगों की भाषा भी आम बोलचाल की भाषा से थोड़ी अलग होती है। उनकी भाषा में स्त्रीलिंग सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग शायद ही कभी होता हो। उनकी भाषा एक प्रकार से पुरुषों की ही भाषा होती है। वे रेल-गाड़ी को भूतनी कहते हैं और इंजन को तेजा सिंह, स्कूल को 'पढ़ाकुआँ दा कोठा' (पढ़ने वालों का घर) मिर्च को लड़ाकी, जूता मारने को चाटा चखाना, बकरी को चटंगी अर्थात् चार टाँगों वाली, बासी रोटी को मिट्ठे परौठे, दाल को दाला, रोटी को परशादा, हलुआ को कड़ाह-परशाद अथवा कुनका कहते हैं।

आनन्दपुर में जो जुलूस निकला वह बहुत भव्य और बड़ा था। जुलूस के निहंग सिख अपने अस्त्र-शस्त्रों से लैस हो शौर्य व रण-कौशल के अनूठे करतब दिखा रहे थे। पूरा वातावरण नगाड़ों, ढोलों, तरह-तरह के बाजों से गूँज रहा था। 'जो बोले सो निहाल' 'सत श्री अकाल' तथा 'वाहे गुरु जी की फतेह' के पावन जयकारे बीच-बीच में ऊँची व लंबी आवाज में बोले जा रहे थे। इस जुलूस में आगे-आगे अपने हाथों में चमकती नंगी तलवारें लिये हुए, पीले परिधान पहने पंज प्यारे चल रहे थे। सैकड़ों सिखों के हाथों में तलवारें, भाले,

बरछे व अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र दुर्बल व भयभीत लोगों के दिलों को भी गरमा रहे थे। जुलूस मे मुसज्जित गाड़ी पर चल रही गुरु ग्रन्थ साहब की सवारी पर दर्शक पुष्पवर्षा कर रहे थे। सिख गुरुओं की प्रशस्ति में जनता झूम-झूम कर गीत गाती जा रही थी। ढोल की थाप पर भांगड़ा नृत्य भी हो रहा था। लोग मुट्ठियां भर-भर कर एक दूसरे पर अबीर-गुलाल फेंक रहे थे, खुशियां मना रहे थे तथा मित्र व सम्बन्धी एक दूसरे को बधाइयां दे रहे थे।

तीन दिन आनन्दपुर रहने के बाद वे लोग वापस राणीपुर आ गये थे। इन तीन दिनो मे बलदेव और प्रीतो बहुत खुश रहे थे। वे दोनो अनुभव कर रहे थे कि आनन्दपुर की यह यात्रा वे दोनों जीवन भर न भूल पाएंगे। बेशक वहाँ वे दोनो परस्पर ज्यादा बातचीत नही कर पाए थे पर तीन दिनों तक निरन्तर वे एक साथ रहे थे, एक दूसरे को बहुत निकट से देखने-समझने का अवसर उन्हे मिला था। उन्हे लगा था कि कि इस यात्रा ने उन दोनों को और अधिक निकटता प्रदान की थी।

• •

ग्यारह

पांच नदियों की सोना उगलने वाली तथा रोमान परवर धरती पंजाब मे चैत मास मे गेहूँ तथा चने की फसल लगभग कट चुकी थी। दूर-दूर तक विस्तृत खेतों में गेहूँ की सुनहली लहलहाती बालियों को निहार कर मेहनतकश बांके जवानो और किसानों के मन उल्लास से फूले नही समा रहे थे। उनका दिन-रात का परिश्रम अपना रंग ला चुका था। घर-घर में धन और हर्ष लाने वाले पके हुए खेतों की अधिकाश कटाई पूरी हो चुकी थी। कही-कही कोई खेत शेष रह गये थे। पर उनमें भी कटाई चल रही थी। अपने चारों ओर सोना बिखेरने वाली फसलें देखकर लोगो की प्रसन्नता ने उनके पैरो में नृत्य के घुंघरू बांध दिये थे ; और मधुर गीतों की पंक्तियाँ स्वयं ही उनके होंठों पर बिखर रही थी। गेहूँ की कटी हुई फसल को देखकर उनके मन-प्राण गाने को उत्सुक हो रहे थे—

कनका दिया फसला पक्किया ने
आहा जी आहा वाह दाता
पकवान पकादियाँ जट्टियाँ ने

(गेहूं की फसल पककर तैयार हो गयी और यह सब भगवान की दया का फल है। अपने परिश्रमी किसानो के लिए जाट-महिलाएँ अनेक प्रकार के पकवान तैयार कर रही है)

जब बैसाखी तक फसल काट ली जाती है तो वातावरण मे यह गीत गुंजायमान हो उठता है—फसलाँ दी मुक गयी राखी, ओ जट्टा आयी वैसाखी अर्थात् फसलो की रखवाली करने का समय अब समाप्त हुआ और बैसाखी का त्योहार आ गया।

पंजाब के अन्य स्थानों की तरह बैसाखी के त्योहार को मनाने की तैयारियाँ राणीपुर व बाबा बकाला मे भी हो रही थी। राणीपुर गाँव के लोगों मे बैसाखी का मेला देखने के लिए जबरदस्त उत्साह था। एक वर्ष की लंबी प्रतीक्षा के बाद उनका यह सबसे बड़ा त्योहार आया था। बैसाखी के दिन सुबह होते ही लोग टोलियो की शक्ल मे बाबा बकाला मेला देखने जा रहे थे। बाँके जवान रंग-बिरंगी पोशाके पहने, सिरो पर तुर्रेदार पगड़ियाँ सजाए, लहराते-फड़फड़ाते तहमद पहने, तेल से नर्म किये चमरौधे जूते या गुरगाबी पहने मस्ती में झूमते-गाते, गप्पें हाँकते व एक दूसरे से छेड़खानी-मजाक करते हुए मेले की ओर जा रहे थे। फूल-बूटियो वाले ढीले-ढाले रेशमी कुरते, सलवारें या लहँगे पहने, सिरो पर रंग-बिरंगी किनारी-गोटे से सजी चुनरियाँ ओढे, होठों को अखरोट की छाल से लाल किये, आँखों में सुरमे की बहार लिए लचकती-मटकती लहराती व अठखेलियाँ करती युवतियाँ भी टोलियाँ बनाकर मेले की ओर अग्रसर हो रही थी। लड़को-बच्चों का हर्ष व उल्लास उनके चेहरों पर दृष्टव्य था। उनमे कुछ तो तेजी से चल रहे थे तो कुछ अपने परिवार के बडे लोगों के कंधो पर बैठे थे। हर कोई मेले की सुखद बहार की कल्पना कर-कर हर्षित हो रहा था।

राणीपुर के अधिकांश परिवारों के लोग मेला देखने जा रहे थे। पंडित दीवान चन्द, सरदार जोधा सिंह, शंगारा सिंह तथा वरियाम सिंह आदि परिवारो के अनेक सदस्य मेला देखने बाबा बकाला की ओर जा रहे थे। बलदेव, मोहरसिंह व जीते की अपनी टोली थी। इन्द्रसिंह अपने दोस्तों के साथ था। हरनाम सिंह ठट्ठी के पाँच-सात युवको को साथ लिए आगे बढ़ रहा था। महिलाओं-युवतियों मे प्रीतो, बसन्ती व जस्सी भी शामिल थी। केवल वही लोग मेले नही गये थे जिनकी कोई विवशता रही होगी, बीमार होंगे या उनके परिवार में वर्ष भर मे कोई गमी हो गयी होगी।

वैसे तो उस इलाके मे गाँव-गाँव नगर-नगर मे वैसाखी का मेला आयोजित

किया जाता है। किन्तु बाबा बकाला के मेले का अपना विशेष महत्व है। बाबा बकाला सिखो का एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थान है। इसी पावन स्थान पर सिख-शिरोमणि नवमें गुरू तेग बहादुर जी को गुरू-पद देने का निर्णय लिया गया था। यहाँ आने वालो के दिलो मे धार्मिक उत्साह व श्रद्धायुक्त भावनाएँ भी रहती हैं। गुरुद्वारे के पास ही एक विशाल मैदान में बैसाखी के मेले का आयोजन किया जाता है। आने वालों की सख्या हजारों-लाखों मे होती है।

उत्साही दर्शक भव्य मेले का वातावरण देखकर गद्गद् हो रहे थे। एक अजीब तरह का उत्साह तथा हर्ष उन्हे अनुभव हो रहा था। विशाल मेला-क्षेत्र मे तरह-तरह की दुकाने सजी हुई थी। ये दुकानें ज्यादातर टीन की चादरों, अस्थाई रूप से ईंटों की सहायता से या फिर बड़ी-बड़ी मोटी चादरें तानकर बनाई गयी थी। दुकानों को इस प्रकार तरतीब से बनाया गया था कि मेले मे आए लोगों को आने-जाने में कोई असुविधा न होने पाए। अधिकाश दुकाने हलवाइयों की थी। रंग-बिरंगी तरह-तरह की मिठाइयों से भरे थाल सजाए गये थे। दुकानों के एक भाग में जलेबियां और पकोडे आदि तले जा रहे थे। खिलौनों की दुकानें भी बहुत थी। इनके अलावा बिसातखाने की दुकाने थीं, मिट्टी के बर्तनो की दुकानें थी। सोडे की बोतलों, शर्बत, मलाई की बर्फ व कहीं-कही कुल्फी-फालूदा आदि भी बिक रहा था। गोदने वालों की भी आठ-दस दुकानें थी। कोई हाथ पर नाम गुदवा रहा था तो कोई बाजू पर फूल-पत्ती बनवा रहा था, कोई अपना तहमंद हटाकर अपने गोरे-चौडे रान पर किसी परी या हनुमान जी का चित्र गुदवा रहा था तो कोई मुटियार अपनी ठुड्डी आगे किये उस पर ततोला बनवाकर खुश हो रही थी। घोडे, कुरसी व हवाई जहाज लगे गोल घूमने वाले झूले थे, नीचे से ऊपर जाने वाले झूले थे। लड़के-बच्चे ही नही बल्कि युवक-युवतियां भी उन पर बैठी उत्साह से चिल्ला रही थी, एक दूसरे को पुकार रही थी। कुछ ऐसे भी थे जो मारे डर के चुपचाप सहमे से बैठे थे। उनकी भाव-भगिमाएँ देखकर लगता था कि वे इस इन्तजार में हैं कि कब उनका झूला रुके और कब वे जल्दी से नीचे उतरकर सुख की साँस लें। मेले के एक भाग में सजे-सँवरे घोड़े, तरह-तरह के रंगबिरंगे बैल, ऊँट, ताँगे व इक्के, बैल-गाडियां व तरह-तरह के छकड़े-रेड़ियां दिखाई पड रही थीं। खूब गहमागहमी भरा माहौल था। पुरुषों, महिलाओं, बच्चों व बूढ़ों की टोलियाँ इधर-उधर आ-जा रही थी। कोई कुछ खरीद रहा था तो कोई कुछ। कुछ खा-पी रहे थे, तो कुछ अभी इसी सोच मे थे कि क्या खाया जाए क्या खरीदा जाए।

बलदेव, मोहर सिंह और जीता गर्मागर्म जलेबियां और पकोडे खाने के बाद मेले मे चहलपहल देख रहे थे। तभी उनकी दृष्टि बरगद के एक विशाल वृक्ष के नीचे एक छोटे से मजमे पर पडी। वे तीनो वहां पहुँच गये। वहां पद्रह-बीस व्यक्ति गा-बजा रहे थे। किसी के हाथ मे बंजली (बांसुरी) थी, कोई मजीरा लिए था, कोई तूंबा (एकतारा) बजा रहा था तो कोई छोटी सी ढफ। गाने-बजाने का कोई विशेष ढंग नही था। कभी कोई बोली बोल देता था तो कोई टप्पा, कोई बैंत सुना रहा था तो कोई वारिस शाह की हीर की कोई पंक्ति ऊँचे स्वर में गा देता था। कोई किसी लोकगीत का कोई बन्द बोलता था तो कोई माहिया का कोई अंश शुरू कर देता। बोलनेवालो पर कोई किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नही था। जिसकी जो इच्छा होती थी गा देता अथवा योंही ऊँचे स्वर मे बोल देता। लोग वाह-वाह पुकार रहे थे, अपने-अपने ढग से दाद दे रहे थे। शताब्दियो से संजो रखी पंजाब की सस्कृति की कभी कोई तो कभी कोई धारा प्रवाहित हो रही थी। एक बडा प्यारा सा समां बँधा हुआ था। अन्य श्रोताओं की तरह बलदेव, मोहर सिंह और जीता भी मन ही मन पुलकित हो रहे थे।

भांगड़ा पंजाब के सजीले-बांके जवानों का एक अनूठा नृत्य है। वैसे तो प्राय: खुशी व उल्लास के मौको पर यह नाचा जाता है किन्तु बैसाखी के मेले में इसका आकर्षण कुछ और ही होता है। ढोल की थाप पर, अलगोजों व वंजलियों के सुमधुर स्वरों के साथ जब यह नाचा जाता है तो देखने वालों के दिलो मे मस्ती की लहरे हिलोरें लेने लगती हैं। उनके अपने पांव भी थिरकने लगते हैं। तभी नाचने वालों में कोई जवान अपने बांये कान पर हाथ रखकर ऊँची आवाज में गाता है—पल्ला मारके बुझा गयी दीवा ते अख्ख नाल गल्ल कर गयी अर्थात युवती ने अपने आंचल से दीप को बुझा दिया और जाते-जाते अपने प्रेमी को आंख के इशारे से बुला गयी।

भांगडा-नृत्य के साथ गाये जाने वाले बोल अधिकतर परम्परा से चले आ रहे हैं और कुछ गायक मौका देखकर तुरन्त ही स्वयं गढ लेते हैं। किसी को कोई मनोरंजक घटना याद आ जाती है या प्रेमी की याद सताने लगती है तो वह तुरन्त ही कोई पंक्ति बोल देता है जैसे—

वारी वरसी खटन गया ते
खटके लियाया आरी
औए आपे तैनू लैजन गे
तू जिन्हा नू लगेंगी प्यारी।

(बारह वर्ष से कमाई करने गया हुआ युवक अब आरी ही कमाकर लाया है और वह युवती से कहता है कि तू जिसको प्यारी लगेगी वह तुझे ले जायगा)

भांगडा नृत्य मे किसी रंगीले जवान को खेत में हल चलाते समय हुई वह घटना याद आ जाती है जब उसकी प्रेमिका नाक में चमचमाता लौंग पहने पास से निकली और धूप से लौंग मे हुई चमक से युवक की आँखें चमक उठी और वह हल छोड़कर उसे ही देखता रह गया। और यह घटना याद आते ही उसके मुँह से बोल निकल पडा—तेरे लौंग दा पेया लशकारा ते हालियां दे हल छुट गये। फिर दूसरा कोई जवाब देता है—

यार होनगे ते मिलनगे आपे
ते दिला नू ठिकाने रखिये
तरीकां भुगतनके तेरे मापे।

(प्रियतम के मन मे यदि सच्चा प्यार होगा तो वह स्वयं ही कभी न कभी आएगा और यदि प्रेम-पथ पर चलते हुए कभी जेल अथवा अदालत का मुँह देखना पड़ा तो माता-पिता उपस्थित होकर तारीखें भुगतते रहेंगे)

प्यार-मुहब्बत की राहे बड़ी कठिन होती हैं। हर क्षण लोकलाज का भय। माँ-बाप और घूरने वालों की निगाहों से बचने और प्रतीक्षा कर रहे प्रेमी से मिलने के लिए अनेक बहाने खोजने पड़ते हैं। इसी वातावरण का एक पंजाबी गाना कोई युवक गा उठा—

सड़के-सड़के जांदिया ओ राहिया वे
कंडा चुभा मेरे पैर ओ बांके राहिया वे

(ओ सड़क पर जाने वाले पथिक, तनिक रुक जाओ, देखो मेरे पाँव में काँटा चुभ गया है, इसे निकाल दो) मतलब यह कि युवती जवान से बात करने का बहाना ढूंढ़ रही है। और इसका उत्तर वह पथिक इस प्रकार देता है—

कंडा चुभा तेरे पैर बांकिये नारे नी
कौन सहे तेरी पीड़ गोरिये नारे नीं
अड़िये कंडा तेरा कौन कड्डे।

(अरी मुन्दरी, तेरे कोमल पैर मे चुभा हुआ काँटा कौन निकाले और काँटा चुभने से जो पीड़ा तुम्हे हो रही है उसे कौन सहन करे अर्थात् काँटा तो युवती को चुभा हुआ है लेकिन उसका दर्द प्रेमी अनुभव कर रहा है)

माहौल इतना मोहक था कि जीता भी स्वयं पर काबू न रख पाया और मुंह उठाकर ऊंचे स्वर में बोल उठा—

बागे विच फुल्ल कोई ना
लाल दुपट्टे वालिये
तेरी जुलफां दा मुल कोई नां।

(ओ लाल दुपट्टे वाली गोरी, तुम्हारी सुन्दर जुलफों के क्या कहने, वास्तव में उनका कोई मूल्य नही)

पंजाबी की इस प्रसिद्ध सरल, मोहक भाषा में व्यक्त की गयी शृङ्गारिक भावना को सुनकर मोहर सिंह भी कुछ बोलने के लिये तैयार हो गया। वह भी गा उठा—

कोठे ते उड्ड कांवां
अज्ज मेरे माही आवना
तेनू चूरियां कुट पांवां।

(आज गोरी का प्रियतम आने वाला है। वह उसकी प्रतीक्षा कर रही है और कौए को वचन दे रहा है कि जब मेरा प्रियतम आएगा तो मैं तुम्हे घी से बनी हुई चूरी खिलाऊंगी)

बोलियो की भाषा और भाव भी मन को छू लेने की क्षमता रखते हैं। युवती रोटियां पका रही है। गली में उसका प्रेमी जा रहा है। वह उसे अवश्य ही देखेगी चाहे तवे पर पड़ी रोटी जल ही क्यों न जाए। अपने इसी भाव को व्यक्त करते हुए उस मजमे मे कोई बोल उठा—

भावे सड़ जाए तवे दी रोटी
ते जांदियां दी पिठ देखनी।

और फिर वह अपने दुबले-पतले प्रियतम को याद करके अपने सौभाग्य की सराहना करती है और कहती है कि उसने अवश्य ही कुछ अच्छे कर्म किये होंगे जो उसे ऐसा प्रेमी मिला। वह कहती है—

कंडा टुट गया थाली दा
पतला-पतंग माहो
किसे करमा वाली दा।

पंजाब के गीतों मे नारी-सौन्दर्य का वर्णन करते हुए बलदेव गा उठा—

दिन चड़ेआ ते बांकियां नारां
सू वल चलियां बन कतारा
बगलां दे विच घड़े टिकाके

फिरदिया नी ओ झूमर पाके
हँस-हँस के तड़पावन जी नूँ
हसदियां ने जीवें मस्त बहारां ।

(गाँव की कुछ अल्हड़ युवतियाँ अपनी-अपनी बगलों में घड़े दवाए पानी लेने किसी रहट या नदी की ओर जा रही हैं । उनके आपस में हो रहे मजाक, नखरे तथा मस्त चाल को देखकर मनचलो के मन भी झूमने लगते हैं)

जैसे भागडा मूल रूप से पुरुषों का नृत्य है वैसे गिद्दा नृत्य महिलाओ का माना गया है । लड़कियों की टोलियाँ हाथों में हाथ डाले, रंग-बिरंगे गोटे-किनारी से कढ़े वस्त्र पहने, समूह रूप मे नाचते हुए अपनी विरह, मिलन और कभी-कभी ईर्ष्यायुक्त भावनाओ को व्यक्त करती हैं । गिद्दे के गीतों में भी भाँगड़ा की तरह कभी-कभी तुरन्त तुकवन्दी कर ली जाती है । गाये गये शब्दो का कोई विशेष अर्थ नही होता फिर भी उन शब्दों में एक विशेष प्रकार का माधुर्य अवश्य ही होता है । उस बरगद के वृक्ष के नीचे गा रहे मस्त लोगों में महिलाएँ तो थी नही, पर फिर भी वे मनोरंजन हेतु गिद्दे के अंश भी गा रहे थे । कोई बोल पुरुषों के लिए है अथवा महिलाओं के लिये इस बात से उन्हें कोई सरोकार नही था । गाने का सिलसिला टूटने न पाए इसलिए कभी-कभी खानापूरी के लिए वे महिलाओ के गीतों के टुकडे भी पेश करते जा रहे थे और श्रोतागण उनमे भी पूरा रस ले रहे थे । उन्ही गायको मे से एक ने गिद्दे की बानगी इस प्रकार प्रस्तुत की—

सूऐ वे चीरे वालेआ मैं कहनी आं
कर छतरी दी छां मैं छाँवें बहंदी आं
सूऐ वे चीरे वालेआ फुल्ल किकरां दे
फुल्लां नाल व्हारां मेले मितरा दे
सूऐ वे चीरे वालेआ दो लालड़ियाँ
मेला देखन आइयां करमां वालड़ियाँ ।

(ओ गुलाबी पगड़ी वाले राही, मैं छतरी की छाया तले बैठी हूँ । आओ, कुछ देर के लिये तुम भी विश्राम कर लो । ओ मेले जाने वाले राही, जैसे फूलो के बिना बहार का मौसम नही होता वैसे ही बिना किसी मित्र के मेले का भी क्या मजा । सचमुच वे लड़कियाँ बडी भाग्यशाली है जो मेला देखने आयी हैं)

एक मस्त युवती को अपनी चाल पर बड़ा अभिमान है । वह सोचती है कि यदि उसके घाघरे मे छोटे-छोटे घुँघरू लग जाएँ तो उसकी चाल की शोभा

कुछ और ही हो जाएगी। वह अपने प्रेमी से फरमाइश करती हुई कहती है—

मेरी घघरी नू घुंघरू लवा दे
ते जे तूं मेरी चाल देखनी।

उस मजमे मे एक बांका सिख नौजवान भी खड़ा था। वह पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) से विभाजन के समय आया था। उसे लग रहा था कि ये लोग जो कुछ गा रहे हैं उसका अधिक सम्बन्ध पूर्वी पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश के इलाके से ही है। उसके अपने मूल इलाके अर्थात पश्चिमी पंजाब में तो माहिया और ढोला ही अधिक लोकप्रिय था। उसे अपने इलाके के हीर-राझा, सोहनी-महिवाल तथा मिर्जा साहिबाँ जैसी प्रेम-गाथाओं की याद आ रही थी। उसके मन में उत्साह पैदा हुआ और उसने ऊँची तथा मधुर आवाज मे ढोले गीत की ये पंक्तियाँ पेश की—

मैं पानिये नूं जानी आं माही वे
सानू घडा चुकावी ढोला
घड़ा चुकावीं माही वे
सानू हथ न लावी ढोला
घडा चुका दियां माही वे
साढी फड़ लइ बीनी ढोला
साढी जात कमीनी ढोला।

(एक युवती घडा लिये हुए पानी लेने जा रहा है। और अपने प्रेमी को इशारे से समझा भी रही है कि मैं पानी लेने जा रही हूँ और पानी से भरा घड़ा उठवाने मे तुम मेरी सहायता करना। लेकिन साथ ही मीठी चेतावनी भी दे देती है कि घड़ा उठवाते समय मेरे शरीर के किसी अंग को स्पर्श न कर लेना। पर जब उसके प्रेमी ने उसकी कलाई पकड़ ली तो वह उलहाना भरे स्वर में कहती है कि क्या उसने उसे किसी नीच जाति की समझकर उसकी कलाई पकड़ने का साहस किया है। हालाकि अपने प्रेमी की इस हरकत से उसके मन में सैकडों लड्डू फूट रहे हैं।

बलदेव, जीता और मोहर सिंह बहुत देर से उस मजमे में बोले जा रहे टप्पे, बोल तथा लोकगीतो के अंश सुनते रहे। मोहर सिंह की इच्छा थी कि अब य । से चला जाए और मेले मे कुछ देखा जाए। इसके लिये उसने बलदेव से कहा—बलदेव भाई, आओ अब आगे चलें, घूम-फिर कर मेले का कुछ और मजा लें, कोई नयी चीज देखें। पर जीते और बलदेव को वहाँ बड़ा रस मिल रहा था। उनकी इच्छा अभी थोड़ी देर और वहाँ रुकने की थी। तभी जीते ने

मोहर से कहा—इससे ज्यादा मजा और क्या होगा। बहुत दिनों वाद तो यह सब सुनने का मौका मिला है। कितना सुख मिल रहा है इन वोलों-गीतों को सुनकर। पता नही तुमको यह सब अच्छा क्यों नहीं लग रहा। हाँ यदि यहाँ कोई तुम्हारा नेता भाषण दे रहा होता जो तुम चुपचाप मूर्ति बने घंटों खड़े रहते। दरअसल तुम्हें शहरों की हवा लग चुकी है। तुम्हें वहाँ की गंदी राजनीति में ही रस मिलता है। अभी पाँच-सात मिनट और रुको, फिर चलते हैं।

जीते तथा बलदेव की मनोभावना को समझकर मोहर ने जीते से कहा—अगर तुम्हें इतना ही रस मिल रहा है तो तुम कुछ और सुनाओ—एक बोली बोलकर ही चुप हो गये। कुछ कहो ताकि सुनने वालों को पता चले कि हम लोग भी कुछ जानते-समझते हैं। मोहर की यह बात सुनकर बलदेव ने कहा—हाँ यह बात हुई न काम की। हाँ तो जीते कुछ हो जाए। कुछ शुरू करो, अरे वह जो तुम देवर-भाभी वाला गीत गाते रहते हो—उसी का कोई अंश सुनाओ इन लोगों को।

जीता समझ गया कि बलदेव किस गीत के बारे में कह रहा है। उसने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए—भाइयों! अभी तक आप लोग आशिक-माशूक की बहुत बातें सुन चुके। अब मैं आपको कुछ देवर-भाभी के सम्बन्ध में सुनाता हूँ। फिर उसने गला खखारकर ऊँचे स्वर में गाया—

छोटे देवरा तेरी दूर बलांई वे
न लड़ सोहनेया तेरी इक भरजाई वे
रन्ना वालेयां दे पलंग निवारी
ते छडेयां नी मुंज दी मन्जी।

ओ देवर जी। मैं तुम्हारी बलाएँ लेती हूँ। अब तुम मुझसे झगड़ा न करो। देखो मैं तो तुम्हारी एक मात्र भाभी हूँ। भाभी की बात सुनकर उसका कँवारा देवर कहता है कि तुम्हे मेरी कहाँ परवाह है कि मैं अकेला-कँवारा क्या करता हूँ, कहाँ सोता हूँ। तुम तो रात को निवाड़ी पलंग पर ठाठ से लेटकर सुख भोगती हो और मुझ छड़े (अकेले) को मूँज की खाट पर सोना पड़ता है।

जीते के ये देवर-भाभी के बोल सुनकर कोई दूसरा मनचला बोल उठा—

कुकड़ी ओ लैनी जड़ी कुड़-कुड़ करदी ऐ
सौहरे नई जाना सस बुड-बुड करदी ऐ
कुकड़ी ओ लैनी जेड़ी आन्डे देंदी ऐ

मोहरे नईं जाना मस ताने देंदी ए
कमीज़ा छीट दिया लाहौरो आइया ने।
ससां पराईयां ने जिन्हा गलो लवाइया ने।

(मैं वह मुर्गी लूंगी जो कुड-कुड़ करती हो, मैं ससुराल नहीं जाऊँगी क्योंकि वहाँ सास हर समय बुड़-बुड़ करती रहती है। मैं अन्डे देने वाली मुर्गी लूंगी और ससुराल नहीं जाऊँगी क्योंकि वहाँ सास ताने देती है। मेरे लिये छीट की कमीजें लाहौर से आयी हैं। पर सास ने मेरे गले से उतरवा ली है)

ये पंक्तियाँ बोलने के उपरान्त जीते ने बलदेव के कंधे पर हाथ रखते हुए और आगे बढ़ते हुए कहा—चलो अब आगे चलें, कुछ और देखे-सुने। मोहर भाई को ज्यादा बोर करना ठीक नहीं। और इसके बाद वे तीनों आगे बढ़ गये।

थोड़ा आगे जाने पर उन्हें एक तेज सी गन्ध का एहसास हुआ। तभी उनकी निगाह एक दुकान पर पड़ी। वहाँ भैंसे की तरह पला हुआ एक मोटा-ताज़ा सरदार नज़र आया। वह मसाले से भरी मछलियों को बेसन लगाकर सरसों के तेल में तल रहा था। लोहे के एक थाल में तले हुए मछली के पकौड़े, दूसरे थाल में कलेजी के भूरे-साँवले टुकडे पडे थे। पास ही कीमा की हुई सीखें टँगी थी। दो-चार व्यक्ति मसालेदार चटनी से मछली के पकौडे व कलेजी आदि चटखारे ले-लेकर खा रहे थे। दुकान का यह दृश्य देखकर मोहर सिंह के मुँह में पानी आ गया। उसने बलदेव से कहा—तुम लोगों ने ब्राहमन के घर में जन्म लेकर अपना जीवन अकार्य कर दिया। खाली लौकी-पालक खाकर ही जिन्दगी गुज़ार दोगे। जरा इन चीजों को, यह मछली के तेज गर्मागर्म पकौडे खाकर देखो, ज़रा यह कलेजी खाओ तो पता चले कि इनका क्या जायका होता है। अरे जब दुनिया में आए हो तो खाओ-पियो, ऐश करो, मूंग की दाल खाकर मर जाने से क्या फायदा।

बलदेव समझ गया कि अब इसकी यहाँ कुछ खाने की इच्छा है। उसने उत्तर मे कहा—तुम हमें बाहमन ही रहने दो। यह खिलाकर हमारा धर्म भ्रष्ट न करो। हाँ तुम्हारी खाने की इच्छा हो रही है तो शौक से खा सकते हो। तुम खाओ और हम दोनों तुम्हें खाते हुए देखेंगे।

मोहर के कहने पर उस सरदार दुकानदार ने एनामल की नीले रग की प्लेट में मछली के पकौडे और चार टुकडे कलेजी के दिये। एक छोटी सी चीनी की प्लेट मे प्याज व हरे धनिये की चटनी दी। मोहर चटखारे लेता हुआ और तेज मिर्चों के कारण सी-सी करता हुआ खा रहा था। खाते-खाते

बोला—वाह ! मजा आ गया । अरे जीते मेले मे यही तो रौनकें होती हैं मजे होते है । यहाँ आकर भी न खाया-पिया तो फिर कहाँ खाएँगे-पियेंगे । मेले को इसीलिये ही तो रौनक-मेला कहा जाता है । उसकी यह बात सुनकर एक बुजुर्ग सिख जो उन लोगो के पास बैठा सीखें खा रहा था थोड़ा लड़खड़ाती आवाज़ मे बोला—अब इस मेले मे रौनके कहाँ रह गयी हैं, अब वह बहारे खत्म हो गयी जो पहले हुआ करती थी । जनाब, तब अँग्रेज़ों का राज था। ऐश तो तब होती थी, मज़े तो तब आते थे । इन कांग्रेसियों के राज मे क्या है । मज़े तो अँग्रेजो के साथ ही चले गये ।

उसकी यह बात सुनकर बलदेव समझ गया कि सरदार ने बोतल चढा रखी है और उसी मूड मे यह इस तरह की बातें बोल रहा है, अंग्रेज़ों के राज की तारीफ कर रहा है । फिर भी उसने उससे कहा—सरदार जी ! तब क्या खास बात थी जो आज नही है । मेला तो अँग्रेज़ों के जमाने में भी ऐसे ही लगता होगा । ऐसा तो था नहीं कि अँग्रेजो सरकार मेला देखने वालो को अलग से धन की थैलियाँ दे देती होगी ।

सरदार ने अपनी नशीली लाल-लाल आँखों को थोड़ा और खोलते हुए जवाब दिया—मैंने कब कहा कि अंग्रेज सरकार रुपये बाँटती थी । बर्खुरदार ! तब दूसरी तरह के मजे रहते थे । तब इस मेले मे लाहौर की हीरा मंडी से एक से एक बढ़कर कंजरियाँ (वेश्याएँ) आती थी । उनके साथ उनके तबलची और साज बजाने वाले रहते थे । तब मेले मे उनका नाच देखने का, उनसे छेड़खानी करने में मज़ा आता था । जब बनी-सँवरी दिलो पर बिजलियाँ गिराने वाली कंजरियाँ लहरा-लहरा कर नाचती थी गाती थी, अपने नाज़-नखरे दिखाती थी, आँखो से मीठे-मीठे इशारे करती थी, आँखे मारती थीं, फिरकी की तरह घूमकर अपने लहरियेदार लहँगे हवा मे लहराती थी तो देखने वालों के दिल मचल उठते थे, तड़प उठते थे। देखने वाले उठ-उठकर आगे बढ़-बढ़कर उनको छू लेने की कोशिश करते थे, उनको चूम लेने को, सीने से लगा लेने को जी चाहने लगता था ।

—तो क्या सरदार साहब, तब क्या आपने भी कभी किसी को चूमा था, सीने से लगाया था ? जीते ने तनिक मुसकराकर पूछा ।

—चूमता कौन था, सीने से कहाँ लगाने का मौका मिलता था । हाँ दिल वैसा करने को तो चाहता ही था । माशाअल्ला तब हम जवान थे । दिल में जवानी के अरमान थे । उनसे छेड़छाड़ तो कर लेते थे, उनके सिर पर तर-

वारना (रुपयों से न्योछावर) तो कर ही देते थे। लोगों से वाहवाही तो लूट ही लेते थे।

अब मोहर के बोलने की बारी थी। उसने कहा—तो आप खाली उनके सिरों पर रुपये ही लुटाकर खुश हो लेते थे। और कुछ नही कर पाते थे ?

—अरे भई, तुम अभी बच्चे हो। यहां अपने गांव में, लोगों में कुछ ऐसा-वैसा करना ठीक नही होता था। आखिर हमारी अपनी इज्जत-शान होती थी। हां दो बार अपने यार-दोस्तों के साथ लाहौर जोड मेला देखने गया था। वाह ! लाहौर का जोड मेला देखने लायक होता था। वैसे मेले अब कहां देखने नसीब होते है। इस मेले से कई गुना ज्यादा वहां रौनक होती थी। एक से बढकर एक खेल-तमाशे होते थे, नाच-गाने होते थे। दंगे-फसाद भी बहुत होते थे। बर्षों पुरानी दुशमनी का हिसाब-किताब भी वहीं होता था। कितनों के सिर खुलते थे, कितने थाने पहुँच जाते थे। मेला देखने के बाद हम लोग हीरा मंडी जाते थे। वहां कंजरियों का नाच देखते थे, गाना सुनते थे। और जो तुमने पूछा है वह भी करते थे। उन्हे पैसा देते थे और बदले में उनसे माल पाते थे, उनके जिस्म के रेशे-रेशे का सुख भोगते थे, उनका रस लेते थे। तुम लोगो को उस तरह का सुख-मजा कहां मिल पाएगा। वह तो जमाना ही खत्म हो गया। अब यहां कंजरियां कहां है। पाकिस्तान बनने के बाद वे मजे खत्म हो गये। इस लिहाज से हमारा पजाब उजड़ गया, उन हूरो से खाली हो गया। लोग पंजाब को स्वर्ग कहते हैं। पर बिना हूरो के स्वर्ग क्या माने रखता है।

तीनों युवक बहुत देर तक मेले में घूमते रहे, तरह-तरह के खेल-तमाशे देखते रहे। दिन भर कुछ न कुछ खाते भी रहे थे इसलिये अलग से भोजन करने का कोई प्रश्न ही नही रह गया था। जब वे थोडी थकान महसूस करने लगे तो अपने गांव के बनवारी बुच्चे की दुकान पर आ गये। बुच्चा उसको कहते हैं जिसका एक कान कटा होता है। बनवारी का भी एक कान कटा हुआ था। इसी कारण गांव वाले उसे बनवारी बुच्चा कहते थे। बनवारी बुच्चा राणीपुर गांव का बहुत-बड़ा बैठकबाज था। तरह-तरह की गप्पें हांकना, आसपास के गांवों की खबरे सुनाना, कहां चोरी हुई कहां डाका पडा, कहां कत्ल हुआ और किसने किस तरह किसी औरत को भगाया, इस तरह की जानकारी उसके पास खूब रहती थी। गांव वाले उसे 'अखबार-बादशाह' भी कहकर बुलाते थे। लोग जानते थे कि जो कुछ वह सुनाता है उसमे रुपये में चार आने तो सही रहता है और बाकी बारह आने में बेपर की बातें ही

रहती हैं। फिर भी लोग उससे कुछ न कुछ सुनाने के लिये फरमाइश करते ही रहते थे।

बनवारी बुच्चे की उम्र पैंतीस-चालीस वर्ष के आसपास रही होगी। शरीर से दुबला-पतला पर बला का चुस्त था। लोग कहते थे कि इसके पाँव में चक्के लगे हुए हैं। अभी गाँव के चौपाल मे है तो कुछ ही देर बाद वह जोगियो के मुहल्ले मे नज़र आएगा, कभी पडितो के रहट पर है तो थोडी ही देर बाद फत्ते लोहार की दुकान पर बैठा होगा। हालाकि गाँव मे उसकी अपनी बिसातखाने की दूकान थी। पर वह दुकान पर कम ही बैठ पाता था। चूंकि दुकान घर के ही एक भाग में थी इस कारण उसकी गैरहाज़िरी मे दुकान का कामकाज उसकी पत्नी या लडका देख लेता था। बिसातखाने के आम सामान के अलावा महिलाओ के बनाव-शृंगार का सामान ...े चूडियाँ, हल्के सस्ते हार व बुन्दे-काटें आदि, पाऊडर व होंठों तथा गालों पर लगाने वाली लाली, पाँव रँगने के लिये महावर, आँखों का काजल तथा तरह-तरह की रंग-बिरंगी बिंदियाँ आदि सामग्री उसकी दुकान पर रहती थी।

बलदेव, जीता और मोहर सिंह जब बनवारी बुच्चे की दुकान पर पहुँचे तो उस समय वह एक युवती की कलाई पकड़कर उसे चूड़ियाँ पहना रखा था। चार-पांच औरतें पास बैठी चूड़ियाँ चढाने के लिये अपनी-अपनी बारी का इन्तजार कर रही थी। सामने दी टोकरो में अनेक प्रकार की काँच व लाख की चूडियाँ पडी थी। तीनों जने बनवारी के पास पडे दरो के एक टुकडे पर बैठ गये और बनवारी के चूड़ियाँ चढाने का कमाल देखने लगे। वह बहुत होशियारी व सावधानी से चूड़ियाँ चढ़ा रहा था, कोमल कलाईयो को बडे नर्म अंदाज़ से पकड़कर, धीरे-धीरे पतली-गोरी व सुडौल उँगलियो को अपने हाथो में लेकर तीन-तीन चार-चार चूडियों को एक साथ कलाई तक सरका देता था। इतनी सावधानी बरतने पर भी कभी-कभी कोई चूड़ी टूट जाती थी। और चूडी टूटने पर वहाँ आयी लड़कियाँ हल्का सा मुसकरा देती थी, खिलखिलाकर हँस भी देती थी। चूड़ियाँ चढ़ा रहो उन युवतियों को भाव-भगिमाएँ देखने पर भी सुख मिलता था। जब बनवारी चूड़ियाँ चढाते समड़ मुट्ठो को जरा ज्यादा दबा देता था, छोटी-तंग चूड़ी को जब जबरदस्ती चढाने की कोशिश करता था तब हल्की पीड़ा के कारण उन महिलाओ के मुख पर द...
व शर्म के जो भाव उजागर होते थे, वे देखने वाले मनचलो को पुलकित कर देते थे। कुछ वैसे ही वे तीनों जने पुलकित हो रहे थे। मन ही मन बनवारी के भाग्य पर ईर्ष्या कर रहे थे।

कुछ देर बाद जब बनवारी युवतियों को निपटा चुका और वे चली गयी तो बलदेव ने तनिक मुसकराकर कहा—भई बनवारी, तुम्हारे तो ठाठ है। खूब मजे मारते हो, तरह-तरह के जायके चखते हो। यहाँ तो किसी की एक उँगली तक छूने को तरसते रहते है और तुम हो कि पूरी कलाई ही थाम लेते हो।

तभी जीता बोल उठा—अरे भई, कलाई भी एक तरह की नही, तरह-तरह की पतली मोटी गोरी-साँवली। शायद बनवारी भाई जैसे किसी चूडियाँ चढाने वाले को देखकर किसी कवि ने कहा था—

लैन्दा मुफ्त नज़ारे
जेहड़ा चूड़ियाँ चाढ़े
देखे हथ हौले-भारे
ओ जेहडा चूडियाँ चाढे।

(जो युवतियों को चूडियाँ चढाने का काम करता है वह कितना भाग्य-शाली होता है। बिना पैसा खर्च किये मुफ्त मे ही अपनी आँखो को सेक लेता है, नये-नये नजारे देखता है, उनके कोमल हाथों को अपने कठोर हाथों मे लेकर तौलता है और देखता है कि कौन हल्का है और कौन भारी है)

जीते की बात सुनकर बनवारी जरा अकड़कर बैठ गया और बोला—कहो मेला देखा, कैसा रहा ? तुम लोग आज ही राणीपुर लौट जाओगे या कल शाम को दंगल-कुशतियाँ देखकर जाओगे ?

—दंगल-कुशती मे क्या रखा है। अनेक बार तो देख चुके है। आज शाम को ही वापस चले जाएँगे, मोहर सिह ने कहा।

उसकी बात सुनकर तनिक आश्चर्य भरी मुद्रा मे बनवारी ने कहा—अब यह तुम लोगों की अपनी इच्छा है। वैसे मेरा विचार है कल कुशतियो मे अच्छी रौनक रहेगी, कुछ मुकाबले सुना है बडे तगडे होंगे। फिर बनवारी ने जीते को सम्बोधित करते हुए कहा—तुम्हारा बड़ा भाई इन्द्र सिह भी तो कल अखाडे मे उतरेगा, तुम लोग उसकी ताकत का कमाल नही देखोगे ? तुम लोग तो उसके भाई-बन्धु हो, तुमको तो उस मौके पर हाजिर रहकर उसके लिये वाह-वाह करना चाहिये, उसके हौसले बढ़ाने चाहिये।

बनवारी बुच्चे के शब्द सुनकर बलदेव बोला—बनवारी भाई, तुम्हे कैसे मालूम हुआ कि इन्द्र भैया कुशती लडेगे। घर पर तो उसने कोई जिक्र नहीं किया था। यह ठीक है कि वह कभी-कभी दंगल मे हिस्सा लेता है, कुशतियाँ

लड़ता है। लेकिन इस बैसाखी के मेले मे वह अखाड़े में उतरेगा इस बात की जानकारी तो हमे कुछ नही है।

—इस बात की जानकारी तो शायद अभी तक इन्द्र सिंह को भी न होगी। पर यह बात सही है कि कल उसे कुशती लड़ने के लिये ललकारा जाएगा और उस ललकार-चुनौती के जवाब मे वह जरूर कुशती लड़ेगा।

—इन्द्र भैया को कौन ललकारेगा ? यह खबर तुम्हे कहाँ से मिली ? क्या सरदार जोधा सिंह व उसके साथी तो कोई चाल नही चलने जा रहे ? मुझे तो लगता है कि उनका ही कोई पहलवान होगा जिसे उन लोगों ने इन्द्र से लड़ने के लिये तैयार किया होगा।

बनवारी ने उत्तर मे कहा—बलदेव भाई ! तुम्हारा अनुमान ठीक है। यह काम सरदार जोधा सिंह व उसके साथियों की तरफ से ही होने जा रहा है। तुम लोग गाँव मे रहते हो पर तुम्हे इस बात की कोई टोह न मिल पायी यह बात बड़ी हैरानी की है। मुझे तो गाँव मे ही मालूम हो गया था कि इस बार बैसाखी के मेले में जोधा सिंह पंडित दीवान चन्द के खानदान के खिलाफ कुछ न कुछ शरारत करवाने वाला है। उड़ती हुई जो बात मैंने सुनी थी वह परसों पक्की हो गयी थी।

—तुमको पक्की खबर मिल गयी और हमे कोई संकेत तक न मिला। तुमको लोग जो 'खबर-बादशाह' कहते हैं सही ही कहते है। लेकिन तुम्हें यह खबर मिली कहाँ से। और क्या उस खबर में कुछ सार भी है या वैसे ही किसी ने मजा लेने भर के लिये अफवाह फैला दी है ?

—खबर बिल्कुल सही है और उसमे रत्ती भर भी झूठ नही, अफवाह नही। कोई दूसरा कहता तो उस पर शंका हो सकती थी। पर जब जोधा सिंह के बेटे दौलत सिंह ने खुद ही मुझे बताया है तो उस पर शक करने का सवाल ही पैदा नही होता। दौलत के बारे में तो जानते ही हो कि वह मुझे बहुत मानता है, अनेक बातो के लिये मुझसे सलाह-मशविरा करता रहता है। और दूसरी बात यह भी है कि कोई भी बात चाहे वह कितनी ही महत्वपूर्ण हो उसके पेट में नही रह पाती। कम से कम मेरे सामने तो उसे उगल ही देता है। और इस सूचना के लिये तो उसने मुझे खुले शब्दो में कह दिया था कि मैं तुम लोगों को इस ललकार के बारे में बता दूं। और अगर तुम्हारे इन्द्र मे हिम्मत हो तो वह उन लोगों के पट्ठे पहलवान से टक्कर लेकर अपनी बहादुरी दिखाए।

जीते ने पूछा—जोधा सिंह का यह पट्ठा पहलवान कौन है। क्या अपने

ही गाँव का कोई व्यक्ति है या बाहर से बुलाया है ? पर गाँव मे ऐसा कौन होगा जो इन्द्र भैया से टक्कर लेने की हिम्मत कर पाए, गाँव का कौन अभागा अपनी हड्डी-पसली तुडवाना चाहेगा ।

—जीते, तुम ठीक कहते हो । गाँव मे किसमें साहस है जो इन्द्र सिंह के सामने खडा हो पाए । जिसे गणीपुर मे न रहना होगा वही इन्द्र से दुश्मनी खरीदेगा । जोधा सिंह का यह पट्ठा न तो अपने गाँव का है और न ही अपने इलाके का । दौलत ने बताया है कि वह पटियाले का नामी पहलवान जगीर सिंह है । जगीर के बारे मे लोग बताते है कि वह कुशती कम लडता है अपने विरोधी पहलवान की गर्दन का मनका या रीढ की कोई गोट तोडने में ज्यादा मजा लेता है । लोग उसे पहलवान कम और गुण्डा ज्यादा मानते है । दौलत बता रहा था कि उसे उन लोगों ने बीस दिन पहले से पटियाले से बुलवा रखा है और उसके रहने का इन्तजाम यहाँ बाबा बकाला मे करवा रखा है । उसे अच्छी-तगडी खुराक मुर्गे, अण्डे, दूध, घी और शराब दी जा रही है । वह इस समय पूरी तैयारी मे है । सुना है वह शक्ल-सूरत से भी बड़ा भयानक है । उसका वजन तीन मन से भी ज्यादा है । यह मोटी गर्दन और मजबूत पंजे और लंबी टाँगे हैं उस राक्षस की । मेरा अनुमान है कि इन्द्र को पछाड़ने के लिये बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि उसकी कोई हड्डी-पसली तोडने के लिये जोधा सिंह ने जगीर सिंह को अच्छी-खासी रकम देने का वादा किया होगा । इन्द्र सिंह को मैं खोजता रहा पर वह मुझे कहीं दिखाई नही पडा । तुम लोगों से मिले तो उसे सावधान कर देना ।

बनवारी से बातें करने के बाद वे तीनों गुरुद्वारे के सामने बने पडाल में आ गये । अब उन्होने सोच लिया था कि वे आज गाँव वापस नही लौटेंगे । कल होने वालियाँ कुश्तियाँ देखकर ही जायेंगे । उन्हे यह भी डर था कि ऐसे मौकों पर कभी-कभी लडाई-झगडे भी हो जाते है । यह ठीक है कि इन्द्र सिंह के साथ उसके अपने साथी भी होगे पर वे लोग कितने होगे, कौन-कौन होगा, इसकी जानकारी उन तीनो को नही थी । उन्होंने फैसला कर लिया कि वे कुशतियों के अवसर पर वहीं ही रहेंगे । और इस बीच जहाँ तक हो सकेगा वे अपने सहयोगियों को भी तैयार करेंगे ।

• •

बारह

बैसाखी के मेले मे आए हुए इन्द्र सिंह के दोस्तों को शराब की तलब हो रही थी। उसके दोस्तों की मान्यता थी कि बिना शराब का मज़ा लूटे मेले का क्या मजा और क्या रंग। इन्द्र सिंह बेशक मित्रो की चंडाल-चौकड़ी में रहता था पर वह किसी प्रकार का नशा-पानी नहीं करता था। पर वह अपने साथियो की इच्छाओं का ध्यान रखता था। खुद नही पीता था किन्तु उनको पिलाने के लिए जेब का मुंह खोल देता था। जब पिद्दी ने दारू पीने का सुझाव रखा तो सभी दोस्तो ने उसकी बात का समर्थन कर दिया और वे पीने को तैयार हो गये।

इन्द्र का एक दोस्त भाग सिंह कच्ची शराब बनाने का धंधा करता था। इस प्रकार का धधा करने वाले अन्य कई लोगों से उसकी जान-पहचान थी। वह इन्द्र सिंह व दूसरे साथियों को मेले से बाहर बाबा बकाला कस्बे मे तरखानो की गली मे गोगे पिशौरिये के अड्डे पर ले आया। गोगे पिशौरिये का मकान खासा बडा था। लाहौरी ईंटों से बना यह मकान बहुत पुराना था। विभाजन से पहले इसमें कोई मुसलमान परिवार रहता था। अपने वतन पेशावर से आने के बाद गोगे के बाप ने इस पर कब्ज़ा कर लिया था। अब इस मकान मे गोगा और उसकी पत्नी ही रहते थे। गोगे की औलाद के नाम पर केवल एक लड़की थी जिसका उसने ब्याह कर दिया था और अब वह अपने ससुसाल नवाशहर मे रह रही थी। गोगा अपने इसी मकान मे कच्ची शराब का धधा चलाता था।

इन्द्र सिंह की मित्र-मंडली मकान के खुले पक्के पसार में बैठी थी। गोगे ने उसके सामने दो बोतलें और कांच के गिलास रख दिये। एक छोटी सी थाली में तली हुई मछलियो के टुकडे और कबाब पड़े थे। चीनी की दो प्लेटों में प्याज के टुकडे और चटनी पडी थी। पिद्दी खाने-पीने के लिये कुछ ज्यादा ही उतावला हो रहा था। उसने सबसे पहले मछली का एक टुकड़ा मुँह मे रखा और फिर सामने रखे गिलासों मे कच्चे पतले दूध जैसी दारू को थोड़ा-थोड़ा डाल दिया। इन्द्र सिंह के सामने दाल-मोठ की एक प्लेट पड़ी थी। वह उसमें से थोड़ी-थोड़ी लेकर खा रहा था। दोस्तों ने आपस मे गिलास टकराए और फिर घूंट-घूंट पीने लगे। बीच-बीच मे मछली

के पकौड़े और प्याज़-चटनी भी लेते जा रहे थे। कुछ ही देर बाद उन पर दारू का प्रभाव पडने लगा था और वे मस्ती में एक दूसरे से हँसी-मजाक करने लगे थे। एक दूसरे को अश्लील गालियाँ तक बकने लगे थे।

गोगा तो उनका मेज़बान था साकी था। वह शराब नही पी रहा था। केवल उन लोगों की खातिरदारी की ओर ध्यान दे रहा था। मेज़ पर जिस चीज़ की कमी पड़ जाती थी उसे वह लाकर परोस देता था। गोगे की उम्र इस समय पचास के आसपास रही होगी। शरीर से वह दुबला-पतला था पर उसका रंग बहुत गोरा था। चेहरा कमज़ोर था पर उस पर पके टमाटर जैसी लालिमा थी। आँखें मोटी और कदरे नीली थी। सिर पर कुल्ले पर बँधी बादामी रंग की रेशमी पगडी थी। लोगों ने शायद ही उसे कभी नंगे सिर देखा हो। ढीला-ढाला लंबा कुरता और सफेद सलवार ही पहनता था। गले में सोने का तावीज़, कलाई में सोने का कड़ा और उँगलियो में तीन-चार सोने की अँगूठियाँ रहती थी। कानो में सोने की मुरकियाँ झूलती रहती। सामने के दो दाँतों को भी उसने सोने से मढवा रखा था। यार लोग उसे गहनों वाला गोगा कहते थे। मुहल्ले की औरते भी उस पर ईर्ष्या करती थी। वह आपस से कहती रहती कि देखो जितना सोना गोगे के शरीर पर रहता है उतना तो किसी नयी दुल्हन के पास भी नहीं होता। गोगा स्वभाव का भी अच्छा था। हर समय हँसी-मज़ाक के मूड में रहता। कभी किसी ने उसके माथे पर शिकन तक नही देखी थी। इस धंधे से उसकी गुजारे लायक आमदनी हो जाती थी। वह इससे सन्तुष्ट था। मौका पडने पर दूसरो की सहायता भी कर देता था। इन्द्र सिंह से वह पहले से ही परिचित था। इन्द्र का स्वभाव कैसा है और उसकी अपने इलाके मे कितनी धाक है इसकी जानकारी उसे अच्छी तरह से थी। आज वह मन ही मन खुश हो रहा था कि इन्द्र सिंह जैसा धाकड और शक्तिशाली आदमी उसके घर पर आया है और उसे उसकी मेजबानी करने का सौभाग्य मिला है। वह जब भी उससे बात करता आदर-सूचक 'सरदार' शब्द साथ लगाकर सम्बोधित करता।

इस मित्र-मंडली मे एक था राझामल सिन्धी। राझामल की वाबा बकाला मे एक छोटी सी बेकरी थी। इस बेकरी में डबल रोटी, केक व तरह-तरह के बिस्कुट बनते थे। उसका काम-धंधा अच्छा चलता था और धन के मामले मे शायद वह उस मडली में सबसे ज्यादा धनी था। उसकी मातृभाषा सिन्धी थी और वह अपने परिवार के सदस्यो के साथ सिन्धी मे ही बातचीत करता था। पर चूंकि पिछले दस-बारह वर्षो से पंजाब मे रह रहा था इस

कारण वह पंजाबी भी वैसे ही कुशलता से बोल लेता था जैसे वह सिन्धी बोलता था। उस मित्र-मंडली में वह अपेक्षाकृत सीधा और भला आदमी था। उसकी अवस्था तीस वर्ष के करीब थी। उसका रंग गोरा और नक्श तीखे थे। कद भी अच्छा-खासा था। उसका सुगठित शरीर देखकर लगता था जैसे वह प्रतिदिन जमकर कसरत करता हो। पर ऐसा था नहीं। अपने शरीर की मजबूती को वह भगवान व अपने माता-पिता की देन ही मानता था। हाँ कुश्ती-दंगल में उसकी विशेष रुचि थी। आसपास के इलाके में जहाँ कहीं भी दंगल का आयोजन होता वह प्रायः देखने वहाँ पहुँच जाता। वह स्वयं पहलवान नहीं था पर उसकी पहलवानों में दिलचस्पी देखकर यार लोग उसे राजा पहलवान कहकर सम्बोधित करते थे। वह अपने नाम के साथ पहलवान की पदवी सुनकर मन ही मन गद्‌गद् होता था। इन्द्र सिंह की तरह उसका भी इलाके के बदमाशों व रंगबाजों के साथ उठना-बैठना था लेकिन वह खुद बदमाश नहीं था। इन्द्र की तरह बदमाशों की बदमाशियों के विवरण सुनने में उसे रस मिलता था। इन्द्र सिंह को वह भी खूब मानता था, उसे उचित आदर-मान देता था। इन्द्र भी उसकी यारी को महत्व देता था। कभी अवसर पड़ने पर वह उससे हजार-पाँच सौ उधार भी ले लेता था।

यारों की उस महफिल में फूलासिंह गुट्टा नाम का एक युवक भी बैठा हुआ दारू का मजा ले रहा था। गुट्टे की उमर बीस-बाइस वर्ष की थी। एकदम ठिगने कद का। उसकी ऊँचाई पाँच फुट से भी कम ही थी। शरीर गठा हुआ तरबूज की तरह गोल। लेकिन लगता था मानो उसकी नसों में पारा भरा हुआ हो। बेहद चुस्त और फुर्तीला। अभी यहाँ तो अभी वहाँ, हाकी की गेंद की तरह तेजी से इधर-उधर हो जाने वाला। बातों में कोई उससे पार नहीं पा सकता था। बेहद हाजिर जवाब और बातों में बड़े-बड़ों को चित्त कर देने वाले फूलासिंह गुट्टे से एक से एक भाषणबाज भी कन्नी कतराते थे। कद की दृष्टि से वह बेशक नाटा था पर उसके शरीर में बला की ताकत व फुर्ती थी। शरीर कसरती था और जब कभी शौकिया तौर पर अखाड़े में उतरता था तो देखते-देखते बिजली की गति से दाँव मार कर विरोधी को पटक देता था। शारीरिक शक्ति की अपेक्षा अपने दाँवों का इस्तेमाल करने में वह कहीं अधिक माहिर था। उसके बाप ने लकड़ी चीरने का आरा लगा रखा था। उस धंधे से उसकी अच्छी आय हो जाती थी। गुट्टा अपने माँ-बाप का इकलौता बेटा था। पैसे का उसे कभी कोई अभाव नहीं रहता था। किसी तरह मिडिल कर पाया था। गुट्टा उसका उपनाम

था। पंजाबी भाषा में तुकबन्दी करके छोटी-छोटी कविताएँ लिख लेता था। उनकी बिल्कुल साधारण सी कविताओं को सुनकर उसकी जान-पहचान के लोग उसकी वाहवाही करते रहते थे और वह अपनी प्रशंसा सुनकर दाद पाकर मन ही मन खुश होता रहता था। वह अपने आपको एक कामयाब कवि मानता था। आसपास के इलाके में जहाँ कहीं पंजाबी कवि-दरबार होता गुट्टा वहाँ पहुँच जाता। उसे कोई कविता-पाठ करने को कहे या न कहे, वह जबरदस्ती ही अपनी कविता सुनाकर दम लेता। इन्द्र सिंह उसके गुणों को समझता था। वह जानता था कि यह साला गुट्टा बड़ा हरामी है। किसी का मजाक उड़ाने में, बातों में चित्त कर देने में इसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। यह नाटू गुट्टा जितना ज़मीन के बाहर है उतना ही ज़मीन के भीतर रहता है। अपने दोस्तों की खातिर गुट्टा बड़े से बड़ा खतरा मोल लेने तक को तैयार हो जाता। इन्द्र को उस पर पूरा भरोसा था।

गोंगे पिशोरिया के घर पर आने से पहले इस मित्र-मंडली की बनवारी बुच्चे से भेंट हो गयी थी। सरदार जोधा सिंह जो जाल फैलाने वाला है उसका जिक्र उसने इन्द्र सिंह से कर दिया था और उसे हर तरह से सावधान रहने के लिए सचेत कर दिया था। इन्द्र को अपने पर भरोसा था। आज तक अखाड़े में उसे कोई मात नहीं दे पाया था। उसने ऊपरी तौर पर बनवारी की बात को हँसकर उड़ा दिया था। पर मन में वह जानता था कि जोधा सिंह व उसके लड़के कितने बड़े कमीने और चालबाज है। उन हरामियों का अगर बस चले तो वे उसे व उसके खानदान की बोटी-बोटी करके कुत्तों के आगे फेंक दें। लेकिन ऐसा मौका कभी आएगा नहीं। अगर कभी वे कमीना-पन्ती पर आएँगे, उससे टक्कर लेंगे तो उन्हें मुंह की ही खानी पड़ेगी। वह अपनी ओर से शुरूआत नहीं करेगा। लेकिन अगर उन मक्कारों ने उसे किसी भी तरह से नुकसान पहुँचाने की कोशिश की तो वह भी बदला लेकर रहेगा, उन सालों को वहाँ मारेगा जहाँ उन्हें पानी की बूंद तक नसीब न हो।

गोंगे पिशोरिया के यहाँ नशा-पानी करने के बाद जब यह मित्र-मंडली बड़े बाजार के मोड़ पर पहुँची तो उसे वहाँ जोधा सिंह दिखाई पड़ा। उसके साथ उसके दोनों बेटे शेर सिंह व दौलत सिंह थे। शंगारा सिंह के अलावा एक और व्यक्ति भी था। उस व्यक्ति के हुलिये को देखकर इन्द्र सिंह समझ गया कि यही जोधा सिंह का भाड़े का टट्टू पहलवान जगीर सिंह है। उसकी शक्ल-सूरत के बारे में बनवारी बुच्चे ने जो बताया था वह व्यक्ति वैसा ही लग रहा था। तीस-पैंतीस वर्ष के उस सरदार का कद लम्बा था, शरीर की

मासपेशियाँ कसी हुई लग रही थी। दोनो हाथों से तहमद को थोड़ा उठाए यो चल रहा था जैसे सड़क कूटने वाला इंजन। सिर पर तूतिया रंग की पगड़ी बाँधे था जिसका शमला बालिश्त भर ऊँचा उठा हुआ था और लड़ कान के पास से होता हुआ दाहिने कंधे से थोड़ा नीचे तक लटका हुआ था। कत्थई रग के लम्बे कुरते व लहरियेदार तहमद में उसका भारी शरीर देखकर आम आदमी के मन पर दहशत का पैदा होना स्वाभाविक ही था। घनी काली दाढी के बाल उसने ठुड्डी के नीचे एक काले डोरे मे बाँध रखे थे। गले मे चाँदी का तावीज चमक रहा था। उसकी मोटी गर्दन मुश्किल से एक इंच लम्बी होगी।

इन्द्र सिंह ने चट्टान की तरह लुढ़क रहे उस राक्षस को पहले कभी नही देखा था। राणीपुर अथवा बाबा बकाला मे ही नही उस पूरे इलाके में उस जैसा व्यक्ति उसने नही देखा था। जोधा सिंह व उसके परिवार से इन्द्र सिंह के परिवार की दुश्मनी थी। पर आमना-सामना हो जाने पर दोनों परिवारो के सदस्य एक दूसरे को सत सिरी अकाल कह देते थे। दिखावे के तौर पर दुनियादारी का निर्वाह दोनों ओर से किया जाता था। जैसे ही इन्द्र की निगाह जोधा सिंह व शगारा सिंह से मिली उसने दोनो हाथ जोड़कर उन्हे सत सिरी अकाल कहा। जवाब मे सिर हिलाकर तनिक मुसकराकर दोनों ने उसके अभिवादन का जवाब दिया। थोडा कुशल क्षेम पूछा। इन्द्र सिंह को देखकर सहसा उस अजनबी आदमी ने भी 'वाहे गुरु की फतेह' कहकर इन्द्र सिंह के प्रति अपना आदर दर्शाया। तभी जोधा सिंह ने उसका परिचय करवाते हुए इन्द्र से कहा—बेटा, यह पटियाला के सरदार जगीर सिंह है। नाम तो शायद तुमने सुना ही होगा। अपने इलाके के ही नही पंजाब के जाने-माने पहलवान हैं। यहाँ होने वाली कुश्तियो मे यह भी हिस्सा लेंगे। और अपने बारे में कहो। सुना है तुम भी अपने दो-दो हाथ अखाडे मे दिखाओगे। अगर तुम्हारा जगीर सिंह से जोड हो जाए तो देखने वालो को मज़ा आ जाएगा। कहो क्या मरजी है तुम्हारी ?

जोधा सिंह के ये शब्द इन्द्र सिंह के लिए एक चुनौती थे, बहुत बड़ी ललकार थी। और इन्द्रसिंह आज तक कभी किसी चुनौती के सामने झुका नहीं था। बडे से बड़े खतरे से टक्कर लेने मे उसे मज़ा मिलता था। जगीर सिंह जैसे गैंडे से भिडने के लिए वह बेकरार हो उठा। उसने तनिक मुसकरा कर सिर थोडा ऊपर उठाकर कहा—चाचा, जैसा तुम्हारा हुक्म होगा वैसा किया जाएगा।

उसका यह जवाब सुनकर जोधा सिंह को अपने भीतर कहीं कोई चोट सी महसूस हुई। उसको विश्वास नहीं था कि इन्द्र सिंह इतनी जल्दी एकदम तैयार हो जाएगा। खैर किसी तरह वह रहस्यभरे अदाज़ से थोडा मुसकराया और अपने साथियों के साथ आगे बढ गया।

उन लोगों के आगे निकल जाने पर रांझामल सिन्धी ने कहा—इन्द्र ! इस हरामी जगीर सिंह का नाम मैंने सुना हुआ है। पटियाले के इलाके के पहलवानों मे यह सबसे बड़ा बदमाश पहलवान माना जाता है। लोग इसकी ताकत से उतना नहीं घबराते जितने इसकी बदमाशियों से। सुना है डकैतियों में भी हिस्सा लेता है लेकिन आज तक पुलिस की पकड मे नही आया। पुलिस वालों से इसकी मिलीभगत रहती है। एक अच्छे पहलवान को जैसा लंगोट का पक्का होना चाहिए वैसा यह नही है। औरतों में बहुत दिलचस्पी लेता है। लोग बताते हैं कि अगर इसे औरत व शराब के पास जाने की लत न होती तो यह शायद 'रुस्तमे पंजाब' होता।

राझामल के शब्द सुनकर इन्द्र सिंह की आँखे ज़रा फैल गयी। फिर उनने ज़मीन पर थूक फेंकते हुए कहा—यह सुअर का पुत्तर पंजाब का रुस्तम होता ? लगता है तुमने पंजाब के दीगर पहलवानों को देखा नहीं है। खैर गुरु महाराज ने चाहा तो मैं अखाडे मे इस हरामी पिल्ले की रुस्तमी तुम्हे दिखा दूंगा। पहला वार इसकी अकड़ी हुई गर्दन पर ही करूँगा।

तभी फूला सिंह गुट्टा बोला—जगीरा किसी भैंसे से कम नहीं लगता। साले का मुँह मेंढक की तरह खुला हुआ था। नाक यों लग रही थी जैसे किसी ने बासी बेंगट का टुकडा चेहरे पर रख दिया हो। हाँ उसकी आँखों मे दहकते अंगारों जैसी चमक नज़र आ रही थी। काले बेडौल चेहरे पर चेचक के दाग उसकी शक्ल को कैसा भयानक बना रहे थे।

कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह फिर बोला—यह सरदार जोधा सिंह कब तक दूसरों के कंधे पर बदूक रखकर चलाता रहेगा। अगर उसमे हिम्मत है तो अपने लडके शेर सिंह को दौलत सिंह को आगे लाए। वे तुमसे सीधी टक्कर लें।

—इस तरह की हिम्मत वह कभी नही दिखाएगा। अपने लड़कों से हाथ धोना वह क्यो चाहेगा। टट्टी की आड़ मे शिकार खेलकर ही [illegible] सिंह व इसके खानदान से बदला लेना चाहता है। लेकिन उसे नही [illegible] के बूते पर भाड़े के टट्टूओं से काम नही चलता। पालतू गधे [illegible] का

मुकाबला नही कर पाते । आखिर मे कभी न कभी इन पालतू पट्टों के पट्टे टूट ही जाते है । ये शब्द राधामल ने कहे ।

—अब दिल्ली दूर नही । अखाडे मे उस पट्टे को आने दो । फिर जोश सिंह को पता चल जाएगा कि वह कहाँ पर है और हम लोग कहाँ खड़े है । और इतना कहकर इन्द्र सिंह अपने साथियो के साथ आगे बढ गया ।

• •

तेरह

मेला-क्षेत्र से कोई दो सौ गज की दूरी पर दंगल होने की व्यवस्था की गयी थी । वहाँ नमी वाली पीली मिट्टी खोदकर अखाड़ा बनाया गया था । ताज़ा मिट्टी से अजीब तरह की सोंधी महक आ रही थी । सुबह से ही दो दैय (ढोल बजाने वाले) मेले मे ढोल बजा-बजा कर लोगो को दंगल-कुश्तियाँ होने की सूचना दे आए थे । औरतें, बच्चे और वे लोग जिन्हें दंगल मे रुचि नहीं थी अब तक अपने-अपने घरो को वापस चले गये थे । अब मेले मे लगभग वही लोग रह गये थे जिन्हे दगल देखने मे दिलचस्पी थी अथवा वे लोग थे जो मेले से कुछ सामान आदि खरीदना चाहते थे । ये सामान खरीदने वालों के मन में धारणा थी कि मेला खत्म होते समय आम तौर पर सामान सस्ते दामो पर मिल जाता है । अभी तक मेले मे गहमा-गहमी थी । अपराह्न मे लोगो ने दंगल वाले स्थान पर पहुँचना शुरू कर दिया था । अनेक लोगो की यही कोशिश थी कि उन्हे आगे बैठने को अच्छा स्थान मिल जाए ।

इस बार परम्परा से थोड़ा हटकर एक नयी बात की गयी थी । अखाड़े के चारो ओर एक मजबूत रस्सा बांध दिया गया था ताकि दंगल होते समय बिना मतलब उत्साही दर्शक भीतर प्रविष्ट न हो पाएँ । चार बजे के करीब दो दैंय गले मे बडे-बडे सजे-सँवरे ढोल लटकाए वहाँ घूम रहे थे । वे दोनों ढोल पीट-पीट कर लोगों को सूचित कर रहे थे कि अब थोड़ी देर बाद दंगल शुरू होने वाला है । अखाडे के पास ही एक छोटा सा शामियाना लगाया गया था जहाँ गाँव के तथा आसपास के इलाके के गणमान्य लोगों व अधिकारियों के बैठने की व्यवस्था की गयी थी । दोनों ढोल-वादकों का पहनावा भी देखने योग्य था । दोनो हरे रग के लंबे कुरते और पीले रग के तहमद पहने हुए थे । सिर पर रस्से की भाँति लाल पगड़ी लपेटी हुई थी । दोनों के गले मे गेंदे का एक-

एक हार पड़ा हुआ था। कलाइयों पर रंगीन रूमाल इस तरह बाँध रखे थे कि उनके सिरे थोड़ा लटक रहे थे। ढोलो पर भी रंग-बिरंगे कपडे के टुकड़े लगे हुए थे। ढोलो को बजाते समय वे कुछ अजीब ढंग से दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ हो रहे थे। उनके पाँव में एक प्रकार की थिरकन नज़र आ रही थी। ढोलो की 'डग डगा डग' की आवाज़ बहुत बुलन्द थी। लगता था कि यह आवाज़ आस-पास के गाँवों तक भी पहुँच रही होगी।

सूर्यास्त होने मे अभी एक-डेढ़ घंटे की देर थी। अब तक भीड़ काफी बढ़ चुकी थी। इलाके के कतिपय अधिकारी पंडाल मे पहुँच चुके थे। उसी पंडाल मे सरदार जोधा सिंह, शंगारा सिंह व उसके अन्य साथी भी आ चुके थे। इन्द्र सिंह की मित्र-मंडली भी बडे उत्साह से निश्चित समय की प्रतीक्षा कर रही थी। हर किसी के मन मे उत्साह था हर्ष था। वे यह जानने को उत्सुक हो रहे थे कि दंगल के परिणाम क्या निकलते है। दंगल मे भाग लेने वाले पहलवान भी अब अपने-अपने सहयोगियो के साथ वहाँ पहुँच चुके थे। पहलवानो के उस्ताद उन्हे अब आखिरी गुर व दाँव समझा रहे थे। वहाँ कई पहलवान ऐसे थे जो इन्द्र सिंह को जानते थे, उससे कुश्ती लड़ चुके थे। इन्द्र का कोई उस्ताद आदि नही था। उसने अभी तक जो सीखा था वह स्वय ही अभ्यास द्वारा सीखा था। कुश्ती मे उसकी रुचि थी। वह पहलवानी करता भी था। पर उसने कुश्ती को अपनी जीविका का साधन नही बनाया था। कुश्ती महज़ उसका शौक ही था। हाँ मेहनत व रियाज़ करके उसने अपने शरीर को बहुत सुगठित व मजबूत बना रखा था। उसे देखकर उसकी शक्ति का कोई अनुमान नहीं लगा सकता था। जिन्होने कभी उसे कुश्ती लड़ते देखा था वे जानते थे कि उसके शरीर में बला की ताकत है, फुर्ती व लचीलापन है। बिजली की गति से जब वह पैन्तरा बदलता था तो दर्शक वाह-वाह कह उठते थे। शेर जैसी शक्ति व चुस्ती तो उसके पास थी ही इसके अलावा वह कुश्ती के अनेक दाँव-पेचों से भी भलीभाँति परिचित था। वह कब किस क्षण कौन सा दाँव मार देगा इसका अनुमान लगाना विरोधी पहलवानों व देखने वालो के लिए कठिन होता था।

दर्शकों मे राणीपुर गाँव के भी अनेक लोग थे। अब तक उनको मालूम हो चुका था कि इन्द्र सिंह और पटियाले के मशहूर पहलवान जगीर सिंह की कुश्ती भी होगी। राणीपुर के दर्शक जानते थे कि जोधा सिंह और इन्द्र सिंह के खानदानो मे पुरानी दुशमनी चली आ रही है। और इन्द्र सिंह को नीचा दिखाने के लिये ही जोधा सिंह ने विशेष रूप से पटियाले से जगीर सिंह को

बुलवाया है। जगीर सिंह किस तरह की कुश्ती लडता है इसकी जानकारी भी उन्हे थी। पर राणीपुर के अधिकाश लोगों की शुभ कामनाएँ इन्द्र सिंह के साथ थीं। इन्द्र में जो भी दुर्बलताएँ रही हों किन्तु आज तक उसने कभी बिना मतलब गाँव के किसी व्यक्ति को परेशान नहीं किया था। स्वभाव से भी वह मिलनसार और खुशमिज़ाज था। प्रायः हर कोई उसे इज्जत-प्यार ही देता था। इसके प्रतिकूल जोधा सिंह की कमीनापन्ती व धोखेधड़ी से भी वे परिचित थे। किस-किस ढग से वह गाँव वालो का खून चूसता था, अपने मतलब के लिये वह कभी-कभी किस सीमा तक नीचे गिर जाता था इसका ज्ञान उन्हे था। और फिर सबसे बड़ी बात यह थी कि किसी बाहरी व्यक्ति को धन देकर अपने ही गाँव के एक नौजवान को अपमानित करने की उसकी जो चाल थी उसे हर कोई घृणा की दृष्टि से देख रहा था। गाँव वाले मौका ..र जोधा सिंह व उसके साथियों से निगाह बचाकर इन्द्र सिंह से हाथ ..ा ..े थे, उत्साहित कर रहे थे, उसकी पीठ ठोंक रहे थे। लोगो की उत्सुकता हर घड़ी बढती जा रही थी। वे दंगल देखने को उतावले हो रहे थे।

तहसीलदार इस आयोजन का मुखिया था। उसके आदेश पर दंगल का कार्यक्रम शुरू कर दिया गया। अब तक पहलवानों ने शरीर से कपडे उतार कर अपने जाघिये-लँगोट कस लिये थे। वे शरीर के अंगों को मल रहे थे मरोड रहे थे। दाएँ-बाएँ व ऊपर-नीचे होकर तन की ऐंठन को दूर कर रहे थे। गर्दनों को झटका रहे थे, मूँछों पर ताव दे रहे थे, जाँघों को सहला रहे थे। दर्शक उनको देखकर उनके शरीर-सौष्ठव व दाँव-पेंचों की चर्चा कर रहे थे। कोई एक का गुणगान कर रहा था तो कोई दूसरे का। कई दर्शक ऐसे भी थे जो आपस में इस बात की शर्तें लगा रहे थे कि कौन जीतेगा और कौन हारेगा। दो-चार पहलवान अखाडे से थोडा हटके आपस में ज़ोर-आजमाई कर रहे थे, अपने हाथ पैरो को खोल रहे थे। ढोल पर चोटें अब पहले की अपेक्षा अधिक ज़ोर से पड रही थी। हर किसी के मुख पर उत्साह व हर्ष की रेखाएँ नृत्य कर रही थी।

लगभग एक घंटे तक आठ-दस पहलवानों की कुश्तियाँ हुईं। बटाला से आए दो पहलवान मसाराम और राम भरोसे तो एक-दो मिनटो में ही चित हो गये। उन दोनों को स्थानीय पहलवान रंगीला ने पछाड़ा। अमृतसर के बंता सिंह और रवेल की मुठभेड़ कोई आध घंटे तक चलती रही। तरह-तरह के दाव मारने तथा उसकी काट दिखाने में दोनो ही बहुत माहिर थे। जब निर्णय की कोई आशा न रह गयी तो तहसीलदार साहब के आदेश पर दोनो को बराबर

घोषित कर दिया गया। अम्बाला के पहलवान गनपति का मुकाबला कालका के बंसी पहलवान से हुआ। दोनों की टक्कर खूब रही। गनपति की एक जबर-दस्त पटकी पर बंसी की कमर में भयानक मोच आ गयी और वह मारे दर्द के तड़पने लगा। उसकी यह दशा देखकर उसे अखाड़े से बाहर लाया गया। उसके सहयोगी उसे चारपाई पर लिटाकर दुर्गाप्रसाद के यहां ले गये। दुर्गाप्रसाद हड्डी व मोच आदि का इलाज करने के लिये बाबा बकाला में प्रसिद्ध था।

सूर्यास्त के समय उस कुश्ती का एलान किया गया जिसका दर्शक बड़ी देर से उत्सुकता से इन्तजार कर रहे थे। यह जोड़ पटियाला के जगीर सिंह और राणीपुर के इन्द्र सिंह के बीच होने वाला था। एलान व ढोल पर पड़ी जोर की थाप सुन कर जगीर सिंह अखाड़े में आ पहुँचा। अखाड़े की मिट्टी को माथे पर लगाने के बाद उसने एक क़लाबाज़ी लगाई। उसके इस करतब को ही देखकर उसके सहयोगी 'वाह! उस्ताद वाह!' कहकर चिल्ला पड़े। फिर उसने दोनों हाथों में मिट्टी लेकर अपनी बाँहों व रानों पर मली। गर्दन को घुमाकर इधर-उधर देखा। कुछ क्षणों तक शरीर को मरोड़ने के बाद अपने दाहिने हाथ की पुश्त पर मुँह रखकर जोर से बकरे की तरह आवाज़ निकाली। 'बकरा बुलाना' एक तरह से अपने विरोधी पहलवान के लिये ललकार थी। वह और उसके साथी हैरान थे कि इन्द्र सिंह अखाड़े में क्यों नहीं आ रहा। कुछ ने समझा कि शायद जगीरे से डर गया हो। तभी जगीर सिंह ने दूसरी बार पहले से कहीं अधिक ज़ोर से बकरे की आवाज़ पैदा की।

अभी उसकी यह 'भक-भक' की आवाज खत्म भी नहीं हुई थी कि हाथी की मस्त चाल चलता हुआ इन्द्र सिंह अखाड़े में उतर आया। अब दोनों पक्षों की ओर से नारेबाज़ी होने लगी। दर्शकों के दिलों की धड़कन हर क्षण तेज़ होने लगी। सब इस इन्तज़ार में थे कि देखें अब क्या होता है। अब दोनों पहलवान अखाड़े में आमने-सामने थे। जगीर का जिस्म काले भैंसे की तरह कसा हुआ लग रहा था। उसकी छाती और कंधे बहुत चौड़े थे। लेकिन उसका पेट कुछ निकला हुआ था। तोंद अन्दर की ओर होने के बजाए बाहर निकली हुई थी। सिर और कन्धों के बीच गर्दन तो दिखाई ही नहीं पड़ती थी। सिर के बालों को उसने मोटे धागे से कसकर बाँध रखा था। साँवले मोटे शरीर पर गहरे लाल रंग का जाँघिया कुछ ज्यादा ही चमक रहा था। अखाड़े में वह ऐसा तना हुआ खड़ा था मानो कोई भूत अथवा काला पहाड़ हो। उसके

भारी भरकम शरीर को देखकर कुछ लोग सोच रहे थे कि इस पहाड़ से इन्द्र सिंह कैसे टक्कर ले पाएगा। इस चट्टान को नीचे पटकना तो दूर इन्द्र सिंह शायद इसको अपनी जगह से हिला भी नहीं सकेगा। उसके मोटे व लम्बे-काले हाथों को देखकर ही मन में दहशत उत्पन्न होने लगती थी। जोधा सिंह और उसके साथियों को विश्वास था कि जब जगीरा अपने जम्बूर जैसे फौलादी हाथों से इन्द्र सिंह की गर्दन पकड़ लेगा तो उसके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो जाएगा, वह उसकी मजबूत पकड़ के कारण छटपटाने लगेगा। और अगर कहीं उसने इन्द्र की गर्दन का मनका तोड़ दिया तो मज़ा आ जाएगा, उसका हरामी बाप जिन्दगी भर माथा पकड़कर रोता रहेगा। जोधा सिंह मन ही मन गुरु महाराज को मना रहा था कि वे उसकी मनोकामना पूरी करें, उसका पट्ठा उसके दुश्मन को नाकों चने ही न चबवाए बल्कि उसकी हड्डी-पसली तोड़कर उसे हमेशा के लिये नाकारा कर दे। वह दिल से चाह रहा था कि आगे बढ़कर जगीरे की पीठ ठोंके, उसकी वाहवाही करे। पर वह ऐसा नहीं कर पा रहा था। वह गाँव वालों के सामने एकदम खुलकर दीवान चन्द के परिवार के सामने आना नहीं चाहता था। वह चाहता था कि किसी तरह साँप भी मर जाए और उसकी लाठी भी न टूटे।

इन्द्र सिंह का व्यक्तित्व देखने योग्य था। उसने गहरे नीले रंग का जाँघिया पहन रखा था। छः फुट ऊँचे इन्द्र का शरीर यों लगता था मानो साँचे में ढला हो। उसकी लम्बी बाँहें, लम्बी मजबूत टाँगें, सूप जैसा शेर की तरह तना हुआ सीना, चौड़े कंधे, कमर सीने के मुकाबले पतली, लम्बी तनी हुई गर्दन और रौबीला गोरा चेहरा, ये सभी उपकरण उसके व्यक्तित्व में निखार पैदा करने के लिये पर्याप्त थे। वह जब भी ज़रा भी अपना शरीर अकड़ाता तो उसके बल्लों और रानों पर मछलियाँ तैरती हुई नजर आने लगतीं। हाँ उसके शरीर का वजन जगीर सिंह से अवश्य ही बहुत कम था। सिर के जूड़े को उसने डोरे से कस कर बाँध रखा था। काले जूड़े में लाल रंग का एक छोटा सा फुंदना बड़ा प्यारा लग रहा था।

जगीर सिंह दाहिने हाथ से बकरा बुला रहा था, कभी जोर से चीखता था, रानों को जोर से थपथपाता था। पर इन्द्र सिंह इस तरह की कोई हरकत नहीं कर रहा था। वह केवल जगीरे को इस तरह घूर रहा था जैसे शेर एक-दो बार अपने शिकार की ओर देखता है। उसकी आँखों में बला की चमक थी। इन्द्र स्वयं हैरान हो रहा था कि जगीरा उससे आँख मिलाने से क्यों कतरा रहा है। वह बिजली के मजबूत खम्बे की तरह खड़ा था और उसके

हावभाव से यो लग रहा है था मानो कि वह जगीरे को कह रहा हो कि अगर हिम्मत है तो आगे बढ़ो और इस खम्बे को ज़रा अपने स्थान से हिलाकर अपनी ताकत का परिचय तो दो। फिर उसने बिजली की गति से एक सपाटा लगाया, एक बार ज़ोर से से उछलकर 'जय महावीर', 'जय गुरु महाराज' का नारा लगाया और जंगली मुर्गे की तरह जगीरे पर झपटा। पर तब तक जगीरा संभल चुका था। फिर सहसा जगीरे ने हाथी जैसी मोटी-भारी टाँग इन्द्र की टाँग पर मारी। इन्द्र थोडा धक्का खाकर पीछे हटा। जगीरा फिर लपका और एक भरपूर हाथ उसकी गर्दन पर मारा। इन्द्र ने झटककर गर्दन को सीधा किया। अब इन्द्र का फौलादी हाथ हथौडे की तरह जगीरे के सीने पर पडा और वह लड़खड़ाता हुआ थोड़ा पीछे हटा। लेकिन तुरन्त ही आगे बढकर उसके दाहिने बाज़ू को पकड़कर जोर से मरोड़ने लगा। उसकी मजबूत पकड़ के कारण ऐसा लग रहा था मानो इन्द्र सिंह छटपटा रहा हो। वह छुडाने की कोशिश कर रहा था। पर पकड़ लोहे के शिकंजे की भाँति सुदृढ़ लग रही थी। जोधा सिंह व उसके साथी मन ही मन खुश हो रहे थे। उन्हें लग रहा था कि जगीरा उसका बाज़ू उखाड़ कर ही दम लेगा। अन्य दर्शको की साँसें भी रुकी हुई थी। उन्हें लग रहा था गोया कोई मासूम चिड़िया बाज़ के पंजे मे फँस गई हो।

किन्तु सहसा इन्द्र ने अपनी टाँग को जगीर की टाँग में फँसाकर ज़ोर से घुमाया। उसके इस कैंची-दाव के दबाव से जगीरे की पकड़ एकदम ढीली हो गयी। इन्द्र अगले ही क्षण उसकी पकड़ से मुक्त हो गया। पर तभी जगीरे ने एक भरपूर वार उसकी कनपटी पर किया। इन्द्र का सिर घूम गया। देखने से साफ लग रहा था जैसे उसका सिर चकरा रहा हो। वह अखाड़े के एक सिरे की ओर हो गया। लेकिन जल्दी ही फिर बीच में आ पहुँचा। तभी दर्शकों ने देखा कि उसके कान से लहू बह रहा है। इन्द्र ने भी अपने कान को छुआ और उसका हाथ लहू से लाल हो गया। पर तब भी उसके चेहरे पर कोई विशेष भाव नही आया। वह चार-पाँच कदम पीछे हटा और फिर ज़ोर से उछलकर अपने दाहिने पैर का एक भरपूर वार जगीरे के पेट पर दिया। जगीर ज़ोर से दहाड़ पड़ा। तभी जोधा सिंह के समर्थक चिल्ला पड़े—यह गलत है, यह कुश्ती के नियमों के विरुद्ध है। लेकिन तभी बड़ी फुर्ती से पीछे से आकर इन्द्र सिंह ने उसको कमर से पकड़कर ज़ोर का धोबी-पटरा मारा। पलक झपकते ही धड़ाम से जगीरा ज़मीन पर गिर पड़ा। तभी इन्द्र फिर बिजली की गति से उस पर लपका और पलभर में उसको पूरी शक्ति से दबाकर उसकी पीठ ज़मीन पर

लगा दी। और तुरन्त अलग खड़ा हो गया। सब ओर से 'इन्द्र सिंह जीत गया' 'इन्द्र सिंह जिन्दाबाद' होने लगा। पलक झपकते ही उसके साथी अखाड़े में पहुँच गये और उसे अपने कंधों पर उठाकर शोर मचाकर अपना उल्लास प्रकट करने लगे। इन्द्र सिंह की जीत का एलान हो चुका था। और जोधा सिंह को लग रहा था कि यह इन्द्र सिंह ने जगीरे को नहीं पटका है बल्कि दीवान चन्द ने आगे बढ़कर उसके ही घुटने तोड़ दिये हैं, उसे ही सबके सामने जमीन पर चित कर दिया है। इन्द्र सिंह अपने अनेक प्रशंसकों के बीच खड़ा था। दर्शक मारे खुशी के झूम रहे थे, हा-हा कर रहे थे। उन्हें इन्द्र सिंह एक महान विजेता सम्राट की तरह लग रहा था।

अब दंगल खत्म हो चुका था। लोग वापस अपने-अपने घरों को जा रहे थे। जोधा सिंह तथा उसके साथियों के चेहरे उतरे हुए थे। उन्होंने कभी सपने में भी नही सोचा था कि जगीर सिंह जैसा नामी-गरामी पहलवान इस बुरी तरह से मात खा जाएगा। अब जोधा सिंह व उसके साथियों को वहाँ अधिक देर रुकना कही ठीक नही लग रहा था। वे जल्दी से जल्दी वहाँ से चल देना चाहते थे। और लोगों से आँखे बचाकर अब वे धीरे-धीरे उस पंडाल से सरकते जा रहे थे। कुछ ही मिनटों बाद वे सभी वहाँ से गायब हो चुके थे। इन्द्र सिंह की इस शानदार विजय की खबर पूरे बाबा बकाला में तेज़ी से फैल रही थी। राणीपुर से आए लोग भी जल्दी से जल्दी गाँव पहुँचकर वहाँ के लोगों को यह सनसनीखेज खबर सुनाने को उतावले हो रहे थे। उन्हें लग रहा था कि वे वर्षों तक इस कुश्ती को याद रखेंगे। वर्षो तक गाँव में ही नहीं बल्कि उस पूरे इलाके में इसकी चर्चा होती रहेगी।

जोधा सिंह के राणीपुर पहुँचने से पहले ही इन्द्र सिंह की जीत की खबर पूरे गाँव मे फैल चुकी थी। हर कही जगीर सिंह और इन्द्र सिंह का ही जिक्र हो रहा था। जोधा सिंह के किराये के टट्टू की जिस प्रकार इन्द्र सिंह ने धुनाई की थी उसका उल्लेख कर-कर के हर कोई गद्‌गद् हो रहा था। लोग टोलियों के रूप मे चौपाल में, रहटो पर, खेत-खलिहानों में, दूकानों पर इस कुश्ती के अनेक पहलुओं का जिक्र करने मे रस ले रहे थे। वर्षों से चली आ रही दोनो खानदानों की दुश्मनी से वे लोग परिचित थे। जोधा सिंह को जिस प्रकार लज्जित होना पड़ा था और आगे दीवान चन्द परिवार मे बदला लेने के लिए वह क्या कुछ करेगा, इस विषय पर भी लोग अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। अनेक लोगो का यही विचार था कि जोधा सिंह और उसके लड़के इस अपमान को जल्दी नहीं भूलने वाले। वे अब किसी भी समय कोई नया जाल

फैलाकर, कोई षड्यंत्र रचकर किसी न किसी संगीन मामले में इन्द्र सिंह को फँसाने की भरपूर कोशिश करेंगे। उनको ऐसा लग रहा था कि अभी तक जो शत्रुता भीतर ही भीतर चल रही थी अब खुलकर सामने आ जाएगी और यह भी सम्भव है कि किसी दिन कोई फौजदारी हो जाए, मामला पुलिस तक पहुँच जाए। लेकिन इन सारी चर्चाओं में एक बात साफ नज़र आ रही थी कि गाँव के अधिकांश लोगों की शुभ कामनाएँ दीवान चन्द तथा उसके लड़के इन्द्र सिंह के साथ थी। वे इस लड़ाई-झगड़े में दीवान चन्द के खानदान की विजय देखना ही पसन्द करते थे।

पंडित दीवान चन्द खुश था। उसके बेटे ने जोधा सिंह को जो आघात पहुँचाया था उसको याद करके वह उसकी बहादुरी पर गर्व अनुभव कर रहा था। यह तो उसे मालूम था कि इन्द्र शरीर से तगड़ा और फुर्तीला है। पर वह जगीर सिंह जैसे पहाड़ को चारों शाने चित्त कर देगा ऐसा उसने कभी न सोचा था। इन्द्र इससे पहले भी कई कुश्तियाँ जीत चुका था। पर यह एक अनोखी जीत थी। उसकी निगाह मे यह जीत केवल जगीरे पर ही नहीं थी बल्कि यह विजय उसे अपने जानो दुशमन जोधा सिंह पर प्राप्त हुई थी। यह उस ज़हरीले नाग के फन पर एक भयायक चोट थी। लेकिन वह यह भी जानता था कि जोधा ऐसा चालाक नाग है जो फिर कभी पहले से कही अधिक क्रोध से वशीभूत होकर उस पर, उसके बेटों पर हमला कर सकता है। अब उससे और अधिक होशियार रहने की ज़रूरत है। वह अपनी धूर्तता से कभी बाज़ नहीं आएगा।

घर में बलदेव, जीता और इन्द्र सिंह बैठे इसी विषह पर बातें कर रहे थे कि दीवान चन्द ने कहा—बलदेव बेटे ! तुम लोग क्या समझते हो कि अब जोधा सिंह मार खाकर चुप बैठा रहेगा, तुम लोगों के डर के मारे कुछ नहीं करेगा। ऐसा नही होगा। वह चोट खाए हुए नाग की तरह अपनी शक्ति अपने ज़हर को इकट्ठा करेगा और पूरी योजना बनाकर, कोई भयानक षड्यंत्र रचकर हम लोगों पर हमला करेगा। अब पहले की अपेक्षा उससे व उसके साथियों से अधिक चौकन्ना रहने की आवश्यकता है।

पिता के शब्द सुनकर जीता बोला—भाया जी, अब घबराने की कोई बात नहीं। मैं तो समझता हूँ कि अब वह कमीना कभी सिर उठाने की कोशिश नही करेगा। और अगर कभी ऐसा मौका वह लाया भी तो क्या हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे। उसको फिर मुँह की खानी पड़ेगी, उसके ज़हरीले दाँत तोड़

दिये जाएंगे और अगर कही उसने हमें मजबूर कर दिया तो हम उसका व उसके बेटों के सिर भी कुचलकर रख देंगे।

इन्द्र सिंह ने भी जीते की बात का समर्थन करते हुए कहा—घबराने की कोई बात नही। अगर उस सुअर के पास पालतू कुत्ते हैं तो मेरे साथ भी मेरे मददगार है। मेरे दोस्तो की ताकत उसके साथियों से कम नही। मुझे तो लगता है कि अब वह टक्कर लेने की हिम्मत नहीं करेगा।

जीते व इन्द्र की बातें सुनकर दीवान चन्द ने कहा—तुम दोनों की शक्ति व साहस की मैं प्रशंसा करता हूँ। पर बेटे जोश में कभी होश नहीं खोना चाहिये। समझदार आदमी कोई भी कदम उठाने से पहले उसके नतीजे पर गौर कर लेता है। एक बहुत जरूरी बात जो हमे याद रखनी चाहिए वह यह है कि हमारे खानदान और जोधा सिंह के खानदान मे कुछ फर्क है। उन लोगों ने तो अपनी लोई उतार रखी है। उनकी गाँव तथा आसपास के इलाके में जो इज्जत मान है वह सभी जानते हैं। हमें नीचा दिखाने के लिए जोधा सिंह तथा उसके बेटे किसी भी वक्त कही भी कपडे उतारकर नंगे हो सकते हैं। लेकिन हम यह सब कुछ नही कर सकते। हमे तो अपनी मान-मर्यादा का ख्याल रखना ही पडेगा। किसी भी बात की शुरुआत हम लोगों की तरफ से नही होनी चाहिए।

—लेकिन मामा जी, हमारा भी अपना स्वाभिमान है। अगर वे लोग कभी हमारी गैरत पर हमला करेंगे तो हमे उसका मुकाबला तो करना ही हंगा। गाय बनने से तो काम नही चलेगा। आप तो जानते हैं कि आज के ज़माने में जो आदमी दबता है लोग उसे और ज्यादा दबाने की कोशिश करते हैं। उनके हमले का मुंह तोड़ जवाब तो देना ही होगा। ये शब्द बलदेव ने कहे।

उसकी बात सुनकर इन्द्रसिंह बोला—यही तो मैं भी कहता हूँ। यह ठीक है कि हम शुरुआत नही करेंगे। लेकिन जैसे ही हमें पता चलेगा कि वे लोग वार करने वाले हैं तब हम भी जवाब देना ही होगा। पूर्व इसके कि वे पहले हमें मारकर गिरा दे, हम उनके उठते हुए हाथों को पहले ही तोड़-मरोड़ देंगे। और जो भी हम करेंगे अपनी मर्यादा को निगाह में रखकर ही करेंगे। हम उनकी तरह नंगेपन का प्रदर्शन नही करेंगे।

बलदेव तथा इन्द्र को बात दीवान चन्द की समझ मे आ गयी। उसने पुनः अपनी बात पर विचार किया और उसे लगा कि उसके बेटे स्थिति को देखकर जो फैसला लेंगे वह ठीक ही होगा। कुछ क्षण चुप रहकर वह फिर बोला—देखो बच्चो, जब पापी के पाप का घड़ा भर जाता है तो वह घड़ा अवश्य

हो डूब जाता है। फिर उसे डुबोने की जरूरत नहीं रहती। जोधा सिंह के पापों का घड़ा भी भरने वाला है और उसका परिणाम भी डूबने के सिवाय और कुछ नहीं होगा। हम चुपचाप बैठे नहीं रहेंगे। उन लोगों की हरकतों पर नजर रखेंगे और उनका सामना करने के लिए भी अपने आपको तैयार रखने की कोशिश करते रहेंगे। खुले मैदान में उसकी जो ताकत है उसे मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। वह बखूबी जानता है कि साफ सामने आने पर उसे मार ही खानी पड़ेगी। वह पैसे के जोर से ही दूसरों से शरारत करवाएगा।

—पर ये भाड़े के टट्टू कब तक काम आएँगे। यह सही है पैसे में बहुत शक्ति होती है लेकिन पैसा ही सब कुछ नहीं होता। फिर ऐसा नहीं है कि हमारे पास धन नहीं है। धन के साथ हमारे पास बल है साहस है और सब से बड़ी बात यह है कि गाँव वालों की दुआएँ, उनकी शुभ कामनाएँ हमारे साथ हैं। खैर आपकी बातों पर हम ध्यान रखेंगे और जो भी कदम उठाएँगे सोच-समझकर ही उठाएँगे, इन्द्र ने पिता को आश्वासन देते हुए कहा।

● ●

चौदह

अंधकार का पर्दा गायब हो चुकाथा और अब धीरे-धीरे सूर्य की लालिमा नज़र आने लगी थी। पेड़ों में पक्षियों का कलरवनाद सुनाई पड़ रहा था। पंडितों और लम्बड़ों के रहट के पास जो आम्र-कुंज है वहाँ से कोयल की सुमधुर कूक उठ रही थी। पगडंडियों के दोनों ओर की मखमली घास व नन्हें-नन्हे पौधों पर पड़े ओस-कण अरुण-चुंबन से विभोर हो रहे थे। गाँव के ऊँचे मकानो तथा वृक्षों की फुनगियों पर उजली-पीली धूप आहिस्ता-आहिस्ता पसर रही थी। हरिजनों की बस्ती ठट्ठी में भी हलचल शुरू हो चुकी थी। वहाँ कुछ महिलाएँ अपने-अपने घरों के सामने झाड़ू लगा रही थीं, कुछ धुले कपड़े मुंडेरों या रस्सियों पर फैला रही थीं। कई घरो के आँगन से चूल्हों व तंदूरों से सुलगते उपलों का सलेटी धुँआ उठ रहा था। मटमैले वस्त्र पहने पाँच-सात बच्चे घरो से बाहर खुले रास्ते में कुछ खेलने के बारे में सोच रहे थे। तीन-चार बच्चे वहीं पेड़ों के पास बैठे बड़े आराम से टट्टी कर रहे थे। ठट्ठी के अधिकांश कारिन्दे सरदारो, पंडितों व अन्य ऊँची जाति के लोगों के खेतों व रहटों पर काम करने चले गये थे और कुछ जाने के लिए तैयार हो रहे थे।

तभी सरदार जोधा सिंह का बड़ा लड़का शेर सिंह अपने बाग के चौकीदार दीनू और ठठ्ठी के ही एक युवक ननकू को साथ लिए वहाँ पहुँचा। कुंए के पास पहुँचकर उसने ननकू से कहा कि वह तुरन्त बिन्दरे को बुलाकर उसके सामने पेश करे। जैसे ही शेर सिंह कुंए के पास पहुँचा ठठ्ठी के दो-चार व्यक्ति उसके पास पहुँच गये और सिर झुकाकर उसके प्रति अपना आदर व्यक्त किया। कुंए पर पानी भर रही महिलाएँ समझ गयी कि अवश्य ही कोई संगीन बात हुई होगी जो सुबह-सुबह सरदार जोधा सिंह का लड़का यहाँ पहुँचा है। शेर सिंह का क्रोध उसकी भाव-भंगिमा से साफ़ नज़र आ रहा था। उसको देखकर लगता था कि अवश्य ही ठठ्ठी के किसी अभागे की शामत आयी है।

कुछ देर बाद ननकू बिन्दरे को साथ लिए कुंए के पास पहुँच गया। सोलह-सत्रह वर्ष के दुबले-पतले साँवले युवक बिन्दरे के तन पर मैली सी लुंगी न बंधी थी। वह नंगे पाँव था। वह सहमा सा शेर सिंह के सामने पहुँचा और माथे पर हाथ रखकर उसका अभिवादन किया। तभी शेर सिंह की आवाज गरजी—क्यों बे बिन्दरे के बच्चे, कल हमारे बाग से खरबूजे क्यों तोड़े? सारी खेती चौपट करके रख दी।

—सरदार जी मैंने तो···और इसके आगे वह कुछ कह पाता एक भरपूर थप्पड़ उसके मुँह पर पड़ चुका था। और वह दो-चार कदम पीछे हट गया था। शेर सिंह फिर गरजा—इधर आ।साले हरामी के पिल्ले, कमीने, आज तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूगा और पाँव से जूता उतार कर ज़ोर से उसके सिर पर मारा। बेचारा बिन्दरा सिर पकड़कर वहीं बैठ गया। तभी चटाख-चटाख तीन-चार बार जूता उसकी पीठ पर पड़ा और मारे दर्द के वह तड़प उठा। वह गिड़गिड़ाकर कह रहा था—सरदार जी, मैंने कुछ नहीं किया, मैं बेकसूर हूँ, मेरी पूरी बात तो सुनें।

—चुप बे हरामी के तुख़्म। तू अपनी बात क्या सुनाएगा। मुझे सब कुछ ननकू ने बता दिया है। तुमने खरबूजे तोड़ने की हिम्मत कैसे की। किसी ऐरे-गैरे का बाग समझ रखा था। हरामी, क्या तुम्हें पता नहीं था कि तुम किसके खरबूजे तोड़ने जा रहे हो?

शेर सिंह की गालियों व बिन्दरे के रोने-चिल्लाने की आवाजें सुनकर ठट्ठी के कई लोग वहाँ कुएँ के पास पहुँच गये थे। यह पहला अवसर नहीं था कि ठठ्ठी में इस प्रकार का दुखद वातावरण पैदा हुआ था। ऐसी घटनाएँ तो प्रायः वहाँ होती ही रहती थी। जब कभी किसी कारिन्दे ने ऊँची जाति के लोगों के यहाँ काम करने से इन्कार कर दिया, कोई हरिजन किसी सरदार,

पंडित या चौधरी के बुलवाने पर उसके यहाँ न पहुँचा, किसी के खेत मे पशु घुस गये, कही कोई चोरी-चकारी हो गयी तो ऊँची जाति के लोग अपना रुतबा अपना बड़प्पन दिखाने के लिये ठठ्ठी पहुँच जाते थे और शेर सिंह की तरह ही उन पर रौब गांठते थे, गालियाँ बकते थे और कभी-कभी जूते-लात भी चलाने से नही चूकते थे। बेचारे हरिजनो में इतनी हिम्मत नही थी कि वे उनके सामने आँख उठाकर बात कर पाते।

यह शोर-शराबा सुनकर डाकघर का बाबू हरनाम सिंह भी वहाँ पहुँच गया। हरनाम सिंह मज़हबी सिख था और वह भी ठठ्ठी मे ही रहता था। उसका कद लम्बा-ऊँचा था और देखने में शक्ल-सूरत भी अच्छी थी। उस समय वह उजला कुरता और चेक की लुंगी पहने हुए था। सिर के जूडे को काले डोरे से बांध रखा था। पांव में हवाई चप्पल थी। कलाई में घड़ी चमक रही थी। वहाँ का दृश्य देखकर उसे भीतर कही हल्की सी वेदना अनुभव हुई। वैसा माहौल उसके लिये भी नया नहीं था। इस प्रकार की डाँट-फटकार, जूतों-लातो से पिटाई वह पहले भी कई बार देख चुका था। हां इधर कुछ वर्षों से उसके मन मे एक नयी प्रकार की चेतना जाग रही थी। अक्सर वह सोचता रहता कि ये हरिजन लोग कब तक इन ऊँची जाति वालों से दबते रहेंगे, कब तक वे उनके अत्याचारों को झेलते रहेंगे, कब इनमे अन्याय व जुल्म के साथ टक्कर लेने की हिम्मत पैदा होगी, कब ये भी आदमी की तरह जीना सीखेंगे।

अभी तक बिन्दरा सिर झुकाए सिसक रहा था गिडगिडा रहा था। एक बार फिर शेर सिंह गुर्राते हुए बोला—बिन्दरे के बच्चे, सच-सच बता, तेरे साथ दूसरे दो लोग कौन थे? क्या उन दोनों को भी तू ही बाग में ले गया था? और इतना कह कर एक भरपूर थप्पड़ उसे और जड़ दिया। बिन्दरा एक बार फिर जोर से चीख उठा। उसकी यह दशा देखकर हरनाम सिंह ने तनिक विनम्र भाव से शेर सिंह से कहा—सरदार जी, अब बेचारे को बख्श दें। बहुत धुनाई हो चुकी इसकी। फिर वह बिन्दरे को सम्बोधित करके बोला—बिन्दरे, तुमने यह सब क्यो किया? एक-आध खरबूजे के लिये इतनी गालियाँ खाईं, इतने जूते खाये। अरे मूर्ख, तुमने वैसे ही सरदार जी से दो-एक खरबूजे मांग लिये होते? क्या वे तुम्हे न देते?

हरनाम सिंह के बात करने का अन्दाज शेर सिंह को कही अच्छा न लगा। वह जानता था कि हरनाम सिंह भी मज़हबी सिख है। जैसे और हरिजन हैं वैसे ही वह भी नीच जाति का है। उसकी बात में उसे कही सिर उठाने की, बग़ावत की बू का एहसास हुआ। वह सोच रहा था कि जिस प्रकार

ठठ्ठी के अन्य बूढे-जवान औरतें-बच्चे उसके सामने सिर झुकाए सहमे हुए खड़े हैं वैसा ही रुख हरनाम सिंह का क्यो नही है। यह ठीक है कि यह थोडा सा पढ-लिख गया है, डाकघर का बाबू है। पर है तो यह भी हरिजन ही। और इस नाते यह हम लोगों से निगाह मिलाकर बात करे यह कैसे हो सकता है। पाँव की धूल को क्या हम सिर पर चढने देगे। फिर भी किसी प्रकार स्वयं को काबू मे रखकर उसने हरनाम सिंह से कहा—हरनाम, इस उल्लू के पठ्ठे से पूछो कि इसने वहाँ घुसने की जुर्रत कैसे की ? हम लोग दिन-रात खेतों मे काम करवाते है, मेहनत की जाती है तब कही फसल तैयार होती है। और ये हरामजादा दूसरे लड़कों को साथ लेकर वहाँ खरबूजे उखाड़ने-घुस गया ?

—सरदार जी, मैं बाग के भीतर नही गया था। मैं बाहर पगडंडी से जा रहा था कि उन दो लड़कों को मैंने खरबूजे तोड़ते हुए देखा। जब तक मैंने उन्हे मना किया तब तक वे पन्द्रह-बीस खरबूजे तोड कर चादर मे रख चुके थे। मुझे देखकर वे जल्दी से भाग गये और दो खरबूजे मेरी ओर फेंक गये। वे लड़के अपने गाँव के भी नही हैं। वे तिरगड़ी गाँव की ओर भाग गये। मेरे जोर से बोलने और उनके दौड़ने की आवाज सुनकर बाग के दूसरे भाग में काम कर रहा यह ननकू वहाँ पहुँच गया। इसने मेरे हाथ में वे दो खरबूजें देखे। थोड़ी देर बाद बाग का चौकीदार यह दीनू भाई भी वहाँ आ गया। बस सरदार जी सारा किस्सा यही है। मैं कही बाग में नही घुसा था। वे खरबूजे वे लड़के ही मेरी ओर फेंक कर भाग गये थे।

बिन्दरे की बात सुनकर हरनाम सिंह ने पास खड़े ननकू से पूछा—ननकू, क्या तुमने बिन्दरे को बाग के भीतर खरबूजे तोड़ते हुए देखा था ?

—नहीं। पर इसके हाथ में खरबूजें थे और यह उन लड़कों से बाते कर रहा था। यह भी उनसे मिला हुआ था। इससे पूछो कि यह वहाँ क्या करने गया था।

उसकी बात सुनकर बिन्दरे ने उत्तर दिया—मैं चुन्नी शाह के भट्टे पर काम निपटाकर वापस लौट रहा था। बाग के साथ वाले रास्ते से ही तो मुझे लौटना था। वही तो रास्ता ही है। और तभी मैंने सारी बात चौकीदार दीनू भैया और ननकू को बताई भी। पर यह ननकू तो हमारा शरीक है, हमारा दुश्मन है। मुझे पिटवाकर तो यह खुश होता है। मालूम नहीं इसने सरदार जी को क्या-क्या मेरे खिलाफ कहा।

तभी ननकू बोला—हरनाम बाबू, यह साला झूठ बोल रहा है। यह उन लड़कों के साथ मिला हुआ था। मेरी इससे क्या दुश्मनी है बैर है। हाँ जो

कोई हमारे मालिक का नुकसान करेगा तो उसकी शिकायत तो मैं करूंगा ही।

ननकू की बात खत्म होने पर दो-एक बुजुर्गों ने बिन्दरे से कहा कि वह सरदार शेर सिंह के पाँव पकड़कर माफी माँग ले और भविष्य मे ऐसा कोई काम करने से तौबा करे। उनकी बात सुनकर बिन्दरा सिर झुकाकर शेर सिंह के पाँव के पास बैठ गया। तभी शेर सिंह फिर एक बार गरजा—चमार की औलाद, इस बार तुम्हें छोड़ रहा हूँ। फिर कभी इस तरह की हरकत की तो ज़मीन में गड़वा दूँगा। साले, नीच हो तो नीचों की तरह रहना सीखो।

शेर सिंह के ये तीखे शब्द हरनाम सिंह के हृदय पर काँच की किरचों की तरह चुभ गये। वह चाहते हुए भी स्वयं पर काबू न रख पाया और बोला—सरदार साहब ! आप यह बार-बार चमार नीच क्यों कह रहे हैं। चमार भी आखिर इन्सान हैं। हालांकि इसका कोई खास कसूर नही है। खरबूजे तो उन तिरगड़ी गाँव के लडको ने तोड़े। इस पर भी यह माफी माँग रहा है और आप बिना मतलब······

शेर सिंह ने कभी कल्पना तक नही की थी कि हरनाम सिंह उससे इस तरह अकड़कर तनकर बात करेगा। उसने क्रोधभरे लहजे में कहा—हरनामे, तुम बीच में बकवास क्यों कर रहे हो। तुम अपनी चौधर अपने घर रखो, तुम्हें यहाँ किसने पंचायत करने के लिये भेजा है ? जाओ यहाँ से दफा हो जाओ। बड़ा आया अपनी बाबूगिरी दिखाने।

—सरदार शेर सिंह ! मैं क्या बाबूगिरी दिखा रहा हूँ ? आप इस बेचारे को इतना ज्यादा मार चुके हैं सिरफ एक खरबूजे के लिये। मैं इसे समझा रहा हूँ और आप उल्टे मुझ पर बिगड़ रहे है। अगर मन न भरा हो तो दो-चार जूते और इसे मार लें। हम लोग तो आप जैसो से जूते-लातें खाते ही रहे है। पर याद रखिये अब जमाना बदल रहा है······

शेर सिंह का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। अब उसे बिन्दरे के बजाए हरनाम सिंह पर ताव आ रहा था। उसके इस नये रुख को भाँपकर तीन-चार व्यक्तियों ने हरनाम सिंह को बाँह से पकड़ा और उसे मना करते हुए जबर-दस्ती परे ले गये। वे नही चाहते थे कि बात और आगे बढने पाए। वे लोग हरनाम सिंह की भी इज्जत करते थे। वह उनकी बस्ती का सबसे ज्यादा पढा-लिखा आदमी था, गाँव मे डाकघर का बाबू था। उसकी उस नौकरी से ठट्ठी वालों की अपनी इज्जत थी। वे नही चाहते थे कि कही शेर सिंह उस पर हाथ उठा दे।

हरनाम के वहाँ से हट जाने के बाद शेर सिंह सोच रहा था कि इस नीच हरनाम के बच्चे की इस तरह सिर उठाकर ताव में बात करने की हिम्मत कैसे पड़ी। बिन्दरे की माँ यहाँ खड़ी है, उसका भाई खड़ा है, ठठ्ठी के कितने लोग खड़े हैं। उनमें से किसी ने कोई चूँ-चरा नहीं की। और यह कमीना-हरामी बकबक करके चला गया। इस बदज़ात के हाथ-पाँव भी कभी तोड़ने पड़ेंगे।

ठठ्ठी के लोगों के क्षमा-याचना करने पर शेर सिंह तनिक नर्म हुआ। अब उसे लगा कि वह बहुत कुछ कह चुका है, डाँट-फटकार दे चुका है। अब इससे ज्यादा और कुछ कहना ठीक न होगा। आखिर एक बार फिर लोगों को सावधान करके वह अपने रहट की ओर चल दिया। उसके पीछे-पीछे दीनू चौकीदार और ननकू भी चले गये।

शेर सिंह के जाने के बाद ठठ्ठी का माहौल फिर पहले जैसा ही हो गया। इस तरह की घटनाएँ पहले भी अनेक बार हो चुकी थीं। औरतों ने अपने काम-धंधे शुरू कर दिये, लड़के-बच्चे गली में खेलने-कूदने लगे, कुएँ पर महिलाएँ पानी भरने लगीं, जिन लोगों को बाहर काम पर जाना था वे चले गये। हरनाम सिंह भी घर में आकर डाकघर जाने की तैयारी करने लगा। लेकिन उसके मन-मस्तिष्क में एक अजीब तरह की खलबली मची हुई थी। आज पहला मौका था जब वह गाँव के किसी ऊँची जाति वाले से इस प्रकार जरा तनकर बोला था। वह मन ही मन कहीं आतंकित भी हो रहा था कि जो कुछ आज हुआ है, जिस ढंग से उसने शेर सिंह से बात की है, उसका परिणाम ठीक नहीं होगा। यह शेर सिंह आज की बात को अपने दिल में रखेगा और ज़रूर कभी मौका पाकर उससे बदला लेगा। ये ऊँची जात वाले कब चाहेंगे कि कोई हरिजन उनके सामने आँख उठाकर बात करे। वे लोग नीच जाति के लोगों को आगे बढ़ते हुए देखना कभी पसन्द नहीं करेंगे। वे तो चाहते हैं कि हम लोग पहले की तरह हमेशा उनकी जूतियों में बैठते रहें।

बिन्दरा घर पहुँचकर चुपचाप चारपाई पर लेट गया था। उसके गाल पर शेर सिंह के थप्पड़ का निशान बना हुआ था। जूतों की मार से उसकी पीठ पर भी नीले-काले धब्बे बन गये थे। सिर पर भी एक छोटा सा गोला उभर आया था। शरीर पर पड़ी मार की पीड़ा के अलावा वह एक प्रकार की मानसिक वेदना से भी परेशान हो रहा था। वह सोच रहा था कि उसे क्यों शेर सिंह ने मारा। उसने तो कोई अपराध नहीं किया था। जिन्होंने खरबूजे तोड़े थे वे तो साफ बचकर निकल गये थे। वह स्वयं तो निरापराध था। हाँ उसने उन

दो खरबूजो को उठाने का लोभ जरूर किया था। लेकिन उसने तभी दीनू चौकीदार को उन लड़कों के बारे मे बता दिया था। वह तो खरबूजे चुराने की गर्ज से वहां नहीं गया था। उसे पूरा विश्वास था कि उसको पिटवाने वाला ननकू ही था, ननकू जो स्वयं चमार है, उसकी अपनी बिरादरी का है। उस हरामी को अपनी ही जात के, अपने ही पट्टीदार को पिटवाते शर्म नही आयी। इस ननकू ने मेरे साथ जो करवाया है उसके लिये मैं उसे क्षमा नही करूंगा, मैं उससे इस बात का बदला लेकर रहूँगा। चुन्नी शाह के भट्टे पर ईंटे थापने के लिये उसे अब तक पहुँच जाना चाहिये था। पर आज वह दर्द के कारण वहाँ जा पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था।

वह उस दिन काम पर नही गया। दिनभर चारपाई पर ही पडा रहा। ठठ्ठी की आठ-दस औरते और दो-चार परिचित-मित्र आदि उसे देखने उसका हालचाल पूछने आए। पर आने वालो ने उसे ही उपदेश पिलाए, शेर सिंह ने उसके साथ जो कुछ किया था उसका किसी ने खुलकर विरोध नही किया। वह सोच रहा था कि ये लोग कितने डरपोक हैं, सच कहने से भी डरते है। शायद इन लोगों को इस बात की शंका है कि उनके द्वारा बोले गये शब्द कही शेर सिंह तक न पहुँच जाएँ। अगर किसी ने शेर सिंह के विरुद्ध कुछ कहा भी तो बहुत धीरे से, बडे नपे-तुले शब्दों में। बस केवल उसकी माँ थी जो दिल से बडी-बडी गालियाँ और बद-दुआएँ उस जालिम को दे रही थी। पर वह भी इतनी सावधानी बरत रही थी कि दूसरों के सामने उसके मुह से कोई ऐसा अपशब्द न निकलने पाए।

शाम को डाकघर से लौटने के बाद हरनाम सिंह सीधा बिन्दरे का हाल-चाल जानने के लिये उसके घर पहुँचा। तब बिन्दरा गहरी नीद में सो रहा था। बिन्दरे की माँ से उसे मालूम हुआ कि मार के कारण उसके बेटे का शरीर बहुत दुख रहा था। पीडा की तीव्रता कम महसूस हो इसके लिये उसने उसकी पीठ पर अच्छी तरह से दारू मल दी थी। पाव भर बिन्दरे को पिला भी दी थी ताकि उसे कुछ आराम मिले और नीद आ जाए। दारू के प्रभाव के कारण ही उसे नीद आ गयी थी।

हरनाम ने बिन्दरे को जगाया नही था। वह चुपचाप घर आकर लेट गया था। लेकिन बिन्दरे की माँ के शब्द उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे। वह सोच रहा था कि पिछड़ी जाति के लोग वैसे ही बहुत गरीब है, गरीबी के कारण उनके स्वास्थ्य भी कमजोर हैं। उस पर यह मदिरापान की लत उन्हे और दुर्बल बनाती जा रही है। गरीबी की चक्की मे पिस रहे इन लोगों को

खाने के लिये पर्याप्त भोजन मिले न मिले पर पीने के लिये शराब जरूर चाहिये। कब ये लोग चेतेंगे, कब इन्हें अपनी दुर्बलताओं का एहसास होगा। कब तक ये लोग शराब को रामबाण दवा मानकर उसका सेवन करते रहेंगे। हमारे समाज का यह दलित वर्ग कब अपनी अज्ञानता व दरिद्रता से मुक्त होगा।

• •

पन्द्रह

बिन्दरे के मन में हरनाम सिंह के प्रति आदर-भाव बढ़ गया था। वह जानता था कि उस दिन जब शेर सिंह ने उसको पीटा था तो ठट्ठी के सभी लोग पास खड़े तमाशा देखते रहे थे। किसी ने भी उसका पक्ष लेकर शेर सिंह से बात करने की हिम्मत नहीं की थी। सभी शेर सिंह की हाँ में हाँ ही मिला रहे थे और उसका ही दोष प्रकट कर रहे थे जबकि वह स्वयं बेकसूर था। उस घटना के बाद भी ठठ्ठी में जब-जब इस बारे में बातें हुईं तो लोगों ने उसको ही भला-बुरा कहा। लेकिन यह अकेला हरनाम सिंह ही था जिसने वहाँ पहुँचकर उसे शेर सिंह से बचाने की कोशिश की थी। और इसी कोशिश में उसकी शेर सिंह से कहा-सुनी भी हो गयी थी। वह जानता था कि शेर सिंह भी अपने बाप जोधा सिंह की तरह कमीना है बदमाश है। उसके मन में शंका थी कि वह कभी न कभी हरनाम सिंह से बदला लेगा, उसे किसी न किसी रूप में परेशान करेगा, किसी संगीन मामले में फँसा देगा। पर तभी उसके मन में विचार आया कि अगर कभी ऐसा मौका आया तो वह अपनी ओर से हर तरह से उसकी सहायता करेगा। उस भले आदमी की खातिर अगर उसे खुलकर सामने आकर शेर सिंह से टक्कर लेनी पड़ी तो वह उसके लिए संकोच नहीं करेगा, वह उसका ही साथ देगा। अपने मन की इस बात का ज़िक्र वह हरनाम से भी कर चुका था। अब उसे जब भी समय मिलता वह उससे मिलता रहता, कभी उसके घर आकर तो कभी बहाने से डाकघर पहुँच जाता। उन दोनों की बढ़ती हुई इस निकटता की खबरें शेर सिंह तक पहुँचती रहती थीं। इन खबरों को पहुँचाने का माध्यम ननकू ही था।

उस दिन इतवार की छुट्टी थी। हरनाम सिंह घर पर ही था। बिन्दरे

को पेचिश पड़ रही थी इसलिए वह मुन्नी शाह के भट्टे पर आधा दिन काम करके घर लौट आया था। घर पर कुछ देर रुकने के बाद वह हरनाम सिंह के यहाँ चला गया था। हरनाम का बड़ा भाई सतनाम सिंह शंगारा सिंह का कारिन्दा था और उस समय वह खेत में काम कर रहा था। घर पर उसकी भाभी लाजो थी। लाजो के दो बच्चे थे, एक लड़का और एक लड़की। लड़की का नाम कुन्ती था और उसकी उम्र करीब सात वर्ष होगी। लड़का हरदीन चार वर्ष का था। दोनों बच्चे लाजो के पास बगल वाले कमरे में बैठे थे। एक कमरे में हरनाम सिंह और बिन्दरा बातें कर रहे थे। दोनों की आयु में छः-आठ वर्ष का अन्तर था। इस कारण दोस्ती होने का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता था। बिन्दरा हरनाम को अपना हितैषी मानने लगा था। इसीलिये उसके यहाँ कभी-कभी चला आता था।

ठठ्ठी के अन्य घरों की तरह हरनाम सिंह का घर भी कच्चा ही था। छोटे-छोटे दो कमरे थे। दोनों कमरों के सामने आँगन था जो डेढ़-दो फुट ऊँची कच्ची मुंडेर से घिरा हुआ था। आँगन के एक सिरे पर आठ-दस फुट लम्बा-चौड़ा टट्टर था जिसके नीचे लाजो खाना आदि बनाती थी। गत कई वर्षों से मरम्मत आदि न होने के कारण दोनों कमरों की दशा खस्ता हो गई थी। कच्ची दीवारो पर कई स्थानों पर दरारें नज़र आ रही थीं। छत की कई कड़ियाँ अपने स्थान से हिल चुकी थीं और आठ-दस कड़ियों में दीमक लग चुकी थी। कुछ दिनों बाद बरसात का मौसम शुरू होने वाला था। दो वर्षों से छतें भी भूसे-मिट्टी से लीपी नहीं गयी थीं। हरनाम को आशंका थी कि यदि वर्षा शुरू होने से पहले छतों की लिपाई न कराई गयी तो पानी ज़रूर चूने लगेगा।

इस सम्बन्ध में बिन्दरे से बात करते हुए उसने कहा—दोनों कमरों की हालत देख रहे हो। सोचता हूँ कि बरसात से पहले-पहले इनकी लिपाई आदि करवा दी जाए। बिन्दरे, जी तो चाहता है कि अगर किसी तरह इन्तज़ाम हो जाए तो एक पक्का कमरा बनवा लिया जाए। करीब पाँच सौ रुपये मेरे पास हैं। सौ-दो सौ का प्रबन्ध सतनाम भैया भी कर लेगा। लेकिन इस रकम से भी कमरा कहाँ बन पाएगा। उसके लिये डेढ़-दो हज़ार तो चाहिए ही।

बिन्दरे ने उत्तर में कहा—हाँ हरनाम भैया, इतना तो खर्च हो ही जाएगा। लेकिन मेरा यह कहना है कि गुरु महाराज का नाम लेकर कमरा

बनवाने का काम शुरू करवा दो। काम एक बार शुरू हो जाएगा तो वह पूरा भी होगा ही।

—कैसे पूरा होगा। पैसा कम पड़ जाने से अड़चन पैदा हो जाएगी। ठठ्ठी व गाँव के लोगों को तो तमाशा देखने में मजा आता है। काम लटक गया तो लोग मन ही मन हँसेंगे, कहेंगे कि जब बूता ही नहीं था तो कमरा बनवाना शुरू ही क्यों करवाया।

—यह तो तुम ठीक ही कह रहे हो। गाँव की बात छोड़ो, अपनी ठठ्ठी अपनी जाति के लोग भी ऐसे हैं जो दूसरे को सुखी देखकर दुखी होने लगते हैं। और दूसरे को कष्ट-मुसीबत में देखकर मन ही मन खुश होते हैं।

बिन्दरे के मन मे हरनाम के लिए प्रेम था। वह चाहता था कि उसकी मनोकामना किसी तरह पूरी हो जाए, किसी तरह उसका कमरा बन जाए। वह स्वय इस दशा में नहीं था कि थोडा पैसा देकर उसकी मदद कर सकता। वह तो स्वयं दिनभर मजदूरी करके अपने परिवार की कुछ सहायता कर पाता था। कुछ देर सोचने के बाद उसने कहा–भैया ! एक बात मेरे दिमाग मे आयी है। तुम जानते ही हो कि मैं चुन्नी शाह के भट्टे पर काम करता हूँ। मुझे चुन्नी शाह पर भरोसा है। वह मेरी बात को मान लेगा। वह तुम्हें भी अच्छी तरह से जानता है। हम दोनो किसी समय उसके भट्टे या उसके घर पर जाकर उससे बात कर लेगे। मेरे कहने पर वह तुम्हें ईंटें उधार दे देगा। तीन-चार सौ रुपये उसे नकद दे दिये जायेंगे। बाकी हर माह सौ-दो सौ करके उधार चुकाते रहना।

बिन्दरे का यह सुझाव हरनाम को अच्छा लगा। उसने सोचा कि अगर ईंटे उधार मिल जाएँगी तो कमरा बनने में कोई अड़चन नही आएगी। मिस्त्री व मजदूर का भुगतान वह कर लेगा। उसने कहा–बिन्दरे ! तुम्हारी बात मुझे जच रही है। अगर चुन्नी शाह मान गया तो समझो कमरा बन गया। भाई, सबसे बडा खर्चा तो ईंटों का ही है। चुड़ाई तो हम गारे से ही करवाएँगे। तीन बड़ी बल्लियाँ घर पर पड़ी हैं। उनको चिरवाकर शम्भू बढई से कड़ियाँ बनवा ली जाएँगी। गुरु महराज की कृपा से काम पूरा हो जाएगा। तुम कल ही चुन्नी शाह से बात कर लेना। और अगर कहोगे तो मैं भी तुम्हारे साथ जाकर उससे मिल लूँगा। अभी चार सौ रुपये उसे दे दूँगा। बाकी हर माह सौ रुपये देता रहूँगा। मैं समझता हूँ इसमें उसे कोई परेशानी न होगी। वह मान जाएगा।

हरनाम के मन मे आस उत्पन्न हो चुकी थी। उसे विश्वास हो गया था

कि अब कुछ ही दिनो में नया पक्का कमरा बन जाएगा। ठठ्ठी मे वह पहला व्यक्ति होगा जो पक्का कमरा बनवाएगा। उसके परिवार के ठठ्ठी मे ठाठ बन जाएँगे। उसे यह कल्पना करके भी खुशी हो रही थी कि उसका पक्का कमरा बन जाने पर शेर सिह सरीखे ऊँची जाति के कई लोग भीतर से जल-भुन जाएँगे। जलते-भुनते हैं तो जलें-मरें, उसकी बला से। और वह तो चाहता भी है कि वे जलें-भुनें। अपनी इस आंतरिक खुशी पर वह काबू नही पा रहा था। उसके मन में विचार आया कि वह अभी उठकर अपनी भाभी को अपने मन की बात समझाइए। यह सुनकर वह भी अवश्य ही प्रसन्न होगी। फिर उसने बिन्दरे से कहा—चलो यह बात भरजाई को भी बताएँ। जरा उसकी राय भी ली जाए। और इतना कहकर वह बिन्दरे को साथ लेकर दूसरे कमरे में पहुँच गया।

लाजो जमीन पर बिछी जगह-जगह पैबन्द लगी दरी पर लेटी हुई थी। उन दोनों को सामने देखकर उठकर बैठ गयी। वे दोनो पास पड़ी चारपाई पर बैठ गये। तभी हरनाम बोला—भरजाई, एक बात हम दोनों ने सोची है। मैं जल्दी ही इस कमरे के आगे एक पक्का कमरा बनवाने जा रहा हूँ। बरसात से पहले-पहले इन दोनों कमरों की भी लिपाई करवा ली जाएगी। पक्का कमरा बन जाने पर हम लोगों को आराम रहेगा। फिर जगह की कमी नही रहेगी।

—भरजाई, सबसे बड़ी बात यह होगी कि पूरी ठठ्ठी मे तुम्हारी शान बन जाएगी। औरतों में तुम्हारा रुतबा सबसे ऊँचा हो जाएगा। यहाँ किसके पास पक्का कमरा है, ये बात बिन्दरे ने कही।

लाजो के मुख पर आश्चर्य व उल्लास की मिली-जुली परत लहराने लगी। वह सोच रही थी कि वह कही कोई सपना तो नही देख रही। यह कैसे हो सकता है कि उनका पक्का कमरा बन जाए। इन छोटे-छोटे दो कमरों की मरम्मत तो हम लोग करवा नही पाते। पक्का कमरा बनाने के लिए पैसा कहाँ से आएगा। उसे लग रहा था कि उसका देवर और बिन्दरा उससे हँसी-मज़ाक कर रहे हैं, उसका मज़ा लेने के लिए उसे बना रहे है। पर वास्तविकता जानने के लिए मन मे जिज्ञासा भी बड़ी तेजी से करवटें ले रही थी। उसने कहा—भैया, क्या सुबह से कोई नही मिला जो मुझे उल्लू बनाने के लिए चले आए। पक्का कमरा जब बनेगा, बनेगा, पहले कम से कम इन कमरों की छतों की लिपाई तो किसी तरह हो ही जानी चाहिए नही तो

पानी बरसने पर बड़ी परेशानी होगी। अब इस काम को और टालना ठीक न होगा।

वे दोनों समझ गये कि भाभी को उनकी बात का कोई विश्वास नहीं। वह उसे मजाक में ही ले रही है। इसलिये उसे यकीन दिलाने के लिए दोनों ने अपनी योजना की रूपरेखा उसे पूरी तरह समझाई। उनकी बातें सुनकर लाजो को विश्वास हो गया कि उनका पक्का कमरा जरूर बन जाएगा। फिर उसने हरनाम से कहा—भैया ! ये दो कमरे किसने बनवाए थे इसका मुझे कुछ पता नहीं। मेरा विचार है इन्हें तुम लोगों के दादा या परदादा ने बनवाया होगा। बनवाया नहीं बल्कि अपने हाथों से गारे-मिट्टी से बनाया होगा। अब तो बड़ी मुश्किल से दो-तीन वर्षों के बाद किसी तरह इनकी लिपाई-पुताई हो पाती है। अब अगर तुम लोगों की हिम्मत से नया पक्का कमरा बन जाएगा तो सचमुच बहुत आराम रहेगा, बस्ती में शान रहेगी।

लाजो को प्रसन्न होते देखकर बिन्दरे ने कहा—भरजाई ! कमरा बनेगा और जरूर बनेगा। और जब नयी भरजाई मेरा मतलब है हरनाम भैया की दुल्हन आएगी तो वह भी उस नये कमरे मे आराम किया करेगी। वाह ! तब कितना अच्छा लगेगा जब हमारी दोनों भरजाईयाँ उस नये कमरे में बैठकर आपस में बातें किया करेंगी, अगल-बगल बैठकर चरखे काता करेंगी……

—वाह बिन्दरे, तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली। मैं भी तो यही कहने जा रही थी। भगवान वह दिन जल्दी लाए। इस घर में रौनक आए। जब वह सजी-सँवरी पाँवों मे पाजेबें पहने नये कमरे मे छम-छम करती चलेगी तो कितना भला लगेगा। पता नहीं वह भाग्यशाली कौन होगी।

भाभी के शब्द सुनकर हरनाम को लगा कि वह उसे तुरन्त बता दे कि इस घर मे दुल्हन बनकर कौन आएगी। पर वह कह न पाया। उसे डर था कि अगर उसने सतनाम भाई को बता दिया तो उसकी शामत आ जाएगी। फिर भाभी औरत जात है। उसके पेट में बात कहाँ पचेगी, वह अवश्य ही किसी पास-पड़ोस की औरत से बात करेगी और इस तरह कानों-कान होती हुई बात जंगल की आग की भाँति पूरे गाँव मे फैल जाएगी। नहीं अभी इस बारे में वह उसे कुछ नहीं बताएगा। जब उपयुक्त समय आएगा तो अपने आप ही उसे पता चल जाएगा। फिर भी भाभी की बात का उत्तर देते हुए उसने कहा—भरजाई ! वह जब आएगी देखा जाएगा, अभी तो तुम और

भैया उस पक्के कमरे की शोभा बढ़ाना। जब तुम दोनो की चारपाईयां अगल-बगल बिछेंगी तो देखने में कितना अच्छा लगेगा। कुन्ती व हरदीन की किलकारियाँ जब उस कमरे में गूंजेगी तो हम सब के हृदय गद्गद् हो उठेंगे।

बातचीत के बाद हरनाम और बिन्दरे ने यह निश्चय किया कि कल प्रातः शाहवेले (कलेवे) के बाद वे दोनों चुन्नी शाह से बात करने के लिए उसके भट्टे पर जाएंगे। इसके बाद बिन्दरा अपने घर चला गया। रात को जब सतनाम घर लौटा तो लाजो और हरनाम ने पक्का कमरा बनवाने की योजना का पूरा विवरण उसे बताया। बात सुनकर उसका मन भी गद्गद् हो उठा। अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करते हुए उसने हरनाम से कहा—तुमने अगर यह काम पूरा करवा दिया तो पूरे गाँव मे तुम्हारी वाह-वाही होने लगेगी। ठठ्ठी के लोगों में हमारी इज्जत बन जाएगी। यह सब गुरु महाराज के प्रताप से ही होगा। सब उन्हीं की कृपा होगी। उनकी दया से ही तुम्हारी यहाँ अपने गाँव में नौकरी लगी है।

फिर उसने अपनी पत्नी से कहा—लाजो, देखा तुम्हारा देवर कितना लायक है। गाँव में वह डाकघर का अफ़सर बनकर आया है। और अफसर के रहने के लिए पक्का कमरा तो होना ही चाहिये। इसकी बहू भी तो अफसरानी कहलाएगी और वह भी ठाठ से पक्के कमरे में रहेगी। फिर उसने हरनाम सिंह से कहा—हरनाम! मेरे दिमाग में एक बात और आयी है। और मैंने मन में निश्चय भी कर लिया है कि जब कमरा बन जाएगा तो उसमें हम लोग अखंड-पाठ करवायेंगे, अपने सभी जान-पहचान वालो को उस मौके पर बुलाएंगे। गुरु महराज करे कि वह मौका जल्दी आए।

अगले दिन प्रातः जब हरनाम सिंह नाश्ता आदि कर रहा था कि बिन्दरा उसके यहाँ पहुँचा। उसके हाथ में एक थैली सी पोटली थी जिसमें तन्दूर की पकी चार-पांच रोटियाँ थी। दोपहर का भोजन वह अपने साथ ही ले जाता था और दिन में वही खाता था। हरनाम भी कपड़े आदि पहनकर तैयार था। जब वे दोनों चुन्नी शाह के भट्टे पर जाने लगे तो लाजो ने दोनो को गुड़ का छोटा सा एक-एक टुकड़ा दिया और बोली—मुँह मीठा करके जाओ, गुरु महाराज करे कि जिस काम पर जा रहे हो वह पूरा हो जाए। दोनो ने गुड मुँह लगाया और चल दिये।

जब वे दोनो भट्टे पर पहुँचे तो चुन्नी शाह लाल रंग की वही में कुछ हिसाब-किताब देख रहा था। भट्टे की चिमनी से थोड़ा-थोड़ा मटमैला धुँआ निकल रहा था। आठ-दस मज़दूर जिनमें तीन महिलाएँ भी थी लकड़ी के

साँचो से कच्ची ईंटें बना रहे थे । सामने वाले गढ्ढों के पास तरतीब से हजारों कच्ची ईंटें सूखने के लिये पड़ी थी । दाहिनी ओर पक्की तैयार ईंटें प्रचुर मात्रा में पड़ी हुई थी । तीन मजदूर कच्ची ईंटें ढालने के लिये घानी तैयार कर रहे थे ।

चुन्नी शाह लकड़ी के छोटे से तख्त पर बैठा यही देख रहा था । उसकी आयु पचास वर्ष के आसपास रही होगी । चेहरे का रंग तांबे की तरह था। हाँ धूप की तपश के कारण उस पर हल्की सी सांवली परत चढ़ी हुई थी। बड़ी-बड़ी मूँछें लगभग पक चुकी थीं । वह हल्के नीले रंग की कमीज और सफेद सलवार पहने हुए था । गले में सोने की छोटी सी जंजीर चमक रही थी। वह सिख नही था लेकिन कलाई में लोहे का मोटा-चमकीला कड़ा पहने हुए था । सामने हुक्का पड़ा था, जिसे वह थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गुड़गुड़ा लेता था ।

जैसे ही चुन्नी शाह ने बिन्दरे के साथ हरनाम को देखा तो उसका स्वागत करते हुए बोला—आओ बाबू हरनाम सिंह, आज इधर का रास्ता कैसे भूल पड़े ?

—शाह जी, बस आपके दर्शन करने ही चला आया ।

—अरे भाई हम दर्शन के काबिल कहाँ हैं ? दर्शनीय लोग तो गाँव में ही रहते हैं । और उन लोगो को तुम जानते ही हो । सुना है उस दिन सरदार जोधा सिंह के लड़के शेर सिंह से तुम्हारी कुछ कहा-सुनी हो गयी । भाई, उन लोगों से अधिक मुँह न लगाया करो । बस दूर से दुआ-सलाम रखा करो। उनसे ज्यादा मुंह लगाने से कभी कोई फायदा नही होगा, हाँ नुकसान होने की सम्भावना जरूर हो सकती है ।

—शाह जी, मेरा स्वभाव तो गाँव के सभी लोग जानते हैं । मुझे तो अपने काम से काम रहता है । डाकखाने की नौकरी करने के बाद मेरे पास इतना समय ही कहाँ रहता है कि लोगों से उलझता फिरूँ । पर कोई जबर-दस्ती गले पड़ जाए तो क्या किया जा सकता है । आपने तो सुना ही होगा, बिन्दरे ने आपको बताया ही होगा कि इस बेचारे को शेर सिंह ने बिना मतलब जूतों-लातों से पीट दिया । आपके पास पैसा है, कुछ लोग आपके साथ हैं तो इसका मतलब यह तो नहीं कि आप कमज़ोर-गरीब लोगों को हड़काते फिरें, जूते मारते रहें । खैर छोड़िये उस बात को । आज मैं आपके पास एक बेनती लेकर हाजिर हुआ हूँ ।

—हां-हां कहो, मैं किस काबिल हूँ जो तुम्हारी कोई सेवा कर सकूं। बोलो मुझसे क्या काम है?

तभी बीच में बिन्दरे ने कहा—शाह जी, मैं ही इनको अपने साथ लाया हूँ। आप तो जानते ही हैं कि ठठ्ठी मे इनका दो कच्चे कमरों का घर है। अब इनकी मर्जी यह है कि एक पक्का कमरा बनवा लिया जाए। कल इनके घर पर बातें हो रही थी तो इन्होंने ईंटे खरीदने की बात की। मैंने ही कहा कि शाह जी का भट्टा है, वही से दिलवा दूंगा।

बिन्दरे की बात सुनकर चुन्नी शाह ने हरनाम से कहा—भाई, भट्टा आपका है। जितनी ईंटें कहो भिजवा दूं। कमरा बहुत बड़ा तो नही होगा। कितनी ईंटों की जरूरत होगी?

—शाह जी, बात दरअसल यह है कि फिलहाल मेरे पास रुपये का पूरा प्रबन्ध नहीं है। अभी मैं आपको चार सौ नकद दे दूंगा और बाकी जो चार-पांच सौ होगा वह माहवारी किश्त के रूप में अदा करता रहूँगा। आप तो जानते ही हैं कि मैं सरकारी मुलाज़िम हूँ। हर माह तनखा मिलने पर किश्त देता रहूँगा।

—हरनाम भाई, तुम हुक्म करो। पैसा मिलता रहेगा। तुम भरोसे के आदमी हो। बोलो कितने हजार चाहिये।

—शाह जी, दस-बारह फुट का कमरा रहेगा। आप हिसाब लगा लें कि कितनी ईंटें लगेंगी। जितनी आप ठीक समझते हैं उतनी मेरे घर के सामने गिरवा दें।

—मैं समझता हैं दस-बारह हजार से काम चल जाएगा। अभी पांच-छः हज़ार भिजवा दूंगा। फिर जब और ज़रूरत होगी और पहुँच जाएँगी। ईंटें तुमको एक सौ दस रुपये हजार के हिसाब से मिलेंगी, वैसे दूसरे भट्टे वाले इन दिनों एक सौ बीस तक बेच रहे है। तुम अपने आदमी हो। तुमको तो कुछ रियायत करनी ही होगी। और इतना कहकर चुन्नी शाह ने हुक्के को फिर गुड़गुड़ाया और वहीं पर निगाह गड़ाते हुए बोला—ठीक है सरदार हरनाम सिंह, तुम चार सौ जमा कर दो। बाकी माहवारी किस्त जमा करते रहना। और हाँ कमरा बनाने में कोई और दिक्कत पेश आए तो बताने में संकोच न करना। भाई, तुम गाँव के मोतबर आदमी हो, सरकारी मुलाज़िम हो। तुम्हारा भले लोगों में उठना-बैठना है। और भाई हमारा भी ख्याल रखना। तुम्हारे डाकखाने तो कभी न कभी आता-जाता ही रहता हूँ।

—शाह जी, बंदा हमेशा आपका ताबयादार रहेगा। डाकखाने का कोई काम पड़ेगा तो आपकी सेवा करके मुझे खुशी होगी।

फिर उसने जेब से दस-दस के चालीस नोट निकाले और उन्हें शाह के हवाले करते हुए बोला—शाह जी, इन्हें गिन लें और मेरे हिसाब में दर्ज कर दें। आप विश्वास रखें, हर माह आपको सौ रुपये अदा करता रहूँगा। आपने जो कृपा की है उसके लिये मैं हमेशा आपका धनवादी रहूँगा।

—ठीक है भाई, पैसा तुमसे मिलता रहेगा उसका मुझे भरोसा है। कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह फिर बोला—देखो हरनाम सिंह, मैं तुम्हें ईंटें उधार दे रहा हूँ इसका ज़िक्र किसी से न करना। मैं आम तौर पर माल उधार नही देता। पर तुम्हारी बात दूसरी है। सुना है इन दिनों सरदार जोधा सिंह और उसके दोनो लडके तुम्हारे खिलाफ इधर-उधर लोगों से कुछ कहते-फिरते हैं। उन लोगो को पता न चलने पाए कि मैंने ईंटें तुम्हें उधार दी हैं। वे लोग नही चाहते कि कोई उनके दुशमनो की किसी भी रूप में मदद करे।

—लेकिन शाह जी, मैं उनका दुशमन कहाँ हूँ। मुझे उनके साथ कौन सी जायदाद बाँटनी है। वे लोग बड़े आदमी है, बड़े खुशहाल किसान हैं, साहूकार हैं। उनके रुतबे को कौन नही जानता। मैं एक मामूली सा आदमी हूँ। न नौ में न तेरह मे। भला मेरी क्या औकात जो उनसे दुशमनी कर सकूँ। मुझे इसी गाँव में रहना है, उन लोगों के बीच रहना है। आप विश्वास रखें यह उधार वाली बात किसी को मालूम नही होगी।

—भाई, यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि मुझे हर किसी को देखना पड़ता है। जानते हो मैं धंधेदार आदमी हूँ। गाँव के सभी लोगो से कभी न कभी वास्ता पडता ही रहता है। बस इसीलिये यह बात तुमसे कही है।

—अच्छा तो शाह जी, इजाज़त दें, चलता हूँ। ईंटें आप कल तक भिजवा दें। और इतना कहकर वह वहाँ से वापस चला आया।

हरनाम बड़ी प्रसन्न मुद्रा में घर लौट रहा था। वह चाह रहा था कि जल्दी से जल्दी घर पहुँचकर भाभी को शुभ समाचार सुनाए कि शाह ने ईंटें उधार दे दिये हैं और दो-एक दिन में ही कमरा बनना शुरू हो जाएगा। रह-रह कर उसके मानस-पट पर चुन्नी शाह की सूरत उभर रही थी। उसका हँस-मुख खिला हुआ चेहरा याद करके उसे अच्छा लग रहा था। सोच रहा था कि शाह सचमुच भला आदमी है, उसके दिल में दूसरों के लिये दया है। शायद इसी कारण भगवान की भी उस पर कृपा है। उसने मुझ पर जो विश्वास किया है मैं उस विश्वास को बनाए रखूंगा, हर माह सौ रुपये उसके

पास जमा कर दिया करूंगा। पर वह जोधा सिंह व उसके लड़कों से क्यों डरता है। वे उसका क्या बिगाड़ सकते हैं। लेकिन वे साले हैं तो हरामी ही, खुराफाती भी। गंदे आदमी से हर कोई बचना चाहता है। शाह जैसी दया उन लोगों में कहां है। क्या वे लोग कभी किसी की सहायता कर सकते हैं। साले कमीने हैं, जरूरत पड़ने पर वे लोग कभी कटी उंगली पर पेशाब तक नहीं करेंगे। अब देखो, वे बदमाश बिना मतलब मेरे पीछे पड़ गये है, भला मैंने उन पर कौन सी लाठी चलाई है, उनका क्या नुकसान किया है। वे दुष्ट हैं, उनसे सावधान ही रहना होगा।

• •

सोलह

अगले दिन दोपहर में घर के सामने टाली की घनी छाया के नीचे बैठी लाजो खजूर के पत्तों से टोकरी बना रही थी। उसकी पड़ोसने मोहने की मां सस्सी और नन्दी भी उसके पास बैठी हुई सुई से पुराने फटे कपड़ों की मरम्मत आदि कर रही थी। आपस मे बातें भी हो रही थीं। कभी किसी पारिवारिक समस्या के बारे में तो कभी किसी की निन्दा-चुगली होने लगती थी। लाजो का मन एक विचित्र की उधेड़बुन में फंसा हुआ था। वह सोच रही थी कि पक्का कमरा बनवाने के सम्बन्ध में घर में जो योजना बनी है उसका उल्लेख उन औरतों से करे या नहीं। मन तो यही कर रहा था कि वह उन्हें इस योजना का पूरा विवरण सुना दे और देखे कि वे क्या कहती हैं, उनके चेहरों पर कैसे भाव आते हैं। उसे मन मे विश्वास था कि उन्हे यह सुनकर कभी खुशी न होगी बल्कि भीतर जलन ही पैदा होगी। ये पडोसनें ऊपर-ऊपर से प्रसन्नता दर्शाएंगी पर भीतर से जरूर जल-भुन जाएंगी। जी में आता कि उन्हे बता दे। पर वह कह नहीं पा रही थी। मन में कहीं कोई शंका सी पैदा होने लगती। सोचती पता नहीं बात सिरे चढ़ेगी या नहीं। बात कह दी और बाद मे काम शुरू न हुआ तो बिना मतलब हँसी होगी। हो सकता है इस बात को लेकर उसका पति व देवर उससे कुछ बुरा-भला कहे।

लेकिन लाजो के मन की बात अपने आप ही प्रकट हो गयी। वे अभी वहीं बैठी हुई थी कि उसके घर के सामने ईंटों से लदे पांच गदहे आ पहुँचे। गदहों के साथ आए बिद्दू कुम्हार ने उससे पूछा कि ईंटें कहां रखने हैं। वह तुरन्त

उठ गयी और विद्दू से कहा कि आंगन के बाहर वाली मुंडेर के साथ रखवा दे। विद्दू ने बड़ी फुर्ती से ईंटें टिकानी शुरू कर दी। दोनों पड़ोसने ईंटें देखकर चकित सी रह गयी। फिर सस्सी ने जिज्ञासाभरी नज़रों से लाजो से पूछा—ये ईंटे किस काम के लिये मँगवाई हैं। क्या कमरों के फर्श पक्के करवाओगी ?

अब बड़ी प्रतीक्षा के बाद लाजो को अपने मन की बात कहने का अवसर मिला। उसने तनिक मुसकराते हुए कहा—सस्सी बहना ! हरनाम पक्का कमरा बनवा रहा है। इन दो कमरों में गुजर करने में कभी-कभी बड़ी परेशानी होती थी। जब कभी कोई रिश्तेदार या मेहमान आ जाते थे तो जगह की कमी अखरने लगती थी। फिर हरनाम का ब्याह भी एक-आध साल में होना ही है। सोचा बहू के आने से पहले एक और कमरा बनवा लें।

अब तक नन्दी भी उन दोनों के पास पहुँच गयी थी। वह बोली—तो आने वाली बहू के लिये पक्का कमरा बनवा रही हो। ठीक भी है। वह तो डाकखाने के बाबू की दुल्हन होगी। उसे तो रहने के लिये पक्का कमरा ही चाहिये। तुम्हारा क्या है, तुम्हारी जवानी तो इन कच्ची कोठरियों में ही बीत गयी। तुम्हारी देवरानी नयी पक्की बैठक में मौज मारेगी।

—नन्दी ! क्या बात कर रही हो। वह उसमें रहेगी तो हमें खुशी ही होगी। वह भी तो अपनी ही होगी, पक्का कमरा भी अपना ही होगा। उस पर हरनाम या उसकी बीवी का नाम तो लिख नहीं जाएगा। घर के सभी लोग उसमें बैठें-उठेंगे। हरनाम को तो तुम सब लोग जानते ही हो। उसके मन में कभी तेर-मेर की बात नहीं आती। ऐसा ही उसका बड़ा भाई है। गुरु महाराज ने चाहा तो दोनों भाई और उनके बाल-बच्चे पहले की तरह मिलजुल कर ही रहेंगे।

विद्दू मुंडेर के पास ईंटें लगा रहा था। अब तक गली के पाँच-सात बच्चे और अगल-बगल की आठ-दस स्त्रियां भी वहाँ पहुँच चुकी थी। कुछ महिलाएँ अपने घरों के दरवाज़ों पर खड़ी तो कुछ मुंडेरों से सटी ईंटों की ओर देख रही थीं। लगभग हर कोई आश्चर्य-चकित सा लग रहा था। जो भी औरत लाजो के पास पहुँचती यही पूछती कि ईंटें क्यों मँगवाई हैं, इनसे क्या बनवा रहे हो। लाजो तनिक मुसकराकर व गर्व के साथ उन्हें बताती कि उसका देवर पक्का कमरा बनवा रहा है।

लेकिन लाजो को सस्सी व नन्दी का बीच-बीच में बोल पड़ना कहीं अच्छा नहीं लग रहा था। वह जब भी किसी औरत को पक्का कमरा बनवाने के बारे

मे बताती तो कभी सस्सी तो कभी नन्दी बोल उठती कि हरनाम की शादी होगी और वे मियाँ-बीवी नये पक्के कमरे मे रहेंगे, यह कमरा हरनाम ही बनवा रहा है।

हरनाम सिंह डाकघर मे काम कर रहा था कि ठठ्ठी के किसी लडके ने वहाँ पहुँचकर उसे बताया कि उनके घर के सामने बिद्दू कुम्हार ईंटें रख गया है और दूसरा खेप लाने के लिये वह चुन्नी शाह के भट्टे को गया है। खबर सुनकर हरनाम का मन हर्षित हो उठा। उसने सोचा कि वह तुरन्त घर जाकर एक बार ईंटो को देख आए। पर अभी उसे वहाँ का काम निपटाना था। बिना काम खत्म किये उसका वहाँ से हटना मुश्किल था। फिर उसके मस्तिष्क में यह विचार भी आया कि घर जाने से पहले वह गुलजार सिंह मिस्त्री के यहाँ होता आएगा और उसे कल से ही काम शुरू कर देने के लिये कहेगा। अब जब ईंटों की व्यवस्था हो गयी है तो काम को क्यों टाला जाए। कल से ही नीव की खुदाई शुरू करवा दी जाएगी।

उसकी योजना के अनुसार सचमुच अगले दिन से काम शुरू हो गया। दो मजदूरों ने बुनियादें खोदनी शुरू कर दी। अगले दिन दोपहार तक नींवें खुद गयी और अब यह प्रश्न पैदा हुआ कि कमरे की आधारशिला कौन रखे, नींव में पहली ईंट रखने का शुभ कार्य किससे करवाया जाए। हरनाम के दिमाग में दो ही व्यक्ति थे, एक उसका बड़ा भाई सतनाम सिंह और दूसरी उसकी भाभी लाजो। पर सतनाम की इच्छा थी कि पहली ईंट रखने का शुभ काम लाजो ही करे। आखिर यही निश्चय किया गया। लाजो ने धुली हुई नयी धोती पहनी, नया जम्पर पहना और बुनियाद रखने के लिए तैयार हो गयी। पंडित रामदीन को बुलवा लिया गया था। पूजा की सामग्री भी मँगवा ली गयी थी। आधारशिला के अवसर पर ठठ्ठी की आठ-दस औरते व कई बच्चे भी वहाँ पहुँच चुके थे। बच्चों के लिए तो यह समारोह एक प्रकार का तमाशा सा था। वैसे तो हरनाम, सतनाम और उसके बच्चे उस समय बहुत प्रसन्न नजर आ रहे थे पर लाजो के हर्ष व गर्व की कोई सीमा नही थी। वह पुलकित हृदय से एक अनोखी शान से पड़ोस की औरतो को देख रही थी, उनका स्वागत कर रही थी। आज का दिन उसके जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिन था। वह सोच रही थी कि ऐसा शुभ समय बडे भाग्य से ही आदमी को प्राप्त होता है। आज तक कभी उसने कल्पना तक नही की थी कि कभी उनका अपना पक्का कमरा बनेगा और उसकी नीव मे पहली ईंट उसके हाथों से रखी जाएगी। आज ठठ्ठी की स्त्रियो मे शायद उसका रुतबा सबसे ऊँचा हो गया

अगले दिन से ईंटो की जुड़ाई का काम तेज़ी से शुरू हो गया था। ठठ्ठी के बगल वाले छप्पड (पोखर) से चिकना गारा तसलों मे भर-भरकर दो मज़दूर ला रहे थे और गुलज़ारे मिस्त्री के हाथ तेज़ी से चल रहे थे। हर घड़ी दीवार ऊँची उठती जा रही थी।

सप्ताह भर में ही दीवारें तैयार हो गयी थीं। उनमें दरवाजा और दो खिडकियों की चौखटें जड दी गयी थी। छत की कड़ियाँ व पल्ले बनाने का काम बढई कर रहा था। हरनाम को उम्मीद थी कि पंद्रह-बीस दिनों में उनका पक्का कमरा तैयार हो जाएगा। वह मन मे खुशी अनुभव कर रहा था। वह यह भी चाह रहा था कि किसी तरह जस्सी से भेंट हो जाए और वह उसे इस शुभ समाचार से अवगत कराए, पर उससे मुलाकात का कोई मौका नहीं मिल रहा था। पिछले दिनो मे उसने दो-तीन बार दूर से ही देखा था, केवल नज़रें ही मिल पायी थी, चाहते हुए भी वे दोनों आपस में कोई बात नही कर पाए थे। लेकिन अब हरनाम के लिए स्वयं को रोक पाना कठिन हो रहा था। वह उससे जल्दी से जल्दी मिलने के लिए उतावला हो रहा था। वह सोच रहा था कि जिसके लिए वह कमरा बनवा रहा है उसे तो इस बात की जानकारी होनी ही चाहिए। उसने निश्चय कर लिया कि वह जल्दी ही एक-दो दिनों में जस्सी से मिलने की कोशिश करेगा, कहाँ तक वह लोगों की आँखों से डरता रहेगा।

तभी सहसा उसे याद आया कि कल तो संक्रांति का दिन है। कल सुबह गुरुद्वारे मे संगते आएँगी। माह मे दो बार प्रत्येक संक्रान्ति और पूर्णमाशी के दिन प्रातः गुरुद्वारे मे पाठ होता है, प्रवचन होते हैं। गाँव के अनेक पुरुष महिलाएँ व युवक-युवतियाँ वहाँ दर्शनार्थ जाते हैं। ऐसे अवसरों पर वहाँ खूब चहल-पहल रहती है। कितने ही लोगो से मेल-मुलाकात हो जाती है। वह जानता था कि प्रायः शंगारा सिंह का परिवार भी वहाँ पहुँचता है। कल भी ज़रूर उसकी प्रेमिका जस्सी वहाँ पहुँचेगी। वहाँ उसे देखा जा सकता है, उससे बातचीत करने की सम्भावना भी हो सकती है। फिर उसने सोचा कि अब वह सम्भावना के भरोसे नही रहेगा, वह अवश्य ही जस्सी से मिलेगा। कब तक वह उससे बिना मिले बिना बात किये रहेगा। पर मिलने के लिए वह कौन सा उपाय करेगा, कैसे और किस स्थान पर वह एकान्त में उससे अपने मन की बातें कर पाएगा। वह जानता था कि ऐसे मौके पैदा करने के लिए उसका कोई मित्र अथवा जस्सी की कोई सहेली सहायता कर सकती है। लेकिन अभी तक उसने अपनी मनोभावनाएँ अपने किसी मित्र को नही बताई थीं। वह यह भी नहीं जानता था कि जस्सी ने अपने प्रेम का उल्लेख अपनी किसी सहेली से

किया है अथवा नही। पर मिलने के लिए वह बेताव हो रहा था। वह क्या उपाय करे जिससे वह जस्सी से मिल पाए। उसकी समझ में कुछ नही आ रहा था।

सोचते-सोचते उसके मन मे विचार आया कि इस मामले में क्यों न वह अपनी भाभी से सहायता करने को कहे। अगर वह चाहेगी जो ज़रूर कोई न कोई रास्ता खोज लेगी। उसे मालूम था कि उसकी भाभी तथा जस्सी एक दूसरे से अच्छी तरह से परिचित हैं। उसकी भाभी शंगारा सिंह के यहाँ कभी-कभी जाती रहती है। लेकिन वह भाभी से क्या कहे, कैसे कहने की हिम्मत करे, इसके लिए स्वयं को तैयार करने में उसे दिक्कत अनुभव हो रही थी। कही ऐसा न हो कि वह उसके बड़े भाई सतनाम से उसके प्रेम का भेद खोल दे। कहीं उसने ऐसा कर दिया तो भैया उसके बारे मे क्या सोचेगा। लेकिन नही, भाभी ऐसा नहीं करेगी। वह उसे भली प्रकार से समझा देगा, फिलहाल बात को अपने तक रखने के लिए कहेगा। और उसे विश्वास है कि वह मान जाएगी। वह उसकी प्यारी भरजाई है, वह उसकी इच्छा-पूर्ति करवाने में अवश्य ही उसकी सहायता करेगी। हाँ वह उससे अभी इसी समय बात करेगा, वह उसे कल के लिए तैयार कर लेगा।

उसने सोचा कि भैया के घर पहुँचने से पहले ही वह भाभी से बात कर ले। बाद मे शायद मौका न मिल पाए। वह धीरे से उठा और बगल वाले कमरे मे लाजो के पास पहुँच गया। वह चारपाई पर बैठी दाल बीन रही थी। हरनाम को सहसा कमरे में देखकर तनिक चौक गयी। हरनाम उसके पास पड़ी लोहे की कुर्सी पर बैठ कर एक पुरानी पत्रिका के पन्ने पलटने लगा। उसके इस प्रकार कुर्सी पर बैठकर पढने के अंदाज से लाजो समझ गयी कि अवश्य ही कोई खास बात है। उसका प्यारा देवर उससे कोई बात करना चाहता है। लाजो और हरनाम की उम्र में कोई विशेष अन्तर नही था। लाजो मुश्किल से उससे दो-एक साल ही बड़ी होगी। स्वभाव से वह बड़ी खुशदिल और मज़ाकपसन्द महिला थी। अपने देवर से प्रायः मौका पड़ने पर हँसी-मज़ाक भी कर लेती थी। उसने हमेशा उसका भला ही चाहा था। हरनाम भी हमेशा उसे बहुत मानता था, पूरा आदर-मान देता था।

तभी हरनाम ने तनिक संकोच से शरमाते हुए कहा—भरजाई! तुमसे एक बहुत ज़रूरी बात करना है। पर वादा करो कि इसका ज़िक्र भैया से नही करोगी। भैया से ही नही बल्कि पास-पडोस में भी किसी औरत से इस बारे मे बात नही करोगी।

—हां-हां नही करूंगी। पर वात तो बताओ। कौन सी ऐसी बात है जो तुम अपने भैया से और दूसरों से छुपाना चाहते हो?

—हां भरजाई, वह बात अभी भैया से छुपानी ही होगी। हो सकता है बाद मे उसे अपने आप ही पता चल जाए। भरजाई, कल संक्राति है न। कल सुबह गुरुद्वारे तो जाओगी ही?

—वहाँ तो मैं जाती ही रहती हूँ। तुम मतलब की बात कहं, क्या कहना चाहते हो। तुम्हारी बात का गुरुद्वारे से क्या मतलब है?

—भरजाई! तुम जस्सी को तो जानती ही हो······

—जस्सी? सरदार शंगारा सिंह की लड़की?

—हां-हां, शंगारा सिंह की ही लड़की। बस उसी से मिलकर तुम्हें मेरा काम करवाना है। बल्कि हम दोनों की मदद करती है।

लाजो ने आँखों ही आँखों में शरारतभरी मुसकान लिए पूछा—बोलो जे किस तरह की मदद चाहते हो। पर यह बताओ तुम जस्सी को कैसे जानते हो, मेरा कहने का मतलब यह है कि क्या तुम दोनों एक दूसरे से मिलते रहते हो। क्या तुम दोनों एक दूसरे से प्रेम-प्रेम तो नहीं करते?

—हाँ भरजाई, कुछ ऐसे ही चक्कर में फँसा हूँ। दरअसल हम दोनों एक दूसरे को चाहने लगे हैं। उस दिन जब कमरा बनवाने की बातें करते समय बिन्दरे ने कहा था कि कितना अच्छा लगेगा जब उसकी दोनों भाभियाँ एक साथ उस कमरे में बैठकर बातें करेंगी, साथ-साथ बैठकर चरखा कातेंगी तो उसकी बात सुनकर तुम कितनी खुश हुई थी। फिर तुमने कहा था कि वह कौन भाग्यशाली लड़की होगी जो इस घर में बहू बनकर आएगी। उसी समय मेरे मन में आया था कि तुम्हें जस्सी का नाम बता दूं। लेकिन तुमसे डर रहा था, मन की बात कह नहीं पाया था।

—तो अब समझी कि यह कमरा अपनी जस्सी के लिए ही बनवा रहे हो। खैर बड़ी अच्छी बात है। मुझे तो बहुत खुशी है कि चलो इसी बहाने कमरा तो बन रहा है। इससे ठठ्ठी व गाँव में हमारी कुछ शान तो हो ही जाएगी।

—शान तो होगी ही भरजाई। पर तुम जो समझ रही हो वैसी बात नहीं है। कमरे का जस्सी से कोई सम्बन्ध नहीं है। विश्वास मानो कमरा बनवाने की योजना बनाते समय जस्सी कहीं मेरे दिमाग में नहीं थी। कमरा तो हम सबका होगा, तुम्हारा होगा भैया का होगा, मेरा होगा।

—अच्छा यह बताओ कि मुझे गुरुद्वारे मे क्या करना होगा। क्या जस्सी से या उसकी माँ को कुछ कहना है?

—अरी भरजाई, उसकी माँ से कोई बात न कर बैठना वरना सब गुड़-गोबर हो जाएगा। अभी कुछ समय तक बात जस्सी तक ही रहेगी। मैं यह चाहता हूँ कि तुम वहाँ पहुँचकर किसी तरह जस्सी से मिलो। और फिर किसी बहाने से उसे बाहर लाकर कही एकान्त से मुझसे मुलाकात करवाओ। तुम पर मुझे भरोसा है। अगर तुम कोशिश करोगी तो अवश्य ही हम दोनों को मिलने का मौका मिल जाएगा।

कुछ क्षण सोचने के बाद लाजो ने कहा—काम तो जरा टेढा लग रहा है। फिर भी मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूँगी और भगवान ने चाहा तो तुम दोनों की मनोकामना पूरी होगी। पर यह बताओ कि काम पक्का हो जाने पर यानी मेरा मतलब है तुम दोनो का ब्याह हो जाने पर मुझे क्या इनाम मिलेगा?

—वाह भरजाई, इनाम की बात करती हो। अगर तुम्हारी कोशिश से हम दोनों की शादी हो गयी तो विश्वास मानों हम दोनों जिन्दगी भर तुम्हारे चरण धो-धोकर पीते रहेगे। वैसे तो मैं अब भी तुम्हारा ताबेदार हूँ लेकिन तब तो हम दोनों इस घर मे तुम्हारे गुलाम बनकर रहेंगे।

—जानती हूँ जैसे गुलाम बनकर रहोगे। और फिर मैं तुम्हें गुलाम बनाकर क्यों रखूँगी। इस घर में वह बहू बनकर आएगी, तुम दोनों खुश रहोगे सुखो रहोगे तो तुम दोनों को सुखी देखकर मैं भी खुश रहूँगी।

—भरजाई, तुम सचमुच कितनी अच्छी हो। भगवान करे तुम जैसी भरजाई हर किसी को मिले। मालूम नही मैंने कौन-सा पुण्य कभी किया होगा जो तुम भरजाई रूप मे मुझे मिली।

—अच्छा-अच्छा अब चुप रहो। ज्यादा चने के पौधे पर न चढ़ाओ। खुशामद करने में बड़े चतुर हो। खैर मुझ पर भरोसा रखो, तुम्हारा काम बन जाएगा। और हाँ एक बात का ध्यान रखना। तुम दोनों मे आगे जो बातें होती रहेंगी, मेरा मतलब है ज्यों-ज्यों बात आगे बढती जाएगी त्यों-त्यों उसका हाल मुझे बताते रहना। और कभी कही कोई अड़चन पैदा होगी तो मैं अपनी तरफ से उसे दूर करने की भी कोशिश करूँगी।

—ठीक है भरजाई, कल ही तुम्हारी परीक्षा होगी। देखूंगा तुम उसमें कहाँ तक सफलता पा सकोगी।

और लाजो से इतनी बातें करके हरनाम अपने कमरे मे आ गया। वह उस समय बहुत प्रसन्न नजर आ रहा था। कमरे में आकर चारपाई पर लेटते हुए उसने स्वयं को कहा—वाह बेटा हरनाम सिंह! अब समझो कि तुम्हारा

काम बन गया। वह समय अब अधिक दूर नहीं जब तुम्हें और तुम्हारी जस्सी को भरजाई के प्यार तथा उसकी होशियारी का लोहा मानना पड़ेगा। और अगर गुरु महाराज की कृपा हुई तो वह तुम दोनों को जीवन-सूत्र में बांधकर ही चैन लेगी।

• •

सत्रह

रात में सतनाम और उसकी पत्नी लाजो अपने कमरे में गहरी नींद में सो रहे थे। किन्तु हरनाम सिंह अपने बिस्तर पर करवटें बदल रहा था। अगली सुबह को जस्सी से मिलने की बात को याद कर-करके वह मन ही मन प्रसन्न हो रहा था। उसे ऐसी अनुभूति हो रही थी जैसे उसके भीतर नशीले जल की कोई सरिता धीरे-धीरे मस्ती में प्रवाहित हो रही हो। जस्सी के व्यक्तित्व के अनेक रूप अनेक कोणों से उसके मानस-पटल पर आ-जा रहे थे। उसे वह मूसलाधार वर्षा से सराबोर होती घड़ी याद आ रही थी जब जस्सी उसके पास डाकघर मनीआर्डर करवाने आयी थी। उस दिन से पहले क्या कभी उसने कल्पना की थी कि वह चुपचाप एक तूफान की भाँति आकर उसके मन-प्राणों पर छा जाएगी। तब उसमें वह साहस कहाँ से आ गया था जिससे वशीभूत होकर उसने जस्सी को अपनी बाहों में भर लिया था। और जवाब में जस्सी ने भी कोई आनाकानी नहीं की थी, उसने स्वयं को उसे समर्पित कर दिया था। आज हरनाम को उसकी उस दिन की भाव-भंगिमाएं याद आ रही थी, उस समय उससे मिले स्पर्श-सुख को याद करके आज पुनः उसे अपने शरीर में मीठी गुदगुदी अनुभव हो रही थी। वह यह भी सोच रहा था कि जिस प्रकार वह इस समय जस्सी की याद में व्याकुल हो रहा है क्या उसकी जस्सी भी इस समय उसकी याद में खोई होगी, क्या उसकी आँखों से भी निद्रा गायब हो चुकी होगी। या वह इस समय नींद के सुखद पाश में आराम कर रही होगी।

फिर वह सोचने लगा कि कल उससे क्या-क्या बातें करेगा। क्या उसे ऐसा एकान्त मिल जाएगा, जहाँ वह उससे दिल खोलकर बातें कर सकेगा, जहाँ वह उसे अपने पास बैठाकर अपने हृदय में मचल रहे जज़बात का उसे एहसास करवा पाएगा, जहाँ वह उसके सुकोमल गोरे हाथों को अपने हाथों में

लेकर प्यार से सहला पाएगा, गीले कोयले जैसी काली जुल्फों से खेल पाएगा। जस्सी के मोहक व्यक्तित्व की कल्पना कर-करके उसके दिमाग पर ऐसा तेज नशा छाता जा रहा था जो उसे सोने नही दे रहा था। बहुत रात गये उसकी आँख लग पायी थी।

अभी तारों की छाँव पूरी तरह सिमटी नही थी कि हरनाम की आँख खुल गयी। नित्य की तरह सतनाम तो हल चलाने खेतों को चला गया था। लाजो और उसके दोनों बच्चे गहरी निद्रा मे सो रहे थे। हरनाम के मन मे विचार आया कि हो सकता है भरजाई भूल गयी हो कि आज संक्रान्ति है और उसे गुरुद्वारे जाना है। ऐसे पर्वों पर तो प्रायः लोग स्नान आदि करके सूरज निकलने से पहले ही गुरुद्वारे पहुँच जाते हैं। देर मे पहुँचना ठीक न होगा। वह भाभी के पास पहुँचा और धीरे से उसे हिलाते हुए कहा— भरजाई, कब तक सोती रहोगी, गुरुद्वारे भी तो जाना है, उठो जल्दी से तैयार हो जाओ। और फिर उसने दोनों बच्चो को भी जगा दिया। दोनों बच्चे कुन्ती और हरदीन तो गत रात मे ही बहुत खुश हुए थे जब उन्हे मालूम हुआ था कि कल सुबह वे गुरुद्वारे जायेंगे। और वहाँ गुरुद्वारे के खुले आँगन और फुलवारी में वे गाँव के अन्य कई बच्चों को खेलते देखेंगे, उनसे वे भी खेलेंगे। उनकी प्रसन्नता का एक और विशेष कारण यह भी था कि अरदास की समाप्ति पर उन्हे प्रसाद रूप मे गर्मागर्म हलुआ खाने को मिलेगा।

हरनाम के आज जल्दी जाग जाने पर तथा उसे एकदम तैयार देखकर लाजो समझ गयी कि आज उसने इस प्रकार की फुर्ती क्यो की है। बस उसने उसकी ओर हल्के से मुसकराकर और तनिक आँखें मटका कर देखा पर मुँह से कुछ नही बोली। वह भी जल्दी-जल्दी गुरुद्वारे जाने की तैयारी करने लगी। लेकिन भाभी के मात्र देखने भर के उस अंदाज़ ने उसे कह दिया था कि वह बखूबी जानती है कि हरनाम आज इतनी जल्दी क्यो जाग उठा है, क्यो तैयार हो गया है, और उसने उसे व बच्चों को जगाने मे क्यों इतनी रुचि दर्शाई है।

लाजो अभी तैयार हो रही थी कि हरनाम ने उससे कहा—भरजाई! तुमको तैयार होने में अभी कुछ देर लगेगी, अभी बच्चो को भी तैयार करोगी। ऐसा है कि मैं गुरुद्वारे जाता हूँ। तुम तैयार होकर वहाँ पहुँच जाना। तुम्हारे साथ तो पड़ोस की दो-चार औरतें भी रहेंगी। मेरा तुम लोगों के साथ जाना मुझे ज़रा अटपटा सा लगेगा। मैं चलता हूँ। तुम जल्दी वहाँ पहुँचने की कोशिश करना। और इतना कहकर वह बाहर गली में आ गया।

हरनाम सिंह के गुरुद्वारे पहुँचने से पहले ही अनेक लोग वहाँ आ चुके थे और अनेक आ रहे थे। उसने निश्चित स्थान पर जूते खोलकर वहाँ नियुक्त सेवक को दिये। फिर हाथ वाले नल से हाथ-पैर धोकर हाल के भीतर आया। गुरु ग्रन्थ साहब के सामने माथा टेककर अपने युवा मित्रों से आँख बचाकर जरा अलग से बैठ गया। हाल में दाहिनी ओर पुरुष और बाईं ओर महिलाएँ बैठी थी। उसने महिलाओं वाले भाग की ओर सरसरी नजर से देखा। पर उसे जस्सी अथवा उसकी माँ कहीं दिखाई न पड़ी। वह समझ गया कि अभी वे नही पहुँची। अब आती ही होंगी। वह उत्सुकता से जस्सी के पहुँचने का इन्तजार करने लगा। रह-रह कर उसकी निगाह हाल के प्रवेश-द्वार की ओर जा रही थी।

कोई पन्द्रह-बीस मिनट के बाद उसे देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि उसकी भाभी जस्सी से बातें करती हुई हाल में प्रवेश कर रही थी। उन दोनों के पीछे जस्सी की माँ और दो-एक और औरतें थी। वह हैरान था कि भाभी को जस्सी कहा मिल गयी। क्या भाभी उनके घर से होकर उन माँ-बेटी को साथ लेकर आयी है। हो सकता है कि वे संयोगवश ही गुरुद्वारे पहुँचकर आपस मे मिल गयी हो। लेकिन यह सब जैसे भी हुआ हो इससे अब उसे कोई विशेष सरोकार नही था। उसे खुशी तो इस बात की थी कि जस्सी और भाभी साथ-साथ हैं। और उसे यकीन है कि मौका पाकर भाभी अवश्य ही जस्सी से उसके मन की बात कहेंगी, उससे मिलकर कोई योजना बनाएगी।

अपने स्थान से हरनाम ने देखा कि उससे आठ-दस पंक्ति आगे सरदार जोधा सिंह व शंगारा सिंह साथ-साथ बैठे हुए थे। उन दोनों से थोड़ा पीछे पंडित दीवान चन्द भी थोड़ा सिर झुकाए बैठा था। वह मन से चाह रहा था कि कहीं शेर सिंह से उसकी नजर न मिल पाए। उस दिन बिन्दरे के मामले को लेकर उससे जो कहा सुनी हो गयी थी उसका प्रभाव वह अपने ऊपर महसूस कर रहा था। किन्तु कुछ ही देर बाद अच्छी तरह इधर-उधर देखने पर उसे मालूम हो गया था कि शेर सिंह वहाँ नहीं आया था। शंगारा सिंह पर कई बार उसकी नजर जा चुकी थी। उसे यह कल्पना करके अपने भीतर कहीं भय की अनुभूति होने लगती थी कि अगर कहीं शंगारा सिंह को उसके व जस्सी के परस्पर सम्बन्धों के बारे मे पता चल गया तो क्या होगा। वह सोचता कि बेशक शंगारा सिंह अपने दोस्त जोधा सिंह की तरह कमीना व बदमाश नही है लेकिन किसी सीमा तक ऊँच-नीच व जात-पात को तो मानता ही है। उसके व जस्सी के सम्बन्धों की बात किसी न किसी दिन तो उन

दोनों मिलों तक पहुँचेगी ही। जोधा सिंह के बेटों को भी मालूम हो जाएगा। तब वे लोग क्या रुख अपनाएँगे। उसे लग रहा था कि अगर यही अपनी बेटी के दबाव के सामने शंगारा सिंह झुकने को तैयार भी होने लगेगा तो जोधा व उसके बेटे उसके इरादे का ज़रूर विरोध करेंगे। मालूम नहीं वे लोग बात को कहाँ से कहाँ तक पहुँचा देंगे, कहीं मेरे साथ शंगारा सिंह का लड़ाई-झगड़ा न करवा दें। खैर जो होगा देखा जायगा।

ग्रन्थ साहब का पाठ चल रहा था। श्रोतागण आदरभाव से उसे श्रवण कर रहे थे। तभी उसने देखा कि उसकी भाभी और जस्सी धीरे से उठकर बाहर की ओर जा रही हैं। उन दोनों के वहाँ से बाहर जाने का आभास जस्सी की माँ को नहीं हो पाया था। वह उन दोनों से कुछ आगे अपनी ही उम्र की औरतों में बैठी हुई पाठ सुन रही थी। उन दोनों के बाहर चले जाने के बाद वह भी धीरे से उठा और बाहर आ गया।

बाहर आकर उसने इधर-उधर देखा पर वे दोनों उसे कहीं दिखाई न पड़ी। फिर वह पीछे फुलवारी में गया किन्तु वे वहाँ भी नहीं थीं। फुलवारी मे कोई स्त्री-पुरुष नहीं था। केवल कुछ बच्चे आपस में खेल रहे थे बातें कर रहे थे। कुछ देर तक उन्हे खोजने के बाद जब वह आँगन से होकर पुनः हाल की ओर जाने लगा तो सहसा गुरुद्वारे की रसोई मे वे दोनों उसे नजर आयी। वह भी निगाह बचाकर वहाँ पहुँच गया। जस्सी ने जैसे ही उसे देखा वह तनिक लजा गयी। उसने निगाह उठा कर हरनाम की ओर देखा और धीरे से मुस्कराकर दोनों हाथ जोड़कर सत सिरी अकाल कहा। हरनाम ने भी आँखों ही आखों में मुस्कराकर उसके अभिवादन का उत्तर दिया। तभी लाजो ने उससे कहा—हरनाम, तुम भीतर जाकर बैठो। मैंने इससे बात कर ली है। यहाँ नहीं, कहीं और तुम दोनो की मुलाकात हो जाएगी। आज शाम को ही मैं इसे अपने घर पर आने के लिये कह रही हूँ। तुम अभी अन्दर जाकर बैठो। तुम्हारा यहाँ हम लोगों के पास रहना ठीक नही है। भाभी की बात सुनकर हरनाम एक बार फिर हाल में आकर बैठ गया।

करीब दस बजे अर्दास समाप्त हुई। उसके बाद प्रसाद-वितरण हुआ और लोग अपने-अपने घरों को लौटने लगे। हरनाम सिंह भी जब हाल से बाहर आ रहा था कि सरदार जोधा सिंह व शंगारा सिंह से उसकी नजरें मिली। उसने उन दोनो को सत सिरी अकाल कहा। जोधा सिंह ने ज़रा सिर झुकाकर सत सिरी अकाल का उत्तर दिया। पर उसने उससे कोई बात नहीं की।

परन्तु शंगारा सिंह ने रुककर उससे कहा—और कहो हरनाम सिंह, क्या हाल-चाल है ? सुना है पक्का कमरा बनवा रहे हो। चलो बड़ा अच्छा है, बड़ी खुशी की बात है।

उत्तर मे हरनाम ने कहा—यह सब आप बुजुर्गों का प्रताप है। आपके आर्शीवाद से थोड़ी हिम्मत की है। देखें कब तक काम पूरा होता है।

—बेटा, जब काम शुरू हुआ है तो वह पूरा भी हो जाएगा। खैर बड़ा अच्छा किये हो। अब तुम गाँव के डाकघर के बाबू हो, सरकारी मुलाजिम हो, पढ़े-लिखे हो। तुम्हारे लिये पक्का मकान तो होना ही चाहिये। हरनाम सिंह, हमें तो ज्यादा इस बात की खुशी है कि तुम्हारी नौकरी अपने ही गाँव मे लगी है। अपने घर में अपने भाई के साथ रहोगे। इतना कहकर वह जोधा सिंह के साथ आगे बढ़ गया। सम्भव था वह हरनाम से दो-एक मिनट और बाते करता। पर हरनाम ने जोधा सिंह की हरकत देख ली थी। जोधा सिंह ने शंगारासिंह को बाँह से पकड़कर आगे-बढ़ने के लिये मजबूर किया था। किस भाव से वशीभूत होकर जोधा सिंह ने ऐसा किया था इसका आभास उसे हो गया था। वह समझ गया था कि शेर सिंह ने उस दिन हुई घटना का अपने बाप से जरूर जिक्र किया होगा।

जब वह जूता पहनने को था कि किसी ने उसकी पीठ पर हाथ रखा। उसने मुड़कर देखा तो मोहर सिंह खड़ा था। मोहर के साथ बलदेव भी था। दोनो ने उससे हाथ मिलाया और फिर वे तीनों बाते करते हुए गाँव की ओर जाने लगे। तीनों आपस में परिचित ही नही थे बल्कि उनमें मित्रता थी। कुछ वर्ष पहले तक वे तीनों राणीपुर के मिडिल स्कूल मे साथ-साथ पढते थे। मोहर सिंह साम्यवादी विचारधारा को मानता था। हर प्रकार की समानता का वह पक्षधर था। उसके अपने ही गाँव का एक हरिजन सिख सरकारी मुलाजिम होकर गाँव मे नियुक्त हुआ था, यह उसके लिये हर्ष की बात थी। रास्ते मे बातचीत करते हुए उसने हरनाम से कहा—बाबू साहब, तुम्हारी यहाँ डाकघर में नौकरी लग जाने की मुझे बहुत खुशी है।

'बाबू साहब' का सम्बोधन सुनकर हरनाम थोडा चौंका। उसने कहा—भाई मोहर सिंह ! तुम्हारा मुझे यह बाबू साहब कहना बड़ा अटपटा सा लगा है। यह ठीक है कि मैं डाकखाने का बाबू हूँ। पर तुम दोनों के लिये तो वही नामा ही हूँ। तुम दोनों मुझे नामा कहकर ही बुलाया करो। हरनाम भी नहीं केवल नामा ही। अपने दोस्तों से अपना आधा नाम सुनकर मन को अच्छा लगता है।

मोहर सिंह ने थोड़ा हँसकर सिर हिलाकर कहा—भाई नामे, वह तो मैंने वैसे ही मजाक में कहा है। तुम तो हम लोगों के लिये वही स्कूल वाले नामे ही हो। भई कितना अच्छा हुआ है जो तुम्हारी और बलदेव दोनों की नौकरी अपने ही गाँव में लगी है। गाँव में तुम जैसे शिक्षित व जागरूक पाँच-सात लोग रहेंगे तो गाँव वालों का भी कुछ कल्याण होगा।

तभी बलदेव बोला—मोहर ! तुम ठीक कह रहे हो। नामे के यहाँ आ जाने से मैं भी बहुत खुश हूँ। अब यहाँ दो-चार पढ़े-लिखे लोगों की संगति तो मिलती रहेगी। लेकिन जहाँ तक गाँव वालों के कल्याण की बात है तो भाई इस काम के लिये तुम कहीं अधिक माहिर हो। मैं और हरनाम लोगों से ज्यादा कहाँ मिल पाते हैं। मुझे स्कूल का और इसे डाकखाने का काम देखना होता है। पर तुम्हारे पास तो समय ही समय है। तुम तो लोगों में खूब बैठक-बाजी कर लेते हो। तुम्हारी बातों का तुम्हारे विचारों का भी गाँव वालों पर प्रभाव पड़ता है। फिर तुम नेता आदमी हो। जैसा तुम्हारा असर पड सकता है वैसा हम लोगों का कहाँ पड़ेगा। आज तो हर कहीं नेताओं का ही बोल-बाला है। लोग उनकी बातें ही सुनते हैं।

—नेता कह कर क्यों मुझे गाली दे रहे हो। भई, हम नेता नहीं हम तो जनता के सेवक हैं।

—नेता लोग भी ऐसे ही बोलते हैं। वे भी अपने आपको जनता का सेवक ही कहते हैं।

बलदेव की बात सुनकर हरनाम और मोहर सिंह थोड़ा हँस पड़े। बलदेव भी तनिक मुसकरा दिया। तभी मोहर बोला—भाई, तुम जो चाहो कह लो। आखिर तुम अध्यापक ठहरे। तुम्हारी बातों को काटने की मुझमें कहाँ क्षमता है।

इसी प्रकार गपशप करते वे तीनों गाँव पहुँच गये। ठठ्ठी के पास पहुँचकर जैसे ही हरनाम अपने घर की ओर मुड़ने को हुआ तो सहसा मोहर सिंह ने उसे रोकते हुए कहा—नामे ! सुना है तुम अपने मकान में एक पक्का कमरा बनवा रहे हो।

हरनाम के मुख पर आश्चर्य व हर्ष की लहर दौड़ गयी। उसने मोहर ने कहा—हाँ भई, एक छोटा सा कमरा बनवा रहा हूँ। पर यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि कमरा बनने की यह साधारण सी बात पूरे गाँव में कितनी तेजी से फैल गयी है। अरे भाई, गाँव में लोगों के इतने बड़े-बड़े मकान हैं, उनमें कई तो दो मंजिले हैं। पर उनकी चर्चा कोई नहीं करता।

—हाँ यही तो मुझे हैरानी है। दरअसल बात यह है कि तुम्हारे कमरा बनवाने से कई लोग कुछ दुखी नजर आ रहे हैं। भला पूछो कि उन सालों के पेट में क्यो मरोड़ उठ रहे हैं। असल में ऐसे लोगो के लिये हैरानी की सबसे बड़ी बात यह है कि हरिजनो की बस्ती ठठ्ठी मे पक्का कमरा कैसे बन रहा है। अभी परसो ही हमारा भाई शेर सिंह चौपाल मे बैठा बडे जोर से तुम्हारे इस कमरे की चर्चा कर रहा था। उसकी बात को लेकर मेरी उससे तनिक बहस भी हो गयी। अब भला कोई उससे पूछे कि तुम्हारे कमरा बनवाने से उसको क्यो परेशानी हो रही है। उसके पिता यानी मेरे ताया जी का इतना बड़ा दो मंजिला मकान है। उस मकान को देखकर तो कोई जनता-भुनता नही। कोई नही पूछता कि इन लोगों के पास इतना धन कहाँ से आया था जो इतना बड़ा मकान खड़ा करवा लिया। गाँव में ये पूँजीपति कैसे बन गये?

मोहर की बात का समर्थन करते हुए बलदेव ने कहा—दरअसल लोगों को इस बात का आश्चर्य व किसी सीमा तक दुख नही है कि हरनाम सिंह कमरा क्यों बनवा रहा है बल्कि वे परेशान इस लिये हैं कि एक हरिजन इस योग्य क्यों हो गया कि वह उनके मुकाबले पर पक्का कमरा बनवा ले। मैंने तो सुना है कि शेर सिंह व उसके दो-चार साथी चौपाल मे यही कह रहे थे कि इन नीच हरिजनो के दिमाग आसमान पर चढ़ते जा रहे हैं, कांग्रेस के राज में ये चमार और डोम लोग अपने आपको शाही खानदान के सदस्य समझने लगे हैं। साले भूल गये कि अभी कुछ वर्ष पहले तक ये लोग हमारी दी हुई रोटियों पर पलते थे, धूल की तरह हमारे पाँव के नीचे रहते थे। अब सरकार की ओर से सरक्षण पाकर ये हम उच्च जाति के लोगो की खोपड़ी पर सवार होने के फेर में हैं। पर ये भूल जाते हैं कि अब भी गाँव की बाग-डोर हम लोगों के हाथों में ही है। हमारे पास अब भी इतनी शक्ति है कि जब चाहें इन्हें बर्बाद कर दें, मच्छर की तरह इन नीचो को मसल कर रख दें। मोहर भाई, ये लोग ईर्ष्या की ज्वाला मे जल रहे हैं। मालूम नही ये लोग कब अपने पूर्वजों की भूलों को समझेंगे, कब वक्त की नजाकत को पहचानेंगे।

मोहर सिंह को बलदेव की बात अच्छी लगी। उसने उसके उत्तर मे कहा—समय बडा बलवान होता है। बदलते हालात आदमी को एहसास करवा देते हैं। शहरो मे स्थितियाँ बहुत तेजी से बदल रही हैं। वहाँ अब पहले की तरह हरिजनो पर अत्याचार नहीं हो सकते। एक तो वहाँ लोग पढ-लिख कर जागरूक होते जा रहे हैं, समाज की एकता व समानता के महत्व को समझने लगे हैं और दूसरे शहरो मे रह रहे हरिजन भाई भी अब पहले की

अपेक्षा काफी सचेत होते जा रहे हैं। उनमें भी शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो रहा है और इस तरह वे अपने अधिकारों को समझने लगे है। और सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह आया है कि हरिजनों मे एकता की भावना उत्पन्न हो रही है। अब अवसर पड़ने पर वे संगठित रूप मे अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस करने लगे हैं। और मैं समझता हूँ कि ये बडे अच्छे लक्षण हैं। लेकिन गाँवों में ऐसा परिवर्तन बहुत कम आ रहा है। ऐसे मे हम पढे-लिखे लोगों का कर्तव्य हो जाता है कि हम लोगों को समझाएँ, उन्हें सामाजिक एकता के महत्व से अवगत कराएँ। और सबसे खास बात यह है कि जहाँ कही भी हरिजन भाइयों पर अत्याचार हो अन्याय हो उसका जमकर विरोध करे। अत्याचार करने के लिए उठे हाथों को रोक लें और कभी जरूरत पड़े तो उन रक्तसने हाथो को तोड़ने के लिए भी तैयार हो जांय।

मोहर सिंह का यह भाषण हरनाम के मन को कहीं पुलकित कर गया। उसके ऐसे ही विचारों के लिए वह सदैव उसका प्रशसक रहा है। उसने उसे कहा—मोहर भाई, सच्ची बात कहने की तुममें जो हिम्मत है उसकी सराहना करनी पड़ती है। काश जैसे तुम्हारे विचार हैं वैसे ही गाँव के अन्य नौजवानों के हो जाँए। पुरानी पीढ़ी तो अब धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। आगे जो परिवर्तन लाना है वह तुम जैसे युवको को ही लाना है। खैर भगवान ने चाहा तो यह परिवर्तन आकर ही रहेगा। भई, मुझे तो तुम जैसे मित्रों पर गर्व है। अच्छा अब चलता हूँ। इस विषय पर फिर भी बाते होती रहेगी। और इतना कहकर वह अपनी गली की ओर मुड़ गया। बलदेव और मोहर आगे बढ़ गये।

जस्सी की एक सहेली थी कमला। कमला उसके पडोस में ही रहती थी। बचपन से ही दोनो में खूब पटती थी। शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो जब वे दोनों एक दूसरे से एक-दो बार मिल नही लेती थी। कभी जस्सी उसके यहाँ चली जाती तो कभी कमला जस्सी के घर पहुँच जाती। जस्सी को कमला पर पूरा विश्वास था और उसने हरनाम से अपने सम्बन्धो के बारे मे उसे बता रखा था। वह प्रायः अपने मन की भावनाएँ उससे व्यक्त करती रहती थी। कमला भी अपनी सहेली के इस प्रेम-सम्बन्ध में अपनी रुचि दर्शाती रहती थी और समय-समय जस्सी को अपनी राय भी देती थी। जस्सी को उस पर भरोसा था कि वह उसकी बात . और मे उल्लेख नहीं करेगी।

लाजो से मिलने के बाद जस्सी ने कमला से बात की थी। और कमला उसके साथ लाजो के यहाँ जाने को तैयार हो गयी थी। जैसा गाँवों में होता है कि सुबह-शाम दो-चार स्त्रियाँ मिलकर पास के खेतों में निवृत्त होने के लिए जाती हैं। जस्सी और कमला ने भी इसी बहाने लाजो के यहाँ जाने की योजना बनाई। सायं सूर्यास्त के उपरान्त वे दोनों ठठ्ठी में लाजो के यहाँ पहुँच गयी। उस समय ठठ्ठी की अधिकांश महिलाएँ अपने-अपने घरों में भोजन आदि बनाने में लगी हुई थी। किसी ने उन दोनों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था। और अगर किसी ने उन्हें देखा भी होगा तो उन्हें उसमें कोई खास बात नज़र न आयी होगी। औरतें एक दूसरे के यहाँ आती-जाती ही रहती हैं।

लाजो को विश्वास था कि जस्सी अवश्य ही आएगी। अब उसे कमला के साथ देखकर वह खुश हो उठी। उसने दोनों सहेलियों का स्वागत किया और खाट पर बैठने के लिए कहा। लाजो ने हरनाम से भी कह रखा था। वह भी जस्सी के इन्तजार में घर पर ही था। उसने भी दोनों सहेलियों को घर में प्रवेश करते देख लिया था। वह भी मन ही मन हर्षित हो रहा था। पर उसे कुछ ऐसा भी लग रहा था कि जस्सी के आ जाने पर उसके हृदय की गति तनिक तेज़ हो गयी है। वह कुछ अजीब सी घबराहट महसूस कर रहा था।

दो-एक मिनट के बाद लाजो दोनों सहेलियों को साथ लेकर हरनाम के कमरे में पहुँची। उसने हरनाम से कहा—देखा मैंने अपना वादा पूरा कर दिया। तुम्हारी जस्सी अब तुम्हारे सामने है। जो बातें इससे करना चाहते हो करो। पर इतना याद रखना कि इन दोनों को जल्दी घर लौटना है। ये अधिक देर तक यहाँ नहीं रह पाएँगी।

जस्सी ने पहुँचते ही लाजो को बता दिया था कि उसकी सहेली कमला उसकी हमराज है और उसे सब बातें मालूम हैं। तभी लाजो ने कमला से कहा—कमला, आओ हम लोग दूसरे कमरे में बैठकर बातें करें। यहाँ इन दोनों को थोड़ी देर बैठने दो। और इतना कहकर वह कमला की बाँह पकड़कर उसे अपने कमरे में ले गयी।

इस तरह का एकान्त हरनाम और जस्सी को पहले कभी नहीं मिला था। हरनाम ने बड़े प्यार से जस्सी का हाथ पकड़कर उसे अपने साथ चारपाई पर बैठा दिया। फिर उसकी सुरमई-शरमाती आँखों में झाँकते हुए बोला—देखा, हमारी भरजाई कितनी होशियार है। उसके दिल में हम दोनों के लिए

कितना प्यार है। मैंने उससे थोड़ी सी बात की थी और वह तुरन्त हम दोनों की मदद करने के लिए तैयार हो गयी। जस्सी ! वह तो दिल से चाहती है कि हम दोनों भविष्य में भी इसी तरह मिलते रहें।

—हाँ सुबह जब गुरुद्वारे में उसने मेरे साथ बात की थी तो मुझे भी सुनकर आश्चर्य व खुशी हुई थी। उसने बड़े प्यार से अपनेपन की भावना से मुझसे बातें की थी। सचमुच वह मुझे बड़ी अच्छी लगने लगी है।

—अच्छी क्यों नहीं लगेगी, आखिर वह मेरी भरजाई है। हमेशा मेरा हित चाहती है। जस्सी, जैसे ही मैंने उसे तुम्हारे बारे मे बताया वह सुनकर गद्गद् हो उठी। वह तुम्हारी बहुत प्रशंसा कर रही थी। वह तो दिल से चाहती है कि हम दोनो हमेशा के लिये एक दूसरे के हो जाएँ। विश्वास मानो वह तुम्हे अपनी देवरानी बनाकर बहुत खुश होगी।

हरनाम के ये शब्द सुनकर जस्सी का मुख मारे लाज के लाल हो गया। उसने चंचल नजरों से उसकी ओर देखा और तनिक मुसकराकर कुछ सिमट सी गयी। उसकी यह भंगिमा देखकर हरनाम स्वयं पर काबू न रख पाया। उसने धीरे से थोड़ा आगे बढ़कर उसे अपने सीने से लगा लिया। फिर उसके कोमल मुख को अपने हाथों में लेकर थोड़ा ऊपर उठाया। दोनो की परस्पर नज़रें मिली। फिर भावनाओं से वशीभूत होकर हरनाम ने उसके गुलाबी कपोलों पर उसके चिकने-कपकपाते सुन्दर होंठों पर अपने होठो को रख दिया। जस्सी सिमटती हुई उसके पाश मे कसती जा रही थी। हरनाम को अनुभव हो रहा था कि जिस प्रकार उसके हृदय की गति तेज है उसी तरह उसकी जस्सी का दिल भी तेजी के धड़क रहा है। उसके वक्षस्थल पर हल्के-हल्के हो रहे ज्वार-भाटे को देखकर उसके गतिशील हृदय की अनुभूति हो रही थी। दोनों को अपने भीतर एक अनूठी खुशी महसूस हो रही थी। दोनों एक विचित्र से नशे से प्रभावित हो रहे थे। दोनों को लग रहा था जैसे उनका अंग-अंग किसी अमृत से भीग रहा हो, दोनों के रेशे-रेशे में मीठी-नशीली सूईयाँ चुभ रही हों।

फिर हरनाम ने उसको निहारते हुए कहा—जस्सी, मेरी जस्सी, सचमुच तुम कितनी अच्छी हो। एक बात पूछूं, सच बताओगी, तुम मुझे इतनी प्यारी क्यो लगती हो, तुमने मुझ पर यह कैसा जादू कर दिया है ? तुम्हारे बिना अब समय ही नही कटता।

जस्सी के चेहरे पर एक बार पुनः हर्ष की लहर उभर आयी। उसने उत्तर मे कहा—नामे ! यह तो तुम मेरे मन की बात कह रहे हो। यही बात

तो मैं तुमसे पूछना चाह रही थी । पर कभी-कभी हृदय में एक डर सा समा जाता है। सोचती हूँ जब कभी लोगों को इस बात का पता चलेगा, मेरे माँ-बाप को मालूम होगा तब क्या होगा। कहीं हम दोनों पर कोई आफत न आ जाए। कभी ऐसा हो गया तो क्या होगा।

—जस्सी ! तुम उस बात की चिन्ता न करो। हम कोई पाप तो नहीं कर रहे। हमारे दिलों मे कोई दुर्भावनाएँ तो नही है। हम तो सच्चे हृदय से एक दूसरे को प्रेम करते है। जब हमारे भीतर कोई पाप नही कोई खोट नही तो हम क्यों किसी से डरे। आगे जो होगा देखा जाएगा। प्रेम करने वाले ऐसे खतरों का सामना करने के लिये हमेशा तैयार रहते है। मुझे विश्वास है कि कोई बहुत बड़ा अनर्थ नही होगा। गुरु महाराज की दया से सब ठीक ही होगा। फिर अभी फिलहाल बाहर बात निकलने की कोई सम्भावना भी नही है। यह राज़ केवल दो लोग ही जानते है एक मेरी भरजाई और दूसरी तुम्हारी सहेली कमला। और मुझे इन दोनों पर भरोसा है।

—नामे, मुझे तो सबसे बड़ा भरोसा तुम पर है। अगर तुम मेरे साथ रहोगे तो मुझे किसी तरह का डर नही रहेगा। तुम्हारा आसरा पाकर मैं हर किसी का सामना कर लूँगी। अच्छा अब चलती हूँ। देर से जाने पर माँ को कहीं कुछ शक न होने लगे।

जैसे ही वह उठकर दूसरे कमरे को जाने लगी हरनाम ने एक बार फिर आगे बढ़कर उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया, उसके होठों का एक और चुम्बन लिया और फिर चारपाई पर बैठ गया।

जस्सी शरमाती हुई लाजो व कमला के पास पहुँच गयी। दो-चार मिनटों तक दोनों सहेलियाँ लाजो से बात करके घर को लौट गयी।

●●

अठारह

गत एक सप्ताह से बलदेव प्रीतो के यहाँ उसे पढ़ाने नहीं आया था। वह अम्बाला अपने एक मित्र के विवाह में सम्मिलित होने के लिये चला गया था। प्रीतो को मालूम हो चुका था कि अम्बाला से लौटे बलदेव को दो दिन हो चुके हैं, पर वह उससे मिलने नहीं आया था। आज सुबह सहसा स्कूल जाते हुए वह उसे रास्ते मे मिला था और उसने उसे आश्वासन दिया था कि

आज शाम को वह अवश्य उसके यहाँ आएगा। इससे ज्यादा बात रास्ते में हो न पायी थी। पर प्रीतो हैरान थी बल्कि उसके मन में उसके प्रति थोड़ी नाराजगी भी थी कि वह अभी तक उसे मिलने क्यों नही आया। वह तो उसकी याद में तड़प रही है और उसे उसकी कोई परवाह ही नहीं। वह सोच रही थी कि आज जब वह शाम को आएगा तो वह उससे नही बोलेगी, कुछ देर के लिये उससे रूठी रहेगी।

प्रीतो आज स्वयं को कुछ अजीब सी मन:स्थिति में पा रही थी। कई दिनों की प्रतीक्षा के बाद आज उसकी बलदेव से भेंट होगी इस बात से उसका मन खुश था। पर उसके मन मे यह भी शंका थी कि वह यहाँ आकर भी उससे मिलने क्यों नही आया ? क्या उसका मन उसको मिलने के लिए नही तड़पता ? जिस प्रकार कभी-कभी उसको याद करते हुए उसकी आँखें भीग जाती हैं क्या बलदेव ने भी उसकी याद में कभी आँसू बहाए होंगे। फिर वह सोचती कि ये पुरुष लोग आम तौर पर कठोर-हृदयी ही होते है। स्त्री जितनी संवेदनशील होती है उतने पुरुष कहाँ। वह बलदेव को याद मे बेहाल हो रही है और उस निष्ठुर को इसकी कोई खबर ही नहीं। वह सोचती कि कहीं वह गलत राह पर तो नही चल पड़ी। जो कुछ वह कर रही है उसका पर्यवसान क्या होगा। जब उसके माता-पिता को उसके प्रेम-सम्बन्ध के बारे में पता चलेगा तो क्या होगा, क्या वे इस सम्बन्ध को विवाह-सूत्र में बाँधने के लिये तैयार हो जाएँगे। लेकिन वे क्यों नही होंगे। आखिर बलदेव में क्या कमी है। वह सुशिक्षित है, गाँव के स्कूल का हेड मास्टर है, गाँव मे उसकी इज्जत है, हृदय से वह कोमल, सच्चा और ईमानदार है। कहानियो में जिस तरह के नायकों का वह उल्लेख पढ़ती है बलदेव भी उन्ही की तरह लगता है। उसे पति रूप मे पाकर कौन लड़की अपने भाग्य को न सराहेगी। मैं तो सचमुच भाग्यशाली हूँ जिससे उस जैसा युवक प्रेम करता है। भगवान ने उसे कितना प्रखर दिमाग दिया है, हृदय में कितनी शुद्धता दी है। उसने मेरे जीवन को कितना रसमय बना दिया है। वह उसको मिलने के लिये कैसे उत्कंठित रहती है, उसको याद करके उसके मन-प्राणों पर कैसी मधुरिमा सी छा जाती है।

प्रीतो ने दिन मे कई बार बलदेव को याद किया। रह-रह कर उसके मन मे आता कि समय जल्दी क्यों नही बीत रहा। कब शाम होगी कब उसका साजन उसके पास आएगा। बडी मुश्किल से उसका समय बीत रहा था। आखिर जब सध्या का थोड़ा धुधलका होने लगा तो उसने मुँह-हाथ धोया, बालों को एक बार फिर कघी से सँवारा, आँखो मे हल्का सा काजल भी

लगाया। दो-तीन बार उसने दीवार पर टगे आइने मे स्वयं को निहारा। किताब-कापी उसने पहले ही मेज पर रख दी थी। तीन-चार बार वह दरवाज़े पर आकर बाहर गली के सिरे तक झांक गयी थी। वह हैरान हो रही थी कि आज उसे यह क्या हो गया है। इस प्रकार इतनी उत्सुकता से पहले तो कभी उसने उसकी प्रतीक्षा नही की थी।

सूर्यास्त हो चुका था जब बलदेव उसके यहां पहुँचा। एक सप्ताह के अन्तराल के बाद वह प्रीतो से मिल रहा था। उसके मन मे हर्ष था उत्साह था। पर वह ऊपर से जबरदस्ती एक प्रकार की गम्भीरता ओढ़े हुए था। जैसे ही वह कमरे मे प्रविष्ट हुआ प्रीतो ने उसे कुछ ऐसे अंदाज में सत सिरी अकाल कहा मानो वह उससे बहुत नाराज हो, उससे बात तक न करना चाहती हो, केवल शिष्टता निभाने के लिये उसका अभिवादन किया हो।

सयोगवश प्रीतो की माँ प्रसिन्नी उस समय घर पर नहीं थी। वह कहीं ... मे गयी थी। बलदेव आकर बैठ गया था। प्रीतो भी सामने किताब खोले सिर नीचा किये चुपचाप बैठी थी। उसकी इस खामोशी को देखकर तनिक मुसकराकर बलदेव ने पूछा—प्रीतो ! क्या बात है, बोलती क्यों नहीं, चुप क्यो हो। क्या मुझसे नाराज हो ?

—मैं कौन होती हूँ नाराज होने वाली। मुझे क्या अधिकार है जो किसी पर नाराजगी प्रकट करूँ।

—तुम कौन होती हो, क्या तुम्हे किसी पर कोई अधिकार है या नही, क्या यह भी मुझे बताना होगा। प्रीतो, सच बताओ तुम्हारा मन क्या कहता है, क्या तुम किसी की नही हो ?

—मुझे क्या मालूम कि मुझे किसी ने अपना माना भी है या नही। अगर मुझे मानते होते तो इस तरह मुझे परेशान न करते। किसी को तड़पाने मे तुम्हे बहुत मज़ा मिलता है। बलदेव, अम्बाला से लौटे तुम्हे दो दिन हो गये लेकिन आज सूरत दिखा रहे हो। अगर तुम्हारे मन मे मेरे लिये प्यार होता, मुझसे मिलने की चाह होती तो इस तरह दो दिनों तक मुझसे दूर न रहते। ज्यादा न सही तो दो-चार मिनट के लिये तो आ ही सकते थे।

—प्रीतो आने को मन बहुत कर रहा था। पर कुछ मजबूरी आ गयी थी। मेरे यहाँ न रहने से स्कूल का काम कुछ अधिक बढ गया था। उसे निपटाना जरूरी था। बस इसी कारण नही आ पाया।

—स्कूल में काम बढ़ गया था। बहाने बनाकर मुझे मूर्ख बनाना तुम खूब जानते हो। जाओ मैं तुमसे नही बोलूंगी, मनाओगे तब भी नही मानूंगी।

—ठीक है न मानना, पर यह तो बता ही दो कि आज घर में सूनापन क्यों है, मामी भी दिखाई नहीं पड़ रही।

—तो मुझे बोलना ही पड़ेगा। बस इसी बात का जवाब दूंगी, उसके बाद नहीं बोलूंगी। नांगरी जट्टी की लड़की बन्तो विवाह के बाद पहली बार मायके आयी है। नांगरी ने माँ को बुलवाया था और वह उनके घर पर ही गयी है अभी थोड़ी देर पहले।

—इसका मतलब यह हुआ कि उसे वापस लौटने में पन्द्रह-बीस मिनट तो लग ही जाएँगे?

—मुझे क्या मालूम।

—तुम्हें अभी मालूम हो जाएगा। और इतना कहकर उसने उठकर प्रीतो को अपनी बाँहों में भर लिया। उसके सुन्दर मुख को उसकी बड़ी-बड़ी आँखों को निहारने लगा। उसके कपोलों उसके होंठों को चूमने लगा। उसके हृदय की धड़कनें सुनने लगा। फिर उसके माथे पर लहरा रही लट को थोड़ा पीछे हटाते हुए बोला—प्रीतो! मुझसे रूठा न करो, मैं तुमसे दूर कहाँ रहता हूँ। और तुम भी मुझसे दूर कहाँ रहती हो। अभी मैं कुछ दिनों के लिए गाँव से बाहर रहा पर तुम हर समय मेरे साथ थी। हर कहीं हर क्षण तुम्हारी मधुर याद मेरे साथ रहती थी। तुम्हें विश्वास न होगा पर मैं तो तुमसे बातें करता रहता था, तुमसे ऐसे ही प्यार करता रहता था जैसे इस समय कर रहा हूँ।

—बस बातें बनाना खूब जानते हो। तुम उस तरह अपना मन बहला सकते हो। पर मुझे वैसा झूठ-मूठ का प्यार करना नहीं आता। हर समय सपनों से मन नहीं बहलाया जा सकता। मुझे वास्तविक संसार चाहिए। इस समय तुम मेरे सामने हो, मेरे कितने निकट हो, यह कोई कल्पना नहीं है सपना नहीं है। मुझे ऐसी ही दुनिया अच्छी लगती है।

—प्रीतो, इस तरह की दुनिया पाने के लिए दुनिया से आज़ादी चाहिए। यह आज़ादी हमें कहाँ प्राप्त है। प्रायः हर समय तो हम दोनों पहरे के नीचे रहते हैं। इस समय हम दोनों अकेले हैं। पूरी स्वतंत्रता से बातें कर रहे हैं। घर पर कोई नहीं है। लेकिन ऐसे क्षण तो बहुत कम ही मिल पाते हैं। इस समय स्वतंत्र होते हुए भी हम दोनों के मन में एक प्रकार का भय है कि कहीं कोई आ न जाए, कोई हमें देख न ले। प्रीतो! इस प्रकार का आतंक कब हमारे मन से दूर होगा, कब हम पूर्ण रूप से स्वतंत्र होंगे?

—जब तुम्हारे मन में हिम्मत पैदा हो जाएगी। जब तुम किसी से नहीं डरोगे। वस्तुतः, वैसी आज़ादी तुम्हारी ही हिम्मत से मिलेगी। तुम खुद भी

और जिस तरह की आज़ादी तुम चाहते हो उसको पाने के लिए प्रायः पुरुषों को ही लोहा लेना पड़ता है। मैं तो स्त्री हूँ। और स्त्री की अपनी मर्यादा होती है। वह उसी के भीतर रहकर ही काम करती है। लेकिन इतना विश्वास रखो कि मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूँगी। जब एक बार मन और वचन से तुम्हें अपना मान चुकी हूँ तो समझो कि मै हमेशा के लिए तुम्हारी हो चुकी।...

—वाह मेरी प्रीतो! और तुम भी यकीन मानो कि मैंने भी तुम्हें जीवन भर के लिए अपना लिया। तुम्हे कोई मुझसे अलग नहीं कर सकता। फिर उसने उसके कोमल हाथो को अपने हाथों मे लेते हुए कहा—प्रीतो, अब कभी मैं इन हाथों को नही छोड़ूंगा और मुझे तुम पर भी भरोसा है कि तुम कभी इन्हे छुड़ाने की कोशिश नहीं करोगी। इतना कहकर एक बार पुनः उसने उसे अपने बाहुपाश मे जकड़ लिया, एक बार फिर उसके कपकपाते कोमल होंठों पर अपने गर्म होठ रख दिये।

कुछ ही क्षणो बाद उन्हे एहसास हुआ कि प्रसिन्नी घर में प्रवेश कर रही है। वे तुरन्त एक दूसरे से अलग हो गये। प्रीतो पास पड़ी कापी पर कुछ लिखने लगी और बलदेव किताब के पन्ने पलटने लगा। बलदेव एक सप्ताह बाद प्रसिन्नी से मिला था। उसने आदरभाव से उसे प्रणाम निवेदित किया। उत्तर मे प्रसिन्नी ने उसे आशीष दी, उससे कुशलक्षेम पूछा। इन दिनों तक न आ पाने का कारण उसने उसे बता दिया।

प्रसिन्नी रसोई मे चली गयी थीं और वे दोनों एक बार फिर धीरे-धीरे बातें करने लगे थे। कुछ देर के बाद प्रीतो ने कहा—एक बात कहूँ? पर डरती हूँ कि कहीं तुम डाँट न दो। इधर कुछ दिनो से मेरा पढ़ने में मन नहीं लग रहा। पढ़ने की कोशिश करती हूँ, कितने ही पन्ने पढ़ भी जाती हूँ पर क्या-क्या पढ़ा वह याद नही रहता। सच्ची बात तो यह है कि पढते समय भी तुम मेरी आँखो के सामने छाए रहते हो। पुस्तक के पन्नों पर मुझे तुम्हारे ही रूप नजर आते-रहते है। अकेले में तुमसे ही बातें करती रहती हूँ। मुझे तो डर है कि अगर यही दशा रही तो मैं फेल हो जाऊँगी।

—और फिर फेल होकर अपने साथ मेरी भी बदनामी कराओगी। मैंने तुम्हारे माता-पिता को जो आश्वासन दे रखा है उसका क्या होगा। प्रीतो, समझ लो अगर नहीं पढोगी तो मैं तुम्हारी शिकायत कर दूँगा। अगर तुम्हें पढ़ना नही है तो फिर मेरा यहाँ आना ही बेकार है। अब कल से नहीं आऊँगा।

—क्या कहा नही आऊँगा। देखूँगी कि तुम कैसे नहीं आते। अभी कुछ

देर पहले क्या कहे थे। क्या ऐसे ही जीवनभर साथ निभाओगे ? मैंने तो वास्तविकता तुम्हें बतायी। मैं कैसे पढ़ने में मन लगा सकूं इसका कोई उपाय बताओ।

—इसका उपाय एक ही है और वह है तुम्हारे मन की संकल्प शक्ति। तुम इतना जान लो कि तुम्हारे अच्छे नम्बर लेकर पास होने मे ही हम दोनों की इज्जत होगी शान होगी, तभी मेरी मेहनत का फल मुझे मिलेगा। बस इतना याद रखो कि तुम्हें शान से परीक्षा पास करनी है और मेरी खातिर करनी है। हम दोनों तो एक दूसरे के पास ही हैं। पढते समय मन को इधर-उधर भटकने मत दिया करो, उसे अपने बस मे रखकर पूरी रुचि के साथ अपना अध्ययन किया करो। तुम्हारे मस्तष्क पर तुम्हारी लगन पर मुझे भरोसा है प्रीतो और मेरे शब्दों को याद रखना कि तुम अवश्य ही अच्छे अंक लेकर परीक्षा में सफलता पाओगी।

—मैं अपनी ओर से कोशिश तो करती हूँ। पर मालूम नहीं कभी-कभी मन कहाँ-कहाँ भटकने लगता है। किसी समय अपने भीतर कोई डर सा छाने लगता है। मन-प्राण थर्राने लगते हैं। तब लगता है जैसे मेरे भीतर धीरे-धीरे कुछ चुभ रहा हो, कुछ टूट रहा हो। जैसे चोर चोरी करते समय डरता है कुछ उसी प्रकार का डर मुझे लगने लगता है। भीतर से ठंडी आहें निकलने लगती हैं। लेकिन जब तुम सामने रहते हो तो मनःस्थिति एकदम दूसरी हो जाती है। तब आतंक की जगह उत्साह ले लेता है, ठंडी आहो की जगह खुशबुएँ मन-मस्तिष्क को पुलकित करने लगती है। तब अपने भीतर कलियो को लहराते-नाचते हुए अनुभव करती हूं। पता नहीं तुमने मुझे क्या कर दिया है। पहले तो कभी मन मे इस तरह के तूफान इस तरह की बहारें नही आया करती थी।

—प्रीतो ! क्या तुम समझती हो कि ऐसी हालत केवल तुम्हारी ही होती है। मैं भी तो तुम्हारी तरह हाड़-मांस का हूँ। मेरे भीतर भी तो एक दिल है। जैसा तुम अनुभव करती हो कुछ वैसी ही दशा मेरी भी रहती है। और इस प्रकार की हालत केवल हम दोनों की ही नही बल्कि सभी प्रेम करने वालों की होती है। पर प्रीतो, इस हालत में भी तो सुख मिलता है और ऐसा सुख हर किसी को नही, भाग्यशाली लोगों को ही नसीब होता है। तुम सचमुच भाग्यशाली हो।

—केवल मैं ही भाग्यशाली हूं और तुम ?

—मैंने गलत कह दिया। दरअसल हम दोनों ही भाग्यशाली है। प्रीतो,

अभी तुमने अपने मन मे उत्पन्न होने वाले डर की बात की थी। कभी-कभी मेरी भी दशा वैसी ही हो जाती है। तब कही मुझे अपनी आत्मा पर एक प्रकार का भार महसूस होने लगता है। लगता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ यह अनैतिक है पाप है। मैं किसी के साथ विश्वासघात कर रहा हूँ। और मैं समझता हूँ कि शायद यह मेरे संस्कारों के कारण होता है। हमे बार-बार समझाया जाया है, उपदेश दिये जाते है कि किसी की बहू-बेटी पर नजर रखना पाप होता है। ऐसे उपदेशों के याद आने पर मस्तिष्क में एक तरह का द्वन्द्व छा जाता है। कुछ देर के लिए एक अजीब तरह की यातना अनुभव होने लगती है। लेकिन कुछ समय बीतने पर मन से कोई ध्वनि आती है जो कहती है कि तुम तो कोई अपराध नही कर रहे, कोई पाप नही कर रहे। किसी को शुद्ध हृदय से किया गया प्रेम पाप कहाँ होता है। सच्चा प्रेम ही तो धर्म का सबसे बडा उपदेश है। पाप अथवा बुराई वहाँ होती है जहाँ भावना गंदी होती है अपवित्र होती है। जब हम दोनों सच्चे हृदय से एक दूसरे का हित चाहते हुए प्रेम करते है तो वह पाप कैसे हो सकता है। वह तो एक तरह से पूजा है।

बलदेव के ये भावनापूर्ण शब्द सुनकर प्रीतो का हृदय गदगद हो उठा। वह सोचने लगी कि उसका बलदेव कितने ऊँचे विचारों का स्वामी है। जो व्यक्ति प्रेम को पूजा मानता है भगवान मानता है उसका मन कितना साफ है, हृदय मे कितनी अधिक तरलता है, ऐसा सुकुमार व्यक्ति क्या कभी किसी के साथ विश्वासघात कर सकता है, किसी को धोखा दे सकता है। नही कभी भी नहीं। भीतर से पुलकित होकर उसने अपनी दृष्टि अपने बलदेव पर डाली। बलदेव भी उसकी आँखों मे कुछ खोजने लगा। उस समय दोनो की नजरों मे अगाध विश्वास, एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना और अथाह प्यार दृष्टव्य था। दोनो कुछ पलों तक एक दूसरे की ओर देखते रहे, निहारते रहे, फिर दोनो की आँखें झुकीं, फिर उठी, परस्पर मिलीं और दोनों धीरे से मुसकरा दिये।

कुछ देर के बाद जब बलदेव घर लौट रहा था तो उसका मन बहुत प्रसन्न था। आज उसने दिल खोल कर प्रीतो से बातें की थीं। अपनी प्रीतो के प्यार पर उसे विश्वास था। वह अपने भाग्य को सराह रहा था। पर तभी चलते-चलते उसे अनुभव हुआ मानो कोई उसे पुकार कर कह रहा हो— गुरु जी, तुम तो वास्तव में गुरु घंटाल निकले। गुरु-पद की मर्यादा का बहुत सुन्दर पालन कर रहे हो। अपनी शिष्या से खूब मजे मार रहे हो, खूब रंग-

रलियां मना रहे हो। फिर उसे लगता है कि यह आवाज यह चेतावनी किसी एक आदमी की नही वरन् अनेक व्यक्ति उस पर बोली मार रहे है, आवाजें कस रहे हैं। ये आवाजें सरदार प्रताप सिंह की है, उसके लड़के व उसके अपने मित्र मोहर सिंह की है, जोधा सिंह व शंगारा सिंह सरीखे अनेक लोगों की है, पूरे गाँव वालों की है। ये आवाजें उसे कैसे भीतर तक नोच रही हैं, उसके अंग-अंग को घायल कर रही है। ये आवाजें खेत-खलिहानों से आ रही है, रहटों से आ रही हैं, पोखरों व झरनों से आ रही है। पशु-पक्षी भी अपनी-अपनी वाणी से उसे चेतावनी दे रहे है, तरह-तरह से समझा रहे है। वह आगे बढ़ता जा रहा है और ये भाँति-भाँति की ध्वनियां उसका पीछा करती जा रही हैं। वह तनिक भयभीत सा हो जाता है। उसे लगता है कि ये आवाजे कितनी कातर है कितनी भयानक है, ये किस तरह काँटों की भाँति उसे चुभ रही हैं, लोगों की शकालु नजरें कैसे उसके मन-मस्तिष्क पर डंक मार रही है।

लेकिन तभी उसे लगता है कि ये आवाजे उसका कुछ नही बिगाड पाएँगी। इन तूफानो से वह विचलित नही होगा। अगर काली आँधी आएगी तो वह निकल भी जाएगी। उसके तथा उसकी प्रीतो के मन मे बने नीड़ का कोई तिनका भी अपने स्थान से नही हिलेगा। वे दोनों उनकी सुरक्षा कर लेंगे। प्रीतो उसकी अपनी है और वह उसका है। वे दोनों साथ-साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन-पथ पर बढते रहेंगे। पथ पर आने वाली बाधाओं से वे डरेंगे नही। उन्हे दूर करके ही दम लेंगे।

• •

उन्नीस

इन्द्र सिंह के हाथो पटियाला से बुलाये गये पहलवान जगीर सिंह की शर्मनाम हार को सरदार जोधा सिंह व उसके परिवार के लोगों ने अपनी हार माना था। वे लोग उस हार का बदला लेने के लिए तुले हुए थे। वे किसी भी तरह पंडित दीवान चन्द के खानदान को नीचा दिखाना चाहते थे। इसके लिए वे प्रायः आपस में विचार-विमर्श करते रहते, तरह-तरह की योजनायें सोचते रहते। गांव वालों को भी लगने लगा था कि दोनों परिवारों की वर्षों से चली आ रही दुश्मनी में अब कोई न कोई नया मोड़ अवश्य आएगा। और

उन्हें यह भी विश्वास था कि इस नये मोड़ को लाने की शुरुआत भी जोधा सिंह व उसके लड़कों की ओर से ही होगी। हर कहीं कुछ न कुछ ऐसे लोग रहते ही हैं जिन्हें इस प्रकार के तमाशे-झगड़े देखने में सुख मिलता है। और ऐसे लोगों को जब भी मौका मिलता है वे अपनी ओर से दुश्मनी की भीतर ही भीतर सुलग रही आग पर घी डालने से बाज नहीं रहते। इस प्रकार के लोग राणीपुर गाँव मे भी थे। वे इधर की उधर और उधर की इधर लगाते ही रहते थे।

इस खानदानी झगड़े के प्रति दोनों परिवारों का दृष्टिकोण भी अलग-अलग था। जहाँ जोधा सिंह व उसके हिमायती उग्र रूप धारण किये हुए थे वहीं दीवान चन्द के गुट के लोग किसी सीमा तक शान्त व बेफिक्र नजर आ रहे थे। प्रायः वे अपने काम से काम रखते थे। जोधा सिंह के विरुद्ध षड्यंत्र रचने में उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी। दीवान चन्द का इस बारे में एक ही उत्तर रहता था कि जो होगा देखा जाएगा, भगवान पर हमें भरोसा है, वह जो करेगा ठीक ही करेगा। हम अपनी ओर से किसी की जबरदस्ती टाँग नहीं घसीटेंगे। हाँ दूसरा कोई छेड़खानी करेगा तो उसका जवाब हम जरूर देंगे।

आखिर बहुत सोच-विचार के बाद जोधा सिंह के लड़कों शेर सिंह व दौलत सिंह को इस काम के लिये एक मोहरा मिल गया। यह नयी योजना बल्कि कहना चाहिए कि नया षड्यन्त्र शेर सिंह, दौलत सिंह व उनके दो-तीन दोस्तों के दिमाग की उपज था। इस षड्यन्त्र मे इतना नंगापन था कि शेर सिंह व दौलत सिंह इसे अपने बाप से पूरी तरह छुपाकर करना चाहते थे। हालांकि वास्तविकता यह थी कि जोधा सिंह भी ऐसे मामलों में नंगा आदमी था। दीवान चन्द को नीचा दिखाने के लिये वह किसी भी हद तक नंगापन दिखाने को तैयार था। खैर बेटों ने बाप को इस योजना के सम्बन्ध में बताना उचित नहीं समझा। वे जानते थे कि जब उनकी योजना सफल हो जाएगी तो उसे अपने आप ही पता चल जाएगा। और अगर उन्हें सफलता मिल गयी तो उनका बाप अवश्य ही अपने बेटों की योग्यता पर खुश होगा। इस षड्यन्त्र को पूरा करने के लिये जो मोहरा चुना गया वह था सुच्चा सिंह।

सुच्चा सिंह इन्द्र सिंह का दोस्त था। वह जालन्धर मे रहता था। पर वह कभी-कभी राणीपुर भी आता रहता था। उसकी राणीपुर में ननिहाल थी। लेकिन यह ननिहाल नाम मात्र की ही थी। उसके ननिहाल के

परिवार में इस समय वहाँ कोई नही था। उसका एक ममेरा भाई था जो बम्बई में कहीं नौकरी करता था। उसका गाँव से अब कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था। वह शायद ही कभी गाँव आया होगा। गाँव वाले उसे लगभग भूल चुके थे। सुच्चा के ननिहाल वालों का एक पुराना सा कच्चा मकान था जो इस समय पूरी तरह से खस्ताहाल था। उसमे कोई नहीं रहता था और न ही वह रहने योग्य था। जोधा सिंह उसे अपना दूर का रिश्तेदार मानता था और इस नाते वह सुच्चा के प्रति अपना स्नेह दिखाता रहता था। दिखावे के तौर पर शेर सिंह व दौलत सिंह सुच्चा सिंह को अपने भाई की तरह मानते थे। सुच्चा बड़ा होशियार व चलता-पुरजा आदमी था। वह जोधा सिंह तथा उसके लड़कों का वास्तविक रूप पहचानता था। पर पहचानते हुए हुए भी वह खामोश रहता था। उसे उनके उस रूप से कोई विशेष सरोकार नही था। उसे तो अपने मतलब से मतलब था।

इन्द्र सिंह धाकड़ किस्म का इन्सान था। शरीर से वह सुन्दर व शक्तिशाली था। पर दिमाग उतना तेज नही था। शेरदिल होते हुए भी हृदय से वह सरल स्वभाव का था। अपने दोस्तों के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता था। लेकिन उसमें कुछ कमजोरियाँ भी थी। वह प्रायः दूसरो पर विश्वास कर लेता था। थोड़ी सी होशियारी बरतने पर उसे किसी भी जाल में फँसाया जा सकता था। दोस्त व दुश्मन में वह अच्छी तरह से पहचान नही कर पाता था। हाँ यह जरूर था कि उसके दोस्त अथवा परिचित उससे दुश्मनी मोल लेने से कतराते थे। वे जानते थे कि उसकी दुश्मनी उन्हे बहुत महँगी पड़ेगी।

सुच्चा सिंह को वह अपना सच्चा मित्र मानता था। लेकिन सुच्चा किसी और ही मिट्टी का बना हुआ था। उसे हमेशा अपने मतलब से मतलब रहता था। उसे पैसे से मतलब रहता था। चाँदी का तगड़ा जूता दिखाकर उससे कोई भी काम करवाया जा सकता था। दंगा-फसाद करवाने तथा एक डकैती मे भाग लेने के अपराध में वह कुछ माह के लिए बड़े घर की हवा खा आया था। उसका एक धंधा और भी था और उस धंधे के बारे मे इन्द्र सिंह जानता भी था। सुच्चा सिंह उत्तर प्रदेश व राजस्थान से औरते भगाकर अथवा सस्ते दामो मे खरीद कर लाता और उन्हे ऊँचे दामों पर पंजाब व हिमाचल प्रदेश में बेच देता था। इस धंधे से उसे अच्छी आय हो जाती थी।

उस दिन दोपहर मे चौपाल मे बरगद की घनी छाया के नीचे बैठे कुछ-

लोग गपबाजी कर रहे थे, कुछ चौपड़ व ताश खेल रहे थे। इन्द्र सिंह भी अपने दो-तीन मित्रों के साथ वहाँ बैठा ताश का खेल देख रहा था। तभी उसका मित्र पिद्दी वहाँ आया। पिद्दी आठ-दस दिनों के बाद गाँव लौटा था। अपनी मित्र-मंडली से दुआ-सलाम करके वह भी वहीं बैठ गया। कुछ मिनटो बाद सहसा उसे कुछ याद आया। उसने धीरे से इन्द्र सिंह के कान में कुछ कहा। और फिर दोनो मित्र वहाँ से उठकर परे लसूड़े के पेड़ के नीचे चले गये।

तभी पिद्दी ने कहा—इन्द्र सिंह! मैं अपने काम के सिलसिले में जालन्धर गया हुआ था। वहाँ एक दिन बस-अड्डे पर सुच्चा सिंह से मुलाकात हो गयी। भई, उस समय उसके साथ एक जवान, बड़ी खूबसूरत सी औरत थी। मालूम नही कौन थी और वह उसे कहाँ से उड़ा लाया था। पर दोस्त वह थी बडी गजब की, एकदम पटाखा या कह लो लपलपाता हुआ शोला। देखने मे वह पंजाबी तो नही लगती थी। पहनावे व शक्ल-सूरत से वह कुल्लू-चम्बा या कश्मीर की लगती थी। मैंने उसे थोडा अलग ले जाकर पूछा तो किसी तरह से वह बात को टाल गया। उसके बारे मे बस इतना ही बताया कि वह उसकी दूर की रिश्तेदार है बल्कि वह उसे बहन की तरह मानता है।

—साला पता नही किस-किस को बहन बनाता रहता है। और इन बहनों को कहाँ-कहाँ से और कैसे फँसा लाता है। उस औरत की उम्र कितनी होगी?

—उमर उसकी कोई ज्यादा नही है। यही चौबीस-पचीस के आसपास ही होगी। इन्द्र भाई, लड़कियाँ आज तक कई देख चुका हूँ, उनके जायके भी ले चुका हूँ। लेकिन सुच्चे की उस बहन में कुछ अनूठापन सा मुझे नजर आया है। उसे देखकर मुझे लगा था कि उसे देखता ही रहूँ। उसने मेरी ओर एक-दो बार ऐसे ही सरसरी नजर से देखा और फिर निगाहें नीची कर लीं। भला मैं उसका कोई मोती तो न उतार लेता। थोड़ी देर मेरी तरफ देख लेती तो उसका क्या बिगड़ जाता। लेकिन उसे देखकर मुझे लगा कि हम लोग उसके काबिल नही। वह तो तुम्हारे जैसे सजीले नौजवान के छकने लायक है। उसको सच्चा सुख तुम ही दे सकते हो, उसकी भूख को तुम ही मिटा सकते हो, उसके अंग-अंग उसकी चूल-चूल को तुम ही ढीला कर सकते हो।

—अबे हरामी, मुझे उससे क्या मतलब। वह सुच्चे की बहन है। भला मैं उसको ऐसी-वैसी नजरों से क्यों देखूंगा। इस तरह की खुराफातें तुम्हें ही मुबारक। अब मुझे यह बताओ कि मुझे यहाँ अलग से बुलाकर क्या कहना चाहते थे। बस यही बात जो कह चुके हो या कोई और खास मामला है?

पिद्दी ने उत्तर में कहा—सुच्चा सिंह कुछ परेशान सा नजर आ रहा था। उसने मुझसे कहा था कि उसे तुमसे कोई जरूरी काम है। वह किसी मामले मे तुमसे मदद की उम्मीद कर रहा है। उसने कहा था कि इन्द्र सिंह से कहना कि जल्दी ही पाँच-सात दिनों के अन्दर जालन्धर जाकर उससे मिले। उसने तुम्हें जल्दी वहाँ पहुँचने के लिये कहा है। काम के बारे मे मैंने बहुत पूछा पर उसने कोई संकेत तक नही किया। अब जब तुम्हे मौका मिले जालन्धर जाकर उससे मिल आना।

बात खत्म होने पर दोनों मित्र फिर बरगद के नीचे आकर बैठ गये। इन्द्र देखने को तो ताश का खेल देख रहा था पर रह-रह कर पिद्दी के शब्द उसके दिमाग मे आ-जा रहे थे। वह सोच रहा था कि सुच्चा सिंह को उससे क्या काम हो सकता है, किस तरह की मदद वह उससे चाहता है। कही किसी से कोई लडाई-झगडा या कोई फौजदारी का लफड़ा न हो। कही उस लड़की का कोई मामला न हो। अगर सारी बात पिद्दी को ही बता देता तो उसमे क्या हर्ज हो जाता। बिना मतलब मेरे दिमाग में एक उलझन पैदा कर दी है। पर उसे लग रहा था कि उसके साथ मामला ज़रूर संगीन ही होगा। वह जानता था कि छोटी-मोटी बात की तो वह परवाह नही करता। वह स्वयं ही निपटा लेता है। वहाँ जालन्धर मे भी उसके दोस्त-मददगार होंगे। इस पर भी अगर उसने मुझे यहाँ से बुलवाया है तो अवश्य ही उसे मुझसे ही कोई खास काम होगा। अब जब उसने सन्देश भेजा है, मुझे मदद के लिए बुलाया है तो मुझे वहाँ जाना ही चाहिए। दोस्ती का यह तकाजा है कि वहाँ पहुँचकर जहाँ तक मुझसे बन पड़े उसकी सहायता करूँ। सोचने के बाद उसने मन मे निश्चय किया कि वह दो-एक दिनो में ही जालन्धर चला जाएगा।

अगले ही दिन इन्द्र सिंह जालन्धर पहुँच गया। जब वह उसके घर पर पहुँचा उस समय सुच्चा घर पर नही था। जैसे ही उसने कुंडी खटखटाई एक युवती ने आकर दरवाजा खोला। इन्द्र ने उसे बताया कि वह सुच्चा सिंह का मित्र है और उसके बुलवाने पर ही वह राणीपुर गाँव से उसे मिलने आया है। युवती ने उसका स्वागत किया और भीतर आकर बैठने के लिए कहा। इन्द्र सिंह कुछ क्षणों तक संकोच करता रहा और सोचता रहा कि वह अन्दर जाकर बैठे अथवा नही। एक अपरिचित युवती के पास अकेले बैठना कहां तक उचित होगा। पर तभी उस अल्हड़मस्त तरुणी से पुनः उससे भीतर आकर बैठने के लिए आग्रह किया। वह भीतर जाकर पलंग पर बैठ गया।

सुच्चा सिंह की माँ और उसका छोटा भाई जालन्धर से कोई बीस

मील की दूरी पर स्थित नवी कोटली नामक गाँव में रहते थे। सुच्चा गाँव में न रहकर जालन्धर में ही अपना काम-धंधा करता था। वहाँ उसने एक छोटा सा मकान किराये पर ले रखा था। उसके पास छोटे-छोटे दो कमरे थे। मकान के दूसरे भाग में एक और किरायेदार रहता था जो एक प्रेस में काम करता था।

युवती के मोहक व्यक्तित्व को देखकर वह चकित सा रह गया। तेईस-चौबीस वर्ष की उस हसीना ने आधी आस्तीन का लंबा कुर्ता और तंग मोहरी की सलवार पहन रखी थी। गोरी-चिट्टी उस तरुणी का कद लंबा था और देह सुगठित व चिकनी लग रही थी। अंडाकार गुलाबी चेहरे के नक्श बड़े तीखे व आकर्षक थे। मोटी-कजरारी आँखों में बेहद कशिश थी। सुन्दर ऊँची नाक में सोने की तीली चमक रही थी। कानों में बड़े आकार के चाँदी के झुमके बड़े प्यारे लग रहे थे। सन्तरे की रसभरी छोटी सी फाँक सरीखे उसके होंठ बड़े लुभावने थे। रेशम की तरह मुलायम उसके घने केशों का रंग कुछ सुनहरीपन लिए था। उसके सीने पर जवानी की जो बहार थी वह किसी के हृदय को ठग लेने की क्षमता रखता थी। इन्द्र सिंह मजबूत दिल का इन्सान था पर आज उसे देखकर उसके हृदय की गति भी कुछ तेज हो गयी थी। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह उससे क्या बात करे, क्या पूछे।

युवती दूसरे कमरे में चाय आदि तैयार करने के लिये चली गयी थी। इन्द्र सिंह वहीं बैठा मालूम नहीं क्या-क्या सोच रहा था। आठ-दस मिनटों के बाद युवती चाय का प्याला और एक प्लेट में बिस्कुट लेकर कमरे में आयी। वह चाय मेज पर रख ही रही थी कि सुच्चा सिंह कमरे में दाखिल हुआ। इन्द्र को देखकर उसका मन खिल उठा। उसने उसे बाँहों में लेकर उसका अभिवादन किया। फिर उसने उस युवती से कहा—शम्मी ! यह है मेरा दोस्त सरदार इन्द्र सिंह पर मैं इसे खाली इन्द्र कहकर ही बुलाता हूँ।

शम्मी ने एक नजर इन्द्र पर डाली और फिर सुच्चासिंह से बोली—मैं इन्हें देखकर ही समझ गयी थी। तुमने इनके बारे में जो कुछ मुझे बता रखा था ये वैसे ही दिखाई पड़े। अच्छा तुम इनके पास बैठो। मैं तुम्हारे लिए चाय लाती हूँ। और इतना कहकर वह उठकर चली गयी। सुच्चे के हाथ में एक छोटा सा डिब्बा था। उसने उसको खोलकर इन्द्र के सामने रखते हुए कहा—यार, यह बरफी खाओ, यह जालन्धर की मशहूर दुकान 'लाहौर मिष्ठान भंडार' की है।

इन्द्र ने बरफी का एक टुकड़ा उठाते हुए कहा—हाँ बरफी तो खाता हूँ पर यह बताओ यह दूसरा वाला बरफी का टुकडा कहाँ से लाए हो ?

—दूसरा टुकड़ा, कौन सा टुकड़ा ? मैं कुछ समझ नही पाया, सुच्चे ने जिज्ञासा भरी नजरों से इन्द्र की ओर देखा।

—अरे यही जो चाय रखकर गयी है, क्या नाम है उसका शम्मी। कौन है यह लड़की ?

—चाय तो पियो। बता दूंगा कि वह कौन है। इतना याद रखो कि वह कोई गैर नही है, अपनी ही रिश्तेदार है। अभी चाय पीकर बाहर चलते हैं। वहाँ बातें होगी। और कहो गांव के क्या हालचाल है। हमारे सरदार जोधा सिंह व हमारे भाई शेर सिंह व दौलत सिंह कैसे हैं ?

—वे लोग गाँव में मजे मार रहे हैं। पूरे गाँव में उनकी धाक है। बड़े इज्जतदार आदमी हैं वे लोग। भई, तुम्हारे तो रिश्तेदार है, तुम्हे तो उनका खत-पत्तर आता ही होगा।

—मुझे खत-पत्तर क्यों लिखेंगे। बस कभी राणोपुर जाता हूँ तो वे थोड़ा प्यार-सत्कार दर्शाते हैं। मामा का मकान तो अब रहने लायक नही है। इस-लिए वहाँ जाने पर उनके यहाँ ही टिकना पडता है। वैसे उन लोगों का स्वभाव तो पूरा गाँव जानता है। मेरी भी उनसे कोई विशेष नही पटती। चूंकि रिश्तेदार हैं इस कारण उनके यहाँ ही जाकर रहता हूँ।

—खैर, यह बताओ कि मुझे यहाँ क्यों बुलवाए हो। क्या ऐसा जरूरी काम आ पड़ा है ?

—वैसे तो तुम आते नही। किसी बहाने से ही तुमको बुलवाना पड़ा। वैसे एक काम भी है। अभी बाहर चलते हैं तो वहाँ बातें होंगी।

चाय-नाश्ता करने के बाद दोनों मिल बाहर घूमने निकल गये। रास्ते में सुच्चा सिंह ने उसे बताया कि शम्मी कश्मीर राज्य में बटोत की रहने वाली है। सुच्चा सिंह की दूर के रिश्ते में कोई बुआ थी। शम्मी उसकी ही बेटी है। शम्मी दो-तीन वर्ष की ही थी कि उसकी माँ का निधन हो गया। अभी दो माह पहले उसका पिता भी स्वर्ग सिधार गया। उसका एक छोटा भाई गोपी है जो बटोत में एक होटल में नौकरी करता है। गोपी का पत्र पाकर ही शम्मी को मैं यहाँ ले आया हूँ। वहाँ यह जवान लड़की अकेले कैसे रहती। गोपी की अपनी आमदनी भी नाममात्र की है। वह इसको अपने पास रखने के लिए स्वयं को असमर्थ पा रहा था। दूसरी खास बात यह थी कि वहाँ के दो-तीन शोहदों की गंदी नजरें इस बेचारी पर थी। उन बदमाशो के चंगुल से बचाकर रखना

गोपी के लिए मुश्किल हो रहा था। वे किसी भी समय इसके लिए कोई आफत ला सकते थे। भई, तुम तो जानते ही हो कि भगवान ने मुझे ऐसा दिल दिया है कि किसी को कष्ट में नहीं देख पाता।

—और खास बात यह है कि जब कोई खूबसूरत जवान लड़की कष्ट में देखोगे तो तुम्हारा कोमल मन तो एकदम पिघल ही जाएगा। आज तक कितनी ही ऐसी युवतियों का कल्याण कर चुके हो। भई, तुम इसकी देखभाल नहीं करोगे तो और कौन करेगा। तो तुम इसको बटोत से यहाँ ले आए। अब इसका क्या करोगे। क्या यह इसी तरह इसी मकान में तुम्हारे पास रहेगी?

—यही बात सोचने के लिए ही तो तुम्हें मैंने यहाँ बुलवाया है। तुम मेरे दोस्त हो, समझदार हो। तुम कोई रास्ता बताओ कि इसका क्या किया जाए। मेरा तो विचार यह है कि फिलहाल इसे राणीपुर में ही रखा जाए। वहाँ मामा का पुराना मकान है। उसका एक कमरा थोड़ा ठीक करवाकर उसमें इसके रहने का इन्तजाम किया जाए।

—वह मकान रहने लायक है क्या? फिर अगर कमरे की मरम्मत करवा भी लोगे तो क्या एक जवान लड़की को वहाँ अकेले रखना उचित रहेगा। अरे भाई, वह गाँव है, वहाँ इसके बारे में तरह-तरह की बातें उठ सकती हैं। वह तुम्हारा शहर नहीं है कि कोई आदमी कहीं भी पड़ा रहे, मरे-खपे और पड़ोस वाले को पता तक न चले।

—वैसे मैंने शम्मी के बारे में शेर सिंह से भी बात की थी। उसका विचार था कि मैं इसे राणीपुर पहुँचा दूँ। वहाँ इसके रहने का वे लोग कोई न कोई प्रबन्ध करवा देंगे। उनका अपना मकान बहुत बड़ा है। यह उसमें रह सकती है। दारे के पास उन लोगों का एक और छोटा सा मकान है। वह खाली ही पड़ा है। शम्मी उसमें रह सकती है। शेर सिंह का सुझाव था कि इसे वहाँ रखना ही अधिक ठीक रहेगा। भई, मेरा भी कुछ ऐसा ही विचार है।

—सो तो ठीक है। पर क्या वह वहाँ अकेली ही रहेगी?

—अकेली रहेगी तो क्या होगा। भई, तुम लोग तो वहाँ हो ही। मेरा है दौलत है। शम्मी से मिलते-जुलते रहना। अगर कभी उसे किसी वस्तु की ज़रूरत हो तो उसका प्रबन्ध करवा देना। फिर मैं तो वहाँ आता-जाता ही रहूँगा। उसकी देखभाल की जिम्मेदारी तो मेरी ही रहेगी। भई इन्द्र, सच्ची बात यह है कि शम्मी के बारे में कोई भी अगला कदम उठाने से पहले मैं

तुम्हारी राय जान लेना जरूरी समझता था इसीलिए मैंने तुमको यहाँ बुलवाया। मेरे ख्याल में तुम भी मेरे विचार से सहमत ही होगे।

—ठीक है, तुमने उस बेचारी के बारे में जो सोचा है सही ही सोचा है। अभी वैसे ही कर लो। फिर बाद में और जो कुछ करना चाहोगे कर लेना। वैसे मेरे स्वभाव को तो तुम जानते ही हो। मैं लड़कियों से दूर ही रहता हूँ। पर चूंकि वह तुम्हारी रिश्तेदार है इसलिए समय-समय पर मैं उससे मिलता रहूँगा। उसको वहाँ कोई परेशानी नही होगी।

आखिर यह निश्चय किया गया कि अगले दिन ही वे तीनों राणीपुर रवाना हो जाएँगे। वहाँ पहुँचकर मुन्चा सिंह शेर शिंह व दौलत सिंह से भी उसके रहने की व्यवस्था करने के बारे में राय लेगा। वैसे उसे मन में विश्वास था कि जोधा सिंह के दूसरे छोटे मकान मे उसके ठहरने का इन्तजाम हो जाएगा। इन्द्र सिंह दिल से नही चाहता था कि शम्मी को जोधा सिंह के परिवार का एहसान लेना पड़े पर वह स्वयं उसके लिए इस समय कुछ कर पाने में असमर्थ था। फिर वह यह भी सोचता था कि शम्मी मुन्चा सिंह की रिश्तेदार है, मुन्चा सिंह जोधा सिंह का रिश्तेदार है। शम्मी के रहने के बारे में वे लोग जैसे ठीक समझेंगे करेंगे। वह उनकी समस्या है। उसे उसके लिए परेशान होने की क्या जरूरत है।

अगले दिन वे तीनों लारी द्वारा जालन्धर से बाबा बकाला के लिए रवाना हुए। सामान के नाम पर शम्मी के पास एक छोटा सा सूटकेस और एक बिस्तर था। लारी में वे तीनों साथ-साथ बैठे थे। खिडकी के पास शम्मी थी, बीच में मुन्चा सिंह था और उसके बगल में इन्द्र। मुन्चा सिंह की कोशिश थी कि इन्द्र सिंह शम्मी के साथ बैठे लेकिन इन्द्र इसके लिए राजी नही था। मन से कहीं चाहते हुए भी न मालूम वह कैसा संकोच अनुभव कर रहा था। लारी अपनी गति से चल रही थी। गत रात थोड़ी हल्की वर्षा हो जाने से मौसम कुछ शीतल व सुहावना हो गया था। शीतल पवन के झोंके मन को अच्छे लग रहे थे। रास्ते मे चारों ओर के दृश्य बड़े मोहक लग रहे थे। दूर-दूर तक फैले लहलहाते खेत, चलते हुए रहट, खेतो मे हल चलाते किसान, पोखरों मे मस्ती में नहाते पशु आदि, तरह-तरह के पेड़ और झाड़ियाँ, रास्ते में पड़ते छोटे-छोटे नाले व नहरें, ये सारे उपकरण देखने वालों के मन-प्राणों को पुलकित कर रहे थे। दोनों मित्र आपस मे अनेक विषयों पर बातें कर रहे थे। शम्मी प्रायः खामोश ही बैठी थी। पर इन्द्र को लग रहा था कि वह चुप रहते हुए भी उससे बहुत कुछ कहती जा रही है। शम्मी जब पलकें

उठा कर हल्के से मुसकरा कर उसकी ओर देखती थी तो उसे लगता था कि उसकी बाँकी निगाहें ही उसको कुछ कह गयी हैं, कुछ अनूठे से संकेत कर गयी हैं। उसने सुन रखा था कि आँखों की भी अपनी भाषा होती है, आँखें भी बोलती है, वे रोती हैं तो हँसती भी हैं। लड़कियों के मामले मे इन्द्र सिंह संकोची था। लेकिन आज उसके मन मे इच्छा उत्पन्न हो रही थी कि वह शम्मी से कोई न कोई बात करता रहे। और जब कभी वह उससे कोई बात पूछता था तो वह धीरे से मुसकरा कर शरमाकर थोड़े से शब्दों में ही उत्तर देती थी । यह यात्रा इन्द्र को बड़ी सुखद लग रही थी। आज शायद उसे पहली बार इस बात का एहसास हो रहा था कि किसी सुन्दर तरुणी के साथ सफर करने में कितना अच्छा लगता है। किसी हसीना के साथ सफर भी कितना हसीन हो जाता है।

लारी बाबा बकाला तक ही आती थी। आगे से उन्हें रिक्शा या ताँगे पर ही राणीपुर आना था। लेकिन अब आगे इन्द्र सिंह उस लड़की के साथ गाँव में पहुँचना नही चाहता था। उसे आशंका थी कि गाँव वाले उसे उस युवती के साथ देखकर मालूम नहीं क्या-क्या सोचने लगेंगे। उसके सुझाव पर सुच्चा और शम्मी एक ताँगे में बैठकर राणीपुर पहुँचे। इन्द्र सिंह बाद मे दूसरे ताँगे से गाँव पहुँचा।

सुच्चा सिंह ने रास्ते मे ही सोच लिया था कि वह शम्मी को साथ लेकर सीधा सरदार जोधा सिंह के घर पर ही पहुँचेगा। वहाँ घर में उस समय केवल औरतें ही होंगी, पुरुष तो रहट अथवा खेतों पर होंगे। शम्मी कुछ देर घर पर रहेगी और वह शेर सिंह व दौलत सिंह से मिलकर आगे के कार्यक्रम के बारे में बात कर लेगा। वह शम्मी को लेकर सीधा जोधासिंह के यहाँ पहुँचा। सुच्चा को तो घर की महिलाएँ अच्छी तरह से जानती थी। पर शम्मी को देखकर वे सोचने लगी कि यह कौन लड़की इसके साथ आयी है। वे यह भी जानती थी कि सुच्चा अभी कंवारा ही है, यह लड़की उसकी पत्नी तो हो नही सकती। खैर उनके पूछने पर सुच्चे ने उन्हें बताया कि वह उसकी दूर की रिश्तेदार है और इस समय बड़े कष्ट मे है। उस बेचारी का इस समय कोई नही है। उनकी सहायता करने के लिए, उसके भविष्य के बारे में सोचने के लिए ही वह उसे यहाँ लाया है। उसने जोधा सिंह की पत्नी जीत कौर को यह भी बताया कि शम्मी के बारे में उसने शेर सिंह व दौलत सिंह से बात कर रखी है और उन दोनों के सुझाव पर ही वह उसे यहाँ लाया है।। कुछ देर घर पर रुकने के बाद सुच्चा शेर सिंह व दौलत सिंह से मिलने रहट की ओर चला गया।

रहट पर शेर सिंह गाधी (गद्दी) पर बैठा बैलों को हांक रहा था। जोधा सिंह व दौलत सिंह वहाँ नहीं थे। वे बाप-बेटा बाग में कुछ नये पौधे लगवाने गये हुए थे। सुच्चा सिंह को जैसे ही शेर सिंह ने देखा वह तुरन्त गाधी से नीचे उतरा और आगे बढकर उसे अपनी बाँहों में ले लिया। सुच्चे के चेहरे की भाव-भंगिमा को देखकर वह समझ गया कि जिस काम को पूरा करने के लिए उन दोनों ने योजना बनाई थी उसकी शुरूआत शायद हो चुकी है। कुशलक्षेम पूछने के बाद उसने सीधा प्रश्न करते हुए कहा—कहो सुच्चा भाई, लगता है तुमने कुछ इन्तजाम कर दिया है।

—भई, तुम लोगों की बात को मैं कैसे टाल सकता हूँ। काम तो मुझे करना ही था। शम्मी को मैं यहाँ ले आया हूँ। वह इस समय घर पर है। आगे जो काम करना है पूरी तरह सोच-विचार कर करना होगा।

सुच्चे की बात सुनकर शेर सिंह गद्‌गद् हो उठा। उसने कहा—वाह भाई, तुमने तो कमाल कर दिखाया। वैसे हमें भरोसा भी था कि केवल तुम ही एक ऐसे आदमी हो जो इस तरह का काम पूरी जिम्मेदारी से कर सकते हो। अब रहा मसला शम्मी को ठहराने का। तो मेरा विचार है कि उसे अपने दूसरे मकान में ही रखा जाए। वहाँ उसके लिए अकेले रहना ठीक न होगा। मैं कोशिश करूँगा कि किसी भरोसे की नौकरानी या किसी ऐसी औरत को शम्मी के साथ रहने के लिए कहा जाए जो हमारे काम को आगे बढ़ाने में मदद दे सके।

—पर वह भरोसे की औरत कौन होगी ?

—सुच्चा सिंह, तुम उस बात की चिंता न करो। उसका इन्तजाम मैं कर लूंगा। उसके साथ हमे ऐसी औरत को रखना होगा जिस पर इन्द्र सिंह भी भरोसा कर सके, जो शम्मी और इन्द्र को एक-दूसरे के नजदीक लाने में सहायता कर सके। और मुझे यकीन है यह काम भी हो जाएगा। मैं वहाँ ऐसा मोहरा फिट करूँगा जिसकी मार से इन्द्र की व उसके खानदान की इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी।

शेर सिंह की समझ में नहीं आ रहा था कि शम्मी के साथ रहने के लिए किस औरत से कहा जाए। कुछ देर बाद वह अपने छोटे भाई दौलत सिंह से मिला और उसे बताया कि सुच्चासिंह एक लड़की को ले आया है और फिलहाल उसे घर पर ही रखा गया है। सुच्चा सिंह ने उसे शम्मी के बारे में बताया और तीनों कुछ देर तक सोचते-विचारते रहे कि आगे शम्मी को किस प्रकार की भूमिका निभानी होगी। जब उसके दूसरे मकान में रहने की बात चली

तो दौलत ने शेर सिंह से कहा—तुम इस बात की चिन्ता न करो। शम्मी के साथ बन्ती रहेगी। बन्ती को मैं इस बात के लिए तैयार कर लूंगा।

शेर सिंह को लगा कि बन्ती को वहाँ रखना ही ठीक होगा। वह इस काम के लिए उपयुक्त औरत है। उसने दौलत से कहा—हाँ बन्ती ही ठीक रहेगी। तुम आज ही उससे बात पक्की कर लो और उसको भेजकर उस मकान की सफाई आदि भी करवा लो।

बन्ती का मायका राणीपुर में ही था। उसकी उम्र इस समय तीस-बत्तीस वर्ष के आसपास थी। दस वर्ष पहले उसका विवाह हुआ था। उसकी ससुराल अजनाला में थी। उसके विवाह के कोई दो वर्ष बाद उसका पति अजनाला छोड़कर कहीं बाहर चला गया था। पर वह कहाँ गया इसका वर्षों तक कोई पता न चल पाया। बन्ती को विश्वास हो गया था कि अब वह कभी वापस नहीं आएगा। उसे लगता था कि उसके पति ने किसी बड़े शहर में जाकर किसी मिल-कारखाने में नौकरी कर ली होगी और सम्भव है उसने कोई दूसरी औरत भी रख ली हो। बन्ती बहुत छोटी थी कि उसके पिता की मृत्यु हो गयी थी। बन्ती के विवाह के कोई एक वर्ष बाद उसकी माँ का भी निधन हो गया था। अब वह राणीपुर में अकेली ही रहती थी। गाँव की बेसहारा लड़की होने के कारण लोगों की उसके साथ हमदर्दी थी और लोग प्रायः उसकी सहायता करते रहते थे। वह आठ-दस घरों में बर्तन आदि माँजकर अपना गुजारा करती थी। स्वभाव से वह चंचल और खुशदिल थी। हर किसी से हँस खेलकर बात कर लेती थी। शक्ल-सूरत भी ठीक ही थी।

उसी दिन शाम को शेर सिंह व दौलत सिंह बन्ती के मकान पर जाकर उससे मिले और उसे पूरी बात समझाई। उस मकान में रहकर उसे क्या कुछ करना होगा इसकी रूपरेखा भी उसे समझा दी। उन्होंने उसे इस बात का आश्वासन भी दिया कि वे हर प्रकार से उसकी सहायता करते रहेंगे और उसे कभी किसी बात की कमी का एहसास नहीं होने देंगे। बन्ती को क्या एतराज हो सकता था। अभी तक वह एक पुराने कच्चे कमरे में रहती थी। अब रहने को उसे पक्के मकान में जगह मिल रही थी। वहाँ रहने से सरदार जोधा सिंह के परिवार वाले उसका एहसान मानेंगे। अभी तक वह अकेली रह रही थी। उस मकान में उसे एक दूसरी औरत का साथ मिल जाएगा। उसने दोनों भाईयों को अपनी सहमति दे दी। उसी रात को ही वह शम्मी को साथ लेकर उस मकान में पहुँच गयी। शेर सिंह, दौलत और सुच्चा भी उस मकान पर जाकर वहाँ की व्यवस्था ठीक करवा आए।

उधर जोधा सिंह की पत्नी बात को अपने तक न रख पायी। उसी रात को ही उसने पति को बता दिया कि सुच्चा सिंह किसी लड़की को यहाँ लाया है और इस समय उसे उसने हमारे दूसरे मकान में ठहराया है। पत्नी की बात सुनकर जोधा सिंह का माथा ठनका। वह सुच्चा सिंह से भली भाँति परिचित था। उसका चरित्र कैसा है और वह किस प्रकार का धंधा करता है इसकी कुछ जानकारी भी उसे थी। वह समझ नही पाया कि वह उस लड़की को यहाँ क्यों लाया है। वह लड़की कहाँ की रहने वाली है, किस खानदान की है, उसका सुच्चे से क्या सम्बन्ध है, यह सब जानने के लिए वह उत्सुक हो रहा था। उसे यह भी मालूम था कि उसके अपने दोनो बेटे भी कैसे स्वभाव और कैसे चरित्र के हैं। औरत और शराब से उन दोनो को कोई परहेज़ नही। उम्र के लिहाज से अब तक शेरसिंह का ब्याह हो जाना चाहिए था। पर जैसा उसका चरित्र है उसको जानते हुए कौन प्रतिष्ठित पिता अपनी कन्या का उससे विवाह करना चाहेगा। दो-एक परिवारों से उसके लिए जो रिश्ते आये वे परिवार उसके अपने परिवार के स्तर से कही बहुत नीचे थे। सुच्चा सिंह जो लड़की लाया है उसके बारे में सोच-सोच कर वह चिन्तित हो रहा था।

जोधा सिंह की भंगिमा को देखकर उसकी पत्नी ने कहा—शेरे के भाया, तुम बिना मतलब चिन्ता कर रहे हो। हमें उस लड़की से क्या मतलब ? उसे सुच्चा सिंह लाया है, वह ही उसके बारे में जाने। वह हमारे इस मकान मे हम लोगो के साथ तो रहेगी नही। वहाँ अलग रहती है तो रहे। हमें उससे क्या मतलब ? फिर वह जिन्दगी भर तो यहाँ रहेगी नही। कुछ दिनों बाद सुच्चा उसे यहाँ से ले ही जाएगा।

जोधा सिंह को पत्नी के शब्दों से कोई सान्त्वना नही मिली। बल्कि उसकी बात उसे मूर्खतापूर्ण लगी। उसने कहा—शेरे की बेबे, तुम एकदम मूर्ख हो। तुम्हारी मोटी अकल इस बात को दूर तक नही समझ पाएगी। आखिर औरत हो न और औरत की बुद्धि तो उसकी ऐड़ी मे होती है। देख लेना यह हराम-जादी जो आयी है कोई न कोई गुल खिलाकर ही रहेगी। तुम्हारे दोनो बेटे तो पहले ही चौपट हैं और यह रांड उनकी रही-सही इज्जत को भी मिट्टी में मिला देगी। इन तीनों उल्लू के पट्ठों ने उसे अलग मकान मे इसीलिए रखा हो है कि जब चाहे उसमे मुँह काला कर ले। उन्हे मेरी और मेरे खानदान की इज्जत और मर्यादा का कहाँ ध्यान है।

—लगता है तुम ठीक ही कह रहे हो। देखने पर वह लड़की मुझे कुछ ऐसी-वैसी ही लगी है। अच्छे घरों की लड़कियों में जो बातें होती हैं वे मुझे उसमें

नज़र नहीं आयी। उसके बात करने का ढंग और उसकी चाल-ढाल मुझे कुछ अजीब सी लगी है। लेकिन अब क्या किया जा सकता है। उसे तो उन्होंने दूसरे मकान में टिका दिया है। वह कमीनी अपना बक्सा और बिस्तरा भी वहाँ ले गयी है। जाते-जाते शेरा तो यह भी कह गया था कि दो-एक दिनों तक उसका खाना भी यहाँ हमारे घर से ही जाया करेगा। बन्ती आकर ले जाया करेगी।

—कौन बन्ती, वही जो लोगों के यहाँ बर्तन आदि माँजती है। वह क्यों ले जाएगी ?

—बन्ती अब उस लड़की के साथ ही रहा करेगी। वह लड़की अकेली न रहे इसलिए बन्ती को उसके साथ रहने के लिए शेरे और सुच्चे ने कहा है। और वह खुशी से वहाँ रहने के लिए तैयार हो गयी है। अब मेरा तो यह कहना है कि तुम सुच्चे से बात करके असलियत को मालूम करो। कहीं हम लोग किसी मुसीबत में न फँस जाएँ।

—शेरे की वेबे, इस तरह की खुराफातें मैं अपने मकान पर नहीं होने दूंगा। और मेरे अपने ही लडके उनमें हिस्सा लें यह मैं कैसे बर्दाश्त कर सकता हूँ। आज तो इस समय बहुत देर हो गयी है। मैं कल सुबह ही उन लोगों से बात करके सच्चाई को मालूम करूंगा। सुच्चे से मैं साफ कह दूंगा कि वह उस हरामजादी को वहाँ से बल्कि इस गांव से ही कहीं और ले जाए। वह औरत किसी अच्छे घर की नहीं हो सकती।

• •

बीस

रात को जब दौलत सिंह घर पर आया तो उसकी माँ ने उसे बताया कि उसके बाप को पूरी बात की जानकारी हो गयी है। उसे मालूम हो गया है कि सुच्चा सिंह बाहर से कोई लडकी लाया है और वह लड़की भी ऐसी-वैसी ही है। वह किसी भले घर की औरत नहीं लगती। उसने उसे यह भी बताया कि उसका बाप इस बात को लेकर उन लोगों से बहुत नाराज है और कल सुबह वह इस बारे में उन लोगों से पूछताछ भी करेगा।

माँ ने जो कुछ दौलत से कहा उसका उल्लेख उसने उसी समय अपने भाई

शेर सिंह और मुच्चा सिंह से ;कर दिया। बात बाप तक पहुँच गयी है यह जानकर उन तीनों को कुछ चिन्ता सी होने लगी। अब वे उपाय सोचने लगे कि बाप के पूछने पर वे लोग उसे क्या उत्तर देंगे। कोई और बात होती तो शायद वे इतने परेशान न होते। लेकिन यह मामला एक लड़की के बारे में था। किसी लड़की के बारे में बाप और बेटों में बातचीत हो बहस हो यह उन्हें किसी भी तरह से अच्छा नही लग रहा था। वे जोधा सिंह को कैसे बताते कि लड़की किस मतलब से गाँव में लायी गयी है और उसे अपने ही दूसरे मकान पर क्यो ठहराया गया है।

शेर सिंह, दौलत और मुच्चा इस बारे में बहुत देर तक सोच-विचार करते रहे। आखिर उन्हें एक उपाय सूझा। तीनों ने यह निर्णय लिया कि इस बात का पूरा विवरण और जो योजना उनके दिमाग मे है वह कल सुबह ही सरदार शंगारा सिंह को बताएँगे और उससे कहेंगे कि वह उनके बाप को भली प्रकार से समझा दे। शंगारा सिंह के स्वभाव से वे अच्छी तरह से परिचित थे। उन्हें मालूम था कि जोधा सिंह और शंगारा सिंह की खूब पटती है और दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह से मानते हैं। शेर सिंह व दौलत सिंह शगारा सिह को चाचा कहकर बुलाते थे। शंगारा उम्र के हिसाब से उन दोनों भाइयों से बहुत बड़ा था। वह उनके बाप की उम्र का था। पर स्वभाव की दृष्टि से वह लड़कों में लड़का और बुजुर्गों मे बुजुर्ग था। वह प्रायः हर किसी विषय पर उन दोनों से बातचीत कर लेता था। शेर और दौलत को विश्वास था कि शगारा उनके बाप को अच्छी तरह से पूरी योजना के सम्बन्ध मे समझा देगा। उसके द्वारा पूरी असलियत जान लेने पर उनका बाप उन पर नहीं बिगड़ेगा बल्कि मन ही मन खुश होगा। वह जानते थे कि जोधा सिंह के मन मे दीवान चन्द व उसके खानदान के लिए कितनी गहरी नफरत है। और यह जो षड्यंत्र रचा गया है उसका मकसद दीवान चन्द के खानदान को नीचा दिखाना ही है।

वे तीनों जोधा सिंह की निगाह से बचते रहे। और अगले दिन सूर्य निकलने से पहले ही शंगारा सिंह से मिलने उसके रहट पर पहुँच गए। तीनों को एक साथ देखकर शंगारा सिंह तनिक चकित सा हुआ। कुछ देर परस्पर कुशलक्षेम पूछने के बाद वे उसे अलग से एक खेत में ले गए और वहाँ एकान्त मे उसे पूरी योजना से अवगत करा दिया। शंगरा स्वभाव से शरारती और खुराफाती था। उसे उन लड़कों की योजना पसन्द आयी और वह समझ गया कि अगर उनका यह षड्यंत्र कामयाब हो,गया तो दीवान चन्द के खानदान की मान-मर्यादा मि े में मिल जाएगी। कोई भी भला आदमी उससे रिश्ता-नाता

जोड़ना पसन्द नही करेगा। उसने उन तीनों को विश्वास दिलाया कि वे किसी बात की चिन्ता न करें। बल्कि उसने उन लोगों की पीठ ठोकते हुए उन्हें इस बात का भरोसा भी दिलाया कि उनकी योजना जरूर कामयाब होगी और उससे व जोधा सिंह से भी जहाँ तक सम्भव होगा वे उनकी सहायता करते रहेंगे। वह जोधा सिंह को पूरी बात अच्छी तरह से समझा देगा।

कोई दो घटे बाद शंगारा सिंह जोधा सिंह से बात करने उसके पास पहुँचा। जोधा सिंह का चेहरा देखकर ही शंगारा समझ गया कि वह कुछ परेशान सा है। जरूर घर में कोई बात हुई होगी जिसके कारण वह कुछ दुखी सा दिखाई पड रहा है। फिर बात को शुरू करते हुए उसने जोधा सिंह से कहा—दीवान चन्द के खिलाफ तुम आज तक अपने भीतर ही भीतर जहर घोलते रहे लेकिन उसका कुछ न बिगाड़ पाए। अब देखना तुम्हारे लड़के वह काम वह करिश्मा कर दिखाएँगे जिसके बारे मे तुमने सपने में भी न सोचा होगा। तुम्हारे मुकाबले दीवान चन्द की इस गाँव मे क्या इज्जत है। पर जो थोड़ी-बहुत है वह भी अब जल्दी ही धूल मे मिलने वाली है। और इस काम को पूरा करने का सेहरा तुम्हारे अपने लड़कों के सिरों पर ही होगा।

—शंगारा सिंह ! उन हरामजादों का मेरे सामने नाम न लो। तुम नही जानते कि वे कितने नीच और मूर्ख हैं। उस साले हरामी सुच्चा सिंह से मिलकर मालूम नही कहाँ से कोई लड़की उड़ा लाए हैं। और लड़की भी कोई साधारण लडकी नही लगती बल्कि बड़ी चालबाज है। मैंने उसे अभी तक देखा नहीं है। शेरे की बेबे ने मुझे बताया कि वह लड़की ऐसी-वैसी ही है। और उस पर भी दुख की बात यह है कि इन नालायक लड़कों ने उसे अपने ही दूसरे मकान पर ठहराया है।

—उन्होंने जो किया है ठीक ही किया है। उसे वहाँ न ठहराते तो क्या यहाँ तुम्हारे पास रखते। उस लड़की को वे लोग अपनी मौज-मस्ती के लिए नहीं लाए। उसको यहाँ लाने का उनका कोई दूसरा मकसद है। वह लड़की ही दीवान चन्द के खानदान की इज्जत पर काला रंग पोतने वाली है।

—वह लड़की उस बुड्ढे दीवान चन्द का क्या बिगाड़ लेगी। दीवान बड़ा चालाक व मक्कार है। वे आज तक कभी किसी के झांसे में नही फँस पाया। और तुम समझते हो कि यह कल की लौंडिया उसका कुछ बिगाड पाने मे सफल होगी। ये उल्लू के पट्ठे अगर कोई भी इस तरह का काम करना चाहते थे तो कम से कम मुझसे पहले पूछ तो लिया होता। शगारे, हमने ये बाल धूप में

सफेद नही किये । हमने दुनिया को देखा है समझा है, हमारे पास तरह-तरह के अनुभव हैं ।

—ये सब बेकार की बातें हैं । तुम आज तक अपने उन अनुभवों से क्या कर पाए ? पर याद रखो जो तुम नही कर पाए, अब गुरु महाराज ने चाहा तो वह तुम्हारे बेटे करके दिखाएंगे । जोधा सिंह ! वह लड़की दीवान चन्द के लिए नही लायी गयी बल्कि वह उसके लड़के इन्द्र सिह को अपने जाल में फँसाने वाली है । सुच्चे ने मुझे बताया है कि इन्द्र तो उसमें दिलचस्पी लेने लगा है । देखना वह दिन दूर नही जब वह उस हसीन छोकरी की काली जुल्फों के जाल मे पूरी तरह फँस चुका होगा । तुम भी जब उस लौंडिया की झलक पाओगे तो समझ जाओगे कि मैंने जो कहा है वह कहाँ तक सच होगा ।

—शंगारा सिंह ! वह लड़की है कौन ? सुच्चा सिंह उसे कहाँ से लाया है और उसका उससे क्या सम्बन्ध है ?

वैसे तो सुच्चे ने इन्द्र को यही बताया है कि वह लड़की जिसका नाम शम्मी है उसकी रिश्ते में बुआ की लड़की है । पर असलियत तो यह नही है । हालांकि सुच्चे ने मुझे भी साफ तो नही बताया पर लगता है वह लड़की कोई तवायफ ही होगी या फिर किसी जरूरतमंद गरीब परिवार की लड़की होगी जिसे धन देने का वादा करके यहाँ लाया गया है । भाई, मुझे तो यकीन है कि इन लड़कों को अपने मकसद में कामयाबी मिलेगी । रही बात तुमसे पहले से सलाह करने की तो जोधा सिंह इस मामले में बेटे बाप से क्या सलाह लेते । किसी लड़की को फाँसने की बात कोई पुत्र अपने पिता से कैसे कर सकता है । हाँ वे लोग मुझ से बहुत खुले हुए है और इसी कारण उन्होंने मुझ पर विश्वास करके सारी योजना मुझे समझा दी है । अब तुम उन लोगों से उलझने की कोशिश न करना । वे जो करने जा रहे है ठीक ही होगा । देखना जल्दी ही तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जाएगा ।

—पर शंगारा सिंह, इन्द्र बड़ा घाघ है । वह जाल में फँस जाएगा इस बारे मे मुझे शक है । वैसे भी सुना है कि औरतो में वह कोई खास दिलचस्पी नही लेता । हाँ यहाँ जरूर है कि आदमी का मन बदलते देर नही लगती । खूबसूरत औरत को देखकर बड़े-बड़ो के मन डोल जाते है । कितने ही पहुँचे हुए सन्त-महात्मा तक औरतों की अदाओं से न बच पाए । यह इन्द्र तो मामूली सा लौंडा है । अगर लड़कों की योजना कामयाब हो गयी तो सचमुच मजा आ जाएगा । खैर मैं उन लोगो के मामले में कोई दखल नही दूंगा । पर तुम उन लोगों से मिलते रहना, उन्हें सही रास्ता बताते रहना और अगर उन्हे इस

काम को पूरा करने के लिए रुपयों-पैसे की जरूरत हो तो मुझे बता देना। इस मामले मे मैं हर तरह से उनकी मदद करने को तैयार रहूँगा। अब इतना समझ लो कि इस पूरी योजना को सरपरस्ती तुम्हे ही देनी है। मैं किसी भी तरह सामने नही आऊँगा।

—जोधा सिंह ! मुझे खुशी है और तसल्ली है कि तुम पूरे मामले को ठीक तरह से समझ गये हो। अब आगे क्या होगा उसकी तुम चिन्ता न करो। हाँ अभी इस बात का घर में मेरा मतलब है शेर की माँ से कोई जिक्र न करना। जानते हो औरतों के पेट में ऐसी बातें रह नही पातीं। वह कही न कही उन्हें उगल देती हैं। अभी मैंने उस लड़की को नही देखा है। पर आज ही उससे मिलने की कोशिश करूँगा।

—भाई शगारा सिंह ! मज़ा तो तब है जब यह लड़की उस इन्द्र के बच्चे को अपने चंगुल मे पूरी तरह फांस ले। और अगर ऐसा हो गया तो देखना किसी न किसी दिन बाप-बेटे में अर्थात दीवान चन्द्र व इन्द्र मे आपस में लड़ाई-झगड़ा होकर रहेगा। इश्क का भूत जिस पर सवार हो जाता है वह अपनी राह के किसी भी रोड़े को बर्दाश्त नही कर पाता। तब यह बेटा इन्द्र अपने बाप को कैसे बर्दाश्त करेगा। वाह ! असली मज़ा तो तब आएगा। मुझे तो लगता है कि यह लौंडिया जरूर अपना करिश्मा दिखाएगी। उसकी जवानी से यह हरामी इन्द्र जरूर घायल हो जाएगा। शेरे की बेबे बता रही थी कि यह लड़की, क्या नाम है उसका, हाँ याद आया शम्मी, बड़ी मोहक व सुन्दर है। उसका शरीर बड़ा सुगठित, गोरा और चिकना है, छाती पर यौवन की बहार है मस्ती है, वह मुँह से कम और अपनी सुरमई आँखों से ज्यादा बातें करती है। घरेलू लड़की तो वह किसी भी तरह नही लगती, बिना किसी झिझक के बातें करती है, उसकी चटक-मटक बड़ी अनोखी है। अब तुम ही बताओ क्या कोई नौजवान लड़का ऐसी हसीना के चंगुल से बच सकता है। तुम्हारी सरपरस्ती में रहकर यह शम्मी जरूर अपने इरादे बल्कि यह कहना चाहिए कि हमारे इरादे को पूरा करेगी।

'सरपरस्ती' का शब्द सुनकर शगारा सिंह को एक प्रकार के भय की अनुभूति होने लगी थी। वह जानता था कि अगर कही दीवान चन्द या उसके लड़कों को पता चल गया कि इस षडयन्त्र मे शगारा सिंह भी है तो वे उसे कभी नही बख्शेंगे, वे उससे भी बदला लेकर रहेगे। वह नही चाहता था कि वह सीधे रूप में उन दो सांड़ों की टक्कर में जोधा सिंह सांड़ का पक्षधर बनकर सामने आए। इन्द्र सिंह की शक्ति का उसे आभास था। जगीर सिंह

जैसे नामी गुण्डे पहलवान की उसने कैसे मिट्टी पलीद की थी इसकी जानकारी उसे भली प्रकार से थी। वह नहीं चाहता था कि जगीर सिंह की तरह इन्द्र कभी उसकी भी चटनी बनाए। इसी एहसास से वशीभूत होकर उसने जोधा सिंह से कहा—जोधा सिंह! मैं अपनी तरफ से तुम्हारे बेटों की मदद करूँगा। पर यह सरपरस्ती का भार मेरे ऊपर न डालो। और न ही उन लोगों को बताना कि मैं उनका सरपरस्त हूँ। यह तो मानते ही हो कि जो कुछ वे करने वाले हैं वह काम आसान व सीधा नहीं है। उसको पूरी करने मे बडी सावधानी वरतनी होगी, हर कदम फूंक-फूंक कर रखना होगा। दुश्मनो को यह कभी भी पता नही चलना चाहिये कि इस मामले में तुम्हारा या मेरा हाथ है। अगर कभी बात निकले भी तो लोगो को यही लगे कि करने-कराने वाले लड़के ही थे, इसमें बड़ों का कही कोई दखल नहीं था।

शंगारा सिंह ने जो चेतावनी दी थी उसका मतलब जोधा सिंह समझ गया था। उसने उसे विश्वास दिला दिया कि उसका नाम कही सामने नहीं आएगा। वह उसका दोस्त है और वह कभी उसे किसी मामले मे फँसने नहीं देगा। वे दोनों जो कुछ करेंगे गुप्त रूप में ही करेंगे। वे इस षड्यन्त्र मे कभी भी सामने नहीं आएँगे। उसने शंगारा सिंह को एक बार फिर आश्वासन देते हुए कहा—तुम बिल्कुल बेफिक्र रहो। तुम पर कोई आँच नही आएगी। और हाँ आज ही हमारे दूसरे मकान पर जाकर एक नजर उस छोकरी को तो जरूर देख आओ, उससे कुछ बातचीत भी करो और फिर आगे जो कुछ होगा देखा जाएगा।

जोधा सिंह से बातचीत करने के बाद शंगारा सिंह अपने काम पर चला गया। लेकिन वह अपने दिमाग में कुछ अजीब तरह की उधेड़बुन महसूस कर रहा था। वह सोच रहा था कि वह शम्मी के यहाँ जाकर उससे क्या कहेगा, क्या-क्या बातें करेगा। कभी उसके मन में यह विचार भी आता कि उसका वहाँ जाना कहीं अनुचित तो न होगा। वह उस मकान मे अकेली रहती है, जवान-जहान है, अगर किसी ने उसे उसके यहाँ जाते देख लिया तो क्या सोचेगा। लेकिन शगारा सिंह के मन में यह चाह भी करवटें ले रही थी कि वह जल्दी से जल्दी उस हसीना का हुस्न तो देखे। उस लड़की के बारे में जो कुछ जोधा सिंह की औरत ने कहा है वह कहाँ तक सही है। सोच-विचार के बाद उसने निश्चय किया कि अभी थोडी देर बाद यहाँ का काम निपटाकर वह शम्मी को मिलने आएगा। वह दोपहर में ही उसके यहाँ पहुँचेगा। उस समय

शेरा, दौलत आदि वहाँ न होंगे। वे दोनों उस समय बाहर खेतों में या रहट पर होंगे। ऐसे में वह अकेला ही उस लड़की से बातें कर पाएगा।

वह दोपहर को ही घर लौट आया। घर पहुँचकर उसने कुरता और तहमद बदला, कलफ लगी दूसरी पगड़ी बाँधी और दाढ़ी-मूँछों को तनिक सँवार कर जाने के लिये तैयार हो गया। उस समय उसकी पत्नी घर पर नही थी। वही पड़ोस मे गयी हुई थी। शंगारा सिंह की बेटी जस्सी तनिक हैरान थी कि उसका बाप आज दोपहर में ही घर क्यो आ गया है और इस समय कपड़े आदि बदल कर कहाँ जाने वाला है। लेकिन वह इस बारे में अपने पिता से कुछ न पूछ पायी। वह जानती थी कि ऐसे मौके पर पूछने या टोकने पर वह बहुत बुरा मान जाता है, डाँटने-फटकारने लगता है। वह चुप ही रही। उसने मन में अनुमान लगाया कि या तो वह कहीं पास के गाँव में किसी काम से जा रहा है या हो सकता है कि स्कूल में कोई मीटिंग होने वाली हो। शंगारा तैयार होकर और हाथ मे चाँदी की मूठ वाली छड़ी लेकर मन मे गुरु महाराज का नाम लेकर जोधा सिंह के दूसरे मकान की ओर चल पड़ा।

दोपहर का समय था। वह गली जिसमें जोधा सिंह का मकान था लगभग सुनसान थी। लोग अपने-अपने घरों के अन्दर थे। जब वह मकान के दरवाजे पर पहुँचा तो भीतर से साँकल लगी थी। उसने इधर-उधर देखा और फिर धीरे से दरवाजे को थपथपाया। कुछ ही क्षणों बाद दरवाजा खुला। शंगारा सिंह के सामने वह हसीना खड़ी थी जिसे देखने व बातें करने वह आया था। शम्मी की पहली की झलक देखकर उसको लगा कि जोधा सिंह की बीवी ने इस लड़की के बारे में जो कुछ कहा था सही ही कहा था। सचमुच वह उसे बहुत सुन्दर लग रही थी। उसे देखकर उस युवती ने धीरे से अपना सिर ढँक लिया और बोली—आप, आपको किससे मिलना है?

—बेटी! मेरा नाम शंगारा सिंह है। सरदार जोधा सिंह मेरा जिगरी दोस्त है, दोस्त क्या है बल्कि भाई है।

—अच्छा-अच्छा आप आइये, बैठें।

—बेटी! मुझे जोधा सिंह ने ही भेजा है। उसने मुझसे कहा है कि मैं तुम्हारे रहने का इन्तजाम देख लूँ। बेटी, किसी तरह की कोई दिक्कत तो नही। जिस चीज की जरूरत पडे तो बताने में कोई संकोच न करना।

अब कमरे मे पलंग पर शंगारा सिंह बैठा हुआ था। शम्मी उसके पास रखी शीशम की रंगीन पीढ़ी पर बैठी थी। शंगारे की सारी उम्र तो खेत-

खलिहानों व चौपाल में गपबाजी करने में गुजरी थी। इश्क सम्बन्धी बातें वह करता तो बहुत था पर अपनी लम्बी जिन्दगी में उसने इश्क केवल अपनी सरल स्वभाव वाली पत्नी से ही किया था। उसकी अपनी शक्ल-सूरत भी कोई ऐसी खास नहीं थी कि कोई औरत उससे इश्कबाज़ी कर पाती। आज सुन्दरता की मूर्ति उसकी आँखों के सामने शोभायमान थी। इतने पास से उस मस्त भरपूर युवती को देखकर उसकी बुढ़ापे के कारण कमजोर आँखों में भी एक प्रकार की चमक सी पैदा हो गयी। उसे अब अपने दिल की धक-धक सुनाई पड़ने लगी थी। उसका मन चाह रहा था कि वह उस तरुणी को पीढ़ी से उठाकर पलंग पर अपने पहलू में बैठा ले, उसको अपने सीने से लगा ले, उससे जी भरकर प्यार करे। लेकिन वह ऐसा न कर पाया। उसमें इस प्रकार का कदम उठाने के लिये न तो हिम्मत थी और न ही परिस्थितियाँ उसे इस बात की अनुमति देती थी।

वह वह बैठा हुआ निगाह चुरा-चुराकर शम्मी की कागजी बादाम सरीखी बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखों और उसकी चुस्त कसी हुई देह को देखकर खुश हो रहा था। वह समझ नही पा रहा था कि बात कहाँ से शुरू करे क्या कहे। आखिर कुछ क्षण चुप रहने के बाद हाथ में ली छड़ी की चाँदी की मूठ पर अपना दाहिना हाथ फेरते हुए बोला—हमने शेर और दौलत को समझा दिया है कि वे हर तरह से तेरा ख्याल रखेंगे, तुम्हें यहाँ किसी भी तरह की परेशानी न होगी। पर बेटी, इतना ध्यान रखना कि यह गाँव है, यहाँ के कुछ अपने रीति-रिवाज हैं। जिस प्रकार यहाँ की दूसरी औरतें रहती है, मेरा मतलब है कि जिस तरह के कपडे-लत्ते वे पहनती हैं, जिस प्रकार आपस में उठती-बैठती है तुम भी वैसे ही रहना-करना।

—जी, मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूँगी और मेरा विचार है कि इस मामले मे आप लोगों को कोई शिकायत नहीं होगी। फिर आप जैसे बुजुर्ग जब मेरे साथ हैं तो मैं कोई गलती कैसे कर पाऊँगी। आप तो मुझे रास्ता दिखाते ही रहेंगे।

—बिल्कुल! हम तो हर वक्त तुम्हारे पास ही है। यही बात तो मैं तुम्हें बताने आया हूँ। तुम हमे गैर न समझना बल्कि बिल्कुल अपना ही मानकर हमसे सलाह लेते रहना। वैसे मै कभी-कभी तुम्हारे पास आता रहूँगा। पर फिर भी कभी किसी चीज की जरूरत पड़े तो शेरे या दौलत से कहलवा देना।

—ठीक है। मुझे तो आप जैसे बुजुर्ग का बहुत सहारा रहेगा। अगर आपका

आर्शीवाद मेरे साथ रहा तो सभी काम ठीक तरह से होंगे। बस आप दया-दृष्टि बनाए रखें और मेरे सिर पर मेरी पीठ पर हाथ रखे रहें।

शम्मी के ये गुदगुदाते शब्द सुनकर शंगारा सिंह का मन नाचने लगा। सहसा उसका जी चाहा कि वह उसकी घनेरी जुल्फों पर, भरी-चिकनी पीठ पर हाथ फेरकर उसे आशीष दे, उसकी कोमल देह का सुखद-स्पर्श महसूस करे। पर फिर संकोच ने उसके हाथों को बांध दिया। उसका आगे बढ़ता हुआ हाथ वहीं रुक गया। फिर कुछ पल चुप रहने के बाद वह पलंग से उठा और बोला—अच्छा बेटी, अब मैं चलता हूँ। तुम किसी बात की चिन्ता न करना। यहाँ तुम्हारा हर तरह से ध्यान रखा जाएगा। मैं भी कभी-कभी तुम्हें मिलने यहाँ आता रहूँगा। और इतना कहकर दरवाज़े की ओर बढ़ गया। शम्मी भी उसके साथ दरवाज़े तक आयी। और जब वह जाने को हुआ तो शम्मी ने हल्के से मुस्कराकर तनिक शरमाकर उसे नमस्कार किया। अब शंगारा सिंह के लिये उचित मौका था। उसने तुरन्त उसके सिर पर उसकी पीठ पर हाथ फेरकर उसे आर्शीवाद दिया और फिर गली के दोनों सिरों पर निगाह डाल कर बाहर निकल गया।

• •

इक्कीस

हरनाम सिंह के कमरे की दीवारें पूरी तरह बन चुकी थीं। दरवाज़े और खिड़की की चौखट भी लग चुकी थी। बढ़ई गंगासिंह छत की कड़ियाँ बना चुका था और अब दरवाज़े और खिड़की के पल्ले बनाने शेष थे।

उस दिन इतवार की छुट्टी थी। हरनाम सिंह घर पर ही बढ़ई के काम को देख रहा था। आंगन की मुंडेर के पास बैठा बढ़ई गंगासिंह दरवाज़े का पल्ला बना रहा था। हरनाम उसके पास स्टूल पर बैठा उस से बातें कर रहा था। उम्र के लिहाज से अब गंगासिंह पचास के पेटे में आ चुका था। उसका शरीर दुबला व लम्बा था। थोड़ा झुककर चलने की उसकी आदत थी। सिर पर ढीली-ढीली नीली पगड़ी रहती थी। पर काम करते समय वह प्रायः उसे उतार कर पास रख लेता था। तब पता चलता था कि उसका सिर पूरी तरह गंजा हो चुका है। केवल गर्दन के आसपास थोड़े से सफेद बाल दिखाई पड़ते। थोड़े पिचके हुये गालों के नीचे केवल ठुड्डी पर सफेद बालों का एक छोटा सा

गुच्छा था। भीतर धँसी छोटी-छोटी आँखों पर मोटे शीशे की ऐनक रहती थी। ऐनक की एक कमानी मालूम नही कब टूटी थी और उसकी जगह काला डोरा बँधा रहता जिसे वह कान पर लपेटे रहता। गाढ़े का मट-मैला कुरता और तहमद ही वह हमेशा पहने रहता। काम करते हुये हर दो-चार मिनट के बाद तहमद में हाथ डालकर अपने फोते को खुजलाना उसकी आदत बन चुकी थी। इस हरकत के लिये अनेक लोग उसे टोक भी चुके थे पर वह मजबूर था।

गंगासिह अपने काम में खूब माहिर था। जो भी काम करता बडी सफाई और लगन से करता। कोई भी उसे काम को जल्दी निपटाने के लिये न कहता। लोग जानते थे कि ऐसा कहने पर उसका वही पुराना जवाब होगा—भई, काम करूँगा तो अपनी मर्जी से और पूरा वक्त लेकर, चालू काम मैं कर नही सकता, हाँ काम से कोई शिकायत हो तो मेरा कान पकड़ लेना, और बहुत तौली (जल्दी) मे हो तो नत्थे तरखान के पास चले जाओ, खड़े-खडे बना देगा, पर बाद में मुँह लटकाकर मेरे पास न आना। हरनाम सिंह गंगा सिंह के काम व उसके स्वभाव से भली प्रकार से परिचित था। वह उसे कोई ऐसी बात नही कहता था जिस से वह नाराज़ हो जाए और उठकर चल दे। बल्कि वह उसको दिन में एक-दो बार कुछ न कुछ खाने-पीने को भी देता रहता। कभी शर्बत तो कभी चाय का गिलास।

पल्ले का जो रूप निकल रहा था उसे देखकर हरनाम मन ही मन खुश हो रहा था। लाजो भी उसकी कारीगरी की तारीफ कर रही थी। गंगा सिंह पल्ले पर एक-एक बालिश्त की दूरी पर पीतल के छोटे-छोटे फूल जड़ रहा था। पल्ले पर कुछ वैसा ही निखार आता जा रहा था जैसे पल्ले चुन्नी शाह के घर मे लगे हुए हैं। पल्ले के रूप को देखते हुए हरनाम ने उस से कहा—गंगा सिंह ! यह मानना पडेगा कि तुम्हारे हाथ में सफाई बहुत है। भाई, कमरा शुरू करते वक्त ही मैंने सोच लिया था कि लकड़ी का सारा काम तुमसे ही करवाऊँगा। पता नही किस उस्ताद से तुमने यह काम सीखा है, आफरीन है तुम्हारे उस्ताद की।

अपने उस्ताद की तारीफ सुनकर गंगा सिंह के कमज़ोर मुख पर हर्ष व गर्व की एक लहर सी नाच उठी। उसने काम में लगे अपने हाथों को कुछ क्षणों के लिये रोककर कहा—सरदार हरनाम सिंह ! मेरा उस्ताद बाप लाभ सिंह ही था। उसी ने मुझे यह तरखान (बढई) का प था। शायद आपको पता न हो कि मेरा बापू अपने वक्त

कारीगर था। मुल्क के बटवारे से पहले लाहौर के अनारकली बाजार में एक फर्म थी 'नेशनल फर्नीचर हाउस'। मेरा बापू वहाँ ही काम करता था। उस जमाने में उसे सौ रुपये माहवार तनखा मिलती थी। मैंने भी वहाँ चार-पांच साल काम किया था। बटवारे के समय मेरी उमर उन्नीस-बीस साल की रही होगी।

—तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम लाहौरिये हो ?

—अब क्या लाहौरिये ! हाँ कभी था जब वहाँ रहता था। पर एक बात है हरनाम सिंह ! आज भी जब कोई लाहौर का नाम लेता है तो सुनकर मन में खुशी की एक लहर दौड़ जाती है। वाह ! क्या शहर था लाहौर यानी 'ला होर' (और लाओ)। यह सच भी था। वहाँ जेब मे पैसा टिक नही पाता था। लाहौर मे इतना कुछ देखने व खरीदने को रहता था कि जेब का पैसा खत्म होते देर नही लगती थी। इसीलिये लोग मजाक में लाहौर के लिये कहते थे कि 'ला होर' यानी अब और पैसे लेकर यहाँ आओ।

—गंगा सिंह ! वे तो तुम्हारी चढ़ती जवानी के दिन थे। सुना है लाहौर मे जवानों के लिये भी बहुत मसाला रहता था। तुमने भी तो वहाँ अपनी जवानी के दिनों में खूब मौज-पानी किया होगा।

हरनाम सिंह की बात सुनकर गंगा सिंह की कमजोर आँखें कुछ क्षणों के लिये चमक उठी। उसने चश्मे में से झांकते हुये, अपनी बकरानुमा सफेद दाढ़ी को थोड़ा खुजलाते हुये, कुछ रहस्यमय अंदाज में मुसकराकर कहा—सरदार जी, वह बड़ा ही बदकिस्मत आदमी होगा जिसने लाहौर मे रहकर कभी मौज-पानी न किया होगा। लाहौर की आबोहवा मे ही मौज-पानी करने की कुछ तासीर थी। पता नही आपने वहाँ की हीरामंडी का नाम सुना है या नही...

—तो क्या वहाँ हीरों की तिजारत होती थी ? हरनाम ने असलियत जानते हुये भी केवल मजा लेने के लिये उससे सवाल किया।

गंगा सिंह हल्का सा कहकहा लगाकर बोला—हाँ वहाँ पर हीरों की ही तिजारत होती थी। पर वे हीरे गहनों मे नही लगाए जाते थे। उन्हे आप जैसे नौजवान अपने सीने पर लगाने के लिए बेताब रहते थे। वहाँ एक से एक हीरा था। ऐसे-ऐसे हीरे थे कि देखते ही रह जाओ, ऐसी चमक-दमक कि देखकर आँखें चमक उठें। मैं तो जब कभी अपने दो-तीन यार-दोस्तो के साथ जरा बन-संवर कर वहाँ जाता था तो मन में यही इच्छा होती थी कि उस रंगीन बाजार के चक्कर लगाता ही रहूँ, हीरों को देखता ही रहूँ।

—तो क्या हीरे इस तरह खुले पड़े रहते थे कि उन्हे हर कोई राह चलते

भी देख सकता था। गंगा सिंह एक बार फिर खिलखिला कर हँसा और बोला —दरअसल लाहौर की हीरा मंडी तवायफों का बाजार था। वहाँ की तवायफें ही हीरों की तरह खूबसूरत और ऊँचे दामों वाली होती थी।

—अच्छा तो-अब समझा। तो तुम इस तरह के हीरों को देखकर अपना मन बहलाते थे?

—सिर्फ देखता ही नहीं था बल्कि दो-चार मर्तबा उन्हे अपने गले में पहने भी था। उन हीरों की बात छोड़ो। उनके अलावा भी मैंने दूसरी तरह के हीरे भी देखे थे। और उन हीरों को देखने का सौभाग्य किसी भाग्यवान को ही मिलता था। जनाब, मैंने नूरजहाँ, रागिनी, मनोरमा और मुमताज शान्ति जैसे बेशकीमती हीरे भी लाहौर में देखे थे।

—ये सब तो फिल्मों मे काम करने वाली थी। इनको तुमने कैसे देख लिया?

—कहा न, यह सब किस्मत की बात है। पंजाब की वंड (बटवारे) से कोई दो साल पहले लाहौर के पंचोली स्टूडियो के लिए फर्नीचर बनाने का काम उसी फर्म को मिला था जिसमें मैं और मेरा बापू काम करते थे। दूसरे आठ-दस कारीगरों के साथ मैं और बापू भी वहाँ स्टूडियो में काम करने जाते थे। उन पंचोली स्टूडियो में ही उन फिल्मी सितारों को देखने का मौका मिलता रहता था। क्या ठाठ होते थे उन लोगों के। खास तौर पर रागिनी के। जिस आहूचश्म हसीना रागिनी को एक नजर देखने के लिए लोग बेकरार रहते थे उसी रागिनी के बंगले पर मैं हो आया था, उसके यहाँ चाय पीने का सौभाग्य भी मुझे मिला था।

आहूचश्म के माने जानते हुए भी हरनाम ने महज मजा लेने के लिए गंगा सिंह से पूछा—यह आहूचश्म किस बला को कहते हैं और यह भी बताओ कि रागिनी ने तुमको अपने बंगले पर क्यों बुलाया था। कहीं तुमको दिल तो नहीं दे बैठी थी?

—हरनाम सिंह, क्यों मुझसे मजाक करते हो। वह हुस्न की परी क्या मुझको दिल देती। लोग बताते थे कि जिसकी आँखें हिरन की तरह मोटी व सुन्दर होती है उसे आहूचश्म कहते हैं। हाँ तो रही उसके बंगले पर जाने की बात तो सुनो। रागिनी की दो अलमारियों की थोड़ी मरम्मत होनी थी। उन अलमारियों को ठीक करने मैं सम्भू तरखान के साथ उसके बंगले पर गया था। वहाँ रागिनी ने अपने नौकर के हाथ हम दोनों के लिए चाय भिजवाई थी। उन दिनों रागिनी का बड़ा नाम था। अब वह तांगे में बैठकर पंचोली

स्टूडियो जाती थी तो कितने ही मनचले नौजवान साइकिलों पर सवार उसके तांगे के पीछे चलते रहते थे।

कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला—पल्ला तो लगभग तैयार हो गया है। अब इसमें कुंडी लगानी है। वह आप जगत सिंह की दुकान से ले आएं। अच्छा तो यह रहता कि इसमें निकिल वाली कुंडी लगती पर वह जगते की दुकान पर कहां मिलेगी। उसके लिए तो बाबा बकाला जाना होगा। आप जगते से ही लेते आएं।

—ठीक कहते हो। अब निकिल की कुंडी के लिए बाबा बकाला कौन जाएगा। अच्छा तो तुम अपना काम पूरा करो। मैं अभी जाकर कुंडी खरीद लाता हूँ। और इतना कहकर हरनाम सिंह वहां से उठकर भीतर कमरे में चला गया।

कुछ देर बाद हरनाम सरदार जगत सिंह की दुकान पर पहुँचा। जगत सिंह की दुकान ऐसी थी जहां झाड़ू से लेकर रेशमी साड़ियां तक बिकती थी। गांव वालों को आम तौर पर जिन-जिन वस्तुओं की जरूरत रहती है वे वस्तुएं वहां उपलब्ध रहती थी। दुकान का आगे का हिस्सा पक्का बना हुआ था। दुकान के आगे एक पक्का चबूतरा था जहां ग्राहक आदि व वैसे ही गपशप करने आए लोग बैठे रहते थे। दुकान के दाहिने भाग में लकड़ी के पचासों खाने बने हुए थे जिनमें किराने की अनेक चीजें पड़ी रहती थीं। प्रत्येक खाने के बाहर हरे रंग से उर्दू में जिन्स का नाम लिखा रहता था। बाईं ओर चार-पांच कनस्तर पड़े रहते, किसी में वेजीटेबल घी, सरसों व मिट्टी का तेल आदि रहते थे। सामने वाली दो अलमारियों में बीस-पच्चीस कपड़े के थान, धोतियां, साड़ियां व चादरें-खेस सजे रहते थे। दुकान के पिछले भाग में बीसों छोटी-बड़ी बोरियों में तरह-तरह के अनाज-दालें आदि रहती थी। एक भाग में लोहे का सामान, लालटेनें, चिमनियां, हुक्कों की टोपियां और मालूम नहीं क्या कुछ रखा था। चौपाल के बाद जगत सिंह की दुकान ही ऐसी जगह थी जहां प्रायः पांच-सात लोग अड्डेबाजी के लिए वहां बैठे नजर आते थे।

सरदार जगत सिंह का अपना व्यक्तित्व भी बड़ा अद्भुत था। उसकी उम्र चालीस वर्ष के आसपास थी। उसका कद छोटा और शरीर थुलथुला था। उल्टे मटके की तरह बड़ा सा पेट आगे निकला हुआ था। घनी काली दाढ़ी में कुछ बाल सन की तरह नजर आते। भरे हुए चेहरे का रंग चुकन्दर की तरह लाल था। सिर पर प्रायः लाल पगड़ी रहती जिसका छोटा-मैला सा लड़ उसके दाहिने कान के ऊपर रहता। ढीली-ढाली कमीज पर वह वास्केट

पहने रहता । तहमद वह कभी नहीं पहनता था । लोगों ने हमेशा उसे सफेद सलवार पहने ही देखा था । सलवार का लाल या हरे रंग का रेशमी आज़ारबन्द प्रायः बाहर लटकता नज़र आता । लोगों का कहना था कि वह जान-बूझकर आज़ारबन्द बाहर लटकाए रखता है ताकि देखने वाले जान सकें कि वह रेशमी है और जगत सिंह कितना शौकीन है । जगत सिंह पूरी तरह से एक कामयाब दुकानदार था । किसी ग्राहक को नाराज़ करना तो वह जानता ही नहीं था । दफ्ती के एक टुकड़े पर मोटी कलम से उसने उर्दू व पंजाबी में लिख रखा था 'उधार मुहब्बत की कैंची है' । पर सत्य यह था कि वह माल उधार भी खूब बेचता था । स्वभाव से बेहद मज़ाकपसन्द और बातूनी था । हर विषय पर चाहे वह संसार भर की राजनीति हो अथवा कोई अपराध-कांड, वह बीच में बोलता ज़रूर था ।

जब हरनाम उस दुकान पर पहुँचा उस समय वहाँ बाहर चबूतरे पर पाँच-सात व्यक्ति बैठ कुछ उत्साह से बातें कर रहे थे । संयोगवश तब वहाँ मोहर सिंह, गुरुद्वारे का ग्रन्थी, पंडित मंगत राम पांधा, हैड मास्टर बलदेव प्रकाश और दो-एक और व्यक्ति थे । बहस पंडित मंगत राम और मोहर सिंह के बीच हो रही थी । हरनाम सिंह को देखकर वे कुछ क्षणों के लिये खामोश हो गये थे कि तभी मोहर ने हरनाम से पूछा—कहो हरनाम भाई, कैसे आना हुआ । तुम्हारा कमरा कहाँ तक बन गया ?

हरनाम ने उत्तर दिया—मोहर भाई, आप लोगो की दया से काम चल रहा है । गंगा सिंह दरवाज़े का पल्ला बना रहा है । उसी दरवाज़े के लिये कुंडी लेने आया हूँ । तुम अपनी कहो, क्यों पंडित जी को परेशान कर रहे हो ?

हरनाम की बात सुनकर तनिक मुसकराते हुये मोहर ने कहा—पंडित जी को मैं क्यों परेशान करने लगा । किसी को परेशान करना तो मैं जानता ही नहीं । हाँ इन पंडितो ने देश के करोड़ों लोगों का काफिया ज़रूर तंग कर रखा है । हज़ारों वर्षों से यह भोली-भाली जनता को मूर्ख बनाकर अपनी दुकानें चलाते आ रहे हैं । लेकिन अब जल्दी ही समाज के इन ठेकेदारों को जनता ठुकराने वाली है । इस विशाल देश में ऐसा इन्कलाब आने वाला है ऐसा सैलाब आने वाला है जिसमे इनकी दुकानें अपने आप ही बह जाएँगी ।

मोहर के इन शब्दों को सुनकर पंडित मंगत राम ने अपनी शुभ्र पगड़ी को ज़रा ठीक किया और सिर हिलाकर बोला—इसकी सुनो ! यह इन्कलाब लाने वाला है । गांधी और नेहरू बेचारे मर गये पर इन्कलाब वे भी न ला

सके और यह कल का छोंडा इन्कलाब के सपने देख रहा है। यहाँ कोई इन्कलाब नही आने वाला, जैसा चल रहा है वैसे ही चलता रहेगा। मोहर सिंह तुम तो हो कैम्यूनिस्ट। तुम्हारा न कोई दीन है न धर्म। और जिसका कोई दीन-धर्म नही होता उसकी बात को कोई नही सुनता। अपनी जनता धर्म को मानने वाली है और वह हम जैसे धर्मनिष्ठ लोगों के उपदेशों को ही सुनेगी, हमारे बताए हुये मार्ग पर चलकर ही अपना कल्याण करेगी। तुम्हारी अधर्म की बकवास सुनकर वह पथ-भ्रष्ट होना नही चाहेगी। तुम और तुम्हारे कैम्यूनिस्ट साथी चाहे जितना रूस व चीन के नेताओं का नाम जपते रहें, उनके उपदेशो के झूठे सब्ज-बाग लोगों को दिखाते रहें पर उन पर तुम लोगों की बातों का कोई असर नही होने वाला।

—हाँ पंडिता, तुम तो यही चाहोगे ही क्योंकि इसी में तुम्हारी रोटियाँ तुम्हारी रोजी सुरक्षित है। तुम गरीब जनता को धर्म का जहरीला नशा पिलाकर उसे मूर्ख बनाकर लूटते रहना चाहते हो। लेकिन याद रखो अब तुम जैसों के दिन लदने वाले हैं। अब हराम की खाने को नही मिलेगी, बहुत पूरी-हलुए खाकर मोटा चुके हो। अब वह जमाना आ रहा है जब मेहनत-मजदूरी तुम्हें करनी पड़ेगी, हराम की दावतें और दक्षिणा अब कोई नहीं देगा।

मोहर सिंह की यह बात सुनकर मंगत राम के मुख पर उदासी की एक हल्की सी परत कुछ पलों के लिये लहराई। अभी वह कुछ कहने ही जा रहा था कि उसे थोड़ा दिलासा देता हुआ गुरुद्वारे का ग्रन्थी बोला—पंडित जी! तुम घबराओ नहीं। यहाँ कुछ नहीं होने वाला। तुम पंडितों की छत्रछाया पहले की तरह ही कायम रहेगी। मोहर जैसे पक्के कैम्यूनिस्ट चाहे जो कुछ कहें, चाहे जितने लैक्चर झाड़ें, मौका पड़ने पर ये लोग भी तुम पंडितों की शरण में आएँगे ही। जब इन लोगों के यहाँ भी खुशी-गमी का मौका आएगा, जब इनके यहाँ शादी-व्याह या श्राद्ध आदि होगा तो यह उसे सम्पन्न करवाने के लिये तुम जैसे विद्वान पंडित को बुलवाएँगे ही। और तब आदर-मान भी देंगे और दान-दक्षिणा भी।

ग्रंथी की बात सुनकर सरदार जगत सिंह भी खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुये उसका मटकानुमा पेट यों हिला मानों उस पर हल्का सा भूचाल आ गया हो। उसने कहा—ग्रन्थी जी ने कितनी सही बात कही है। ब्याह-शादी और श्राद्ध आदि तो पंडितों से ही करवाने पड़ेंगे। भई, पंडितों के बिना लोगों की गति कहाँ होगी। हाँ हम सिखों की बात छोड़िये। हमने जरूर इन पंडितों का [illegible]

—और ग्रन्थी जी का दामन थाम लिया है ! पंडित, तुममें और ग्रन्थी जी में क्या अन्तर है ? तुम हिन्दुओं के पंडित हो और यह ग्रन्थी जी सिखों का पंडित है। तुम दोनों एक ही थैले के चट्टे-बट्टे, एक ही सिक्के के दो पहलू हो। पर समझ लो, जब हम लोगों के हाथों में शासन की बाग-डोर आ जाएगी तब दुख-सुख के मौकों के लिये न कोई पंडित को पूछेगा और न किसी ग्रन्थी को और न ही किसी मौलवी या पादरी को।

मोहर सिंह की बात से कोई सरोकार न रखते हुये जगत सिंह बोला—पर दोस्तो, एक बात जरूर है कि पंडित या ग्रन्थी को ज्ञानी होना ही चाहिये। कोरी आएँ-बाएँ बातें नही करनी चाहिये। इन्ही पंडित मंगत राम जी का एक किस्सा सुन लो। अभी पिछले महीने रामू शाह की बिटिया का ब्याह था। मंडप में शादी की रस्म के लिये सब लोग बैठे हुये थे। तभी हमारे इन पंडित जी ने कहा—वर और वधू को यहाँ लाया जाए। इनके आदेश का पालन हुआ और वर-वधू अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। वहाँ उपस्थित सब लोग उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि अब पंडित जी ब्याह की रस्म शुरू करवाएंगे। खैर मंगत राम जी ने अपने कुरते की जेब से पोथी निकाली और ब्याह पढने के लिये उसे खोला। पन्ना खोलते ही तुरन्त चौंककर बोले—ओह ! मुझसे बडी भूल हो गयी। गल्ती से ब्याह कराने वाली पोथी के बजाए श्राद्ध कराने वाली पोथी ले आया हूँ, आप लोग थोडा रुकें, मैं अभी घर से ब्याह वाली पोथी लेकर आता हूँ। और इतना कहकर वे घर की ओर लपक गये। अब आप ही सोचें कि पंडित जी की उस भूल का वहाँ बैठे लोगों पर क्या असर पड़ा होगा। इनकी उस भूल को जानकर कुछ लोग तो खिलखिलाकर हँस पड़े और जो कन्या व लड़के के निकट के सम्बन्धी थे उनके दिलो को अवश्य ही आघात सा पहुँचा। शादी के सुखद मौके पर श्राद्ध जैसे दुखद शब्द को सुनना लोगों को अपशगुन सा लगा। पंडित जी को घर से चलते समय इतना भी होश नहीं था कि मैं कौन सी पोथी साथ लिये जा रहा हूँ।

अब मोहर सिंह को पंडित मंगत राम पर चोट करने का अच्छा मौका मिला गया। उसने कहा—सरदार जगत सिंह ! पंडित को होश कैसे रहता। उस समय तो इसका ध्यान शादी से मिलने वाली दान-दक्षिणा पर था, पूरी-कचौड़ी और मिठाइयों पर था।

मोहर की बात सुनकर खिसियाते हुये मंगत राम बोला . हो गयी थी। भूल भी तो आखिर इन्सान से ही होती है।

—बस यही तो मैं भी कहता हूँ कि तुम पंडितों की और

मूर्खताओं से इस देश का सत्यनाश हुआ है हमारा समाज चौपट हुआ है। तुम जैसे पंडितों द्वारा बनाई गयी यह सामाजिक व्यवस्था, जातपात व ऊँच-नीच के कारण ही देश रसातल को जा रहा है। कभी तुम लोगों ने इस बात पर विचार किया है कि हमारे भारत मे ये करोड़ों मुसलमान लाखों ईसाई कहाँ से आ गये। क्या ये सब विदेशों से आए हुये हैं? यह अपने ही देश के हैं। कभी इनके पूर्वज हिन्दू थे। आप जैसे पंडितों व ऊँची जाति के हिन्दुओं के अत्याचारों व भेदभाव से परेशान होकर उन्होने मजबूर होकर इस्लाम अथवा ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया। अगर आप लोगों में समानता की भावना होती, मानवता के सही माने आप जानते होते तो यहाँ तक नौबत क्यों आती। इतनी बड़ी भूलें बल्कि कहना चाहिये कि इतने बड़े अपराध करके अब भी आप समाज में धन-धनाते घूमते-फिरते हैं। समय का आप पर कोई प्रभाव नही पड़ा। आप जैसों द्वारा फैलाई नफरत के कारण सदियों से अखण्ड चला आ रहा भारत खण्डित हो गया। लेकिन आप कूप के मन्डूप ही बने रहे, आप नही चेते। हरिजन भाईयों पर आज भी पहले की ही तरह आप अत्याचार ढा रहे हैं, तरह-तरह से उन्हें परेशान करने से बाज नही आते। और उस पर तुर्रा यह कि आप खुद को धर्म के रक्षक, समाज के संरक्षक मानते फिरते हैं। ये शब्द मोहर सिंह ने कहे।

मोहर सिंह का यह छोटा सा भाषण सुनकर ग्रन्थी जी का मन कुछ पुलकित सा हो गया। वे उत्साहित होकर बोले—समझे पंडित मंगत राम? मोहर सिंह की यह बात अपनी जगह बहुत हद तक सही है। हाँ यह जरूर है कि देश में हुआ यह धर्म-परिवर्तन केवल जातपात या ऊँच-नीच के कारण ही नही हुआ बल्कि अधिकांश लोग जोर-जबरदस्ती से, मुस्लिम शासकों की इस्लाम-प्रचार की कठोर नीति के कारण, उनकी तलवारों की नोको की बदौलत हुआ। अंग्रेज शासको की भी यही नीति रही। उनके जुल्मों व उनके द्वारा दिये गये प्रलोभनों के परिणामस्वरूप अनेक लोग ईसाई बनने पर विवश हुये। हाँ हम सिखो के लिये यह प्रसन्नता व गर्व की बात है कि हमने मानव की जात को एक समान माना, सिख धर्म मे सबको बराबरी का दर्जा दिया।

ग्रन्थी की बात का उत्तर देने के लिये हरनाम अभी सोच ही रहा था कि मोहर सिंह फिर बोल पड़ा—ग्रन्थी जी, तुम भी सिख धर्म की गलत वकालत कर रहे हो। हमारे गुरुओं ने जरूर समानता का पाठ सिखाया, उन्होने जरूर जातपात व भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई, ग्रन्थ रचे, उपदेश दिये। लेकिन हम उन महापुरुषों के बताए हुये मार्ग पर कहाँ तक चल रहे हैं। क्या सिखो

में जातपात नही है, क्या वे ऊँच-नीच व भेदभाव को नहीं मानते। इस बेचारे हरनाम सिंह को देख लो। तुम पंडितों और सरदारों से कहीं ज्यादा पढ़ा-लिखा है काबिल है, सरकारी पद पर है। लेकिन इसको भी तुम ऊँची जाति वाले लोग अपने बराबर कहाँ मानते हो। उसे मजहबी सिख कहते हो, उसे भी हरिजन की तरह मानकर परेशान करते हो।

—हरनाम भाई को कौन परेशान करता है ? वह हमारे डाकघर का बाबू है। सभी गाँव वाले उसकी इज्जत करते हैं, यह बात सरदार जगत सिंह ने कही।

उसके उत्तर में मोहर सिंह बोला—उसकी जो इज्जत आप लोग करते हैं वह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इस बेचारे ने एक छोटा सा कमरा बनाना क्या शुरू कर दिया है कि लोगों के पेटो में मरोड़ उठने लगे हैं, अन्दर ही अन्दर ज़हर घोल रहे हैं।

हरनाम नही चाहता था कि वहाँ उसके बारे में कोई बात की जाए। उसे डर था कि कही कोई उसके और शेर सिंह के बीच हुई गर्मागर्मी का उल्लेख न कर दे। वह नही चाहता था कि बात आगे बढ़े और कोई जाकर शेर सिंह के कान में कुछ फूंके, उसके विरुद्ध ज़हर भरे। मोहर की बात सुनकर उसने कहा—मोहर भाई ! मुझे कोई परेशान नही करता, मेरे साथ कोई दुशमनी नही करता।

—बस यही तो तुम पिछड़ी जाति के लोगों की सबसे बड़ी कमजोरी है। सच्ची बात कहने में भी डरते हो। और याद रखो हरनाम सिंह, जब तक तुम लोग डरते रहोगे, जुल्म को सहते रहोगे तब तक ये तथाकथित ऊँची जाति वाले तुम लोगों पर अत्याचार ढाते रहेंगे, तुम्हारा खून पीते रहेगे। सब के सामने सच कहने की हिम्मत रखो। शेर सिंह मेरा भाई है लेकिन गलत बात या अनुचित व्यवहार अगर वह भी करेगा तो मैं उसके खिलाफ भी आवाज उठाऊँगा। क्या कुछ दिन पहले उसने ठठ्ठी मे जाकर बेचारे बिन्दरे को बिना किसी कसूर के मारा-पीटा नही था, क्या उसने वहाँ तुम्हे अपशब्द कहकर तुम्हारी बेइज्जती नही की थी। तुम इस सच्चाई को यहाँ सबके सामने स्वीकार करने की हिम्मत क्यों नही करते ? शेर सिंह से डरते हो न इसीलिये मुँह पर पट्टी बाँधे हो। ये अक्रोशभरे शब्द मोहर सिंह ने कहे।

मोहर के इन उत्तेजित भावों को सुनकर हरनाम ने कहा—मैं शेर सिंह से डरता नही हूँ। पर बिना मतलब बात को तूल देना नही चाहता। जो बात उस दिन हुई थी उसे मैंने वहीं खत्म समझ लिया था। अब मेरे मन में

सिंह के खिलाफ कोई भाव नहीं है। उसके मन में क्या है यह मैं नहीं जानता। हाँ अगर उसने नये सिरे कोई शुरुआत की तो देखा जाएगा। मैं अपनी ओर से शराफत को छोड़ना नहीं चाहता। पर मेरी शराफत को अगर कोई मेरी बुजदिली समझेगा तो वह गलती पर होगा। अच्छा मोहर भाई, अब चलता हूँ। यह कुंडी लेने आया था। घर पर गंगा सिंह बढ़ई मेरा इन्तजार कर रहा होगा। और इतना कहकर वह हाथ में कुंडी लिये घर की ओर चल पड़ा।

••

बाईस

ग्रीष्म की तपती व धूल उड़ाती हवाओं का मौसम खत्म हो चुका था। अब पावस की भीगी सुखद हवाएँ चलनी शुरू हो चुकी थी। धरती के कण-कण की प्यास बुझती जा रही थी। चारों ओर दूर-दूर तक हरियाली का समां बँधता जा रहा था। जलभरे खेतो मे मेहनतकश किसान धान की फसल बोने लगे थे। वैसे तो इस मौसम का हर किसी पर प्रभाव पड़ रहा था पर युवक-युवतियों के मन-प्राण पावस-फुहारों से कुछ ज्यादा ही पुलकित हो रहे थे। उनमें नयी-नयी तरगे मचलने लगी थी। परस्पर मिलन की चाह में वृद्धि होने लगी थी।

राणीपुर गाँव से पूर्व दिशा मे तीन-चार फर्लाङ्ग की दूरी पर एक स्थान है बोहड़ी। वहाँ आठ-दस बोहड (बरगद) के पेड़ों का समूह है। बरगद के ये वृक्ष बहुत पुराने हैं। इन घने विशाल वृक्षों की शाखें धरती को छूती हुई अलग से पेड़ों की तरह प्रतीत होती हैं। कुछ बड़ी लटकती हुई डालें तो यो लगती हैं मानो बड़े-बडे अजगर लटक रहे हों। पावस ऋतु मे गाँव की युवतियाँ उन बोहड़ो की विशाल डालों पर झूले डालती हैं। वैसे तो बरसात के मौसम मे दिन मे किसी भी समय लड़कियाँ झूला झूलती रहती हैं पर रविवार के दिन वहाँ बहुत चहल-पहल रहती है। कई युवतियाँ व लड़के-बच्चे घर से ही खाना-मिष्ठान आदि साथ ले जाते हैं और वहाँ झूले झूलने व खेलने के बाद खाना आदि एक साथ मिल-बैठकर खाते हैं तो कुछ खाने की सामग्री घर से ले जाती हैं, वहाँ बनाती-पकाती और फिर खाती हैं। ऐसे मौकों पर वहाँ आये लोगों का उत्साह देखने योग्य होता है। झूलों के इस त्योहार को 'सावें' कहा जाता है। सावें के त्योहार मे भाग लेने वाली

अल्हड़-मस्त युवतियाँ - नयी-नयी रंग-बिरंगी गोटा-किनारी लगी पोशाकें पहनकर आती हैं। अपने हाथो व पाँवो को मेहदी से सजाती है। तन पर तरह-तरह के आभूषण भी उनकी सुन्दरता में वृद्धि करते हैं।

उस दिन पावस का दूसरा रविवार अर्थात् दूसरा साँवाँ पर्व था। प्रीतो की सहेलियों ने बोहड़ी जाने का कार्यक्रम बना रखा था। उसकी सहेलियाँ कृष्णा व रानी उससे भी चलने को कह रही थी। पर उसका मन कुछ उदास सा था। मालूम नही आज उसकी वहाँ जाने की इच्छा क्यों नही हो रही थी। इधर पाँच-सात दिनों से उसकी बलदेव से भेंट नही हो पायी थी। उसे यह भी मालूम नही था कि उसका बलदेव इस समय कहाँ है। उसे मन में इतना विश्वास था कि यदि वह गाँव मे होता तो अवश्य ही उससे मिलने आता। पर वह कहाँ गया है, किस काम पर गया है इसकी उसे कोई जानकारी नही थी। उसके बारे में वह किसी से कुछ पूछ भी नही सकती थी। उसका अपना भाई मोहर सिंह भी गाँव में नही था। वह कहाँ है इसका भी उसे कोई अता-पता नही था। खैर भाई के बारे में तो वह जानती थी कि वह प्रायः ऐसे ही बिना बताए बाहर चला जाता है और फिर अपनी इच्छानुसार लौट आता है।

दोपहर का समय था। उसका पिता सरदार प्रताप सिंह अभी थोड़ी देर पहले भोजन करके रहट को चला गया था। उसके जाने के कुछ ही देर बाद कृष्णा व रानी उसके पास पहुँच गयी थी और उसे बोहड़ी चलने के लिए कह रही थी। वे तीनों बाहर ओसारे मे बैठी रिमझिम को देखकर विभोर हो रही थी, परस्पर बातें कर रही थी मजाक कर रही थी। कुछ देर पहले तक छाए घने बादल अब कुछ छटने लगे थे। बोहडी की ओर कही-कही नीला आकाश दृष्टिगोचर हो रहा था। उस रिमझिम से घर के सामने वाले छोटे से ताल का पानी काँप रहा था, बूँदे पड़ने से बुलबुले बन रहे थे टूट रहे थे। घर के सामने की लाल ईंटो की पक्की गली धुलकर और अधिक लाल दिखाई पड़ रही थी। गली के साथ बनी पक्की नाली मे मटमैला-गंदला पानी तेज़ी से प्रवाहित हो रहा था। सामने के शीशम व कीकर के वृक्ष बरसाती फुहारो से धुलकर एकदम चमक रहे थे। हवा की शीतलता बड़ी भली लग रही थी। वर्षा का वेग कम हो जाने के कारण अब पेड़ों पर दुबके-बैठे पक्षियों की ध्वनियाँ सुनाई पड़ने लगी थी। लग रहा था कि कुछ ही देर बाद आकाश नीला-निर्मल हो जायेगा।

न चाहते हुए भी कृष्णा व रानी के जोर डालने पर प्रीतो भी बोहड़ी

जाने के लिए तैयार हो गयी। उसने मुँह-हाथ धोकर कंघी से बालों को संवारा, आँखों में काजल डाला। मेंहदी तो अभी तीन दिन पहले ही उसने अपने हाथों-पाँवों में लगाई थी। घर पर वह प्रायः कमीज-सलवार में ही रहती थी। पर आज सावें का त्योहार था। उसने अवसर को देखते हुए हल्के गुलाबी रंग का कुरता और लहरियेदार लहँगा पहना। मेंहदी लगे पाँव में तिल्लेदार जूती पहनी। गले मे मेंहदी रंग की गोटा लगी चुनरी डाल ली। इस वेशभूषा में उसका यौवन खूब खिल रहा था। वैसे तो कृष्णा व रानी भी बन-सँवर कर आयी थी पर प्रीतो के सौन्दर्य के सामने उन्हें अपना बनाव-श्रृंगार फीका-फीका सा लग रहा था। कृष्णा स्वभाव से ही बड़ी चंचल थी। प्रीतो से उसकी खूब घुलमिल कर बातें होती थीं, छेड़छाड़ होती थी। प्रीतो का रूप देखकर उसकी कमर मे चुटकी काटते हुए, उसने कहा—हाय मेरी प्रीतो, सचमुच रानी लग रही हो। इस समय अगर कोई राजकुमार तुम्हें देख ले तो जरूर ही तुम्हे घोडे पर बैठाकर अपने देश ले जाए। फिर उसके गुलाबी कपोल पर धीरे से एक हल्का-सा चुम्बन लेकर बोली—हाय! अगर कहो मैं लड़का होती तो तुमसे शादी कर लेती, तुमको अपनी दुल्हन बनाकर तुमसे ढेर सारा प्यार करती।

कृष्णा की इस हरकत व उसके शब्द सुनकर प्रीतो का मुख लाज से एकदम लाल हो उठा। आँखों में एक अजीब तरह की चमक-सी तैरने लगी। उसने भी उसकी कमर मे हाथ डालते हुए कहा—हट! बड़ी आयी मुझे अपनी दुल्हन बनाने वाली। लगता है इतना कहकर अपने मन की बात प्रकट कर रही हो। तुम्हारा अपना मन जल्दी से जल्दी दुल्हन बनने के लिये तड़प रहा है। घबराओ नही, अब तुम्हारा तो वह समय कुछ ही महीनों में आने वाला है। तुम्हारी कुड़माई तो फल्लौर के विरसा सिंह से हो ही चुकी है। तुम्हें तो तुम्हारा यार मिलने ही वाला है।

उसकी बात सुनकर रानी बोली—प्रीतो! यह तो मानना ही पड़ेगा कि विरसा दिल से सच्चा प्रेमी है दिलदार आशिक है। दो साल पहले जब कृष्णा अपनी मौसी के यहाँ फल्लौर गयी थी तो वहाँ विरसे ने इसे देखा था। वहीं कुछ ही दिनो मे दोनो का प्रेम हो गया था। तभी उसने इसे वचन दिया था कि अगर वह शादी करेगा तो केवल कृष्णा से ही करेगा और किसी से नही। और देखो अंत में वह अपने माँ-बाप को मनवाकर ही रहा। उस सच्चे आशिक ने अपना वचन पूरा करके दिखाया। अबकी जाड़े में इन दोनों का ब्याह भी हो जाएगा।

—अरी अपनी बात क्यों नहीं करती ? तुम्हारी भी तो बात चल रही है जींद में। उस दिन, तुम्हारी बेबे तो कह रही थी कि हम तो चट मंगनी पट ब्याह कर देंगे, जहाँ बात पक्की हुई उसके दो-एक महीने बाद ही इसके हाथ पीले कर देंगे। ये शब्द कृष्णा ने रानी से कहे। फिर वह प्रीतो से बोली—देखो अब बादल पूरी तरह से छट गये। अब हमें बोहड़ीं चलना चाहिये।

पीतो की माँ प्रसिन्नी को मालूम था कि आज दूसरा सांवां है और प्रीतो भी अपनी सहेलियों के साथ बोहड़ी जाएगी। इसलिये खाना बनाते समय उसने उसके लिये चार-पाँच मीठे पूए तैयार कर लिए थे। प्रीतो ने उन पुओं व मूंग के चार लड्डुओं को डिब्बे में रखा और जाने के लिये तैयार हो गयी।

जैसे ही तीनों सहेलियाँ गली के मोड पर पहुँची उन्हे बलदेव दिखाई पड़ा। प्रीतो को देखकर वह तनिक मुसकराया और बोला—अरी प्रीतो, तुम लोग कही जा रही हो ? मैं तो तुम्हारे ही यहाँ जा रहा था।

—जानते नही आज इतवार है, दूसरा साँवाँ है। हम बोहड़ी झूला झूलने जा रही है। प्रीतो शायद इतनी भी बात बलदेव से न करती। वह तो उससे बहुत नाराज थी। वह कई दिनों से उसे पढाने नही आया था। और मालूम नही बिना उसे कुछ बताये कहाँ चला गया था। पर उस समय कृष्णा व रानी उसके साथ थी। उनके सामने बलदेव से कोई गिला-शिकवा करना उसके लिए उचित नही था। यदि कही वह ऐसा करती तो मुमकिन था कि उसकी भाव-भंगिमा से उसकी सहेलियों को उसके मन की कही कोई टोह मिल जाती। वह नहीं चाहती थी कि उन दोनों को उसके प्रेम-सम्बन्धों का कोई आभास होने पाए। लेकिन जिन निगाहों से उसने बलदेव को देखा था उसने बलदेव को स्पष्ट संकेत मिल गया था कि वह उससे कुछ नाराज है। बलदेव के मुसकराने व बात करने के अंदाज से कृष्णा व रानी ने भी कुछ न कुछ सूंघ ही लिया था। वैसे भी पिछले कुछ हफ्तों से उन दोनों को लगने लगा था कि कही दाल में जरूर कुछ काला है। प्रीतो की बातों व चाल-ढाल से वे दोनों जान चुकी थीं कि वह अवश्य ही बलदेव के निकट आ चुकी है और दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगे हैं।

बलदेव मन में बड़ी चाह लेकर उसे मिलने आया था। लेकिन स्थिति को देखकर उसने कहा—ठीक है, अब तुम्हें रोकना ठीक न होगा। तुम लोग बोहड़ीं हो आओ, जाओ झूले का आनन्द लो, मैं कल आऊँगा।

कृष्णा अपनी चंचलता को रोक न पायी। बलदेव के शब्द सुनकर बोली —बलदेव वीर (भाई), चलो तुम भी बोहड़ीं का त्योहार देख आओ। वहाँ तो बहुत चहल-पहल होगी। ज़रा देखना प्रीतो कैसे झूला झूलती है। इसकी बढ़ती हुई पींगें देखोगे तो सचमुच चकित रह जाओगे।

—अरी कृष्णा, सांवें तो तुम लड़कियों का त्योहार है। हम युवकों का वहाँ जाना क्या ठीक होगा। हाँ यह जरूर है कि कई मनचले वहाँ दूर से तुम लोगों को झूला झूलते देखकर खुश हो लेते हैं। देखो अगर मौका लगा तो मै भी तुम लोगो को कहीं दूर से देखने की कोशिश करूँगा। अच्छा तुम लोग जाओ, देर हो रही होगी। और इतना कहकर वह वापस लौट गया।

बलदेव के अलग होने पर प्रीतो ने कृष्णा की कमर मे चुटकी काटते हुए कहा—अरी कृष्णा की बच्ची, तुम बड़ी बेशर्म हो। तुमने उससे क्यों कहा कि मैं बडी जोर से पीग बढ़ाती हूँ। जरा सोचो कि वह तुम्हारी इस बात से क्या सोचेगा।

—जो वह सोचेगा वह मैं जानती हूँ। सच पूछो तो वह मेरी बात सुन कर बहुत गदगद हुआ होगा। और मेरी यह बात उसको बहुत देर तक गुद-गुदाती रहेगी। यह भी देख लेना कि वह ज़रूर वहाँ बोहड़ीं के आसपास तुम्हारा दीदार करने पहुँचेगा।

—हट शर्म नही आती ऐसी बातें करते हुये। भला वह मेरा दीदार क्यों करेगा। उसे मुझसे क्या मतलब। क्या तुमने उसे कोई ऐसा-वैसा समझ रखा है। वह बहुत भला आदमी है।

उसकी बात सुनकर रानी ने कहा—कृष्णा कब उसे भला आदमी नही समझती। वह तो बहुत सीधा और शरीफ आदमी है। गाँव में हर कोई उसकी इज्जत करता है। पर मेरी प्रीतो, यह तो मानना पड़ेगा कि वह है बहुत बाँका जवान। सचमुच तुम बड़ी भाग्यशाली हो जो वह तुम्हे चाहता है पसन्द करता है। प्रीतो! तुम लाख छुपाने की कोशिश करो लेकिन यह सच है कि तुम दोनों एक-दूसरे से प्रेम करते हो, एक दूसरे पर बुरी तरह से मरते हो।

—यही तो मैं भी कह रही हूँ। और यह इस रहस्य को हम दोनों से छुपाने की कोशिश कर रही है। पर इसे नही मालूम कि इश्क और मुश्क छुपाने से नही छुपते। अरी मेरी बिल्लो, अब सच-सच बता दे कि बात कहाँ तक पहुँच चुकी है।

सहसा पता नही किन भावनाओं से वशीभूत होकर प्रीतो ने कहा—हाँ-

—हाँ तुम दोनों जो समझ रही हो वह ठीक ही है। हम दोनों एक-दूसरे को चाहने लगे हैं। पर तुम दोनों को क्यों जलन हो रही है?

कृष्णा ने उसकी बाँह को दबाते हुए कहा—अरी पगली, हमें क्यों जलन होने लगी। बल्कि हम तो बहुत खुश हैं कि तुम्हें बलदेव जैसा सुन्दर प्रेमी मिला है। तुम बिल्कुल न घबराओ। यह बात हम दोनों तक ही रहेगी। और हम दोनों से जहाँ तक बन पड़ेगा हम तुम दोनों की मेल-मुलाकात में मदद ही देंगी।

—कृष्णा, देखो यह बात कहीं मेरे माँ-बाप तक न पहुँच जाए। अगर कहीं उन्हें मालूम हो गया तो पता नहीं क्या होगा। उनसे भी ज्यादा डर मुझे अपने ताया जी का है। उनका स्वभाव तो तुम लोग जानती ही हो। उन्हें अगर कहीं पता चल गया तो बहुत बड़ा हंगामा खड़ा हो जाएगा।

प्रीतो की इस चिन्ता को दूर करने की गर्ज से रानी ने कहा—प्रीतो, तुम उनकी चिन्ता न करो। तुम्हारे ताया सरदार जोधा सिंह को गाँव का हर आदमी जानता है। उनके स्वभाव से कौन परिचित नहीं। उन तक बात अभी कहाँ पहुँचने वाली है। और मान लो अगर कभी पहुँच भी गयी तो वह क्या कर लेंगे, तुम्हारा क्या बिगाड़ लेंगे। तुम दोनों कोई पाप तो कर नहीं रहे। मुझे तुम्हारे माँ-बाप व तुम्हारे भाई मोहर सिंह पर भरोसा है। अगर वे तीनों चाहेंगे तो तुम दोनों की मनोकामना जरूर पूरी होगी। तब तुम्हारे ताया व उनके लड़कों के कुछ अडंगा लगाने पर भी कुछ नहीं होगा। खैर भगवान जो करेगा ठीक ही करेगा। हम दोनों की ओर से तुम पूरी तरह निश्चिन्त रहो।

कुछ देर बाद तीनों सहेलियाँ बोहड़ी पहुँच गयी थी। वहाँ एक अजीब समाँ बँधा हुआ था। रंग-बिरंगी पोशाकें पहने व तरह-तरह के आभूषणों से सजी-सँवरी बीसों अल्हड़ युवतियाँ व अनेक बालक-बालिकाएँ वहाँ रंग-रलियाँ मना रही थी। ऐसा लगता था मानों वहाँ एक छोटा-सा मेला लगा ं। विशाल बरगद के पेड़ों की लम्बी-लम्बी डालों पर आठ-दस झूले पड़े थे। हवा में लहराते उन छोटे-बड़े झूलों पर किसी नशे में मस्त लहराती लड़कियाँ यों दृष्टिगोचर हो रही थी मानों आकाश में अप्सराएँ तैर रही हों। हवा के वेग से लहराते उनके रंगीन दुपट्टे व लहंगे देखने वालों को अद्भुत प्रकार का सुख दे रहे थे। बोहड़ी के बगल वाली पगडंडी से निकल रहे मनचले युवक नजारा देखकर अपनी आँखें सेंक रहे थे। उस मुग्ध लुभावने दृश्य को कर युवकों के मन-प्राणों में कैसे-कैसे भाव उत्पन्न होते होंगे इसका सहज ही लगाया जा सकता है। कुछ महिलाएँ लोक गीत गा रही

माहिया व टप्पे के सुमधुर बोल गूंज रहे थे। हर किसी के मुख पर हर्ष व उल्लास की लहरें नृत्य कर रही थीं।

उस मस्त वातावरण में प्रीतो भी मन ही मन पुलकित हो रही थी। उसे लग रहा था जैसे उसके अंग-अंग में रेशे-रेशे में थिरकन हो रही हो, मीठी-नशीली सुइयाँ उसे गुदगुदा रही हों। वह सोच रही थी कि यह कैसी मादकता है जो हर क्षण उस पर हावी होती जा रही है। उसे यह क्या होता जा रहा है। वातावरण में गूंज रहे गीतों के बोल उसे किस प्रकार सुख दे रहे हैं। हवा में लहरा रही उसकी चुनरी के साथ उसका मन भी वैसे लहरा रहा है। उसके काले घने केश खुलकर किसी के कंधे पर लहराने के लिये क्यों आतुर हो रहे हैं। उसके हृदय की गति क्यों तीव्र हो रही है। वक्षस्थल पर यह कैसी हलचल हो रही है। वह कैसे लोक मे पहुँच गयी है जहाँ हर ओर बहार ही बहार है, जहाँ हर कहीं खुशबुएँ बिखरी हुई है; जहाँ प्रत्येक वस्तु मोहक व जवान दिखाई पड़ रही है। तभी उसे लगा कि जो कुछ वह अपने भीतर अनुभव कर रही है कुछ वैसा ही उसकी सहेली कृष्णा व रानी की भाव-भंगिमाओं में दिखाई पड़ रहा है। उन दोनों की आँखों में भी एक प्रकार का नशा व हर्ष छाया हुआ है। उसकी तरह उन दोनों के भी मेहदी रचे हाथ व खन-खन करती रंग-बिरंगी चूड़ियों से भरी कलाइयाँ किसी की बाँहों मे कस जाने को आतुर दिखाई पड़ रही हैं। सोचते-सोचते सहसा उसके मानस-पट पर बलदेव का मोहक व्यक्तित्व उभर आया। वह चाहने लगी कि काश कहीं से उसका अपना बलदेव उसके पास पहुँच जाए, उसे प्यार से मनाकर यहाँ से कहीं और ले जाए, उससे खूब प्यार करे, उसकी जुल्फ़ों को सहलाए, उसके अंग-अंग को गुदगुदाए। पर मालूम नहीं वह निष्ठुर इस समय कहाँ होगा, क्या कर रहा होगा। गली में उसने कहा था कि शायद वह भी बोहड़ी के आसपास किसी समय पहुँचेगा। लेकिन अभी तक क्यों नहीं आया। जिस प्रकार मैं उसको मिलने के लिये आतुर हो रही हूँ क्या उसका मन मेरी याद में न तड़प रहा होगा। बड़ा निर्दयी है वह, पता नहीं आएगा भी या नहीं।

लेकिन जब शाम के धुंधलके में वे तीनों सहेलियाँ वापस गाँव को लौट रही थीं कि आगे पुराने तालाब के पास उन्हें बलदेव दिखाई पड़ा। उसके संकेत पर वे तीनों गाँव लौट रही अन्य महिलाओं की नजरों से किसी तरह बचकर उसके पास पहुँच गयीं। तभी कृष्णा ने बलदेव से कहा— लो सम्भालो अपनी प्रीतो रानी को। तुम्हारे बिना मछली की तरह तड़प रही थी। भैया!

अब कब तक इसे परेशान करते रहोगे। थोड़ी हिम्मत दिखाओ और इससे जल्दी ही ब्याह कर लो।

उसकी बात सुनकर बलदेव थोड़ा खिलखिला उठा और बोला—तो तुम दोनों भी चाहती हो कि हम दोनों ब्याह-सूत्र में बँध जाएं। विश्वास रखो मैंने यह काम करने का पूरा निश्चय कर लिया है और भगवान ने चाहा तो वह दिन जल्दी ही आ जाएगा। लेकिन तुम दोनों को एक बात का ध्यान रखना होगा। यह बात अभी बाहर न निकलने पाए। तुम दोनों तक ही रहनी चाहिये।

रानी चाह रही थी कि बलदेव और प्रीतो अकेले में आपस में कुछ बात-चीत कर लें, अपनी प्यास को थोड़ा बुझा लें। उसने कृष्णा से कहा—कृष्णा, आगे क्या होना है क्या करना है इसका निश्चय तो ये दोनो ही करेंगे। इन दोनों को अकेले में कुछ बातें कर लेने दो। चलो हम दोनों उधर मकई के खेत की ओर चलती हैं। इन दोनों को थोड़ी देर यहाँ रहने दो। और इतना कहकर वह कृष्णा का हाथ पकड़कर आगे खेत की ओर बढ़ गयी। जाते-जाते उसने प्रीतो से कहा—हम दोनों वहाँ खेत के सिरे पर तुम्हे मिलेंगी, जल्दी ही वहाँ पहुँच जाना और फिर वहाँ से हम तीनों एक साथ घर लौटेंगी।

बलदेव मन ही मन कृष्णा व रानी की इस होशियारी की प्रशंसा कर रहा था। वह खुश था कि उन दोनों ने उन्हे कैसा सुन्दर मौका दिया है। फिर उसने प्रीतो से कहा—प्रीतो! यहाँ एक साथ खड़े रहना ठीक न होगा। कोई आता-जाता व्यक्ति हम दोनों को एक साथ देख सकता है। आओ तालाब के उस पार उन पेड़ो के झुरमुट के पीछे चलें और फिर वहीं से आगे तुम कृष्णा व रानी के पास पहुँच जाना। इतना कहकर वह उधर पेड़ो के कुंज की ओर बढ़ गया। प्रीतो भी तनिक सहमी हुई उसके पीछे-पीछे चल दी।

जब वे दोनों पेड़ों के समूह के पास पहुँचे तो उस समय सूर्य अस्ताचल में पूरी तरह जा चुका था। कुछ क्षण पहले तक दूर आकाश में छितराए मेघ-खण्डों पर जो केसरी-पीली परते चढ़ी हुई थी अब पूरी तरह नीली-सलेटी हो चुकी थी। कहीं-कहीं तारे भी नजर आने लगे थे। पेड़ों व खेतों में झींगुरों व पक्षियों का कलरव सुनाई पड़ रहा था। वातावरण मे हर क्षण अँधेरा व्याप्त होता जा रहा था। इस वातावरण में बलदेव तथा प्रीतो मे तरह-तरह की भावनाएँ मचल रही थी। दोनों के दिल कुछ तेजी से धड़क रहे थे।

जैसे ही वे दोनों उन वृक्षो के समूह में पहुँचे बलदेव ने एक घने पेड़ की ओट मे प्रीतो को अपनी मजबूत बाँहों में कस लिया। अब प्रीतो शरमाती-

लजाती उसके सुखद अंक में मचल रही थी। उसके कपोल लाल हो रहे थे होंठ कपकपा रहे थे। दोनों को एक दूसरे के गर्म-गर्म श्वासों की अनुभूति हो रही थी। फिर बलदेव ने उसके कोमल मुख को अपनी हथेलियों में लेकर उसके लरजते होंठों पर अपने होंठ रख दिये। प्रीतो विभोर हो रही थी। वह सोच रही थी कि यह कैसा अमृत है, कैसा नशीला रस है जो उसकी सम्पूर्ण देह पर छाता जा रहा है। पर वह मन ही मन कुछ भय भी अनुभव कर रही थी। उसे डर था कि अगर किसी ने उन दोनों को यहाँ देख लिया तो क्या होगा। न चाहते हुए भी वह वहाँ से चल देना चाहती थी। वह जानती थी कि उसकी दोनों सहेलियाँ आगे खेत के सिरे पर उसका इन्तजार कर रही होंगी। यह सोचकर उसने बलदेव से कहा—अब मुझे चलना चाहिये। वहाँ कृष्णा व रानी मेरी राह देख रही होंगी। अच्छा मैं चलती हूँ। तुम दूसरे रास्ते से गाँव पहुँच जाना। और इतना कहकर वे उस खेत की ओर बढ गयी।

जैसे ही पेड़ों के झुरमट से बलदेव बाहर आ रहा था उसे थोडी दूरी पर बेरी के पेड़ के नीचे छज्जू लंगडा दिखाई पडा। बलदेव से निगाह मिलते ही कुछ अजीब रहस्यमय ढंग से मुसकराकर उसने पूछा—कहो बलदेव माशटर, इस समय किधर से आ रहे हो। क्या कहीं दूसरे गाँव गये थे?

छज्जू की सूरत देखकर व उसके ये शब्द सुनकर बलदेव कुछ घबरा सा गया। किसी तरह सँभलते हुए उसने उत्तर दिया—नहीं कहीं नहीं गया था। बस ऐसे ही थोड़ा घूमने-फिरने निकल आया था। और कहो तुम्हारा क्या हालचाल है। तुम कहाँ से आ रहे हो?

—मैं उधर सरदार जोधासिंह की बगिया की ओर गया था। वहाँ सरदार जी ने किसी काम से बुलवाया था। वहाँ से ही लौट रहा था कि तुम दिखाई पड़ गये। मुझे ऐसा लगा कि अभी तुम उधर किसी से बातें कर रहे थे। कौन था तुम्हारे साथ?

—छज्जू भाई, मेरे साथ तो कोई नहीं था। मैं तो ऐसे ही कुछ गुनगुना रहा था।

—अच्छा तो गाना गा रहे थे। मैंने समझा किसी से बातें कर रहे थे। अच्छा माशटर जी, अब चलता हूँ, जय राम जी की। और इतना कहकर वह अपनी बैसाखियों के सहारे आगे बढ गया।

बलदेव दूसरे छोटे रास्ते से गाँव की ओर आ रहा था। अब वह अपने दिल-दिमाग में एक उलझन सी महसूस कर रहा था। वह सोच रहा था कि यह साला लंगड़ा कहाँ से इधर आ मरा। हो सकता है इस कमीने ने उसे

प्रीतो के साथ बातें करते देख लिया हो। और यदि कहीं इसने हम दोनों को साथ-साथ देख लिया होगा तो यह नीच जरूर ही गाँव में जाकर इस बात का प्रचार करेगा। राई का पहाड़ बनाने में यह लँगड़ा बड़ा माहिर है।

छज्जू लँगड़े को गाँव का बच्चा-बच्चा जानता था। उसकी उम्र चालीस के आसपास थी। उसका कद लंबा था व शरीर दुबला-पतला। देह का रंग सांवला। बेडौल मुख चेचक से छलनी था। उसकी छोटी-छोटी गहरी आँखें साँप की आँखो की तरह चमकती रहती थी। सिर पर लंबे पट्टे हमेशा तेल से अच्छी तरह चुपड़े रहते थे। वह ज्यादातर काला तहमद और गहरे नीले रंग का कुर्ता पहने रहता था। पाँवों मे टायर की चप्पल रहती। दिन में तीन-चार बार वह भाँग की बड़ी सी गोली जरूर खाता। वह प्रायः फग्गू लोहार की दुकान पर काम करता। पर जब वहाँ काम न मिलता तो किसी के खेत में भी मेहनत-मजदूरी कर लेता। स्वभाव से वह बेहद शरारती और इधर-उधर की लगाने वाला था। बात हमेशा घुमा-फिराकर ही करता। दो व्यक्तियों को लड़ा-भिड़ाकर उसे सुख मिलता। उसके इस प्रकार के स्वभाव से गाँव की औरतें तक परिचित थी। कई लोग मजाक में 'नारद मुनि' कहकर बुलाते। वह अपने परिवार मे अकेला ही था। वर्षों पहले उसके किसी दूर के रिश्तेदार ने उसका ब्याह करवाया था। पर उसकी पत्नी कुछ ही दिन उसके पास रहकर उसे सदैव के लिये छोड़कर चली गयी थी। लोगों का अनुमान था कि वह किसी के साथ भाग गयी थी। गाँव के अनेक सीधे-सादे लोग उससे डरते थे। वे जानते थे कि अगर इसके सामने किसी के बारे मे कोई बात की जाएगी तो यह नारद मुनि उस बात को तिल का ताड़ बनाकर रहेगा। छज्जू की इसी मनोवृत्ति के बारे में सोचकर बलदेव भयभीत हो रहा था। पर वह अब कर भी क्या सकता था। जो होना था सो हो चुका था।

घर पहुँचने पर उसने सोचा कि वह इस बारे में प्रीतो से बात कर ले। पर अब रात हो चुकी थी। प्रीतो से उस समय मिल पाना उसे कठिन नजर आ रहा था। उसे यही आशंका थी कि अगर उस लँगड़े ने उसे प्रीतो के साथ देख लिया होगा तो वह जरूर सरदार प्रताप सिंह या जोधा सिंह से नमक-मिर्च लगाकर बात करेगा। वह हर तरह से [illegible] भड़काने की कोशिश करेगा। वह जानता था कि प्रताप

लजाती उसके सुखद अंक में मचल रही थी। उसके कपोल लाल हो रहे थे होंठ कपकपा रहे थे। दोनों को एक दूसरे के गर्म-गर्म श्वासों की अनुभूति हो रही थी। फिर बलदेव ने उसके कोमल मुख को अपनी हथेलियों मे लेकर उसके लरजते होंठों पर अपने होंठ रख दिये। प्रीतो विभोर हो रही थी। वह सोच रही थी कि यह कैसा अमृत है, कैसा नशीला रस है जो उसकी सम्पूर्ण देह पर छाता जा रहा है। पर वह मन ही मन कुछ भय भी अनुभव कर रही थी। उसे डर था कि अगर किसी ने उन दोनों को यहां देख लिया तो क्या होगा। न चाहते हुए भी वह वहां से चल देना चाहती थी। वह जानती थी कि उसकी दोनों सहेलियां आगे खेत के सिरे पर उसका इन्तजार कर रही होंगी। यह सोचकर उसने बलदेव से कहा—अब मुझे चलना चाहिये। वहां कृष्णा व रानी मेरी राह देख रही होंगी। अच्छा मैं चलती हूं। तुम दूसरे रास्ते से गांव पहुंच जाना। और इतना कहकर वे उस खेत की ओर बढ गयी।

जैसे ही पेड़ों के झुरमट से बलदेव बाहर आ रहा था उसे थोड़ी दूरी पर बेरी के पेड़ के नीचे छज्जू लंगड़ा दिखाई पडा। बलदेव से निगाह मिलते ही कुछ अजीब रहस्यमय ढंग से मुसकराकर उसने पूछा—कहो बलदेव माशटर, इस समय किधर से आ रहे हो। क्या कहीं दूसरे गांव गये थे?

छज्जू की सूरत देखकर व उसके ये शब्द सुनकर बलदेव कुछ घबरा सा गया। किसी तरह संभलते हुए उसने उत्तर दिया—नहीं कहीं नहीं गया था। बस ऐसे ही थोडा घूमने-फिरने निकल आया था। और कहो तुम्हारा क्या हालचाल है। तुम कहां से आ रहे हो?

—मैं उधर सरदार जोधासिंह की बगिया की ओर गया था। वहां सरदार जी ने किसी काम से बुलवाया था। वहां से ही लौट रहा था कि तुम दिखाई पड़ गये। मुझे ऐसा लगा कि अभी तुम उधर किसी से बातें कर रहे थे। कौन था तुम्हारे साथ?

—छज्जू भाई, मेरे साथ तो कोई नहीं था। मैं तो ऐसे ही कुछ गुनगुना रहा था।

—अच्छा तो गाना गा रहे थे। मैंने समझा किसी से बातें कर रहे थे। अच्छा माशटर जी, अब चलता हूं, जय राम जी की। और इतना कहकर वह अपनी बैसाखियों के सहारे आगे बढ़ गया।

बलदेव दूसरे छोटे रास्ते से गांव की ओर आ रहा था। अब वह अपने दिल-दिमाग में एक उलझन सी महसूस कर रहा था। वह सोच रहा था कि यह साला लंगड़ा कहां से इधर आ मरा। हो सकता है इस कमीने ने उसे

प्रीतो के साथ बातें करते देख लिया हो। और यदि कहीं इसने हम दोनों को साथ-साथ देख लिया होगा तो यह नीच जरूर ही गाँव में जाकर इस बात का प्रचार करेगा। राई का पहाड़ बनाने में यह लँगड़ा बड़ा माहिर है।

छज्जू लँगड़े को गाँव का बच्चा-बच्चा जानता था। उसकी उम्र चालीस के आसपास थी। उसका कद लंबा था व शरीर दुबला-पतला। देह का रंग साँवला। बेडौल मुख चेचक से छलनी था। उसकी छोटी-छोटी गहरी आँखें साँप की आँखों की तरह चमकती रहती थीं। सिर पर लंबे पट्टे हमेशा तेल से अच्छी तरह चुपड़े रहते थे। वह ज्यादातर काला तहमद और गहरे नीले रंग का कुर्ता पहने रहता था। पाँवों में टायर की चप्पल रहती। दिन में तीन-चार बार वह भाँग की बड़ी सी गोली जरूर खाता। वह प्रायः फग्गू लोहार की दुकान पर काम करता। पर जब वहाँ काम न मिलता तो किसी के खेत में भी मेहनत-मजदूरी कर लेता। स्वभाव से वह बेहद शरारती और इधर-उधर की लगाने वाला था। बात हमेशा घुमा-फिराकर ही करता। दो व्यक्तियों को लड़ा-भिड़ाकर उसे सुख मिलता। उसके इस प्रकार के स्वभाव से गाँव की औरतें तक परिचित थीं। कई लोग मजाक में 'नारद मुनि' कहकर बुलाते। वह अपने परिवार में अकेला ही था। वर्षों पहले उसके किसी दूर के रिश्तेदार ने उसका ब्याह करवाया था। पर उसकी पत्नी कुछ ही दिन उसके पास रहकर उसे सदैव के लिये छोड़कर चली गयी थी। लोगों का अनुमान था कि वह किसी के साथ भाग गयी थी। गाँव के अनेक सीधे-सादे लोग उससे डरते थे। वे जानते थे कि अगर इसके सामने किसी के बारे में कोई बात की जाएगी तो यह नारद मुनि उस बात को तिल का ताड़ बनाकर रहेगा। छज्जू की इसी मनोवृत्ति के बारे में सोचकर बलदेव भयभीत हो रहा था। पर वह अब कर भी क्या सकता था। जो होना था सो हो चुका था।

घर पहुँचने पर उसने सोचा कि वह इस बारे में प्रीतो से बात कर ले। पर अब रात हो चुकी थी। प्रीतो से उस समय मिल पाना उसे कठिन नजर आ रहा था। उसे यही आशंका थी कि अगर उस लँगड़े ने उसे प्रीतो के साथ देख लिया होगा तो वह जरूर सरदार प्रताप सिंह या जोधा सिंह से नमक-मिर्च लगाकर बात करेगा। वह हर तरह से उन्हें उसके खिलाफ भड़काने की कोशिश करेगा। वह जानता था कि प्रताप सिंह एक भला आदमी है। वह छज्जू को भली प्रकार जानता है, उसके लगाने-बुझाने वाले स्वभाव से परिचित है। पर कोई भी आदमी अपनी बेटी के बारे में इस तरह की बातें कैसे सहन

कर सकता है। अगर उसने प्रताप सिंह से इस बारे में कुछ कह दिया तो वह उसके बारे में क्या सोचेगा। वह उसे कितना बड़ा विश्वासघाती समझेगा। गाँव में जब यह बातें फैलेंगी तो लोग उसके चरित्र के बारे में क्या-क्या बातें करेंगे, किन-किन शब्दों से उसे अपमानित किया जाएगा। स्कूल के अध्यापक व लड़के अपने हेड मास्टर के सम्बन्ध में क्या-क्या धारणाएँ बनाएँगे। उफ़! अब क्या होगा, कैसे वह गाँव वालों को अपना मुँह दिखाएगा। वह रात भर सो न सका। रह-रहकर उसकी आँखों के सामने लँगड़े छज्जू की आकृति आ जाती। उसे लगता जैसे वह आकृति बड़े अजीब ढंग से उस पर हँस रही हो, उसकी खिल्ली उड़ा रही हो, उसे तरह-तरह से अपमानित कर रही हो। वह रात शायद उसके आज तक के जीवन की सबसे दुखद रात थी। ऐसी मानसिक यातना शायद ही कभी उसने अनुभव की थी।

●●

तेईस

पावस ऋतु शुरू हुए पंद्रह-बीस दिन हो चुके थे। पर इस अवधि में वर्षा अभी तक साधारण रूप में हुई थी। दूसरे साँवें के अगले दिन सुबह से ही मौसम ने जो रूप बदलना शुरू किया तो फिर निरन्तर आठ-दस दिनों तक बदलता ही गया। तब इसः क्या-क्या रंग नहीं दिखाए। सोमवार से जो झड़ी लगी तो वह कई दिनों तक लगी ही रही। कभी साधारण बूँदा-बूँदी तो कभी तेज बौछारें, कभी हवा में एकदम सन्नाटा तो कभी जोरदार आँधी-पानी। मौसम का रूप अजीब ढङ्ग का हो गया था। पुराने बुर्जुगों का कहना था कि मौसम में इस प्रकार का बदलाव गत कई वर्षों से उन्होंने नहीं देखा था। लड़कों-बच्चों के लिए मौसम का यह रूप एक तरह का तमाशा था। वे टोलियाँ बनाकर कच्छे-बनियाने पहने पानी में भीगते, शोर मचाते, किलकारियाँ भरते, एक दूसरे पर छींटे फेंकते, कीचड़ मारते। उनकी माताएँ-बहनें चिल्ला-चिल्लाकर उन्हें मना करती डाटती-फटकारती पर उन पर कोई प्रभाव न पड़ता। वे जानते थे कि इस तरह का मौसम तो कभी-कभार ही मिलता है। अभी कुछ दिन पहले तक जब तपती शरीर को झुलसा देने वाली लपट चल रही थी तब वे सभी कितनी उत्सुकता से बरसात का इन्तजार कर

रहे थे, भगवान से मनौतियाँ मना रहे थे। अब जब वर्षा शुरू हुई है तो वे उसका आनन्द क्यों न लूटें।

इस निरंतर हो रही वर्षा से गाँव के अनेक मकानों की छतें चूने लगी थी! जब भी जरा वर्षा का वेग कम होता अनेक पुरुष-स्त्री छतों पर चढकर वहाँ हुई दरारों को भूसा मिली मिट्टी से लीपते-पोतते। कुछ लोग इस चिन्ता में थे कि अभी तो वर्षा ही हो रही है और अगर कही व्यास नदी में और राणीपुर के पास ही बहने वाले गन्जे नाले में बाढ आ गयी तो क्या होगा।

वर्षा के थमने के कोई आसार नजर नही आ रहे थे। बल्कि उसकी तीव्रता में वृद्धि ही हो रही थी। व्यास दरिया राणीपुर से लगभग पाँच-सात फर्लाङ्ग की दूरी पर बहता है। उसमें हर घड़ी पानी बढता जा रहा था। देखने वाले अनुमान लगा रहे थे कि यह कुछ ही घंटों बाद विकराल बाढ का रूप ले लेगा। नदी का पानी मटमैला होता जा रहा था।

राणीपुर से कोई चार-पाँच सौ गज की दूरी पर गन्जा नाला प्रवाहित है। नाले का पाट कहीं-कहीं सौ गज तक चौड़ा है। पर प्रायः पानी इसमें कम ही रहता है। कहीं टखने तक तो कही घुटने तक। हाँ जहाँ कही गड्ढे हैं वहाँ धोबी कपड़े धोते हैं। यह नाला थोड़ा आगे जाकर व्यास नदी में मिलकर अपना अस्तित्व खो देता है। राणीपुर के पास जहाँ यह बहता है वहाँ इसके तट पर दो बड़े-बड़े थेये (टीले) हैं। कहा जाता है कि जहाँ अब ये टीले हैं वहाँ सदियों पहले दो छोटे-छोटे गाँव रहे होंगे। किसी भूचाल के परिणाम-स्वरूप उनका अस्तित्व मिट गया होगा। दोनों टीलों के बीच कोई दो सौ गज लम्बा दर्रा सा है। दोनों टीले छोटी पहाड़ी की तरह ऊँचे-नीचे हैं। इनका रंग ज्यादातर गेरुआ और कहीं-कहीं मटमैला है। इन टीलों पर कहीं-कहीं मिट्टी के पके बर्तनों के टुकड़े, ईंटें व कभी कोई मोर्चा लगे लोहे के टुकड़े आदि मिल जाते हैं। इन टीलों पर कहीं-कहीं कांटेदार झाड़ियाँ व कीकर के छोटे-छोटे पेड़ उगे हुए हैं। रात के समय ये टीले बड़े डरावने से लगते हैं। उस समय उनके बीच के दर्रे में से गुजरते समय मन में भय उत्पन्न होने लगता है। इस भय का कारण वे किवदंतियाँ भी हैं जो राणीपुर के आस-पास के गाँवों के लोगों ने टीलो से जोड़ रखी हैं।

लगातार वर्षा के कारण कभी-कभी इस गन्जे नाले में बाढ आ जाती है। बारिश के कारण नाले का पानी बढ जाता है। और जब व्यास नदी में बाढ़ आती है तो इस नाले का रूप विकराल हो जाता है। बाढ के कारण व्यास का जल स्तर ऊँचा हो जाता है और परिणामस्वरूप नदी का पानी

नाले में आने लगता है। तब नाले का पानी आगे बढ़ने के बजाए उल्टा आस-पास के खेतो व गांवों में फैलने लगता है। उस फैलाव से प्रायः बहुत तबाही होती है। बाढ़ से होने वाली इस प्रकार की तबाही से कैसे बचाव किया जाए इसका कोई उपाय लोगों के पास नही होता। बेचारे ग्रामवासी सरकार से निवेदन कर-कर हार चुके हैं। इस मामले में सरकारी अहलकार भी प्रायः कानों में तेल डाले रहते हैं।

अपराह्न होते-होते व्यास दरिया के साथ-साथ गन्जे नाले में भी पानी ज़ोरों से उफनने लगा था। पानी आगे की ओर जाने के बजाए उल्टा लौट रहा था। गहरे मटमैले जल में लहरें उठ रही थी भँवरे पड़ रही थी। छोटी-बड़ी डालें, सूखे पत्ते, कांटेदार झाड़ियां और अनेक तरह का कूड़ा-कचरा जल के थपेड़ों से कभी इधर तो कभी उधर जा रहा था। नाले पर कोई पुल न होने के कारण थेयों की ओर आना-जाना लगभग बंद हो गया था। गाँव के अनेक लोग नाले के तट पर खड़े उसका बदलता हुआ रूप देखकर चकित व चिंतित हो रहे थे। पानी की गति को देखकर वे समझ रहे थे कि दो-चार घंटों में ही बाढ़ का पानी उनके खेतों मे भरने लगेगा, गाँव की ओर बढ़ने लगेगा। मकई की लहलहाती फसल का क्या होगा। धान की बुवाई अभी दो-चार दिन पहले शुरू हुई थी। यही गनीमत थी कि अभी शुरुआत ही थी। अगर कहीं धान पूरी तरह बो लिया होता तो इस आ रही बाढ़ से उसका क्या हाल होता। हर क्षण गहरे होते बादलो की गर्जन और उनमे लपलपाती बिजलियां लोगों के दिलों को दहला रही थी। लोग सहमें हुये आपस मे बातें कर रहे थे विचार कर रहे थे कि आने वाले खतरे का किस प्रकार सामना किया जाए। पर उन्हें इस आफत से बचने का कोई उपाय नही सूझ रहा था। ऐसा लग रहा था कि वे भगवान व भाग्य के भरोसे ही बैठे रहेंगे।

सूर्यास्त से थोड़ी देर पहले ही नाले का पानी गाँव की ओर जाने वाली मुख्य पगडंडी की ओर बढने लगा था। नाले के आस-पास के खेत भी पानी से भरने लगे थे। वैसे तो गाँव का हर व्यक्ति चिंतित था पर ठठ्ठी में रहने वालों की दशा कहीं ज्यादा खराब होती हुई नजर आ रही थी। ठठ्ठी उस ओर स्थित थी जिधर गन्जा नाला था। फिर ठठ्ठी का ढ़ोल अपेक्षाकृत ढाल पर भी पड़ता था। स्वाभाविक था कि जब पानी गाँव की ओर बढ़ेगा तो सबसे पहले वह ठठ्ठी में ही प्रवेश करेगा। पानी बरस रहा था फिर भी ठठ्ठी के अनेक लोग अपने कच्चे घरों की छत्तों पर खड़े आ रहे पानी को ओर देख रहे थे, छत्तों की दरारें व सुराख आदि मिट्टी व पत्थर-कंकड़ों से भर रहे थे। हालांकि

वे मन ही मन यह भी जान रहे थे कि आ रही बाढ़ के सामने उनका यह सब किया-कराया धरा रह जाएगा। बाढ़ का पानी तो उनके घरों की कच्ची दीवारों से टकराएगा, भीतर कमरों में प्रवेश करेगा। तब यह छतों की लीपा-पोती किस काम आएगी। फिर भी वे कुछ न कुछ कर ही रहे थे। कोई लकड़ी के बड़े-बड़े तखते दरवाज़ों के सामने बाँध रहा था तो कोई पक्की ईंटें व पत्थर दीवारों के साथ-साथ टिका रहा था। कोई केवल मन की तसल्ली के लिए टूटी चारपाई दरवाज़े पर टिका रहा था तो कोई पुराना बेकार छप्पर कहीं बाँध रहा था।

रात भर निरन्तर पानी बरसता रहा। यह कब बंद होगा इसके कोई आसार नज़र नहीं आ रहे थे। आधी रात तक ठठ्ठी की गलियों में व कुएँ के आस-पास प्रचुर मात्रा में पानी इकट्ठा हो चुका था। छोटे लड़को-बच्चो को छोड़कर शेष लगभग सभी लोग जाग रहे थे। प्रायः हर घर मे किसी में लालटेन तो किसी मे ढिबरी जल रही थी। लोग अपने घरो को पानी से बचाने के लिये अब भी कुछ न कुछ कर ही रहे थे। रात का अंतिम पहर था कि ठठ्ठी के लोगों ने ज़ोर से धड़ाम की आवाज़ सुनी। पूरी बस्ती मे एक प्रकार का कोलाहल सा मच गया। पता चला कि गुरदीन चमार की पिछली कोठरी ढह गयी है। गनीमत यही रही थी कि गुरदीन, उसकी बीवी तथा उसका एकमात्र लड़का उस समय दूसरी कोठी मे थे। आवाज़ सुनकर ठठ्ठी के कतिपय लोग वहाँ पहुँच गये और उसका जो थोड़ा सा सामान उस कोठरी में दब गया था उसको किसी तरह बाहर निकालकर दूसरी कोठरी में टिका दिया। गिरी हुई कोठरी को देख-देखकर गुरदीन की बीवी सिसक रही थी रो रही थी। गुरदीन के मुख पर भी दुख व चिन्ता की परत छायी हुई थी। लोग उसे दिलासा दे रहे थे।

दिन निकलने तक अनेक घरों में पानी आना शुरू हो गया था। किसी में टखने तक था तो किसी में घुटने तक। घरों की बाहरी दीवारों से पानी की लहरें छप-छप टकरा रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद कभी किसी मिट्टी की दीवार का भाग टूटकर गिर रहा था। पर लोग बेबस से [illegible] में डूबे यह सब देख रहे थे। वर्षा लगातार हो रही थी। किसी के [illegible] जाने का कोई प्रश्न ही नहीं रह गया था। हर कोई अपने [illegible] देख रहा था। पानी भरने के लिए ठठ्ठी में दो कुँए थे। [illegible] भी डूब चुके थे। हालांकि उन दोनों कुँओं पर छोटे [illegible] लेकिन बाढ़ का पानी उन चबूतरों से होकर कुंओं [illegible]

हर किसी के सामने समस्या थी कि पीने का पानी कहाँ से प्राप्त किया जाए।

अन्य लोगों की तरह हरनाम सिंह, उसका भाई व भाभी भी चिंतित थे। पर उन्हें मन में इस बात का सन्तोष था कि उन्होंने अच्छे समय में अपना पक्का कमरा बनवा लिया था यद्यपि कमरे में अभी पलस्तर नहीं हुआ था, फर्श भी नहीं बना था। उन्होंने कच्चे कमरों में रखा आवश्यक सामान पक्के कमरे में रख लिया था। उन्हें यह भी भरोसा था कि अगर कहीं उनका कच्चा कमरा पानी से गिर भी गया तब भी सिर छुपाने के लिए उनके पास पक्का कमरा तो होगा ही। बाढ़ के पानी का उस पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ठठ्ठी के कई लोग हाथों में खाली बर्तन लिए पीने के पानी के लिए परेशान हो रहे थे। दो-चार लोगों ने मटके व बाल्टियाँ बाहर खुले में रख दी थी ताकि वर्षा के पानी से वे भर जाएँ और उस पानी को ही पीने के काम लाया जा सके। लोगों की यह दशा देखकर सहसा हरनाम को ध्यान आया कि पंडित दीवान चन्द के घर के सामने तो कुँआ है। वह कुँआ कुछ ऊँचाई पर है। उसमें बाढ़ का पानी नहीं भरा होगा। क्यों न वहाँ से पानी लेने का प्रयास किया जाए। लेकिन उसके मन में यह भी आशंका थी कि यह कुँआ पंडितों व ऊँची जात वालों का है। क्या वे लोग हरिजनों को वहाँ से पानी भरने की अनुमति देंगे अथवा नहीं। हरनाम को यह तो मालूम था कि पंडित दीवान चन्द स्वयं तथा उसके लड़के इन्द्र सिंह व जोत लाल मानो जोता उदार प्रवृत्ति के हैं। शायद उन लोगों को एतराज न होगा। फिर उसे बलदेव का भी भरोसा था। वह तो पढ़ा-लिखा है, गाँव का हेड मास्टर है, खुले विचारों का स्वामी है। वह अवश्य ही इस मामले में कष्ट में फँसे ठठ्ठी के लोगों की सहायता करेगा। पर उसे इस बात की अशंका जरूर थी कि दीवान चन्द की गली में रहने वाले दूसरे लोग जरूर नाक-मुँह सकोड़ेंगे। यह भी बहुत सम्भव है कि वे लोग हरिजनों को उस कुएँ से पानी न भरने दें।

खैर कुछ देर तक सोच-विचार के उपरान्त हरनाम सिंह पाँच-सात लोगों को साथ लेकर उस कुएँ पर पहुँचा। हर किसी के हाथ में कोई न कोई बर्तन था। उनके दिलदिमाग में एक प्रकार की उधेड़बुन सी चल रही थी। सभी सोच रहे थे कि देखें अब क्या होता है। कहीं लड़ाई-झगड़े तक नौबत न आ जाए। जैसे ही वे लोग कुएँ के पास पहुँचे अगल-बगल के कुछ लोग बाहर आ गये। हरनाम ने पंडित दीवान चन्द के दरवाज़े की कुंडी खटखटायी। संयोगवश

कुछ देर बाद इन्द्र सिंह ही बाहर आया और खड़े लोगों को देखकर तनिक चकित हुआ। सभी लोगों ने हाथ जोड़कर उसका अभिवादन करते हुए कुएँ से पानी लेने के लिए निवेदन किया। ठट्ठी के दोनों कुँओं की जो स्थिति थी उसके बारे में हरनाम सिंह ने भी उसे अवगत कराया। इन्द्र कुछ समझ नहीं पा रहा था कि वह उन्हें क्या जवाब दे। वह यह भी देख रहा था कि कुएँ के पास खड़े ऊँची जाति के कतिपय लोग आपस में कुछ भुनभुना रहे हैं। उनकी भाव-भंगिमाओं से साफ लग रहा था कि वे नही चाहते कि ठट्ठी के ये नीच लोग उनके कुएँ से पानी भरकर उसे अपवित्र करें, उनके धर्म को भ्रष्ट करें। तभी वहाँ उसी गली मे रहने वाला ठाकुर दलजीत सिंह वहाँ पहुँच गया। वह जात का राजपूत था और स्वयं को बडा धर्मनिष्ठ हिन्दू मानता था। उसकी उम्र तीस-बत्तीस के करीब थी और जरा शरीर से भी तगड़ा था। पंद्रह-बीस एकड़ की उसकी खेती थी और वह स्वयं को किसी जमींदार से कम न समझता था। वहाँ खडे उन लोगों को देखकर हरनाम सिंह से बोला—क्यों भई हरनामे, ये लोग यहाँ क्या लेने आए हैं ?

हरनाम ने तनिक विमम्र भाव से कहा—ठाकुर साहब ! बाढ के पानी से ठट्ठी के दोनों कुएँ भर गये हैं और उनका पानी पीने के काबिल बिल्कुल नही है। ये भाई आप लोगों से प्रार्थना करने आए हैं कि इन्हे इस कुएँ से पीने भर के लिए पानी भरने दिया जाए।

—अरे यह क्या कह रहे हो.? होश में तो हो ? जानते नहीं यह हम ऊँची जात वालो का कुँआ है। यहाँ से तुम लोग कैसे पानी निकाल सकते हो ? आखिर हर जाति की अपनी मर्यादा होती है, धर्म का पालन तो करना ही पड़ता है।

इन्द्र सिंह को दलजीत के ये शब्द कही अच्छे न लगे। उसने उत्तर मे कहा —दलजीत सिंह ! इस कुएँ से पानी लेने से धर्म का क्या बिगड़ जायगा। अरे भाई जैसे हम आदमी हैं वैसे ही ये बेचारे भी हम आप की तरह के आदमी है। इस समय ये लोग कष्ट में हैं, पानी के लिए परेशान हैं और किसी दुखी-परेशान की सहायता करना क्या धर्म नहीं है। दुखियो-दीनों की मदद करना ही तो सच्चा धर्म है। मेरी आप लोगों से यही प्रार्थना कि इन बेचारों को पानी ले लेने दे।

ठाकुर दलजीत सिंह भली प्रकार से जानता था कि इन्द्र की बात को मोडना सरल नही हैं। इन्द्र कितना धाकड है उसकी जानकारी उसे पूरी थी। लेकिन इस समय दलजीत के सामने धर्म का प्रश्न था। उसे यह

था कि इस मामले मे मुहल्ले के अधिकांश ऊँची जाति के लोग उसकी बात का ही समर्थन करेगे। उसने कुछ क्षण चुप रहकर कहा—भाई इन्द्र सिंह ! यह पहला मौका है जब हरिजन लोग यहाँ पानी भरने के लिए आए हैं। मेरी बात छोड़ो, हो सकता है मुहल्ले के दीगर लोगो को इनके पानी भरने पर एतराज हो। तुम उन लोगों से भी पूछ लो। तब तक वहाँ कई लोग पहुँच चुके थे। घरों के दरवाज़ों पर खड़ी कुछ स्त्रियाँ भी इस वार्ता को सुन रही थी, आपस मे खुसर-फुसर कर रही थी। इन्द्र और हरनाम ने वहाँ खड़े लोगों से इस बारे में पूछा तो उन्हें लगा कि उनमे से अधिकांश लोग नही चाहते कि चमार-डोम आदि उनके कुएँ से पानी भरकर उनका धर्म-भ्रष्ट करे। उन दोनो को यह आभास हो चुका था कि उनसे अधिक बहस करना या उन्हे समझाना बेकार होगा। बहस से बात बनेगी नही बल्कि बिगड़ने की ही अधिक सम्भावना हो सकती है। लेकिन उन बेचारो को पीने के लिए पानी तो चाहिए ही था। इसका कोई न कोई उपाय तो खोजना ही था।

वे लोग इस सम्बन्ध मे विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि पंडित दीवान चन्द वहाँ पहुँच गया। हरिजन भाइयो की फरियाद सुनकर उसका हृदय कुछ द्रवित हो उठा। ऐसे संकट के समय उन लोगों की सहायता करना उसे उचित व आवश्यक लगा। लेकिन उनके लिये पानी की कैसे व्यवस्था की जाए इसका कोई उपाय उसके मस्तिष्क में नहीं आ रहा था। पिता की भावनाओं का इन्द्र को एहसास हो चुका था। सहसा उसके दिमाग में एक योजना आयी। उसने वहाँ उपस्थित लोगो से कहा—भाइयों, हमारे सामने कुआँ हो और हमारे अपने ही गाँव के हमारे हरिजन भाई पानी के लिये तरसें, यह हमारे लिये शर्म की बात है। आपमे जो लोग धर्मनिष्ठ है वे धर्म को किस रूप मे लेते हैं, धर्म के वास्तविक अर्थ क्या होते है, इस समय उन बातो से कोई सरोकार नही। हम यह भी नही चाहते कि किसी की धार्मिक भावनाओं को किसी प्रकार का आघात पहुँचे, किसी के मन को कष्ट पहुँचे। पर इन भाइयों के लिये पानी का कुछ इन्तज़ाम तो करना ही है।

कुछ क्षण अपने पिता व ठाकुर दलजीत सिंह से बात करने के उपरान्त उसने कहा—हमने एक बात सोची है। उसके करने से इन बेचारो को पीने के लिये पानी मिल जाएगा। इस काम में हम युवक इनकी मदद कर सकते हैं। मेरा यह निवेदन है कि हमारे हरिजन बन्धु कुएँ के चबूतरे पर न आएं। वे लोग चबूतरे के नीचे अपने-अपने बर्तन रख दें। हम तीन-चार नौजवान अपने घड़ो व बाल्टियों से कुएँ से पानी निकालकर उनके बर्तनों में डालते जाएंगे।

इस तरह उनको पानी मिल जाएगा। मेरा विचार है कि मेरे युवक साथी इस काम के लिये तैयार होंगे।

इन्द्र सिंह का यह सुझाव वहाँ उपस्थित लगभग सब लोगों को पसन्द आया। तुरन्त चार-पाँच लडके इस कार्य के लिये तैयार हो गये। वहाँ उपस्थित हरिजन उसकी वाहवाही करने लगे, हृदय से उसका जय-जयकार करने लगे। वे खुश थे कि अब उन्हे पीने के लिये पानी मिल जाएगा। इन्द्र सिंह के कहने पर वे युवक दौडकर अपने-अपने घरों से बाल्टियाँ-कलसे और पानी खीचने के लिए रस्सियाँ ले आए। उन्होंने बड़ी फुर्ती व उत्साह से कुएँ से पानी निकाल-निकाल कर उन लोगों के बर्तनों को भरना शुरू कर दिया।

जैसे ही यह खबर ठठ्ठी मे पहुँची, अनेक पुरुष व महिलाएँ हाथो मे बर्तन लिये वहाँ पहुँचने लगी। कुएँ पर अच्छा-खासा मजमा लग गया। लड़के धड़ा-धड़ पानी निकालकर उनके बर्तन भरते जा रहे थे। हरिजन पुरुष व महिलाएँ उनको दुआएँ देती व उनका गुणगान करती हुई अपने-अपने घरों को पानी ले जा रही थी। कुछ देर के लिये वहाँ परस्पर एकता का एक अद्भुत दृश्य दिखाई पड़ रहा था। प्रत्येक भले व्यक्ति का मन यह नजारा देखकर गदगद हो रहा था। गाँव के लोगों ने इससे पहले कभी इस प्रकार के प्रेम व एकता का रूप नही देखा था। सभी सुलझे विचारों के लोग सोच रहे थे कि काश इस प्रकार का प्रेमभाव हमेशा उनके गाँवों में बना रहे, जातपात को लेकर कभी किसी तरह के लडाई-झगडे की नौबत न आए। दो-घंटे मे ही ठठ्ठी के लोगों को पीने के लिये पर्याप्त पानी मिल गया था।

उसी दिन ही मोहर सिंह राणीपुर लौट आया था। ठठ्ठी के लोगों को पीने के लिये पानी पाने मे दिक्कत हो रही है जब इस बात की जानकारी उसे हुई तो वह तुरन्त गुरुद्वारे पहुँचा। उसने इस बारे मे वहाँ के ग्रन्थी से बात की। गुरुद्वारे मे कुएँ के अलावा एक हैंडपम्प भी था। गुरुद्वारे के द्वार तो सदैव हर जाति के लोगों के लिये खुले रहते हैं। वहाँ हरिजन भी पूरी आज़ादी से आ-जा सकते हैं। ग्रन्थी को भला क्या एतराज हो सकता था। मोहर सिंह के कहने पर वह तुरन्त मान गया। उसने अनुमति दे दी कि ठठ्ठी में रहने वाले हरिजन व गाँव के अन्य परेशान लोग भी बिना किसी प्रकार के संकोच के गुरुद्वारे के कुएँ व हैंडपम्प से पानी ले जा सकते हैं। सरदार प्रताप सिंह, इन्द्र सिंह व गाँव के अन्य पाँच-सात व्यक्तियों की कोशिशो से बाढ़ से पीड़ित लोगों के भोजन के लिये गुरुद्वारे की ओर से लंगर की व्यवस्था भी कर दी गयी। अब हरिजन भाइयों को वहाँ से पानी और भोजन भी मिलने लगा। व्यवस्था

करने वालों ने यह निर्णय लिया था कि जब तक बाढ़ का प्रकोप समाप्त नहीं हो जाता ठठ्ठी के लोगों को यह सुविधा मिलती रहेगी। खाने-पीने के इस इन्तज़ाम मे सरदार प्रताप सिंह, पंडित दीवान चन्द, इन्द्र सिंह, हेड मास्टर बलदेव प्रकाश, मोहर सिंह व हरनाम सिंह ने जो सहयोग दिया उसको गाँव के अधिकांश लोग और ठठ्ठी का बच्चा-बच्चा प्रशंसा कर रहा था। हरिजन महिलाएँ व बुजुर्ग तो हृदय से उन्हें दुआएँ दे रहे थे। पर गाँव में सरदार जोधा सिंह, उसके दोनों लड़के व शंगारा सिंह सरीखे कई ऐसे भी लोग थे जिन्हें यह सब अच्छा नही लग रहा था। उनके विरोधियो व दुश्मनों को इस प्रकार आदर-मान मिले यह वे कैसे सहन कर सकते थे। जिन लोगों के दिलों में शुरू से ही छोटी जाति के लोगों के लिये घृणा थी वे भी मन ही मन जल-भुन रहे थे। लेकिन वे क्या कर सकते थे। गाँव का बहुमत तो उस समय ठठ्ठी के पीड़ित लोगों के साथ था।

अगले दिन वर्षा का रूप और भयानक हो गया। ब्यास नदी और गन्जे नाले का जल और तेज़ी से बढ़ता जा रहा था। ब्यास का जल-स्तर बढ़ने के साथ-साथ गन्जे नाले का स्तर भी ऊँचा होता जा रहा था। मालूम नही अब तक कितने गाँव ब्यास की भेंट हो चुके थे। नदी के पाट की कोई सीमा नहीं रह गयी थी। उफनते-लहराते जल में सैकडों उखडे हुए पेड, डाले, झाड़ियाँ, झोपड़ियों के छप्पर, छतों की कड़ियाँ, उखड़ी हुई खिड़कियाँ व दरवाज़े, अनेक प्रकार की लकडी की वस्तुएँ आदि तेज़ी के बहती हुई दृष्टि-गोचर हो रही थी। धड़ाम-धड़ाम कगार टूट-टूटकर नदी में गिर रहे थे। अनेक मरे हुए पशु आदि पानी में बहते जा रहे थे। गन्जे नाले की दशा भी कुछ ऐसी ही होती जा रही थी। उसका पानी पूरी गति के साथ खेतों में भरता जा रहा था। अन्य गाँवो की तरह बाढ का पानी राणीपुर गाँव मे भी भरता जा रहा था।

दूसरे दिन दोपहर होते-होते बाढ का गदला जल गाँव की लगभग सभी गलियों मे तेजी से बह रहा था, घरो में प्रवेश कर रहा था। लोगों ने अपना घरो का सामान चारपाइयों पर, ऊँची पड़छतियों पर रखना शुरू कर दिया था। जिनके पास दो मंजिले मकान थे वे लोग ऊपरी मंजिलो में पहुँच गये थे। लोग छतो पर खडे चारो ओर फैल रहे बाढ के विकराल दृश्य देखकर चिंतित हो रहे थे। हाँ अनेक नासमझ लडकों-बच्चो के लिये यह एक प्रकार का तमाशा था। उनके चेहरो पर दुख के बजाए हर्ष की रेखाएँ ही नज़र आ रही थीं।

ठठ्ठी में मन्नू नामक एक बुड्ढा हरिजन रहता था। चूँकि वह अर्ध-विक्षिप्त था इस कारण गाँव के लोग उसे मन्नू शैदाई (पागल) कहते थे। मन्नू शैदाई प्रायः गाँव में घूमता-फिरता रहता था। पागलों की भाँति जो उसके मन मे आता था बक देता था। गाँव के लडके-बच्चे प्रायः उसे परेशान करते रहते, उस पर ढेले-पत्थर तक फेंकते रहते थे। पर कई लोग दयाभाव से वशीभूत होकर उसे रोटी आदि भी खाने को दे देते थे। गाँव की गलियों में तेजी से पानी भरता जा रहा था और मन्नू यह देखकर खुश हो रहा था। वह हा-हा ही-ही करता हुआ कभी इस गली में तो कभी उस गली मे आ-जा रहा था। कभी-कभी वह जोर से बोलने लगता—वाह ! अब मजा आएगा, अब इन सरदारों के घर गिरेंगे, इनके कोठे-मकान ढहेंगे, इन सरदारो व पंडितों की औरतें-बच्चे बर्बाद हो जाएँगे, वाह-वाह ! अब रंग जमेगा, अब गाँव बर्बाद होगा। बाढ के कारण लोग तो वैसे ही परेशान थे, मन्नू के ये शब्द इस तरह की बद्दुआएँ सुनकर उन्हे उस पर क्रोध आ रहा था। वे उसे समझाते थे, चुप रहने के लिये कहते थे लेकिन उस पर कोई प्रभाव नही पड रहा था। वह तो आखिर नीम पागल ही था। संयोगवश छज्जू लँगड़ा वहाँ पहुँच गया। उसने मन्नू को इस प्रकार हा-हा करके हँसते-बकते देखा तो उसका क्रोध एकदम सातवें आसमान पर चढ गया। उसने आव देखा न ताव तुरन्त पूरी ताकत से अपनी बैसाखी उस विक्षिप्त के सिर पर दे मारी। सिर पर चोट लगते ही मन्नू लडखडाकर एक टूटी हुई पक्की मुँडेर पर जा गिरा। दुर्भाग्यवश उसका सिर एक नुकीली ईंट पर पड़ा। उसके सिर पर गहरा सा घाव हो गया। बड़ी तेजी से उससे रक्त बहने लगा। पास खडे लोगो ने तुरन्त उसे वहाँ से उठाया। वहाँ कुछ ही क्षणो मे अच्छी-खासी भीड़ हो गयी। ठठ्ठी के अनेक लोग वहाँ पहुँच गये। उसके घाव को लोग कपडे से पोंछ रहे थे। लेकिन खून निकलना किसी भी तरह बन्द नहीं हो रहा था। वहाँ उपस्थित हर कोई लँगड़े छज्जू का लानत-मलामत कर रहा था। स्थिति को भाँपकर कुछ ही क्षणों बाद छज्जू आँख बचाकर वहाँ से खिसक गया था। ठट्ठी के लोग मन्नू को खाट पर डालकर ठट्ठी मे ले गये। लेकिन वे उसका क्या दवा-दारू कर सकते थे। वह पूरी तरह अचेत पड़ा था। उसके कमजोर शरीर से बहुत रक्त निकल चुका था। रात के दूसरे पहर उसके प्राण-पखेरू उड गये। गाँव के लोग समझ गये थे कि मन्नू की मृत्यु छज्जू लँगड़े के कारण ही हुई है। उसने ही बैसाखी मारकर उसकी हत्या की है। वह हत्यारा है। उसकी सजा

बकाला थाने में रिपोर्ट होनी चाहिये। उस बदमाश लँगड़े ने निरापराध मन्नू चमार की हत्या की है इसलिये उसे भी सरकार की ओर से फाँसी की सजा मिलनी चाहिये। ठठ्ठी के कई लोगों ने निश्चय किया कि वे जल्दी ही थाने पर पहुँचकर इस हत्या की रपट लिखवाएँगे। छज्जू को वे पुलिस द्वारा पकड़वाकर ही दम लेंगे।

● ●

चौबीस

ठठ्ठी के लगभग सभी लोगों के विचार में मन्नू चमार की मृत्यु छज्जू लँगड़े द्वारा मारी गयी बैसाखी व ईंटों की मुँडेर पर गिराने के कारण हुई थी। गाँव के कई लोग भी इसे हत्या का मामला ही मान रहे थे। ऐसे लोगों का विचार था कि इस मामले की रपट बाबा बकाला थाने में करनी ही चाहिये। रपट न करने पर हो सकता है बाद में पुलिस द्वारा कोई बखेड़ा न खड़ा कर दिया जाए। अतः सुबह होते ही ठठ्ठी के चार-पाँच हरिजन व्यक्ति रपट लिखवाने के लिये थाने पहुँच गये। बाबा बकाला के थाने पर जाने से पूर्व उन लोगों ने केवल आपस में ही विचार-विमर्श किया था। वे जानते थे कि यदि वे गाँव के ऊँची जाति की जाने-माने लोगों से राय लेने पहुँचेंगे तो वे लोग मामले को दबाने की ही कोशिश करेंगे। जोधा सिंह व शगारा सिंह जैसे व्यक्ति कभी नहीं चाहेंगे कि उनका सहयोगी छज्जू लँगड़ा पुलिस के चँगुल में फँसे। गाँव वाले भली भाँति जानते थे कि छज्जू कभी-कभी उन लोगों के यहाँ काम करता है। उनका कारिन्दा होने के अलावा वह प्रायः उनके लिए गुप्तचरी का काम भी करता है। जाति के लिहाज से भी वह हरिजन नहीं है।

छज्जू बहुत बड़ी परेशानी में फँस गया था। मन्नू को बैसाखी मारते समय उसने सोचा तक नहीं था कि इस साधारण से प्रहार का इतना भयानक परिणाम निकलेगा, मन्नू मर जाएगा और उस पर हत्या का दोष लग जाएगा। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। उसे लग रहा था मानों हर क्षण उसकी रगों में खून जमता जा रहा हो। उफ! वह क्या कर बैठा। अब क्या होगा। अब तो जरूर ही गाँव में पुलिस आएगी और उसे हथकड़ी लगाकर थाने ले जाएगी, उसे जेल में बन्द कर दिया जाएगा, ठठ्ठी के अनेक लोग उसके खिलाफ अदालत में शहादतें देंगे। और बहुत मुमकिन है कि

अदालत मे उस पर हत्या करने का आरोप सिद्ध हो जाए। और यदि ऐसा हो गया तो उसे फाँसी हो जाएगी। फाँसी न भी हुई तो आजीवन कारावास तो हो ही जाएगा। दिनभर वह अपने परिचितों, शुभचिन्तकों व जोधा सिंह व शंगारा सिंह सरीखे संरक्षको के मिलता रहा, उनके सामने गिड़गिड़ाता रहा। बात करते समय कभी-कभी तो उसकी आँखें नम हो जाती थी, वह सिसकने लगता। हर क्षण उसका मन अन्दर ही अन्दर बुझता जा रहा था। उसके संरक्षक उसको दिलासा दे रहे थे आश्वासन दे रहे थे कि वे हर सम्भव उपाय से उसका पक्ष लेंगे, उसे दंड से बचाने की पूरी चेष्ठा करेंगे। और अगर उसे जेल में बन्द करने का आदेश हो गया तो वे लोग उसे ज़मानत पर वहाँ से मुक्त करवा लाएँगे। इतने आश्वासन मिलने पर भी छज्जू की आत्मा उसे कह रही थी कि तुम अपराधी हो, तुमने एक निरापराध की हत्या की है, तुम्हे दंड मिलकर ही रहेगा, तुम फाँसी के फन्दे या उम्र-कैद के दंड से बच नही सकते। तुम्हे अपने किये की सज़ा भुगतनी ही पड़ेगी।

चार दिनों तक निरन्तर आकाश में बादल गरजते रहे, बिजलियाँ गड़-गड़ाती रही लपलपाती रही। राणीपुर के अधिकांश घरों में पानी भर गया था। किसी मे घुटनों तक था तो किसी में कमर तक। सरदारों, ठाकुरों व ऊँची जाति के अनेक लोगों ने कोशिश की कि ठठ्ठी में रहने वाले हरिजन लोग उनकी सहायता करें, उनकी गलियों उनके दरवाजों के सामने ईंटो, मिट्टी व बालू के ढेर लगाकर छोटे-छोटे बाँध बाँधे। बहुत ज़ोर डालने पर आठ-दस लोग ही थोड़ी देर के लिए उनको मदद करने उनका हाथ बँटाने पहुँचे। अधिकांश हरिजन ठठ्ठी मे ही रहे। उन बेचारो के अपने मकान गिर रहे थे, अधिकांश लोग स्वयं मुसीबत मे फँसे हुए थे। वे उस आफत की घड़ी में अपने परिवारों को छोड़कर उनकी सहायता करने कैसे जा सकते थे। फिर उन लोगों के मन में इस बात का भी रोष था कि इन ऊँची जाति के लोगों ने उनकी कौन सी सहायता की है। अगर पंडित दीवान चन्द, उसके लड़कों व दो-चार अन्य लोगों ने उनकी मदद न की होती तो वे पानी पीने के लिए भी तरस जाते। फिर सबसे बड़ी नाराज़गी उनके मन में बेचारे मन्नू चमार की हत्या को लेकर थी। वह भले ही अर्ध-विक्षिप्त था पर था तो उनकी अपनी बिरादरी का, उनका अपना भाई उनका बुज़ुर्ग। उन्होंने मन में संकल्प कर लिया था कि वे इस मामले को दबने नहीं देंगे, अगर ज़रूरत पड़ी तो वे इलाके के बड़े-बड़े नेताओं तक पहुँचकर अपनी फरियाद सुनाएँगे। वे हत्यारे छज्जू को दंडित करवाकर दम लेंगे। हरनाम सिंह तो ठठ्ठी में रहता ही था। और

इस मामले में वे पूरी तरह से अपनी बिरादरी का साथ दे रहा था। उसके अलावा मोहर सिंह, बलदेव प्रकाश व इन्द्र सिंह भी ठट्ठी में जाकर उन लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट कर आए थे। उन्हें आश्वासन दे आए थे कि वे सत्य और न्याय का पक्ष लेंगे और जहाँ तक उनसे बन पड़ेगा वे उन बेचारों की सहायता करेंगे।

ठट्ठी में जो कुछ गतिविधियाँ चल रही थीं उनकी जानकारी किसी सीमा तक सरदार जोधा सिंह व उसके सहयोगियों तक पहुँच रही थी। उन्हें आभास हो रहा था कि हत्या के इस मामले को आगे बढ़ाने में डाकघर का बाबू, मोहर सिंह तथा दीवान चन्द के समर्थक ठट्ठी वालों को सहयोग दे रहे हैं। जब छज्जू लँगड़े को पता चला कि हेड मास्टर बलदेव प्रकाश भी उन लोगों की मदद कर रहा है और उसे फँसाने के लिए कोशिश कर रहा है तो उसके मन में उसके प्रति प्रतिशोध की भावना पूरी तरह जाग उठी। उसने तुरन्त सोच लिया कि वह भी उससे बदला लेकर रहेगा, वह उसे सुख व इज्जत से गाँव में नहीं रहने देगा। वह आज ही सरदार जोधा सिंह व उसके लड़कों को बता देगा कि इस बदमाश बलदेव के उनके ही परिवार की लड़की प्रीतो से किस प्रकार के सम्बन्ध हैं। उसने उस दिन पेड़ों के पीछे बलदेव और प्रीतो को जिस रूप में देखा था उसका पूरा विवरण वह उन्हें सुना देगा। वह भली भाँति जानता था कि उसका चलाया तीर निशाने पर बैठेगा। जोधा सिंह व उसका भाई प्रताप सिंह कैसे सहन करेंगे कि बलदेव उनकी लड़की की मान-मर्यादा पर हाथ डाले, उससे अनुचित सम्बन्ध रखे। वे लोग अवश्य ही उसे मजा चखाकर रहेंगे, वे लोग जमकर उसकी पिटाई करेंगे और इस तरह उसकी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। वह गाँव में किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रह जाएगा। तब उसे विवश होकर राणीपुर गाँव को छोड़ना पड़ेगा। हाँ वह जरूर उससे बदला लेगा, वह आज ही बल्कि अभी जाकर उसका भंडा फोड़ेगा।

छज्जू लँगड़ा स्वभाव से झगड़ालू तथा मुँहफट था। किसी भी तरह की बात करने में उसे किसी तरह का संकोच अनुभव नहीं होता था। सीधे जोधा सिंह से बात करने के बजाए वह उसके लड़के शेर सिंह के पास पहुँचा और खूब नमक-मिर्च लगाकर उसे पूरा विवरण सुना दिया। उसकी बात का जो प्रभाव जोधासिंह व प्रतापसिंह के मन पर पड़ा होगा उसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। प्रताप सिंह से कहीं ज्यादा जोधा सिंह व उसके दोनों लड़के लाल-पीले होने लगे। वे हरसम्भव तरीके से प्रताप सिंह को

पंडित दीवान चन्द के परिवार के लोगों तथा विशेष रूप से बलदेव के विरुद्ध भड़काने लगे। उन्होंने उसे बड़े कठोर शब्दों में समझाने की चेष्टा की कि वह बलदेव को इस गंदी हरकत के लिए कोई कठोर दंड दे, उसे स्कूल से ही नहीं बल्कि गाँव तक से बाहर निकलवा दे। उन्होंने उसे यहाँ तक चेतावनी दी कि अगर उसने उस कमीने हेड मास्टर के विरुद्ध कुछ न किया तो वे स्वयं कुछ न कुछ करके ही रहेंगे, वे उसे गाँव में नहीं रहने देंगे।

अपराह्न में वर्षा कुछ थम गयी। आकाश में बादल छटते हुये नजर आ रहे थे। उत्तर दिशा में अब भी पहले की तरह काली घटाएँ फैली हुई थीं। लगता था कि वे किसी भी समय पुनः आसमान में फैल सकती हैं। बहरहाल पहले की अपेक्षा अब वातावरण साफ व उजला दिखाई पड़ने लगा था।

सरदार जोधा सिंह अपने कुछ साथियों सहित अपनी बैठक में बैठा हुआ था। परस्पर बातों का सिलसिला जारी था। शंगारा सिंह का विचार था कि छज्जू लंगड़े को कुछ दिनों के लिए गाँव से बाहर किसी दूसरी जगह भेज दिया जाये। जब मामला ठंडा हो जाएगा तो उसे वापस बुलवा लिया जाएगा। लेकिन जोधा सिंह उसके सुझाव से सहमत नहीं था। वह जानता था कि ऐसा करने पर पुलिस को उन लोगों पर शक हो जायेगा और बहुत मुमकिन है कि वे बिना मतलब पुलिस द्वारा फांस लिये जाएं। उसका विचार था कि अगर पुलिस आती है और वह छज्जू को पकड़ लेती है तो वे लोग थानेदार को घूस आदि देकर मामले को कुछ कमजोर करवा लेंगे और बाद में मिलमिलाकर छज्जू को जमानत पर छुड़वा लिया जाएगा।

अभी वे लोग आपस में बातें कर ही रहे थे कि जोधा सिंह का छोटा बेटा दौलत सिंह बैठक में प्रविष्ट हुआ। उसके चेहरे का रंग कुछ उड़ा हुआ था। उसने आते ही धीरे से कहा—ठठ्ठी में थानेदार आठ-दस सिपाहियों के साथ पहुँच गया है। हरनाम और मोहर सिंह वहाँ थानेदार के साथ बातें कर रहे थे। मैं अभी-अभी उन लोगों को देखकर ही आया हूँ।

दौलत की बात सुनकर सबके चेहरे उतर गये। वहाँ बैठे छज्जू लंगड़े को तो मानो काठ मार गया। उसका मुख एकदम पीला पड़ गया। वह सहमी हुई नजरों से कभी जोधा सिंह को तो कभी शंगारा सिंह को बिटर-बिटर देखने लगा। उसे मन ही मन पूरा एहसास हो गया कि अब उसकी शामत आ गयी है। कुछ ही देर बाद उसके हाथ हथकड़ी में कसे होंगे। उसे हवालात में बन्द कर दिया जायगा। जोधा सिंह व उसके साथी यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि उन्हें अब क्या करना चाहिए। क्या उन लोगों को स्वयं ठठ्ठी

पहुँचकर थानेदार से बातचीत करनी चाहिये या थानेदार को अपनी बैठक में बुलवाकर स्थिति से अवगत कराना चाहिए।

आखिर यही सोचा गया कि ठठ्ठी जाना ही उचित होगा। योजना यह बनाई गयी कि जोधा सिंह और शंगारा सिंह ही ठठ्ठी जाएँगे। छज्जू फिलहाल बैठक में ही रहेगा और अगर जरूरत पड़ी तो उसे बुलवा लिया जाएगा। उन्होंने यह भी सोचा कि वे कोशिश करके थानेदार को बैठक पर ले आएँगे। आए हुये पुलिस के अमले की बैठक में ही आवभगत की जाएगी, उनके लिए खाने-पीने का इन्तजाम किया जाएगा। और यह सोचकर वे दोनों ठठ्ठी की ओर चल पड़े।

वर्षा और बाढ के कारण ठठ्ठी की हालत बेहद खराब थी। जगह-जगह मटमैला पानी और कीचड़ फैला हुआ था। किसी तरह वे दोनों वहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर मालूम हुआ कि थानेदार साहब हरनाम सिंह के नये बने कमरे में बैठे मामले की तफतीश कर रहे हैं। जोधा सिंह का मन नहीं मान रहा था कि वह हरनाम के कमरे की ओर मुँह करे। पर वह उस समय मजबूर था। और घरों की अपेक्षा हरनाम का नया बना कमरा ही एक ऐसा स्थान था जहाँ थानेदार को बैठाना उचित समझा गया था।

हरनाम के कमरे में भी दो-तीन इंच तक पानी खड़ा था। वहाँ एक बड़े से तख्त पर एक कुरसी पर थानेदार सरदार रछपाल सिंह बैठा हुआ था। रछपाल सिंह की अवस्था चालीस वर्ष के आसपास रही होगी। उसका कद छः फुट से कम नहीं था। शरीर कसरती लग रहा था। ताँबे रंग का चेहरा बड़ा रौबीला लग रहा था। फिक्सो लगी काली-घनी दाढ़ी और बिच्छू के डंक की तरह उठी हुई मूछें बड़ी प्रभावपूर्ण लग रही थी। सिर पर कल्फ लगी तुर्रेदार पगड़ी सुशोभित थी। मोटी भवों के नीचे मोटी थोड़ी लालिमायुक्त आँखें चमक रही थी। साथ आए सिपाही तख्त पर किसी तरह सिकुड़े बैठे थे। दो सिपाही हाथों में बन्दूके थामे हुए थे और शेष के पास बेंत के गज भर लम्बे डंडे थे। हरनाम सिंह, मोहर सिंह और बलदेव प्रकाश पास पड़ी चारपाई पर बैठे थानेदार से बातचीत कर रहे थे। दरवाजे के बाहर खड़े ठठ्ठी के आठ-दस व्यक्ति हो रही तफतीश को टोह लेने की कोशिश कर रहे थे। जैसे ही उन लोगों ने सरदार जोधा सिंह व शंगारा सिंह को आते देखा वे दरवाजे से जरा परे हट गये, उन दोनों को 'सत सिरी अकाल' कहकर उनका अभिवादन किया। वे दोनों कमरे में दाखिल हुये।

थानेदार को देखकर दोनो ने हाथ जोडकर सत सिरी अकाल कहा।

मोहर सिंह ने थानेदार से उनका परिचय करवाते हुये बताया कि वे दोनों गाँव के जाने-माने किसान व साहूकार हैं। स्कूल की प्रबन्ध समिति के वे सदस्य हैं, गाँव के सभी लोग उन्हे आदर-मान देते है। थानेदार रछपाल सिंह ने तनिक मुसकराकर व सिर हिलाकर उनका स्वागत किया और उनके बैठने की व्यवस्था करने के लिए हरनाम सिंह से कहा। हरनाम तुरन्त उठा और बगल वाले कमरे से एक खाट उठा लाया। कमरे मे खाट रखकर उस पर काला-सफेद खानेदार खेस बिछा दिया गया। जोधा सिंह व शंगारा सिंह उस पर बैठ गये।

कुछ क्षण चुप रहने के बाद जोधा सिंह ने हरनाम सिंह से पूछा—क्यों भाई हरनाम सिंह, साहब बहादुर को कुछ जलपान करवाया? आप हमारे मेहमान है, आपको मामले की तफतीश करने में कोई कठिनाई नही होनी चाहिए। फिर उसने थानेदार को बडे विनय भाव से कहा—सरदार साहब, हम लोग आपके ताबेदार हैं। वारदात जो हो गयी है उसकी तहकीकात तो आप करेंगे ही और इस मामले में गाँव वालों से आपको पूरी मदद मिलेगी। साथ ही मेरा यह भी निवेदन है कि शाम चार-पाँच बजे आप और आपके अमले के लोग मेरे गरीबखाने पर चाय आदि पीने की कृपा करे।

—ठीक है सरदार जी, चाय भी पी लेंगे। फिलहाल जिस काम के लिए आये है उसको थोडा देख-समझ लें। हैरानी इस बात की है कि आप जैसे बाइज्जत लोगों के होते हुए सरेआम एक आदमी का कत्ल हो गया। क्या इस कत्ल के पीछे कोई पुरानी खानदानी दुश्मनी थी या कोई और वजह थी, थानेदार रछपाल सिंह ने तनिक गम्भीर मुद्रा ओढकर पूछा।

जोधा सिंह ने उत्तर दिया—नही साहब, दोनों फरीकों में किसी भी तरह की आपसी रंजिश नही थी। हाँ यह हकीकत है कि मकतूल मंगू नीम पागल था और वह बिना मतलब कभी-कभी लोगों को बेहूदा गालियाँ बकने लगता था, कभी-कभी जोश मे आकर पत्थर-ढेले भी मारने लगता था। जाहिर है वह इस तरह की हरकतें पागलपन के तहत ही करता था। और मेरा ख्याल है कि जो हादसा हो गया उसकी तह मे भी कही उसका पागलपन ही रहा होगा।

जोधा सिंह की बात काटते हुए शंगारा सिंह बोला—सरदार जोधा सिंह, तुम मंगू को मकतूल क्यो कह रहे हो। मकतूल तो वह तब माना जाएगा जब यह साबित हो जायगा कि उसका कत्ल किया गया। अभी तो पूरी बात जेर तफतीश है।

शंगारा सिंह की बात सुनकर थानेदार मन ही मन कुछ चौंका। वह समझ गया कि यह आदमी बड़ा होशियार और धूर्त है। किस अंदाज से इसने कानूनी नुक्ते को पकड़ने की कोशिश की है। फिर थानेदार रछपाल सिंह ने शंगारा सिंह की आँखों मे झाँकते हुए कहा—लगता है आप बड़े कानूनदां हैं। आपने बिल्कुल सही कहा है कि मामला साबित होने पर मरहूम मंगू को मक़तूल कहा जाएगा। मुझे यक़ीन है कि आप भी इस तफ़तीश में हमारी पूरी मदद करेंगे।

—बिल्कुल सरकार! हम तो हर वक्त आपके सेवक है। लेकिन सरकार मेरी भी यही गुजारिश है कि थोडी देर पूछताछ करने के बाद आप हज़रात सरदार जोधा सिंह के यहाँ जलपान करने के लिये तशरीफ़ लाएँ। बल्कि अगर आपको कोई दिक्कत न हो तो आप रात को यहाँ ही आराम फरमाएँ। मौसम का रंग आप देख ही रहे है। अन्धेरी और बरसाती रात मे लौटने मे आपको परेशानी होगी।

—यही तो मै भी अर्ज़ कर रहा हूँ कि आप रात को मेरे ग़रीबखाने पर ही रहे। मैं अभी जाकर आपके भोजन का इन्तजाम करवाता हूँ। ये शब्द जोधा सिंह ने कहे।

थानेदार ने अपने दो-तीन सिपाहियों की ओर कुछ ऐसे अंदाज से देखा गोया वह उनकी राय जानना चाहता हो। पूर्व इसके कि वह कुछ जवाब देता एक सिपाही बोल उठा—सरदार साहब! हमे आज रात को ही वापस थाने पहुँचना होगा। क़त्ल का संगीन मामला है। लाश का यहाँ ज्यादा देर पड़े रहना ठीक न होगा। उसे ले जाकर उसका पोस्ट-मार्टम करवाना होगा। रहा भोजन का सवाल तो वह तो करना ही है चाहे आपके दौलतखाने पर करें चाहे बाबा बकाला पहुँचने पर करेंगे।

जोधा सिंह सिपाही का इशारा समझ गया था। वह तुरन्त थोड़ा मुसकरा कर बोला—तो साहब ठीक रहा। आप साहेबान रात का भोजन मेरे यहाँ करके ही जाएँगे। अच्छा हजूर मुझे फिलहाल इजाज़त बख्शें। थोड़ी देर बाद चाय-नाश्ता मैं यहाँ ही भिजवा दूँगा और यहाँ का काम निपटाने के बाद आप मेरे यहाँ तशरीफ लाएँगे। इतना कहकर वह जाने के लिए खड़ा हो गया। शंगारा सिंह भी उसके साथ ही चलने लगा। फिर सहसा जोधा सिंह के मन मे कुछ विचार आया और दरवाजे के पास खडे होकर एक सिपाही को इशारे से बाहर बुलाया। सिपाही को वह एकान्त मे ले जाकर बोला—देखो भाई, यहाँ का काम खत्म होने पर आप लोग मेरे मकान पर आ जाएँ। वैसे

मैं आप लोगों के लिये मुर्गे का महाप्रसाद पकवा रहा हूँ। साथ में व्हिस्की-रम का भी इन्तजाम रहेगा। हम पूरी कोशिश करेंगे कि आप साहेबान खुश होकर लौटें।

—ठीक है सरदार साहब! हम लोग पहुँच जायेंगे। खाना तो खाना ही है, आपके यहाँ ही खा लेंगे। सिपाही ने जवाब दिया।

उन दोनों के चले जाने के बाद थानेदार अपने दो-चार सिपाहियों के साथ मन्नू चमार के घर पहुँचा। मन्नू के घर में उसके भतीजे का परिवार रहता था। वहाँ लाश का मुआयना करने के बाद थानेदार ने मरहूम मन्नू के भतीजे सुख्खू का बयान कलमबन्द किया और उसे बता दिया कि वे लोग रात में बाबा बकाला लौटते समय मन्नू की लाश को पोस्टमार्टम के लिए साथ ले जाएँगे। पोस्टमार्टम होने के उपरान्त ही लाश अंतिम संस्कार हेतु लौटाई जाएगी।

मन्नू के घर से वे लोग पुनः हरनाम सिंह के कमरे में वापस आ गये। फिर थानेदार ने अपने चार सिपाहियों को आदेश दिया कि वे छज्जू के घर जाकर उसे पकड़कर ले आएँ। चूँकि सिपाहियों को छज्जू के मकान की जानकारी नहीं थी इसलिए हरनाम ने बिन्दरे से कहा कि वह उनके साथ जाकर उन्हें उसका मकान बता दे। सिपाही बिन्दरे के साथ छज्जू के घर की ओर चले गये।

थानेदार कुछ दीगर लोगों के बयानात कलमबन्द कर रहा था कि इन्द्र सिंह वहाँ पहुँचा। इन्द्रसिंह ने अपने चौड़े ललाट पर अपना हाथ रखकर व तनिक सिर झुकाकर थानेदार को नमस्कार किया। जैसे ही हरनाम सिंह इन्द्र सिंह का परिचय थानेदार से करवाने लगा तो थानेदार तुरंत बोल उठा—भाई, सरदार इन्द्र सिंह को मैं अच्छी तरह जानता-पहचानता हूँ। यह हमारे इलाके के नामी-गरामी पहलवान हैं, इन्हें कौन नहीं जानता। अभी कुछ दिन पहले इन्होंने जिस ढंग से पटियाले के मशहूर पहलवान जगीर सिंह को पछाड़ा था उसकी चर्चा अभी तक लोग करते रहते हैं। फिर थानेदार रछपाल सिंह ने इंद्र सिंह से हाथ मिलाकर उसे पास पड़ी चारपाई पर बैठने के लिए कहा।

बेशक थानेदार की उम्र इंद्र सिंह से पंद्रह-सोलह वर्ष ज्यादा रही होगी पर उसके व्यक्तित्व में बहुत आकर्षण था। खाकी वर्दी व तुर्रेदार पगड़ी पहने उस छः फुट ऊँचे सुगठित जिस्म वाले जाट रछपाल सिंह की शक्ल-सूरत देखते बनती थी। पर जब उसने इंद्र सिंह को अपने निकट बैठे देखा तो वह उसकी डील-डौल देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसे लगा कि उसके सामने बैठा नौजवान

उससे कही तगड़ा और दो-चार अंगुल ऊँचा भी है। इंद्र उस समय सिल्क का बादामी रंग का कुर्ता, सफेद खड़खड़ाता तहमद पहने हुए था। सिर पर नीले रंग की पगड़ी सुशोभित थी जिसका तुर्रा थोड़ा उठा हुआ था। पगड़ी का बलिश्त भर लंबा लड़ उसके दाहिने कान के ऊपर फैला हुआ था। कैंची से थोड़ी तराशी हुई काली दाढ़ी और पतली मूंछें उसके मुख पर खूब फब रही थी।

फिर थानेदार ने इंद्र सिह से कहा—सरदार इंद्र सिंह ! फिलहाल मैं आपका तहरीरी बयान नही ले रहा हूँ। वैसे मैं आपसे यह जानना चाहता हूँ कि मुल्जिम छज्जू के बारे मे आपकी क्या राय है। यह जो वारदात हुई है इसकी तह मे क्या कोई खास बात है ? आप इस गाँव के एक बाइज़्ज़त औ जिम्मेदार आदमी हैं। आपके अलफाज़ की हमारे लिए बहुत अहमियत होगी।

थानेदार के शब्द सुनकर इंद्र मन ही मन गदगद हो उठा। उसे लगा कि वह सचमुच राणीपुर का ही नही बल्कि इस पूरे इलाके का माना हुआ व्यक्ति है। यह रछपाल सिंह थानेदार जिसका नाम सुनकर लोग सहम जाते हैं, वही रछपाल सिंह उसे कितना ज्यादा आदर-मान दे रहा है। उसने मुख पर गम्भीरता ओढ़कर जवाब दिया—हज़ूर ! इस गाँव में छज्जू लंगड़े को कौन नही जानता। इधर की उधर और उधर की इधर कहना उसका बहुत बड़ा शौक है। बेशक उसकी टाँगें नही चलती पर उसकी जबान बिना रुके कैंची की तरह काटती हुई चलती है। आज तक उसने काटा ही है जोड़ा कुछ नही। गाँव के लोग और खासकर औरतें 'नारद मुनि' कहकर उसका ज़िक्र करती हैं।

—यह तो ठीक है। पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि यह जो वारदात हुई है उसके लिये वह कहाँ तक ज़िम्मेदार है। क्या मरहूम मंगू की मौत को कत्ल करार दिया जा सकता है ?

—हज़ूर ! मैं वारदात के मौके पर वहाँ मौजूद नही था। पर जो कुछ वहाँ हाजिर लोगो से सुना है उससे साफ लगता है कि यह पूरी तरह से कत्ल का मामला है। साफ जाहिर है कि अगर छज्जू अपनी बैसाखी मंगू के नंगे सिर पर मारकर उसे घायल न करता तो वह बेचारा ईंटों की मुंडेर पर न गिरता। पहले लगी बैसाखी की चोट पर ईंटों की चोट से उसका घाव और ज्यादा फट गया और नतीजे के तौर पर उसकी मौत हो गयी। बस सच यही है। अब यह मामला कत्ल का बनता है या नहीं यह हज़ूर मुझसे ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं।

थानेदार और इन्द्रसिंह की बातचीत चल रही थी कि सिपाही छज्जू लँगड़े को पकड़कर वहाँ ले आए। छज्जू के वहाँ पहुँचने के तुरन्त एक-आध मिनट बाद ही सरदार जोधा सिंह अपने दो कारिन्दों के साथ वहाँ पहुँचा। कारिन्दों ने एक बड़ी सी टोकरी और चाय से भरा एक गड़वा लाकर कमरे के एक कोने में रख दिया। फिर जोधा सिंह ने थोड़ा सिर झुकाकर थानेदार से कहा—सरकार, बेनती यह है कि चाय ठंडी न हो जाए इसलिये पहले आप हज़रात इसे निपटा लें। अभी तो पकौड़े भी गर्म हैं। ठंडे हो जाने पर इनका क्या मज़ा आएगा।

—तो लाइये सरदार साहब, आपकी बात तो रखनी ही होगी। फिर उसने अपने सिपाहियों को सम्बोधित करते हुए कहा—तुम लोग भी पहले चाय पी लो। तफतीश का काम तो होता ही रहेगा।

जोधा सिंह के कारिन्दों ने स्टील की प्लेट में पकोड़े रखकर और एक सुन्दर प्याले में चाय भरकर थानेदार के सामने रख दी। पकोड़ों से भरा एक थाल सिपाहियों के सामने रख दिया। चाय वाला गड़वा और खाली कप उनके सामने रख दिये गये। सामने पड़े ढेर सारे पकौड़े और चाय का गड़वा देखकर सिपाहियों की आँखों में चमक पैदा हो गयी। वे जल्दी-जल्दी पकोड़ों पर हाथ साफ करने लगे। साथ-साथ चाय भी सुड़कते रहे।

फिर चाय की चुस्की लेते हुए थानेदार ने छज्जू से पूछा—क्या तुम्हारा नाम छज्जू राम है ?

—जी माई-बाप !

—तुम्हारे खिलाफ थाने में रिपोर्ट लिखवाई गयी है कि तुमने सरेआम लाठी मारकर इसी गांव के मन्नू चमार का कत्ल किया है।

—नहीं माई-बाप, यह बिल्कुल गलत है। मैं भला लँगड़ा आदमी किसी का कत्ल कैसे कर सकता हूँ। लाठी तो मैंने हजूर आज तक कभी पकड़कर नहीं देखी। फिर उससे किसी को कैसे मार सकता हूँ। मैं तो किसी तरह इन बैसाखियों का सहारा लेकर चलता-फिरता हूँ।

—तो तुम्हारी यह भारी बैसाखी क्या किसी लाठी से कम है ? इसकी मार से भी तो किसी बेगुनाह का सिर खोला जा सकता है। उस बेचारे बुज़ुर्ग बुड्ढे के सिर पर वार करते तुम्हें शर्म न आयी। इस बेपरवाही से तुमने क़ायदे-कानून को अपने हाथ में लेने की हिम्मत की। तुम्हें मालूम होना चाहिये था कि इस हल्के का थानेदार सरदार रछपाल सिंह है, कोई ऐरा-गैरा

नहीं। फिर उसने एक सिपाही से कहा—राम सिंह, इस हरामजादे को हथकड़ी लगा दो। थाने ले जाकर इनसे अच्छी तरह पूछताछ की जाएगी।

छज्जू के मुख का रंग एकदम उड़ गया। वह गिड़गिड़ाते हुए कांपते स्वर में बोला—हुजूर, सरकार, मैं बेकसूर हूँ। मैंने मंगू का कत्ल नहीं किया। मेरी उससे कोई दुश्मनी नहीं थी। सरकार, वह तो पागल था। हर किसी को गंदी गालियां बकता था, ईंट-पत्थर तक मारता रहता था। उस दिन सबके सामने उसने बिना मतलब मुझे मां-बहन की गालियां दीं, फिर जब हाथ में पत्थर लेकर मुझे मारने को लपका तो मैंने अपने आपको बचाने के लिये उसे अपनी इस बैसाखी से थोड़ा पीछे धकेला। बरसात के कारण जमीन पर फिसलन थी। दुर्भाग्य से उसका पांव फिसल गया और वह मुंडेर पर गिर पड़ा। गिरने से उसके सिर में मामूली सी चोट आयी। वैसे हुजूर वह पागल था और पिछले कई सालों से बीमार चल रहा था। वह बुड्ढा था बीमार था, किसी भी समय मर सकता था। मुंडेर पर गिरना तो उसकी मौत के लिये एक बहाना बन गया। अब सरकार, आप ही बताएँ कि इस मामूली सी बात को कत्ल कहा जा सकता है?

—यह तो अदालत फैसला करेगी कि यह कत्ल था या नहीं। अभी तो तुम्हे कत्ल के इल्जाम मे हवालात में बन्द किया जाएगा।

थानेदार की बात सुनकर जोधा सिंह ने बड़ी आजजी से कहा—साहब बहादुर! छज्जू राम ने सच्चाई आपके सामने पेश कर दी है। मन्नू की मौत किन हालात के तहत हुई इसका अंदाजा आप सरकार सही ढंग से लगा सकते हैं। मैं तो इतना जानता हूँ कि अगर आप चाहेंगे तो इस बेचारे लँगड़े को बचा लेंगे। खैर, मेरी प्रार्थना यह है कि अब तक आप थक गये होंगे और मेरा विचार है कि तफतीश का काम भी पूरा हो चुका है। मैं चाहता हूँ कि आप साहेबान मेरी बैठक मे चलकर थोड़ी देर आराम करें। बाकी बातें वहीं होती रहेंगी। मैं वहाँ आप लोगों के भोजन का इन्तजाम भी देखता रहूँगा।

भोजन का नाम सुनकर थानेदार व सिपाहियों के मुख लपलपाने लगे। जिस सिपाही से जोधा सिंह ने जाते समय बात की थी उसने कमरे में आकर धीरे से अपने साथियों व थानेदार को कान मे खाने की व्यवस्था के सम्बन्ध में बता दिया था। मुर्गे का महाप्रसाद और शराब रहेगी यह जानकर वे अन्दर ही अन्दर पुलकित हो रहे थे। तफतीश की खानापूरी वे लगभग पूरी कर ही चुके थे। अतः रछपाल सिंह का इशारा पाकर सिपाही जोधा सिंह के मकान को चलने के लिये खड़े हो गये।

हरनाम के घर से जोधा सिंह के मकान तक का रास्ता वर्षा और बाढ़ के कारण पानी व कीचड़ से भरा हुआ था। पंद्रह-बीस आदमियों का यह छोटा सा जुलूस बड़ी सावधानी से कीचड़-गंदगी से बचता हुआ आगे बढ रहा था। थानेदार रछपाल सिंह और जोधा सिंह आगे-आगे चल रहे थे। वावर्दी सिपाही उनके पीछे आ रहे थे। जोधा सिंह के चलने का अंदाज देखने योग्य था। थानेदार से बातें करता व हवा में हाथ लहराता वह आगे बढ़ रहा था। उसकी इच्छा यही थी कि गाँव के अधिक से अधिक लोग उसे इस समय थानेदार के साथ-साथ चलते हुए देखें। और उसकी इस इच्छा की पूर्ति भी होती जा रही थी। दुकानों-घरों के सामने खड़े अनेक लोग थानेदार को माथे पर हाथ रखकर सिर झुका नमस्कार कर रहे थे सत सिरी अकाल बोल रहे थे। थानेदार से कहीं पहले जोधा सिंह अकड़ा हुआ लोगों के अभिवादन का जवाब दे रहा था। उसका मन पुकार-पुकारकर कह रहा था कि ओ दीवान चन्द व उसके गुर्गो, जरा घरों से बाहर आकर मेरे ठाठ देखो और अच्छी तरह समझो कि मैं क्या हूँ, कैसे-कैसे बड़े अहलकारों के साथ मेरा उठना-बैठना है, थानेदार जैसे बड़े हाकिम मेरे मकान पर अपनी हाजिरी देने मे अपनी शान समझते हैं।

जोधा सिंह के आदेश पर घर के लोगों ने बैठक को सजा दिया था। हर वस्तु करीने से यथास्थान रखी हुई थी। बीच गोल मेज पर बडा सा फूलों का गुलदस्ता रखा हुआ था। दीवारों पर सिख-गुरुओं के चार-पाँच चित्र टँगे हुए थे। सामने वाली दीवार पर हरिमन्दिर साहब का बहुत बडा रंगीन चित्र सुन्दर फ्रेम में जड़ा टँगा हुआ था। बैठक का वातावरण बडा सुखद लग रहा था। थानेदार व सिपाही बडे आदर भाव से उस बैठक मे बैठाए गये। जोधा सिंह के दोनों बेटे, सरदार संगारा सिंह, भट्टे वाला चुन्नी शाह और प्यारा सिंह साहूकार भी पुलिस-अमले की सेवा-टहल के लिये वहां उपस्थित थे।

पुलिस-अमले के वहां पहुँचने पर कोई आठ-दस मिनट के बाद उनके सामने भोजन आदि परोस दिया गया। बड़ी-बड़ी स्टील की प्लेटों मे मुर्गे का शोरबे-दार महाप्रसाद पड़ा था। मीट में पडे मसालों की महक पूरे कमरे मे फैल रही थी। तन्दूरी रोटियाँ थी, बासमती चावल थे। और सबसे बडा आकर्षण था मेज पर रखी शराब की दो बोतलें। एक रम की थी दूसरी हाइलैन्ड माल्टिड व्हस्की की। बारह-पन्द्रह छोटे कांच के सुन्दर गिलास पडे थे। कुछ देर के बाद जोधा सिंह के संकेत करने पर उसके दोनों लड़के शेर सिंह और दौलत सिंह उठकर बाहर चले गये।

जोधा सिंह ने अपने हाथ से बोतलें खोलीं और गिलासों में शराब व सोडा

डालकर पेग तैयार कर दिये । सबसे पहले उसने जाम थानेदार की खिदमत में बड़ी आजजी से पेश किया । पास बैठे सिपाहियों ने भी गिलास थाम लिये । जाम से जाम टकराए गये । जोधा सिंह व उसके साथियों ने अपने खास मेहमान थानेदार सरदार रछपाल सिंह की सेहत के लिये जाम नोश करने शुरू किये । लगभग पौन घंटे तक यह खाना-पीना चलता रहा । हर कोई मूड में आ चुका था । खूब चहक-चहक कर बातें-गप्पे हो रही थी । साफ लग रहा था कि थानेदार व उसके साथ आए सिपाही इस खातिरदारी से खूब गद्‌गद् हो रहे थे । खास बात यह थी कि लगभग हर किसी ने सीमा के अन्दर रहकर ही शराब पी थी । कोई किसी तरह बहक नहीं रहा था, न कोई बेजा बकवास कर रहा था । हाँ सबके चेहरों पर हल्की लालिमा और आँखों में सरूर छाया हुआ था ।

कोई एक घंटे बाद थानेदार व सिपाही बाबा बकाला जाने के लिये उठ बैठे । अगर मरहूम मंगू की लाश को समय पर थाने ले जाने की बात न होती तो शायद वे लोग रातभर वहीं रुक जाते । लेकिन परिस्थितिवश उनका वापस लौटना जरूरी था । पुलिस की स्टेशन वैगन ठट्ठी से थोड़ी दूर पक्की सड़क पर खड़ी थी । गाँव में चूंकि कीचड़ व पानी खड़ा था इसलिये गाडी वहीं पक्की सड़क पर ही छोड़ दी गयी थी । दरोगा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे मंगू की लाश को उठवाकर गाड़ी पर ले आएं । सभी सिपाही उसी समय ठट्ठी की ओर चले गये । थानेदार के साथ जोधा सिंह और शंगारा सिंह पक्की सड़क की ओर बढ़ चले ।

रास्ते में मौका देखकर जोधा सिंह ने रछपाल सिंह से कहा—साहब ! अब मन्नू का पूरा मामला आपके हाथों में है । बेचारे छज्जू से मालूम नहीं यह सब कैसे हो गया । वह भला आदमी है । उसकी सारी उमर इसी गाँव में हम लोगों के बीच गुजरी है । आज तक उसने कभी किसी किस्म के दंगे-फसाद में हिस्सा नहीं लिया । थाने का उस भले आदमी ने कभी मुँह तक नहीं देखा । अब हजूर, मेरी अर्ज यही है कि उसकी जिन्दगी अब आपके हाथों में हैं और मुझे आप पर भरोसा है यकीन है कि आप जरूर उसे हर तरह से बचाने की कोशिश करेंगे ।

जोधा सिंह की बात को आगे बढ़ाते हुए शंगारा सिंह ने विनम्र स्वर में कहा—थानेदार साहब ! आप इस वारदात को जैसा रुख देंगे उसी रुख पर बात आगे चलेगी । अभी आपके पास भी वक्त नहीं था और न ही सही मौका था वरना हम आपको इस गाँव के जो-जो असली गुण्डे व फसादी दो-चार लोग

हैं उनके बारे में बताते। खैर हम दोनों किसी दिन आपकी खिदमत में हाजिर होकर उनके बारे में ज़रा तफसील से बताएँगे।

जवाब में थानेदार ने उन्हें बताया कि चूँकि वारदात कत्ल की है इसलिए उस पर वे ज्यादा पर्दापोशी न कर पाएगा। फिर पोस्टमार्टम से भी सारी बात खुलासा हो जाएगा। यह तो निश्चित है कि छज्जू को हवालात में रखना पड़ेगा। उस पर कत्ल का मुकदमा भी चलेगा। पर उसने उन्हें यकीन दिलाया कि वह हर तरह से कोशिश करेगा कि मुल्जिम को कम से कम सज़ा मिले।

थानेदार आगे गाड़ी में बैठ चुका था। पिछली सीटों पर सिपाही बैठ गए थे। उनके बीच छज्जू भी हथकड़ी पहने बैठा था। बीच में मन्नू की लाश सफेद कपड़े में लिपटी पड़ी थी। गाड़ी स्टार्ट हो गयी थी। जोधा सिंह, शंगारा सिंह व ठठ्ठी से आए आठ-दस लोगों ने थानेदार को 'वन्दगी' 'सत सिरी अकाल' कहा और फिर वे सभी गाँव की ओर लौट पड़े थे।

● ●

पच्चीस

कुछ दिन पहले बलदेव व प्रीतो को जिस स्थिति में छज्जू लँगड़े ने देखा था उसका विवरण उसने शेर सिंह के माध्यम से जोधा सिंह तक पहुँचा दिया था और जोधा सिंह ने अपने छोटे भाई प्रताप सिंह को रहट पर बुलवाकर एकान्त में सारी घटना बता दी थी। प्रताप सिंह के मन में चिन्ता का पैदा हो जाना स्वाभाविक था। कौन पिता ऐसा होगा जो अपनी बेटी के सम्बन्ध में इस तरह की बातें सुनेगा और उसका खून नहीं खौलने लगेगा। उसे प्रीतो की अपेक्षा बलदेव पर कहीं ज्यादा क्रोध आ रहा था। वह सोच रहा था कि यह बलदेव का बच्चा कितना नीच और कमीना निकला। वह उसके साथ इस प्रकार विश्वासघात करेगा, इस तरह आस्तीन का साँप सिद्ध होगा इस बारे में उसने कभी कल्पना तक नहीं की थी। उसने उसे एक सुशिक्षित अध्यापक मानकर अपने घर आने की अनुमति दी थी, एक गुरु के रूप में उसे अपनी बेटी को शिक्षा देने के लिए कहा था। क्या एक आदर्श गुरु का यही दायित्व होता है। अब अपनी बेटी के भविष्य के बारे में उसे चिन्ता होने लगी थी। वह सोचने लगा कि यदि यह बात गाँव में फैल गयी तो क्या होगा। उफ ! कितनी

बदनामी होगी उसकी, उसके परिवार की और सबसे ज्यादा उसकी बेटी की। इस तरह की अनेक बातें वह कुछ ही क्षणों में सोच गया।

उसके उतरे हुए मुख को देखकर जोधा सिंह ने उससे कहा—सुनो प्रताप, अभी इस बात का जिक्र किसी से न करना। जानते हो औरतों के पेट मे बात नहीं पचती। इस तरह की बातें वे तुरन्त कहीं न कही उगल देने के लिए तैयार हो जाती हैं।

प्रताप सिंह जानता था कि उसे तो अपनी पत्नी से सारी बात करनी ही होगी। वह प्रीतो की माँ है और देखा जाए तो इस सब के लिए बड़ी हद तक वही जिम्मेदार है। उसी ने तो मुझ पर ज़ोर डालकर प्रीतो को बलदेव से पढ़ाने के लिए कहा था। फिर लड़की तो घर मे रहती थी। माँ होने के नाते वह बेटी पर कैसी निगरानी रखती थी। यह सब बातें तो मुझे उससे पूछनी ही होगी। और बात आगे न बढ़ने पाए इस बारे मे भी मुझे उससे ही सलाह-मश्विरा करना होगा। हाँ भरजाई का स्वभाव जरूर कुछ अजीब सा है। वह प्रायः इस तरह की बातों का प्रचार-प्रसार करने के लिए ज्यादा ही उतावली रहती है। अगर कही बात खुलेगी तो शायद उसी के कारण ही खुलेगी। इसलिए जरूरी यही है कि बात उसके कच्चे कानों तक न पहुँचने पाए। यही सोचकर उसने जोधा सिंह से कहा—भैया, तुम जो कह रहे हो बिल्कुल ठीक ही कह रहे हो। अगर औरतो को इस बात की जानकारी हो गयी तो बात पूरे गाँव मे फैल जाएगी। भरजाई से भी कोई जिक्र न करना। और साथ ही शेर व दौलत को भी अच्छी तरह से समझा देना कि वे कही भूल से भी उससे इस सम्बन्ध मे बात न करे।

—प्रताप, यह तो ठीक है। पर मै चाहता हूँ कि अब कहीं कोई लड़का देखकर जल्दी से जल्दी बिटिया के हाथ पीले कर देने चाहिये।

—पर भैया, अच्छे, रोजगार मे लगे लड़के जल्दी कहाँ मिल पाते हैं ?

—कोशिश करने पर सब कुछ हो जाता है। बस थोड़ा आना-जाना पड़ता है, लोगों से मिलना पड़ता है। वैसे मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश में रहूँगा। दो-एक दिनो मे मैं लुधियाना जाने वाला हूँ। वहाँ अपने जान-पहचान के लोगों से इस बारे मे पूछताछ करूँगा। और अगर गुरु महाराजा की कृपा हुई तो जल्दी ही काम बन जाएगा। एक बात और कहना चाहता हूँ कि प्रीतो को ज्यादा डाँटना-फटकारना नहीं। ऐसा करने पर भावुक लड़कियाँ कभी-कभी कुछ खतरनाक कदम उठा लेती है। हाँ अब उस पर निगरानी रखने की ज्यादा

जरूरत रहेगी। यह देखना होगा कि वह कहाँ उठती-बैठती है कहाँ आती-जाती है।

जोधा सिंह से बातें करने के बाद बड़े दुखी मन से प्रताप सिंह घर लौटा। आकर बिना कपड़े बदले निढाल होकर चुपचाप चारपाई पर लेट गया।

पति की भाव-भंगिमा देखकर प्रसिन्नी समझ गयी कि अवश्य ही कोई विशेष बात होगी। या तो तबियत खराब हो गयी होगी या फिर किसी से कहा-सुनी हुई होगी। मन मे आशंका लिये वह धीरे से पति के पास पहुँची। एक नजर उसके चेहरे पर डालकर बोली—क्यो क्या बात है। तबियत तो ठीक है तुम्हारी ?

—प्रसिन्नी, यहीं मेरे पास बैठ जाओ। जी अच्छा नहीं है। आज दिल पर भयानक चोट पड़ी है। उफ ! यह दिन भी देखना पड़ेगा, ऐसा कुछ भी सुनना पड़ेगा, मैंने कभी सोचा तक नही था।

—क्यों क्या हो गया, क्या किसी से कोई लड़ाई-झगड़ा हो गया है ? सच बताओ क्या बात है। मेरा तो दिल डूबा जा रहा है।

—अरी तुम्हारी इस लाडली बेटी ने हमारी नाक काट दी, हमे कही का नही रहने दिया। और तुम्हारा वह मास्टर का बच्चा, वह हरामजादा बलदेव, उस कमीने ने मेरी पगड़ी उछालने की कोशिश की है, मेरी इज्जत पर हाथ डाला है। उस कमीने को अब मैं इस घर में पैर नहीं रखने दूँगा। अगर आएगा तो उसकी टाँगें तोड़ दूँगा। उल्लू का पठ्ठा जिस थाली मे खाता रहा उसी मे छेद करता रहा। कमीना अपनी औकात भूल गया। दो कौड़ी का मास्टर और उसकी इतनी जुर्रत कि मेरी बेटी पर गंदी निगाह रखे। ऐसी नीच हरकत करते समय उसकी आँखें नही फूट गयीं, उसके हाथ नहीं टूट गये।

—क्या किया है बलदेव ने ? क्या उसने प्रीतो से कोई ऐसी-वैसी बात कही है ? यह सब तुम्हे किसने बताया है ? क्या बलदेव ने तुमसे कोई बातचीत की है ?

—उसमे इतनी हिम्मत कहाँ है जो मुझसे इस तरह की बात करता। और कहीं करता भी तो क्या मैं उसका मुँह न तोड़ देता, उस हरामी की हड्डी-पसली एक न कर देता। यह तो भला हो बड़े भैया जोधा सिंह का। उसने ही मुझे बताया है कि प्रीतो और बलदेव के आपस मे कैसे सम्बन्ध हैं और वे दोनों कहाँ-कहाँ कैसे खेतों-बागों में गुलछर्रे उड़ाते हैं, बदमाशियाँ

फंसते हैं। अभी कुछ दिन पहले छज्जू लँगड़े ने उन दोनों को कही खेत मे एक साथ देख लिया था। उस समय वे दोनो वहाँ क्या गुल खिला रहे थे इसका जिक्र उस लँगड़े ने भैया से किया था। आज भैया ने मुझे रहट पर बुलवाकर खबरदार किया है। अभी तो बात भाई और शेर सिंह व दौलत तक ही पहुँची है। अगर कही भरजाई को पता चल गया तो सारा मामला गाँव वालों को मालूम हो जाएगा। हमारी बनी हुई इज्जत मान-मर्यादा मिट्टी मे मिल जाएगी। इस कमीने बलदेव ने इतना न सोचा कि वह क्या करने जा रहा है। मैंने उसे अपने हाथ से पत्र लिखकर यहाँ बुलवाया, कोशिश करके उसे हेड मास्टर की नौकरी दिलवाई और उस उपकार का उसने मुझे यह इनाम दिया। अब देखूँगा कि वह इस स्कूल मे ही नही बल्कि इस गाँव में कैसे रह पाएगा। उसकी जड़े यहाँ से उखाडकर ही रहूँगा।

कुछ क्षण चुप रहकर वह फिर बोला—कहाँ गयी वह सुअर की बच्ची? आज उसका भी दिमाग ठिकाने लगाता हूँ, उसकी टाँगे तोडता हूँ ताकि वह हरामजादी कही बाहर न आ जा सके। अगर प्रीतो की इच्छा न होती, अगर वह इजाज़त न देती तो क्या उस कमीने की इतनी हिम्मत हो सकती थी। मुझे क्या पता था कि पढ़-लिखकर यही कुछ सीखेगी, इस तरह खानदान के नाम पर बट्टा लगाएगी।

—कही खानदान पर कोई बट्टा नही लगने वाला। मैं अपनी बेटी को अच्छी तरह जानती हूँ। वह कोई ऐसा-वैसा काम नही करेगी जिससे हमारे घर की व उसकी अपनी इज्जत पर आँच आने पाए। वह लँगड़ा छज्जू तो नारद मुनि है। वह तो लोगों को लड़ाता-भिडाता ही रहता है। उस नीच ने तुम भाइयों के मन मे खोट पैदा करने के लिए जेठ जी के कान भर दिये होंगे। अगर कोई दूसरा आदमी इस तरह की बात कहता तो शायद उसे मान भी लिया जाता। पर वह नीच लँगड़ा, उसकी बातो पर कौन विश्वास करेगा। वह तो गिरा हुआ पापी आदमी है। और देख लिया उसे पाप का दण्ड भी मिल गया। बेचारे मन्नू की उसने जान ले ली। अब बच्चू फाँसी पर लटकेगा या ज़िन्दगीभर जेल में चक्की पीसेगा। देख लेना यह बात पूरी तरह झूठ होगी। उस लँगड़े ने चंद्रमा पर थूका और वह थूक उल्टी उसके काले मुँह पर ही आकर गिरी। देखो जब तक सच्चाई का पता न चल जाए तब तक बेटी से कोई बात न करना। उससे जो कुछ कहना है वह मैं खुद कह लूँगी, उसे अच्छी तरह से खबरदार कर दूँगी। बस मेरी बात अच्छी तरह सुन लो समझ लो। उस बेचारी के सामने इस बारे में अपना मुँह न खोलना। तुम तो

अक्खड़ स्वभाव के हो। तुम्हारी डांट-फटकार से परेशान होकर अगर कहीं उसने कुछ ऐसा-वैसा कर लिया तो जिन्दगी भर हम दोनों सिर पकड़कर रोते रहेंगे। अब तो नहीं हाँ फिर इज्जत जरूर मिट्टी में मिल जाएगी।

—प्रसिन्नी ! मेरी समझ मे नहीं आता कि क्या करूँ। तुम जैसा कहोगी मैं वैसे ही करूँगा। उससे जो बात करनी है तुम ही कर लेना। मुझे तो यह भी डर है कि अगर मैंने उसे कुछ कह दिया और उसने कोई उल्टा-सीधा जवाब दे दिया तो मैं सहन नहीं कर पाऊँगा। तब कहीं मै कुछ ऐसा-वैसा न कर बैठूं। पर एक बात हमें बहुत जल्दी ही करनी होगी। जल्दी ही कोई लड़का देखकर प्रीतो के हाथ पीले करने होंगे। मैं नहीं चाहता कि पानी सिर से निकल जाए और हमें बाद में पछताना पड़े।

—तुम ठीक कहते हो। हाँ ऐसा ही करना होगा। अच्छा अब उठो, मुँह-हाथ धोकर कुछ जलपान कर लो। दिमाग से चिन्ता निकाल कर थोडी देर आराम करके बाहर जाना।

इसके बाद प्रसिन्नी उठकर रसोई मे चली गयी। प्रताप सिंह ने आँगन मे जाकर हैंडपम्प से हाथ-मुंह धोया, आँखो में शीतल जल के छींटे मारे और अंगोछे में मुंह पोछकर फिर खाट पर लेट गया। लेटा हुआ वह सोच रहा था कि अब उसे क्या करना होगा। क्या इस बात का उल्लेख मोहर से करना ठीक रहेगा। यह सब सुनकर मालूम नही उसके मन पर क्या बीते। कहीं वह अपने दोस्त बलदेव से लड़-झगड़ न बैठे, कोई फौजदारी न कर दे। उसका स्वभाव भी तो बड़ा अजीब है। कभी-कभी बिना मतलब उसका दिमाग गरम हो जाता है, तब वह आगे-पीछे कुछ नहीं देखता, जोश में तोड़-फोड़ शुरू कर देता है। लेकिन बात तो उससे करनी ही होगी। वह प्रीतो का भाई है, बलदेव का जिगरी दोस्त है। हां आगे जो कुछ करना होगा उसके लिए उसकी सलाह लेना जरूरी होगा।

वैसे तो मोहर सिंह घर पर कम ही टिकता था पर उस समय संयोगवश मालूम नही कैसे घर आ गया। बाप को चारपाई पर लेटे हुए तथा हावभाव देखकर उसे लगा कि आज जरूर ही कोई विशेष मामला है जो भाया घर पर है। किंतु वह प्रायः अपनी ओर से उससे बात कम ही शुरू करता था। वह चुप ही रहा।

दो-एक मिनट के बाद प्रताप सिंह उठ खड़ा हुआ। सिरहाने रखी पगड़ी को सिर पर लपेटते हुए बोला—मोहर, जरा ऊपर चौबारे में चलो। वहाँ

तुमसे एक जरूरी बात करनी है। बल्कि उस मामले में तुमसे राय लेनी है। चलो ऊपर चलो। वहां एकान्त में बात होगी। यहाँ कोई आ-जा सकता है।

मोहर ने बाप की ओर देखा और समझ गया कि उसने जो अनुमान लगाया था वह सही निकला। भाया के सामने जरूर कोई गम्भीर बात आ गयी लगती है जिसके बारे में मुझसे बात करना चाहता है, मेरी सलाह लेना चाहता है। आज तक तो कभी मुझसे किसी विषय पर उसने सलाह नहीं ली है वह हमेशा मुझे नाकारा और उल्लू ही समझता रहा है। खैर जो वह पूछेगा उसका वह सही ढंग से जवाब देने की कोशिश करेगा।

ऊपर चौबारे में पहुँचकर प्रताप सिंह ने सारी बात विस्तार से उसे बता दी और अंत में बोला—बेटा, अब एक ही रास्ता है कि दो चार महीनों में ही कोई लड़का देखकर प्रीतो के हाथ पीले कर दिये जाँए। और इस बलदेव के बच्चे से मैं अभी कोई बात नहीं करना चाहता। मेरे बात करने से बात और बिगड़ने का खतरा पैदा हो सकता है। वह तुम्हारा दोस्त है। तुम उससे खुलकर बात कर सकते हो, उसे भली प्रकार से समझा सकते हो कि वह हमारे खानदान की इज्जत से खेलने की कोशिश न करे। और मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी बात मान लेगा और यह रास्ता छोड़ देगा। और उसे यह भी चेतावनी दे देना कि अगर उसने फिर कोई ऐसी हरकत की तो मैं उसे इस गाँव में ही नहीं बल्कि इस दुनिया में ही नहीं रहने दूंगा। मैं एक बाप हूँ और कोई भी बाप अपनी आबरू को इस तरह चौराहे पर लुटता हुआ नहीं देख सकता।

मोहर सिंह अपने दोस्त बलदेव के स्वभाव व उसके चरित्र के बारे में बहुत जानकारी रखता था। उसे उसमें कोई कमी नजर नहीं आ रही थी। वह सुशिक्षित है, गाँव के स्कूल का हेड मास्टर है। और सबसे खास बात यह है कि वह चरित्रवान है। उसके ऊँचे विचारों की वह सदैव कद्र करता रहा है। मोहर सिंह ने घूम-फिर कर दुनिया को देख रखा था। उसके पास एक कुशल पारखी वाली दृष्टि थी। उसे आभास मिल चुका था कि बलदेव व प्रीतो परस्पर प्रेम करते हैं। पर इस सम्बन्ध में अभी तक उसने बलदेव से कोई बात नहीं की थी। उसे अपने मित्र पर पूरा विश्वास था। फिर उसे इस प्रेम सम्बन्ध में कोई बुराई भी नजर नहीं आ रही थी। वह साम्यवादी विचारधारा को मानता था। जातपात व ऊँच-नीच को वह पूरी तरह से नकार चुका था। उपदेश की अपेक्षा वह आचरण में कहीं ज्यादा आस्था रखता था। उसे मन में विश्वास था कि अगर उन दोनों का ब्याह कर दिया जाएगा तो वे दोनों सुखी

रहेंगे, उनका दाम्पत्य जीवन आराम से बीतेगा। उसकी लाड़ली बहन उसके जिगरी दोस्त के साथ सदैव सुखी रहेगी।

बाप के शब्द सुनकर उसने कहा—भाया जी! यह ठीक है कि आप प्रीतो के पिता हैं। पर मैं भी उसका भाई हूँ। अपने परिवार की इज्जत-आबरु का मुझे भी ख्याल है। जो कुछ अभी तक हुआ है और जो हमें आगे करना है उस पर ठंडे और खुले दिमाग से विचार करने की जरूरत है। गुस्से में उठाया गया कदम आम तौर पर गलत ही होता है। आपके दिलो-दिमाग में इस समय क्रोध भरा हुआ है इसलिये आप बलदेव के बारे में भी सही ढंग से नहीं सोच पा रहे।

—उस हरामजादे के बारे में अब सोचने को रह ही क्या गया है। मैं फिलहाल यही चाहता हूँ कि तुम उस बदमाश को समझा दो कि वह यहाँ मेरे मकान पर कदम न रखे और प्रीतो से किसी तरह की कोई बात न करे, उससे कोई सम्बन्ध न रखे।

—भाया जी, आप बिना मतलब उसे हरामजादा और बदमाश कह रहे हैं। वह ऐसा आदमी नहीं है। वह भला और शरीफ-इज्जतदार व्यक्ति है। जरा ठंडे दिमाग से सोचा जाए तो उसमें कमी ही क्या है। उस जैसे विद्वान, तन्दुरुस्त और ऊँचे चरित्र व उदार विचारों वाले युवक मिलते ही कहाँ हैं। मेरा तो यही कहना है कि अगर प्रीतो का व्याह उससे कर दिया जाय तो वह हर प्रकार से प्रसन्न व सुखी रहेगी।

व्याह की बात सुन कर प्रताप सिंह का चेहरा एकदम लाल हो गया। उसकी आँखो में खून उतर आया। उसकी मुट्ठियाँ अपने आप भिंचने लगी। आक्रोषभरी नजरों से देखते हुए उसने कहा—यह क्या बकवास कर रहे हो। होश में तो हो। जानते नहीं कि हम सिख हैं और बलदेव हिन्दू है ब्राह्मण है। क्या प्रतिष्ठित सिख अपनी कन्याओं के रिश्ते ब्राह्मणों से करते है? मुझे मालूम नहीं था कि तुम इस हद तक मूर्खता की बात करोगे।

—भाया जी, इसमें मूर्खता की क्या बात है। क्या सिर्फ जात की बात को लेकर यह सम्बन्ध नहीं हो सकता? पढ़े-लिखे व जमाने के साथ चलने वाले लोग आज जात-पात को कहाँ मानते हैं।

—जो बेइज्जत होते है, जिनकी समाज में कोई प्रतिष्ठा नहीं होती, जिन्हें किसी अच्छे खानदान से रिश्ता नहीं मिलता वही लोग जातपात तोड़ने की बात करते हैं। यह नीच लोगों का काम है। फिर यह क्यों भूल रहे हो कि बलदेव उस दीवान चन्द का भांजा है जिससे हमारी खानदानी दुश्मनी है। क्या हम

इतने बेशर्म और गिरे हुये हैं कि हम अपनी बेटी का ब्याह अपने दुश्मन के भांजे से करेंगे। क्या तुम्हारा ताया व तुम्हारे भाई शेर सिंह व दौलत इसे बर्दाश्त कर पाएँगे। वे इस रिश्ते का विरोध करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाएँगे। वे किसी भी तरह की फौजदारी तक कर डालेंगे। मैंने तुम से इसलिये बात करनी चाही थी कि तुम कोई सही राय दोगे। पर तुम्हारा तो दिमाग भ्रष्ट हो चुका है, तुमसे बात करना ही बेकार है। मुझे खुद ही कोई फैसला लेना होगा। या जैसा भैया जोधा सिंह कहेगा वैसा ही किया जायगा। बस एक बात तय है कि कोई लड़का देखकर जल्दी से जल्दी मैं प्रीतो का ब्याह कर देना चाहता हूँ।

—ठीक है जब आपको आपनी ही मर्जी करनी है तो फिर मुझसे सलाह लेने की ही क्या जरूरत है। पर मेरा इतना कहना है कि अभी आप कोई कदम क्रोध व जल्दी में न उठाएँ। और खासकर ताया जी के कहने में कहीं फँस न जाए।। मुझे उन लोगों पर भरोसा नही है। जो कुछ सोचना-समझना है अपने घर मे बैठकर सोचें। और इतना कहकर मोहर चौबारे से नीचे चला आया। वह समझ गया था कि बाप से अब ज्यादा बात करने से कोई लाभ नही होगा। वह मौका देखकर स्वयं बलदेव से बात करेगा और उससे मिल कर ही आगे की योजना बनाएगा।

• •

छब्बीस

शेर सिंह व दौलत सिंह के कहने पर बन्ती अब प्रायः शम्मी के साथ ही रहने लगी थी। दिन में दो-एक घंटे के लिये अपने कमरे में हो आती या फिर लोगों के यहां जाकर बर्तन आदि मांजती, सफाई कर आती। शेष समय वह शम्मी के साथ रहकर उससे गपशप करती, घर के कामकाज में सहयोग देती। जब से शम्मी राणीपुर आयी थी तब से इन्द्र सिंह केवल एक बार ही उससे मिलने आया था। वह केवल दो-चार मिनट ही उसके यहाँ रुका था। बस औपचारिकता निभाने के लिये ही वह आया था। हाँ जाते-जाते वह इतना अवश्य कह गया था कि वह इस समय जरा जल्दी मे है और किसी समय वह फिर उसके यहाँ आएगा। लेकिन उसने अपना वादा पूरा नही किया था। उस दिन के बाद वह पुनः नही आया था। शम्मी व बन्ती उसके दोबारा

न आने का कारण समझ नही पा रही थी। उन दोनों ने इस स्थिति से शेर. सिंह को अवगत करा दिया था।

दोनों भाई शेर सिंह और दौलत सिंह हैरान थे कि अभी तक इन्द्र सिंह शम्मी का हालचाल जानने क्यों नही आया। उन्हें मुच्चा सिंह के शब्दों पर भरोसा था। मुच्चा ने उन्हें साफ बताया था कि शम्मी की देखभाल के लिये इन्द्र प्रायः उसके यहाँ आता रहेगा और भगवान ने चाहा तो वह उस लड़की से प्यार-मुहब्बत की पींगें भी बढानी शुरू कर देगा। लेकिन प्यार-मुहब्बत करना तो दूर वह उस बेचारी की कुशलता जानने भी नही आया था। दो-चार मिनट के लिये आना भी कोई आना था। उस समय में वह उससे क्या बातें कर पायी थी। जिस काम के लिये शम्मी को राणीपुर में बुलाया गया था उसकी पूर्ति के लिये वे मुच्चा सिंह को पाँच सौ रुपये पेशगी दे चुके थे। और पाँच सौ बाद में देने का वादा कर रखा था। अब उनके मन मे आशंका होने लगी थी कि कही ऐसा न हो कि मुच्चा अपने वचन से मुकर जाए और उनकी दी हुई पाँच सौ रुपये की राशि डूब जाए। वे जानते थे कि मुच्चा को धन का कितना अधिक मोह है और अगर वह अब अपनी बात से हट गया तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

परस्पर विचार-विमर्श के बाद यह तय किया गया कि आज ही शेर सिंह शम्मी के यहाँ जाकर बन्ती से इस सम्बन्ध में बात करेगा और उससे कहेगा कि वह किसी समय इन्द्र सिंह से मिलकर उससे कहे कि शम्मी ने उसे अपने घर पर कुछ जरूरी बात करने के लिये बुलवाया है। शेर सिंह जानता था कि बन्ती बड़ी होशियार औरत है। वह उड़ती चिड़िया के पर काटना जानती है। किसी को भी बातों में फाँस लेने में वह बहुत माहिर है। वह अवश्य ही इन्द्र सिंह को शम्मी के पास आने के लिये राजी कर लेगी।

रात को खाना खाने के बाद शेर सिंह शम्मी के दरवाज़े पर पहुँचा। दरवाजे की दरार से उसने भीतर देखा। चौकी पर लालटेन पड़ी थी। उसके पास बैठी शम्मी तनिक सिर झुकाए सुई से कोई कपड़ा सी रही थी। वह समझ गया कि बन्ती इस समय वहाँ नही है। पहले तो मन में आया कि वह लौट जाए। कल सुबह आकर वह उससे बात कर लेगा। पर फिर सोचा कि इस बारे में वह शम्मी से भी तो बात कर सकता है। शम्मी ही बन्ती को सारी बात समझा देगी। फिर उसने धीरे से दरवाजे की कुंडी खटखटायी। आवाज सुनकर शम्मी कुछ चौकी। उसने दरवाजे की ओर देखा। सहसा उसे लगा कि शायद इन्द्र सिंह आया हो। बन्ती इस प्रकार आहिस्ता से कुंडी

नहीं खटखटाती थी। वह जोर से दरवाजा थपथपाती थी और साथ ही शम्मो
को बहन कहकर बुलाती थी। शम्मी ने जल्दी से अपने बालों को हाथ से ठीक
किया, दीवार पर टँगे आइने में स्वयं को देखा और हाथ में लालटेन लेकर
दरवाजे की ओर आयी।

दरवाजे पर पहुँचकर उसने धीरे से पूछा—कौन है ?

—मैं हूँ शेर सिंह। क्या बन्ती घर पर है ?

शम्मी ने लजाते-मुसकराते दरवाजा खोला। बड़ी-बड़ी कजरारी आँखों
को थोड़ा ऊपर उठाकर बोली—आइये, भीतर आइये। मैंने समझा था कि
बन्ती आयी है।

—मैं बन्ती से ही मिलने आया था। कहाँ है वह ?

—काम पर गयी हुई है। इस समय तक तो आ जाती है। पर पता नही
आज अभी तक क्यो नही लौटी। आप बैठें। अभी आती ही होगी।

शम्मी के पलंग के पास ही बन्ती की चारपाई पड़ी थी। शम्मी ने फुर्ती
से पलंग पर धुला हुआ खेस बिछा दिया और शेर सिंह से वहाँ बैठने के लिये
कहा। स्वयं पास रखी बन्ती की चारपाई पर बैठ गयी।

उस एकान्त वातावरण में शेर सिंह को कुछ अजीब सा लगने लगा। रात
का सन्नाटा था और हुस्न की मूर्ति उसके बिल्कुल पास बैठी थी। उसके हृदय
की धड़कन धीरे-धीरे बढती जा रही थी। उसे अनुभव हो रहा था मानो उस
सुन्दरी का अंग-अंग उसे निमंत्रण दे रहा हो। जिस पलंग पर वह बैठा हुआ
था वह कुछ ऊँचा था। वह ऐसे कोण पर बैठा था जहाँ से शम्मी के नीचे गले
के कुरते से उसके मरमरी-श्वेत कठोर वक्ष का कुछ उभरा हुआ भाग साफ
दिखाई पड़ रहा था। वह समझ नही पा रहा था कि उससे क्या बात करे।

शम्मी ने उसकी स्थिति को भाँप लिया था। कुछ क्षण चुप रहने के बाद
उसने ही बात को शुरू करते हुए कहा—यहाँ कभी-कभी मुझे बड़ा अकेलापन
सा महसूस होता है। खासकर जब बन्ती काम पर चली जाती है तो और
अधिक उदासी छा जाती है। मन चाहता है कि पास-पड़ोस की औरतों से
मिलूँ, उनसे बातें करूँ पर संकोचवश नही जा पाती। मुझे आस थी कि आप
लोगों में से कोई न कोई मेरा हालचाल जानने आता रहेगा लेकिन कोई नहीं
आया।

शेर सिंह के हृदय की गति ज्यों की त्यों बनी हुई थी। वह बोल पाने में
स्वयं को किसी सीमा तक असमर्थ पा रहा था। आखिर किसी तरह थूक
घुटककर बोला—मेरा जी तो आपको देखने व आप से बातें करने को कर

रहा था। पर दो-चार कामों मे ऐसा उलझा रहा कि समय ही न निकाल पाया। आज सुबह से ही मैंने सोच रखा था कि जरूर आपके पास आऊँगा।

—वैसे आज बन्ती को भी उम्मीद थी कि कोई न कोई जरूर आएगा। सुबह रोटी पकाते समय उसके हाथ से आटे का पेड़ा गिर पडा था तभी उसने कहा था कि आज जरूर कोई न कोई आएगा। आटे की लोई गिरने का मतलब यही लिया जाता है कि घर में कोई आने वाला है।

शम्मी की यह बात सुनकर शेरा थोडा मुसकराते हुये बोला—तो बन्ती ने जो कहा था वह सच हो गया। शायद इसी कारण मै यहाँ आया हूँ। हाँ अगर आप चाहती हैं और मेरा आना आपको अच्छा लगा है तो मैं अक्सर यहाँ आता रहूँगा। और आपको कोई किसी किस्म की परेशानी तो नही? अगर किसी चीज की जरूरत हो तो बताने मे संकोच न करियेगा। हम हर तरह से आपकी सेवा करने को तैयार हैं।

—मै आपको कोई गैर तो नही मानती। आप तो अपने ही है। पहले ही आप लोगों ने मेरे लिये क्या कम किया है। रहने के लिये यह जगह दी है। खाने-पीने के सामान का इन्तजाम किया है। फिर भी जब जरूरत पडेगी तो आप से ही कहूँगी। आप सब पर तो मुझे बहुत भरोसा है। बस कभी-कभी अकेलापन अखरने लगता है। आप जैसा कोई भला आदमी मिलता रहे तो बातचीत करने में अच्छा लगता है। सरदार इन्द्र सिंह जी एक बार थोडी देर के लिये आये थे। जाते-जाते कह गये थे कि फिर आएँगे। लेकिन नही आए। हो सकता है वह भी आपकी तरह अपने काम-काज में उलझे हों।

—उसको तो आना चाहिये था। भाई सुच्चा सिंह तो उसी के भरोसे आपको यहाँ लाया है। इन्द्र को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिये। वैसे वह दो-चार दिनों से दिखाई भी नही पड़ा। हो सकता है कही बाहर चला गया हो। गाँव से बाहर भी तो वह पचासो खुराफाते पाले हुये है। मै यही पता करने यहाँ आया ही हूँ कि वह आपकी कुशलता पूछने क्यो नही आया। बन्ती जब आये तो उस से कहना कि वह इन्द्र से मिलकर उसे यहाँ आने के लिये कहे। आखिर उसकी भी तो कुछ जिम्मेदारी है। करना चाहे तो वह आपके लिये बहुत कुछ कर सकता है। बस उसको जरा प्यार-मुहब्बत से बातो मे लाने की जरूरत है। आप विश्वास रखें कि अगर आपने उसे अपने प्यार के बूते अपने बस मे कर लिया तो वह आपका गुलाम बनकर रहेगा। वह स्वभाव से बड़ा जिन्दादिल और दिलफेंक है। मेरा तो यही कहना है कि आप उसके

दिल पर अधिकार करने की कोशिश करें। और जब वह आपका मुरीद बन जाएगा तो आप उससे जो चाहें ले सकती हैं।

शेर सिंह की बात सुनकर शम्मी मन ही मन गदगद हो उठी। उसका दिल इन्द्र सिंह को देखने व उस से बाते करने के लिये उतावला हो उठा। कुछ क्षण चुप रहने के बाद वह बोली—इन्द्र सिंह जी कहाँ तक गुलाम बनेंगे मुरीद बनेंगे यह तो बाद की बात है। पहले वे यहाँ आएँ तो। उनसे कुछ बातें हो। हम दोनों एक दूसरे को समझें-जानें तभी तो कुछ हो पाएगा। वैसे मैं बंती को आपका संदेश दे दूँगी और वह कल ही उनसे मिलने की कोशिश करेगी।

—तो ठीक है। बंती को अच्छा तरह से पक्का कर देना। वह जरूर कल ही इंद्र से मिलकर आपके मन की बात कहे। कल चाचा शंगारा सिंह भी कह रहे थे कि इंद्र सिंह को आपका ध्यान रखना चाहिये।

—सरदार शगारा सिंह जी बडे भले आदमी है। उस दिन वे यहाँ आए थे। मुझे तो वे बेटी की तरह मानने लगे है। उन्होंने भी आश्वासन दिया था कि वे हर तरह से मेरी मदद करते रहेंगे।

शेर सिंह का मन कर रहा था कि वह वहाँ कुछ देर और बैठकर शम्मी से बातें करता रहे, उसके अंग-अंग को निहारता रहे। पर वह समझ नहीं पा रहा था कि वह उससे और क्या बातें करे। उसे मन मे यह भी आशंका थी कि उसके वहाँ अधिक देर रुकने पर किसी को उस पर शक न होने लगे। जिस बात को कहने के लिये वह वहाँ आया था वह तो उसने शम्मी से कह ही दी थी। अब उसने जाना ही उचित समझा। उसने पलंग से उठते हुये कहा—अच्छा अब मैं चलता हूँ। आप बंती को अच्छी तरह से समझा देना कि वह कल जरूर इंद्र सिंह से मिलकर बात कर ले। और इतना कहकर वह जाने के लिये दरवाज़े की ओर बढ़ा। शम्मी भी हाथ में लालटेन लिये हुये उसके साथ-साथ दरवाज़े तक आयी। जब वह जाने लगा तो शम्मी ने मुसकराकर उसे नमस्कार किया। शेर ने गली के दोनों सिरो पर सरसरी नज़र डाली और फिर आगे बढ़ गया।

शेर सिंह के जाने के कुछ ही देर बाद बंती लौट आयी थी। शम्मी ने उसे पूरी तरह से समझा दिया कि शेर सिंह किस काम के लिये वहाँ आया था और अब उसे क्या करना है। सोच-विचार के बाद बंती से निश्चय किया कि वह इंद्र सिंह से रहट पर ही मिलेगी। वहाँ बात करने के लिये कहीं न कहीं एकांत मिल ही जाएगा।

अगले दिन प्रातः शाहवेले वंती पंडितों के रहट के पास उगे चम्बे के पेड़ों के पास पहुँच गयी। वह स्वयं को इस प्रकार प्रकट कर रही थी गोया वह वहाँ चम्बे के फूल चुनने आयी हो। सयोगवश इन्द्र सिंह उस समय रहट पर अकेला ही था। जैसे ही उसकी निगाह वंती से मिली वंती ने धीरे से उसे इशारा करके अपनी ओर बुलाया। इंद्र सिंह समझ गया कि वह अवश्य ही शम्मी का कोई संदेश लायी होगी। वह उस समय रहट पर अकेला ही था। चम्बे के पेड़ों के पास जाकर उस से बात करना उसे उचित नहीं लगा। उसने संकेत द्वारा उसे यहीं रहट पर बुला लिया।

जैसे ही वंती उसके पास पहुँची उसने उससे पूछा—कहो वंती क्या बात है? तुम्हारी शम्मी रानी का क्या हालचाल है?

वंती ने तनिक आँखें नचाते हुये व मुसकराकर कहा—उसी का सदेशा लेकर ही तो मैं आपके पास आयी हूँ। वह आपको बहुत याद कर रही है। बल्कि वह तो आपसे नाराज़ है कि आप वादा करके भी उससे दोबारा मिलने नहीं आए। उसे आपकी चिंता लगी हुई थी। वह सोच रही थी कि कहीं आपके दुशमनों की तबीयत न खराब हो गयी हो। मैंने उसे समझाया भी कि हो सकता है आप गाँव में न हों, कहीं बाहर चले गये हो। मेरा कहने का मतलब यह है कि आप आज किसी समय जरूर उसके यहाँ जाकर मिल आएँ। बेचारी को तसल्ली हो जाएगी।

इन्द्र सिंह बड़ा धाकड़ जवान था। वह किसी से बात करने में डरता नहीं था। लेकिन मालूम नहीं क्यों किसी युवती से बात करने में उसे संकोच अनुभव होता था। वह शम्मी से भली प्रकार से परिचित था। उससे बातें भी कर चुका था। वह यह भी जानता था कि उसी के भरोसे पर सुच्चा सिंह शम्मी को राणीपुर छोड़ गया है। शम्मी का मोहक व्यक्तित्व भी उसे अच्छा लगने लगा था। उससे फिर से मिलने उससे बातें करने की इच्छा भी उसके भीतर मचल रही थी। पर पता नहीं क्यों वह उसके पास जाने के लिए साहस जुटा नहीं पा रहा था। आज उसका सदेश पाकर उसे लगा कि अब उसे अवश्य ही उसके पास जाना चाहिए। हो सकता है उस बेचारी को कोई जरूरी काम हो, किसी चीज की जरूरत हो। उसने सोचा कि वह आज किसी समय उसके यहाँ जाएगा। फिर उसने बन्ती से कहा—वंती! यहाँ के काम ही खत्म नहीं होते। कोई न कोई काम लगा ही रहता है। उधर मैं चार-पाँच दिनों के लिए बाहर चला गया था। परसों ही तो वापस आया हूँ। तुम जाकर शम्मी को बता देना कि आज शाम को मैं उससे मिलने ज़रूर आऊँगा।

बंती लौट रही थी कि रास्ते में शेर सिंह मिल गया। उसने शेर सिंह को बताया कि वह अभी इंद्र सिंह से मिलकर ही आ रही है और उसने वादा किया है कि आज रात होने पर वह शम्मी से मिलने उसके मकान पर जाएगा। शेर सिंह ने उसे शाबाशी दी और कहा कि उसने अच्छा किया जो उसे आने के लिए राजी कर लिया। उसके बाद उसके मन में विचार आया कि अच्छा रहेगा यदि वह इस समाचार से शंगारा सिंह को भी अवगत करा दे। दोपहर को दौलत सिंह द्वारा उसने यह खबर शंगारा सिंह तक पहुँचा दी। वैसे शंगारा सिंह स्वयं भी इस मामले में बड़ा चौकन्ना रहता था। उसे इस बात की जानकारी रहती थी कि शम्मी के यहाँ कौन-कौन जाता है और शम्मी किस प्रकार की भूमिका निभा रही है।

रात को भोजन करने के बाद इंद्र सिंह शम्मी के यहाँ जाने के लिए तैयार हो गया। घर के लोगों से निगाह बचाकर उसने अपनी दाढ़ी पर तनिक सरसों का तेल मलकर चमकाया, पगडी खोलकर फिर जरा कसकर कायदे से बाँधी, मूँछों की नोंकों को ठीक किया, तहमद के बल निकाले और आदता-नुसार हाथ में चमकीली लम्बी लाठी लेकर बड़े-बड़े डग भरता शम्मी के मकान की ओर चल पड़ा।

उधर शम्मी भी पूरी तरह से अपने को लैस कर चुकी थी। वैसे तो वह प्रायः कुरता सलवार ही पहनती थी पर आज उसने साड़ी-ब्लाऊज पहना था। गहरे नीले रंग की फूलदार साड़ी और हल्के गुलाबी रंग का ब्लाऊज उसके गोरे गदराए शरीर पर खूब जम रहा था। चोटी के बजाए आज उसने बड़ा सा जूड़ा बाँध रखा था। जूड़े में मोंगरे के फूलों की वेणी सुशोभित थी। मोटी मोहक आँखों में काजल की घटा छायी हुई थी। संतरे की फाँक सरीखे होंठों पर लिपिस्टक की गुलाबी परत चढ़ी हुई थी। उसके मुख की लावण्यता व उसके वेश-विन्यास में ऐसा लालित्य था जो किसी भी युवक के हृदय पर अपनी छाप अंकित कर सकता था। वह सीने में जवानी की बहार समेटे धड़कते दिल से इंद्र सिंह की राह देख रही थी।

शेर सिंह ने बंती को समझा दिया था कि जब इंद्र सिंह शम्मी के पास पहुँचे तो वह कोई बहाना करके उस मकान से बाहर चली जाए। अधिक अच्छा यही रहेगा कि दीया-बत्ती जलने के बाद वह काम पर अथवा अपने घर चली जाए। वह चाहता था कि इंद्र सिंह व शम्मी पूरी स्वतंत्रता से आपस में घुल-मिलकर बातें कर सकें, अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकें। उसके कहनेनुसार बंती शाम ढलते ही वहाँ से चली गयी थी।

शेर सिंह भी इंद्र सिंह की टोह में था। वह यह जानने को उतावला हो रहा था कि बंती ने जो कहा था : वह कहाँ तक सच सिद्ध होता है। क्या इंद्र शम्मी के यहाँ आएगा अथवा नहीं। वह गली से थोड़ी दूरी पर एक खण्डहर मकान के आसपास मँडरा रहा था। रात में करीब आठ बजे इंद्र सिंह ने उस गली में प्रवेश किया। शेरा ओट से उसे देख रहा था। उसने इंद्र को शम्मी के दरवाजे की कुंडी खटखटाते हुए देखा। वह तब तक वहाँ से न हटा जब तक इंद्र मकान में प्रविष्ट नहीं हो गया।

वकिम कटाक्ष फेंकते हुए व कृत्रिम नाराज़गी प्रकट करते हुए शम्मी ने उसका स्वागत करते हुए कहा—वाह ! बड़ी जल्दी आपने यहाँ आने का अपना वादा पूरा कर दिया। आपकी राह देखते-देखते तो मेरी आँखें पक गयीं। आखिर 'इन्तज़ार' की भी एक हद होती है। विवश होकर बंती द्वारा मुझे आपको संदेश भिजवाना पड़ा।

इंद्र सिंह नहीं जानता था कि शम्मी इस बेसब्री से उसका इन्तज़ार कर रही होगी और ऐसे प्यारपगे शब्दों से अपना गुस्सा प्रकट करेगी। शम्मी के अपनत्व की भावना में भीगे शब्द उसे गुदगुदा गये थे। आखिर वह भी लम्बा-तगड़ा इकहरे बदन का बलिष्ठ जवान था। उसके भीतर भी युवा भावनाएँ मचल रही थीं। उसकी सजी-सँवरी सुडौल देहयष्ठि पर सरसरी निगाह डालते हुए वह बोला—अपने वादे को मैं भूला नहीं था। पर कभी-कभी आदमी के सामने कोई ऐसी मजबूरी आ जाती है जिसके कारण वह अपनी मनमानी नहीं कर पाता। खैर देर आया दुरुस्त आया। आखिर आ तो गया। कहो किसी खास काम से बुलवाया है या वैसे ही......

—आप तो हमारे लिए आम नहीं खास ही हैं। और जब खास आदमी भी अपनों का हालचाल जानने न आए तो कुछ अजीब सा लगता है। भाई मुख्या सिंह तो मुझे आपके जिम्मे कर गए हैं और आप हैं कि ईद का चाँद बने हुए हैं। लगता है आप किसी डर के कारण नहीं आए।

—नहीं शम्मी, ऐसी बात नहीं है। भला मैं किसी से क्यों डरूँगा। शायद तुम्हें मालूम नहीं कि मैंने ज़िन्दगी में डरना सीखा ही नहीं। फिर कुछ क्षण चुप रहने के बाद मुख पर हल्की सी मुसकान बिखेरते हुए बोला—हाँ यह ज़रूर है कि कभी-कभी जवान औरतों से बात करते समय थोड़ा डर सा लगने लगता है।

उसके ये शब्द सुनकर शम्मी खिलखिलाकर हँस पड़ी और बो
...औरत से बात करते समय आपको डर लगने लगता है। वाह !

हुई। फिर आप किस तरह के जवान हैं जो औरत से बात करने पर घबराने लगते हैं। सच बताएँ कि मुझे देखकर या मुझसे बातें करते समय क्या आपको डर महसूस हो रहा है ? आदमी डरता तो अपने दुश्मनों व गैरों से है। भला अपनों से कैसा डर ! हम दोनों को एक दूसरे से क्या डर हो सकता है ?

—नहीं तुमको देखकर, तुमसे बातें करते समय कहीं वैसा नहीं लगता। बल्कि सच तो यह है कि तुम्हारे पास आकर, तुम्हें इतने निकट से देखकर, तुमसे बातें करने में बहुत अच्छा लग रहा है। मालूम नहीं मन इतनी खुशी क्यों महसूस कर रहा है।

—इसे मैं अपना ही सौभाग्य मानती हूँ। मुझसे मिलकर, मुझसे बात करके यदि आपको अच्छा लगने लगे तो इससे मुझे भी सुख ही मिलेगा। मुझे तो आपका बहुत सहारा है। और मन में विश्वास है कि आप उस सहारे को बनाए रखेंगे।

इन्द्र सिंह यह भी जानने को उत्सुक था कि सरदार जोधा सिंह व उसके दोनों लडके कहाँ तक शम्मी का ख्याल रख रहे हैं। वह जानता था कि जोधा सिंह सुच्चा सिंह का दूर का रिश्तेदार है। इस नाते उससे अधिक अपेक्षा की जा सकती है कि वह उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखे। इसी बात को जानने के लिए उसने प्रश्न किया—क्या सरदार जोधा सिंह या उनके घर का कोई आदमी भी कभी तुमसे मिलने आता है ?

जोधा सिंह व पंडित दीवान चन्द के परिवारों के आपस में कैसे सम्बन्ध हैं इसकी जानकारी शम्मी को थी। पर वह अपने मुख से इसका उल्लेख करना उचित नहीं समझती थी। वह तो चालाक बिल्ली की तरह दोनों बन्दरों के लड्डू खाने के फेर में थी। उसने बड़े सहज ढंग से उत्तर दिया—सरदार जोधा सिंह जी बडे आदमी हैं। वे मुझ नाचीज के यहाँ क्यों आने का कष्ट करेंगे। हाँ उनकी इतनी ही कृपा क्या कम है कि उन्होंने मुझे रहने के लिए यह मकान दिया है। घर से भोजन आदि बनाने की सामग्री भिजवाई है। सरदार साहब व उनके दोस्त शंगारा सिंह जी तो मेरे लिए पिता समान हैं। लेकिन उन जैसे बुजुर्गों से खुलकर मन की बातें तो नहीं हो सकतीं, हँसी-मजाक तो नहीं हो सकता। ऐसा कुछ तो अपनी उमर के लोगों के साथ ही भला लगता है।

उसके ये शब्द सुनकर इन्द्र तनिक मुस्कराकर बोला—यह तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो। हम उमर लोगों में जो खुलापन व अपनापन आ सकता है वह बड़ों के साथ नहीं हो सकता। हाँ जिस तरह का खुलापन तुम

चाहती हो वह तुम्हे शेर सिंह की संगति में मिल सकेगा। शेरा बड़ा जिंदा-दिल व रसिया है। वह तो तुमसे मेल-मुलाकात के लिये आता ही रहता होगा?

शेर सिंह के सम्बन्ध में सहसा पूछे गये इस प्रश्न के लिए शम्मी तैयार नहीं थी। वह समझ नही पा रही थी कि वह उसका क्या जवाब दे। बात को टालने के लिए उसने कहा—हाँ एक दिन थोड़ी देर के लिए वह आया था। पर उसका स्वभाव मुझे कुछ अजीब-सा लगा। मुझे तो कहीं ऐसा नही लगा कि वह जिन्दादिल भी है। बस दो-चार मिनट रुककर ही चला गया। हाँ आपकी बात कुछ और है। भाई सुच्चा सिंह जैसी आपकी तारीफ कर रहे थे वैसे ही आप मुझे लगे हैं। आपको देखकर, आपसे बातचीत करके ऐसा लगता है जैसे हम दोनों बहुत दिनों से एक दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं।

इन्द्र सिंह उस मस्त अल्हड़ सुन्दरी को नख से शिख तक निहारते हुए मन मे सोचने लगा कि क्या मैं सचमुच इस हसीना की दृष्टि मे वैसा हूँ जैसा वह मुझे समझ रही है। कुछ क्षणों के लिए उसके मन मे विचार आया कि वह आगे बढ़कर उसे अपने हाथों से उठाकर अपने पहलू मे बैठा ले, उसकी सुडौल कसी हुई देह को अपनी बाँहों में भर ले, सुरा से लबालब भरे हुए उसके यौवन का जायका ले ले, उसके सीने पर आयी बहार की खुशबू को अपने भीतर समा ले। पर वह ऐसा न कर पाया। किसी तरह अपने आपको वश मे किये रहा।

अब इन्द्र सिंह को ऐसा आभास हो रहा था कि कहीं उसका संयम खंडित न हो जाए। जो उसे न करना चाहिए कहीं वह वैसा न कर बैठे। उसके मन मे आया कि अब उसे वहाँ से चल देना चाहिए। अतः वह सहसा उठते हुए शम्मी से बोला—अच्छा अब मैं चलता हूँ। बातों-बातों में मुझे समय का ख्याल ही नही रहा। अभी मुझे अपने एक मित्र को मिलने जाना है। और इतना कहकर वह बाहर गली में आ गया।

• •

सत्ताइस

गत कुछ दिनों से हरनाम सिंह कुछ विचलित-सा रहने लगा था। उसकी कई दिनों से जस्सी से भेंट नहीं हो पायी थी। उसका कारण यह था कि जस्सी के पिता सरदार अंगारा सिंह को मालूम हो चुका था कि उसकी बेटी

का हरनाम से प्रेम सम्बन्ध चल रहा है। इस बात की जानकारी उसे अपनी पत्नी से मिली थी। जस्सी की माँ को जस्सी की कुछ बातों तथा उसके हाव-भाव से कुछ शक-सा होने लगा था। एक दिन सहसा उसे जस्सी के कुरते की जेब से हरनाम सिंह की एक छोटी-सी फोटो मिली। फोटो देखकर उसने डाँटते-फटकारते हुए जस्सी से इस सम्बन्ध में पूछा। जस्सी कुछ दिन पहले से ही मन में सोच रही थी कि वह अपनी माँ को साफ बता देगी कि हरनाम उसे पसन्द है, वह उससे प्रेम करती है और ब्याह भी उसी से ही करेगी। डाँट पड़ने पर उसने माँ के सामने स्वीकार कर लिया कि यह और हरनाम आपस में मिलते रहते हैं और वे दोनों आपस में ब्याह करने के बारे में सोच रहे हैं।

बेटी की बात सुनकर पहले तो जस्सी की माँ क्रोध से वशीभूत होकर उसे बुरा भला कहने लगी। पर बाद में जब उसने शान्त मन से स्थिति पर विचार किया तो उसे लगा कि लड़की की पसन्द गलत तो नहीं है। हरनाम हर प्रकार से अच्छा युवक है। उसकी शक्ल-सूरत अच्छी है, स्वास्थ्य अच्छा है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह सरकारी नौकरी कर रहा है। गाँव में उसका अपना मकान है, लोग उसे आदर-मान देते हैं। बस एक ही कमी है। जात के लिहाज से वह मजहबी सिख है। और अगर वे अपनी बेटी का ब्याह मजहबी अर्थात् हरिजन सिख से करेंगे तो लोगों को उन पर उँगली उठाने का मौका मिलेगा।

जब उसने इस बात का अपने पति शंगारा सिंह से उल्लेख किया तो वह तुरन्त आपे से बाहर हो गया। इसी बात को लेकर उसने जस्सी की खूब लानत-मलामत की। उसने उसे चेतावनी भरे स्वर में कहा कि यदि वह फिर कभी हरनाम से मिली तो वह उसकी टाँगें तोड़ देगा, वह उसके प्राण तक ले लेगा। उसने उस दिन अपनी पत्नी को भी फटकारते हुए कहा कि वह भी इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। एक माँ होने के नाते उसने अपनी बेटी पर कैसी निगरानी रखी है। शंगारा सिंह का मन किसी भी तरह इस रिश्ते को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। ऐसा आज तक उसके खानदान में नहीं हुआ था। उसे यह भी डर था कि अगर कभी वह यह सम्बन्ध बनाना भी चाहेगा तो उसका मित्र जोधा सिंह उससे बहुत नाराज हो जायेगा। जोधा सिंह पुरातनपन्थी है। फिर उसे व उसके लड़के शेर सिंह को हरनाम सिंह फूटी आँखों नहीं भाता। वे कभी भी नहीं चाहेंगे कि जस्सी और हरनाम का आपस में ब्याह होने पाए। ऐसा करके वह जोधा सिंह व

उसके बेटों की नाराज़गी मोल लेना पसन्द नहीं करेगा। हालांकि वह मन में यह भी अनुभव कर रहा था कि हरनाम सिंह का व्यक्तित्व हर प्रकार से जस्सी के उपयुक्त है और उस जैसे योग्य व सरकारी नौकरी में कार्यरत लड़के कहाँ मिलते है। और अगर वह अपनी बेटी की शादी उससे कर देता है तो उससे लड़की का जीवन सुखी ही रहेगा। उसे मन में भय था तो केवल सामाजिक प्रतिष्ठा का तथा सरदार जोधा सिंह के विरोध का। इसी डर के कारण ही उसने जस्सी पर एक तरह से पाबन्दी लगा दी कि वह बिना विशेष कार्य के घर से बाहर न निकला करे और न ही कभी हरनाम से मिलने की कोशिश करे। उसने मन में यह भी निश्चय कर लिया था किसी भी समय मौका देखकर वह हरनाम को भी इस संबंध में चेतावनी दे देगा कि वह अपनी इस तरह की हरकतों से बाज़ रहे। अपने उसी निश्चय के तहत अभी कुछ दिन पहले उसने हरनाम सिंह से मिलकर तनिक कठोर शब्दों मे उसे समझाया था कि जो कुछ वह कर रहा है वह कमीनापन्थी है और इसका परिणाम उसके लिए बड़ा भयानक होगा।

हरनाम सिंह समझ नहीं पा रहा था कि वह जस्सी से किस तरह मिलकर बात करे। उसने जस्सी को वचन दे दिया था कि यदि यह ब्याह करेगा तो केवल उससे ही। वह उसके अलावा किसी अन्य लडकी से शादी करने की बात सोच ही नही सकता। चाहे कुछ भी हो जाए वह अपने वचन को निभाएगा, वह जस्सी से ही ब्याह करेगा। पर अब उसे आगे क्या कदम उठाना चाहिये इस सम्बन्ध में वह कोई निश्चय नहीं कर पा रहा था। आखिर सोच-विचार के बाद उसने यह तय किया कि वह इस सम्बन्ध में अपने मित्र सरदार मोहर सिंह से बात करेगा। गाँव मे मोहर सिंह ही ऐसा व्यक्ति है जो इस मामले में उसकी सहायता कर सकता है, जो उसे उचित राय दे सकता है। वह जानता था कि मोहर बड़ा धाकड है और जिस काम को करने का बीड़ा उठा लेता है उसे पूरा करके ही रहता है। गाँव वाले भी उसे आदर देते हैं और अपनी समस्याओं के निदान के लिये उससे विचार-विमर्श करते हैं। फिर मोहर विचारों की दृष्टि से बड़ा उदार व प्रगतिशील है। ऊँच-नीच व जातपात के बंधनो को वह बिल्कुल नही मानता। वह उसका मित्र है उसका शुभचिन्तक है। उसे उस पर पूरा भरोसा है कि वह इस मामले में उसकी पूरी सहायता करेगा। शेर सिंह के साथ उसकी जो कहा-सुनी हो गयी थी उस मामले मे भी उसने उसका ही पक्ष लिया था।

गत इतवार को वह मोहर सिंह से मिला। दोनों मित्र गुरुद्वारे के सामने वाली कच्ची सड़क पर थोड़ा आगे जाकर एक पुलिया पर बैठकर बातें कर रहे थे। बातचीत के दौरान हरनाम ने कहा—मोहर भाई! मेरी बात को तुम हल्के ढंग से न लो। जो निर्णय मैंने लिया है बहुत सोच-विचार के बाद लिया है। जस्सी के मन की बात भी तुम्हें बता चुका हूँ। वह भी हर तरह से तैयार है। जस्सी ने मुझे बताया था कि वह अपनी माँ को इस सम्बन्ध के लिये राजी कर लेगी। उसको भरोसा है कि उसकी माँ मान जाएगी। उसे खतरा है तो अपने बाप से। सरदार शंगारा सिंह कुछ सनकी स्वभाव का है। फिर उस पर तुम्हारे ताया सरदार जोधा सिंह का प्रभाव भी है। जोधा सिंह जी व शेर सिंह कभी नही चाहेंगे कि यह रिश्ता होने पाए। मालूम नही शेरा बिना मतलब मुझसे क्यों खार खाए हुये है। जगह-जगह मेरी बुराई करता रहता है।

उसकी बात सुनकर मोहर ने कहा—देखो अगर तुमने मन मे पक्का इरादा कर रखा है तो फिर किसी से डरने की कोई बात नही। इस मामले मे अगर मेरे ताया जी या उनके लड़के शेरा या दौलत कोई रुकावट डालने की कोशिश करेंगे तो उनका भी हिम्मत से सामना करना पडेगा। तुम मुझ पर भरोसा रखो। मैं हर तरह से तुम्हारी मदद करूँगा। और केवल मैं ही नहीं बल्कि अगर जरूरत पडी तो मैं इन्द्र सिंह को अपने साथ ले लूँगा। बस सबसे जरूरी बात यह है कि तुम अपने फैसले पर डटे रहना। ऐसा न हो कि मैं बात को आगे बढाऊँ और तुम पीछे हट जाओ।

—क्या बात कर रहे हो! मैं पीछे क्यों हटूँगा। बहुत सोच-विचार के बाद ही तो मैं तुम्हारे पास आया हूँ। अब इस काम को पूरा करवाना तुम्हारे ही जिम्मे है। और मैं यह भी जानता हूँ कि अगर तुम इस काम को करवाने का बीड़ा उठाओगे तो अवश्य ही उसमें सफलता मिलेगी। सरदार शंगारा सिंह के मन मे यदि कोई भय है या मेरे बारे में ऐसी-वैसी धारणा है तो तुम इतने समर्थ हो कि उसे दूर कर सको। रहा सवाल तुम्हारे ताया या तुम्हारे शेरे या दौलत के विरोध करने का तो तुम उन लोगों को भी अपने काबू मे ला सकते हो। शेरे को तुम विश्वास दिला सकते हो कि मेरे मन मे उसके लिए तनिक भी मैल नही है। उनकी दुश्मनी है तो दीवान चन्द से, मुझसे तो कोई वैर नही। हाँ अगर वे लोग मुझे मात्र नीच जात का मानकर मेरे खिलाफ हैं तो बात दीगर है। अपनी जात को बदल पाना तो मेरे बस में नहीं।

मोहर सिंह हमेशा ऊँच-नीच, अस्पृश्यता और धार्मिक पाखंडों का विरोधी

रहा था। वह तो ऐसे समाज के निर्माण की कल्पना करता था जिसमें हर किसी को समानता का अधिकार मिले, जाति अथवा धर्म के नाम पर किसी से पक्षपात न हो। वह अनुभव करता था कि बेशक हमने राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त कर ली है पर मानसिक रूप से हम आज भी रूढियों व सड़े-गले संस्कारों के गुलाम हैं। हमारी सरकार ने, हमारे नेताओं ने व सामाजिक संस्थाओं ने समानता के राग तो बहुत अलापे है, अस्पृश्यता के कलंक को मिटाने के लिए बड़ी-बड़ी बातें तो बहुत की हैं पर इमानदारी से कोई महत्व-पूर्ण कार्य नहीं किया। बल्कि किसी हद तो सच्चाई यह है कि हमारे नेताओं ने अस्पृश्यता की समस्या से प्रायः राजनीतिक लाभ उठाने की ही चेष्टा की है। मुँह से हम बाते तो बहुत करते है पर बातों को अमली जामा कहाँ पहना पाते हैं। हरनाम व जस्सी के सम्बन्धों को लेकर उसके मन मे विचार आया कि वह अपने गाँव राणीपुर मे तो एक उदाहरण पेश करके ही रहेगा। अपनी इसी भावना को व्यक्त करते हुए उसने हरनाम से कहा—अगर सरदार शंगारा सिंह और मेरे ताया सिख होकर भी जातपात की बात को उठाएँगे तो मैं जमकर उनका विरोध करूँगा। मैं तो यह मानता हूँ कि जो सिख जातपात व छुआछूत में विश्वास रखता है वह गुरुओं का अनादर करने का अपराध करता है, वह सिख तो हो ही नही सकता। अगर हम अपने गुरुओं के बताए हुए मार्ग पर नही चलते बल्कि उस सन्मार्ग के बजाए गलत राह पर चलते हैं तो हम अपराध करते हैं। तब हमारा गुरुवाणी का पाठ करना या गुरुद्वारे जाना बेमानी हो जाता है। हरनाम ! तुम घबराओ नही। तुम दोनों की मनोकामना को पूरा करवाना अब मेरे जिम्मे है। मैं कल ही इन्द्र सिंह से भी इस सम्बन्ध मे बात करूँगा और अगर उसकी राय हुई तो शंगारा सिंह से मिलकर बात करूँगा।

मोहर की बातें सुनकर हरनाम को विश्वास हो गया कि अब शायद काम बन जाएगा। वह जानता था कि मोहर सिंह जैसा दिमाग और इन्द्र सिंह जैसा शरीर पूरे राणीपुर मे किसी के पास नही। ये दोनों जिस काम को करने पर जुट जाएँगे उसे पूरा करके ही रहेगे। जब वह घर लौटा तो वह बहुत हद तक सन्तुष्ट था।

अगले दिन अपराह्न में मोहर और इन्द्र शंगारा सिंह के घर पहुँचे। वे अभी सीधे शंगारा सिंह से बात करना नही चाहते थे। उन दोनो का विचार था कि पहले जस्सी की माँ को इस बात के लिये राजी किया जाए। उन्हे विश्वास था कि अगर वह मान गयी तो शंगारा सिंह को मनाने में विशेष

हिम्मत नहीं पड़ेगी। पत्नी पारिवारिक दुर्ग की रक्षिका होती है। और जब दुर्ग की स्थिति को दृष्टि में रखकर रक्षिका कोई निर्णय ले लेती है तो दुर्ग के स्वामी को भी देर-सवेर उसके निर्णय के सामने नतमस्तक होना ही पड़ता है।

मोहर सिंह ने दरवाज़े पर दस्तक दी। कुछ क्षणों बाद जस्सी ने दरवाज़ा खोला। दोनों को सामने देखकर वह कुछ चकित सी हुई। तभी मोहर ने पूछा—क्या चाची घर पर नहीं हैं?

—हाँ-हाँ घर पर ही है। वह पिछले कमरे में है। वीर जी, आप भीतर आकर बैठें, मैं उसे बुलाती हूँ। और इतना कहकर वह दूसरे कमरे की ओर चली गयी। दोनों मित्र सामने बिछे पलंग पर बैठ गये।

जस्सी की माँ समझ नहीं पा रही थी कि वे दोनों इस समय जबकि उसका पति घर पर नहीं है वे किस काम के लिये आए हैं। फिर भी सिर पर दुपट्टा रखती हुई उनके पास आयी। उसे देखकर उन दोनों ने हाथ जोड़कर पैरीपौना कहा। जवाब में आशीष देती हुई वह बोली—आज का दिन तो बड़ा भागीभरा (शुभ) है जो दोनों बेटे एक साथ हमारी कुटिया पर आए हैं। कहो सब खैर तो है? पर इतना कहते हुए भी उसे अपने भीतर कुछ अजीब तरह की धुकधुकी सी महसूस हो रही थी। उसे लग रहा था कि अवश्य ही कोई खास बात होगी जिस कारण ये दोनों एक-साथ आए हैं।

तभी मोहर ने चेहरे पर कुछ प्रसन्नता की मुद्रा ओढ़ते हुए पूछा—कहो चाची, तुम्हारा क्या हालचाल है, मजे में तो हो? चाचा तो इस समय खेतों में होगा। खैर अभी हम बात तुमसे ही करने के लिये आए हैं।

फिर इन्द्र सिंह बोला—चाची, सोचा पहले तुमसे ही बात तय कर ली जाए। और अगर तुमने हमारी प्रार्थना मान ली तो हम समझेंगे कि जिस काम के लिये हम आए हैं वह लगभग पूरा ही हो गया। चाचा में इतनी हिम्मत नहीं कि वह तुम्हारी मंजूरी को नकार सके।

इन्द्र के ये शब्द उसे अच्छे लगे। वह मन ही मन थोड़ा गर्व अनुभव करने लगी। पर वे दोनों कैसी प्रार्थना लेकर उसके पास आए हैं इसका अनुमान लगा पाने में वह स्वयं को असमर्थ पा रही थी। कुछ आश्चर्यचकित नज़रों से उसे देखती हुई बोली—तुम दोनों तो बहुत होनहार और योग्य बेटे हो। पूरे गाँव में तुम दोनों की बहुत इज्जत है मान है। तुम जरूर किसी अच्छे काम के लिये ही आए हो ऐसा मेरा मन कह रहा है।

—काम तो अच्छा ही है चाची, हमारे लिये तुम्हारे लिये और इस घर के लिये, मोहर बोला।

फिर उसने जस्सी से कहा—जस्सी बहन, तुम थोड़ी देर के लिये दूसरे कमरे मे चली जाओ, हमे जरा चाची से अकेले में कुछ बात करनी है और जो बात करनी है वह तुम्हारे ही भले के लिये है।

उसके ये शब्द सुनकर जस्सी तुरन्त वहाँ से उठकर बाहर आगन की ओर चली गयी। उसके जाने के बाद जस्सी की माँ ने कहा—बाते तो बाद मे होती रहेंगी। पहले यह बताओ कि तुम दोनो गर्म दूध पियोगे या शर्बत ?

उसकी बात सुनकर पगडी को जरा हाथ से ठीक करते हुए मोहर बोला —चाची, क्यों कष्ट करोगी, क्या बिना दूध पिलाए हमारी बात को नही मानोगी ।

—बेटे, पहले दूध पीना मान लो और उसके बाद ही मै तुम लोगों की बात को मान पाऊँगी। तुम दोनों कुछ देर बाते करो। मै अभी दूध लेकर आती हूँ। और इतना कहकर वह तनिक मुसकराती हुई चौके की ओर चली गयी।

चौके मे पड़ोली मे उपलों की हल्की आँच पर मिट्टी की रोगनी हाँडी मे भैंस का गाडा दूध धीरे-धीरे पक रहा था। दूध का रंग हल्का भूरा सा हो गया था। उस पर मलाई की मोटी परत जमी हुई थी। उसने काँसे के दो कटोरो मे दूध डाला, दो-दो चम्मच खाँड घोली। फिर दोनो कटोरों मे मलाई डालकर उन दोनो के पास कमरे में आयी। दोनों को दूध से भरे कटोरे देती हुई बोली—अब कहो चाची के पास किस काम के लिए आए हो।

दोनो मित्रों ने एक दूसरे की ओर देखा, आँखों ही आंखों मे थोडा मुस्कराए और फिर घूंट-घूंट दूध पीने लगे। पाँच-सात घूंट पीने के बाद मूंछो पर लगे दूध को हाथ से पोंछते हुए मोहर बोला—चाची ! जस्सी बहन तो अब सियानी हो गयी है। उसी के रिश्ते के सम्बन्ध मे ही हम दोनों बात करने आए हैं। लड़का हमारा देखा है, तुम लोगों का भी देखा-भाला है। और हम सोचते हैं कि अगर यह सम्बन्ध बन जाता है तो दोनो घरों के लिये बड़ा अच्छा रहेगा।

—कौन लड़का है, किस घर की बात कर रहे हो ?

—ठठ्ठी वाले हरनाम सिंह को तो तुम अच्छी तरह से जानती ही हो। बड़ा अच्छा चरित्रवान लडका है। डाकखाने की सरकारी नौकरी है। अच्छी तनखा पाता है। ये शब्द मोहर ने कहे।

मोहर की बात सुनकर उसके माथे पर कुछ बल पड़ गये। फिर वह बोली—उस हरनाम सिंह के बारे मे कह रहे हो ? अरे बेटा वह तो नीच जात

का है'। उसको अपनी बेटी कैसे दे सकते हैं। जरा सोच-समझकर बात करो, क्या कभी ऐसा भी हो सकता है। आखिर हमारे घर की, हमारे खानदान की मान-मर्यादा है। जस्सी का ब्याह उससे कैसे हो सकता है?

—होने को क्या नहीं हो सकता चाची। आजकल जातपात को कौन देखता है। देखना तो यह है कि वर कैसा है। उसका चाल-चलन कैसा है, उसकी शक्ल-सूरत, उसकी तन्दुरुस्ती कैसी है, क्या रोजगार करता है।

मोहर की बात को आगे बढ़ाते हुए इन्द्र सिंह बोला—चाची, वह ज़माना गया जब माँ-बाप सब कुछ अपनी मनमानी से कर देते थे। आज तो लड़के-लड़की की पसन्द भी देखी जाती है। इस बारे में हमें जस्सी की पसन्द भी देखनी होगी। आखिर जिन्दगी तो उसे काटनी है। तुम उससे भी पूछकर उसकी राय जान सकती हो। मुझे मालूम है कि जिस प्रकार हरनाम उसको पसन्द करता है उसी तरह जस्सी भी उसको चाहती है। चाची, सच्ची बात तो यह है कि वे दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं और हमारा यही कहना है कि तुम और चाचा इस रिश्ते को स्वीकार कर लो।

—बेटे, तुम तो ऐसे बात कर रहे हो मानों यह शादी गुड्डे-गुड्डी का खेल हो। इस तरह के काम ऐसे हड़बड़ी में नहीं किये जाते। उसके लिये सोचना-विचारना पड़ता है।

इन्द्र ने कहा—अधिक सोचने-विचारने से भी कभी-कभी बात बिगड़ जाती है। कुछ भगवान पर गुरु महाराज पर भी भरोसा करके काम कर देना चाहिये। मुझे तो लग रहा है कि भगवान भी यही चाहते हैं कि यह सम्बन्ध बन जाए। चाची, अच्छा तो यह रहेगा कि तुम इस बारे में जस्सी के मन की बात जान लो।

पूर्व इसके कि जस्सी की माँ कोई उत्तर दे पाती बीच में मोहर बोल पड़ा—जस्सी के मन की बात तो हमें मालूम ही है। उससे क्या पूछना है। वह तो हरनाम से ब्याह करना चाहती ही है। हाँ चाची, तुम अपने मन की बात बताओ। क्या तुम्हें हरनाम में कोई कमी नजर आती है। क्या तुम्हें वह पसन्द नहीं है?

—हरनाम में क्या कमी हो सकती है। देखने में सुन्दर है तन्दुरुस्त है। मुझे या जस्सी के बापू को जब कभी मिलता है बड़े आदर से हाथ जोड़कर माथा टेकता है। उसमें कोई कमी नहीं। बस कमी है तो उसकी जात में। अगर वह ऊँची जात का होता तो हमें क्यों इनकार हो सकता था।

हरनाम बोला—जातपात पर आज कौन विचार करता है। अनेक लोग

तो दूसरी जाति में ही नही बल्कि दूसरे धर्म के लोगों के साथ रिश्ते-नाते करने लगे हैं, दूसरे देशों के लोगों मे रिश्ते होने लगे हैं। फिर हरनाम तो सिख है। सिख धर्म मे तो इस तरह के ब्याह करने की पूरी छूट है। और साफ बात तो यह है कि हम दोनों इस सम्बन्ध को बनाने का निर्णय ले चुके हैं। यह शादी तो होनी ही है। हम नही चाहते कि कोई व्यक्ति इस शुभ काम मे अड़चन डाले। हम चाहते हैं कि तुम चाचा को भी हमारे मन की बल्कि हमारे इस फैसले की बात बता दो। उसे इस सम्बन्ध के लिये राज़ी कर लो।

जस्सी की माँ भली प्रकार से जानती थी कि उसकी बेटी हरनाम से प्रेम करती है और वह उससे ब्याह करना चाहती है। हरनाम व इन्द्र की बातों से भी वह साफ समझ गयी थी कि वे भी अपनी बात को मनवाने के इरादे से ही उसके पास आए हैं। और सबसे बड़ी बात यह थी कि अपने अन्तर्मन मे वह भी हरनाम को पसन्द करती थी। उसकी आत्मा की यही आवाज़ थी कि इस ब्याह से उसकी बेटी का जीवन सुखी रहेगा। बस उसे डर था तो केवल पति का। सहमा वह बोल पड़ी—जो तुम लोग कह रहे हो वह ठीक ही लगता है। तुम लोगों की बात को मानने से मुझे कोई इन्कार नही। तुम इस बारे में अपने चाचा से भी बात कर लो। अगर वह हाँ कह देगा तो मुझे क्या एतराज़ होगा।

उसकी बात सुनकर दोनो मित्रो को लगा कि बस अब काम बन गया। जब लड़की की माँ राज़ी है तो बाप के मानने की भी बहुत सम्भावना है। जब जस्सी चाहती है, उसकी माँ चाहती है तो शंगारा सिंह को ज्यादा क्या इन्कार होगा। उसे भी झुका लिया जाएगा। फिर इन्द्र सिंह बोला—वाह चाची! तुमने हमारी बात रख ली। हमें तुमसे यही आशा थी। सचमुच माँ हो तो तुम जैसी हो। चाची, अब हम समझते हैं कि तुम्हारी तरफ से हाँ ही है। जब तुम तैयार हो गयी तो हमें उम्मीद है तुम तो चाचा को भी राज़ी कर लोगी। तुम उसे साफ बता देना कि हम दोनों इस रिश्ते को लेकर आए थे और हम चाहते हैं कि यह सम्बन्ध जल्दी से जल्दी बन जाए। तुम आज ही चाचा से बात कर लेना और हमारा फैसला उसे बता देना। अच्छा अब हम चलते हैं। और वे दोनों उसे धन्यवाद और साथ ही साथ बधाई देकर घर से बाहर निकल आए। वे बड़े उत्साह व हर्ष मे लम्बे-लम्बे डग भरते हुए वापस लौट रहे थे। उनके चेहरों के भाव व उनकी चाल से यों लग रहा था मानो वे कोई बहुत बड़ा किला जीत कर आ रहे हों।

रात को जस्सी की माँ ने अपने पति को बताया कि इन्द्र सिंह व मोहर सिंह उसके पास क्यों आए थे और उन दोनों ने मन मे क्या फैसला ले रखा है। पत्नी की बात सुनकर शगारासिंह के मन में एक उधेड़बुन सी शुरू हो गयी। वह समझ नही पा रहा था कि अब उसे कौन सा रास्ता अपनाना चाहिये। पत्नी की तरह उसे भी हरनाम सिंह हर तरह से पसन्द था। वह भी जानता था कि जस्सी हरनाम को चाहती है। उसे हरनाम के मजहबी सिख होने पर इतना एतराज नही था जितना वह अपने मित्र जोधा सिंह की नाराजगी से डरता था। वह जानता था कि जोधा सिंह व उसके लड़के इस रिश्ते के लिये कभी भी तैयार नही होंगे। बल्कि वे पूरी शक्ति से विरोध ही करेंगे। अपनी भावना को व्यक्त करते हुए उसने पत्नी से कहा—जस्सी की बेबे ! मेरी तो समझ में नहीं आ रहा कि अब हमे क्या करना चाहिये। मोहर और इन्द्र की बात से इन्कार करना भी हम लोगों के लिये ठीक न होगा। उनकी बात को न मानने का मतलब होगा उनसे खुली दुशमनी मोल लेना। और एक बात साफ जान लो कि अगर वे दोनों इस रिश्ते को बनाना चाहते हैं तो वह बनकर ही रहेगा। वैसे मोहर सिंह इतना खतरनाक आदमी नहीं है। हाँ यह इन्द्र सिंह बड़ा ज़िद्दी स्वभाव का है। वह जिस काम को करने का बीड़ा एक बार उठा लेता है तो उसे पूरा करके ही दम लेता है। उसके धाकड़पन उसकी ताकत से हर कोई डरता है।

—जस्सी के बापू ! हमें उसकी ज़िद से क्या लेना-देना है। पर एक बात तो सच है कि मोहर व इन्द्र हमारे दुशमन नहीं हैं। वे दोनों हमे हमेशा आदर-मान ही देते रहे है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे हम लोगों का हित देखकर ही बात करने आए थे। उनकी बातों मे साफ लग रहा था कि वे हमारी बेटी की खुशी चाहते हैं।

—सो तो ठीक है। मैं यह भी मानता हूँ कि हरनाम सिंह जैसे योग्य लड़के आजकल कहाँ मिलते हैं। मुझे तो लगता है कि मैं कोशिश भी करूँगा तो उस जैसा वर न खोज पाऊँगा। अभी तक जस्सी के लिये मैंने जो दो-तीन लड़के देखे है उनमे कोई न कोई कमी ही नज़र आयी है। किसी को शराब पीने की लत है तो कोई पुलिस का मोखबर है। सोनीपत वाला लड़का काम-धंधे के मामले में ठीक है पर वह थोड़ा लँगड़ाकर चलता है। उन सबसे हरनाम कहीं बहुत अच्छा है। अभी तो मेरा दिमाग़ काम नही कर रहा। समझ मे नही आ रहा कि क्या किया जाए।

—देखो, जब हरनाम तुम्हे पसन्द है, मुझे पसन्द है और सबसे बढ़कर

हमारी बेटी को पसन्द है तो गुरु महाराज का नाम लेकर हमें यह रिश्ता स्वीकार कर लेना चाहिये ।

—जल्दी की बेबे ! तुम तो हर काम में जल्दी मे रहती हो । मुझे कुछ सोचने-विचारने का मौका भी दो । जोधा सिंह से इस मामले मे सलाह लेना शायद ठीक न होगा । वे लोग तो उलटी बात ही करेंगे । कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला—मेरा विचार है कि इस बारे मे सरदार दलीप सिंह से बात की जाए । वह बहुत समझदार, दुनियादार और मुलझा हुआ आदमी है । वह गांव के किसी गुट में भी नही । फिर वह मेरा हमेशा शुभचिन्तक रहा है । धर्म और कायदे-कानून की भी उसे अच्छी-खासी जानकारी है । मै कल ही उससे मिलकर सलाह-मश्विरा करूँगा । सबसे बडी बात यह है कि हमें अपनी बेटी की खुशी देखनी है और हम इन्द्र सिंह व मोहर से दुश्मनी भी नही करना चाहते । बस मै कल सुबह ही सरदार दलीप सिंह से बात करूँगा ।

सरदार दलीप सिंह गांव की राजनीति मे कोई भाग नही लेता था । पर गांव वाले उसे उचित आदर-मान देते । अपनी समस्याओं के निदान के लिये प्रायः लोग उसके पास जाते रहते थे । लगभग बीस वर्षो तक अबाला में वह एक सफल वकील का मुंशी रहा था । यद्यपि वह मिडिल पास था पर उर्दू व अंग्रेजी का उसे अच्छा ज्ञान था । देश की सामाजिक स्थितियों तथा कोर्ट-कचेहरी के कामों को वह अच्छी तरह से समझता था । बीस वर्ष तक मुंशी का काम करते-करते सहसा उसके मन में एक प्रकार का वैराग्य सा पैदा हो गया । वह वकील की नौकरी छोड़कर गांव मे आ गया । उसकी अवस्था साठ वर्ष के आसपास थी । कद लंबा-ऊँचा व शरीर गौरवर्ण था । वह प्रायः सफेद कुरता व चूड़ीदार पायजामा पहनता । उसके गोरे मुख पर शुभ्र लबी दाढी खूब फबती । उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था । बडे सलीके से बात करके लोगो का मन मोह लेने की उसमे अद्भुत क्षमता थी । नौकरी छोडने के बाद उसके रहन-सहन में बहुत परिवर्तन आ गया था । प्रात. स्नान आदि से निवृत होकर गुरुद्वारे जाना उसका नियम बन गया था । अब वह पूरी तरह से धार्मिक वृत्ति धारण कर चुका था । गुरु-घर मे उसकी आस्था दिनोदिन बढती जा रही थी । गांव के लोग उसे एक निष्ठावान आदर्श सिख मानते थे । शगारा सिंह से उसकी अच्छी-खासी मित्रता थी । जब कभी शंगारा सिंह को कोई समस्या परेशान करने लगती तो वह उसके निदान के लिये सलाह-मशविरा करने के लिये दलीप सिंह के पास पहुँच जाता ।

अगले दिन प्रातः शंगारा सिंह अपनी नयी समस्या के सिलसिले में विचार-विमर्श करने के लिये उसके मकान पर पहुँचा। दलीप सिंह उस समय उर्दू अखबार 'मिलाप' पढ़ रहा था। अपने मित्र को देखकर बड़ी प्रसन्न मुद्रा मे बोला—आओ शंगारा सिंह, कहो क्या हाल है ? आज कई दिनों बाद मेरे गरीबखाने पर आए हो।

यह कहकर उसने अखबार परे रख दिया और उसके चेहरे की ओर देखते हुए बोला—कुछ परेशान से लग रहे हो, क्या कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं हो गयी ? फिर उसने पत्नी को बुलाकर कहा—अरी भाग्यवान, देख शंगारा सिंह आया है। इसके लिये कुछ लस्सी-पानी तो ला। पर तभी शंगारा सिंह ने कहा—भई, नाश्ता अभी करके ही आ रहा हूँ। अपना घर है, फिर कभी खा-पी लूंगा। अभी जिस काम के लिये मैं आया हूँ उसके बारे मे बात कर लूं।

—हाँ तो बताओ क्या काम है, किस झंझट में फँस गये हो ? भाई, मैंने तो तुमसे कई बार कहा है कि अब दुनियाभर के लफड़ों में ज्यादा न पड़ा करो। पर तुम बाज ही नही आते। जब तक किसी खुराफात मे टाँग न अड़ा लो तब तक तुम्हरा खाना ही हज़म नही होता।

शंगारा सिंह उसकी बात सुनकर कुछ क्षणों के लिये चुप रहा मानो कुछ मनन कर रहा हो। फिर बोला—दलीप सिंह, जस्सी अब सयानी हो गयी है। सोचता हूँ जल्दी से जल्दी उसके हाथ पीले करके अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊँ। मैंने तुमसे उसके लिये कोई लडका ढूंढ़ने के लिये कह रखा है। अब एक लड़का तो मेरी निगाह मे है। पर उससे जस्सी की शादी करने मे कुछ खतरे भी पैदा हो सकते हैं। सबसे बडी अडचन जातपात की पड रही है।

—अरे भाई पहेलियां ही बुझाओगे या मतलब की बात करोगे। साफ बताओ कौन लड़का है, कहाँ का रहने वाला है, क्या काम करता है ?

—लडके को तुम भी अच्छी तरह से जानते हो। मेरा तो मन नही मान रहा। पर मुझ पर गांव के ही दो जाने-माने व्यक्ति इस रिश्ते के लिये दबाव डाल रहे हैं। हालांकि वे दोनों मेरे दुश्मन नहीं हैं बल्कि हितैषी ही लगते हैं। उन दोनों की बातों मे कुछ धमकी का आभास होता है। वे घर आकर जस्सी की बेबे को साफ बता गये हैं कि जस्सी का ब्याह उसी लडके से ही करना होगा। मुझे तो इस बात पर यकीन नहीं होता पर उन दोनों का कहना है कि जस्सी और यह लड़का दोनों एक दूसरे को चाहते है और आपस में शादी करने के लिये एक दूसरे को वचन दे चुके हैं।

शंगारा सिंह की बात सुनकर दलीप सिंह के माथे पर तनिक बल पड़ गये। वह आँखें सकोड़कर बोला—फिर वही पहेली बुझा रहे हो। यह गोल-मोल बात करने की तुम्हारी आदत बड़ी खराब है। अरे भलेमानस यह बताओ कि वह लड़का कौन है और वे दो व्यक्ति कौन हैं जो इस तरह की धमकी दे गये है।

—तो सुनो, लडका है डाकखाने का बाबू हरनाम सिंह और उसका पक्ष लेने वाले है अपने ही गाँव के इन्द्र सिंह व मोहर सिंह।

—हरनाम सिंह तो बडा भला लडका है। सारा गाँव उसकी तारीफ करता है। भाई शंगारा सिंह! अगर हरनाम सिंह इस सम्बन्ध के लिये तैयार है तो फिर और ज्यादा कुछ न सोचो, बस रिश्ता कर ही डालो। उस जैसे बरसरे रोज़गार लड़के भाग्य से ही मिल पाते हैं। उसकी शक्ल-सूरत भी खासी अच्छी है।

—खाली शक्ल-सूरत अच्छे रोजगार से कुछ नहीं होता। यह क्यों भूल रहे हो कि वह मजहबी सिख है, हरिजनों की बस्ती ठठ्ठी मे रहता है। क्या मैं अपनी बेटी का हाथ किसी नीच जात के लडके के हाथ मे दे दूँ। न ही हमारे परिवार मे और न ही शायद गाँव के किसी खानदान मे इस तरह जातपात के बन्धन को तोडकर कोई ब्याह हुआ है।

—मानता हूँ कि तुम्हारे परिवार मे अथवा गाँव मे अभी तक इस तरह की शादियाँ नही हुईं। पर अब दूसरे शहरों-कस्बों में तो होने लगी है। इस प्रकार के सम्बन्ध होने से हमारे समाज का, हमारे देश का हित ही होगा। यह सही है कि हमारे पूर्वजों ने सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिये कुछ क़ायदे-कानून बनाए थे, समाज की मर्यादाओं को निर्धारित किया था। पर ये सामाजिक मानदंड समय के साथ-साथ बदलते रहने चाहिये। लेकिन ऐसा हमारे यहाँ नही हो पाया। हमारा समाज समय के साथ उतना नही बदला जितना उसे बदलना चाहिये था। उसमे कितनी ही रूढ़ियाँ पनप चुकी है, कितनी ही विसंगतियाँ उत्पन्न हो चुकी हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि इन रूढ़ियों को तोड़ा जाए, पैदा हुई विसंगतियों को मिटाया जाए। भाई शंगारा सिंह, आज दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच चुकी है। आदमी चन्द्रमा पर पहुँचने के बाद दीगर ग्रहों पर पहुँचने की चेष्टा कर रहा है और हमारे साथ विडम्बना यह है कि हम अभी तक कोल्हू के बैल की तरह प्रांतीयता, व धार्मिक पाखंडो की ही परिक्रमा कर रहे हैं। भाई, मैं तो यह ...

तुम जातपात के फेर में न पड़ो, केवल बेटी का हित देखो और उसका ब्याह हरनाम से कर दो।

—दलीप सिंह! तुम्हारी बातें सुनने में तो अच्छी लगती हैं। लेकिन उनको वास्तविक रूप देना आसान नही है। तुम जो कहते हो वह करने से परिवार की मर्यादा पर आंच तो आ ही सकती है। खानदान की इज्जत पर बट्टा लग सकता है। ऐसा विद्रोही काम करके हमारी सिख बिरादरी ही हम पर उँगलियाँ उठाने लगेगी। सब ओर से ताने और उपालम्भ सुनने को मिलेंगे।

—जिसे समाज के लिये कुछ नया करना होता है वह लोगों की बेकार की बातों व तानों से नही डरता। शंगारा सिंह, तुम तो गुरुद्वार के निष्ठावान उपासक हो, स्वयं को एक सच्चा सिख मानते हो। और यह भी जानते होगे कि हमारे गुरुओं ने हमेशा जातपात के खिलाफ आवाज उठाई है। उन्होंने हम सिखों को ही नही वरन् पूरे संसार को समानता का पाठ सिखाया है। यह भूल जाओ कि हरनाम एक मजहबी सिख है। बस यह जानो कि वह एक सच्चा सिख है। बाल की खाल उतारने के बजाए साहस करके अपनी बेटी का ब्याह उस युवक से कर डालो। इन अनपढ़-पिछड़े लोगों की बकवास की चिंता न करो। याद रखो सुशिक्षित व जागरुक लोग तुम्हारे इस साहस का गुणगान करेंगे, तुम्हारी हिम्मत की दाद देंगे।

—पर मेरी समझ में यह नही आ रहा कि इन्द्र व मोहर इस मामले में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे है। मैं अपनी बेटी की शादी जहां चाहूँ जिससे चाहूँ करूं, उनको हमारी पारिवारिक बातों मे दखल देने का क्या हक है। बड़े बनते है हमारा हित चाहने वाले।

—तुम मानो न मानो, पर जो कुछ वे चाहते है उससे तुम्हारा व जस्सी बिटिया का हित ही होगा। तुम जोधा सिंह को अपना मित्र मानते हो। जोधा सिंह को इन्द्र सिंह व उसका बाप दीवान चन्द फूटी आँखों नहीं भाते। जोधा सिंह का प्रभाव तुम पर तो है ही। शायद किसी हद तक तुम भी इन्द्र सिंह को अपना दुश्मन ही मानते हो। पर किसी ने कहा है न कि मूर्ख दोस्त से अक्लमन्द दुश्मन कहीं बेहतर होता है। इन्द्र को तुम दुश्मन मान सकते हो। लेकिन मैं जानता हूँ कि वह तुम्हारा अक्लमन्द दुश्मन है। इन्द्र व मोहर हरनाम के दोस्त हैं। वे दोनों यह जानते हैं कि हरनाम और जस्सी एक दूसरे से प्रेम करते हैं और उन दोनों का आपस मे ब्याह हो जाने से दोनों का जीवन सुखी रहेगा। शंगारा सिंह! एक बात अच्छी तरह समझ लो कि अगर

हरनाम, जस्सी, मोहर व इन्द्र इस सम्बन्ध को बनाने का फैसला कर चुके हैं तो यह होकर ही रहेगा। इन्द्र और मोहर को मैं तुमसे ज्यादा जानता-समझता हूँ। वे दोनों धुन के पक्के हैं। उन्हे अपनी शक्ति का भी एहसास है। तुम्हे उनकी दुश्मनी बहुत महँगी पड़ सकती है।

शंगारा सिंह दलीप सिंह की बातों के महत्व को अच्छी तरह से समझ रहा था। वह जानता था कि इस सम्बन्ध को न बनाने के भयानक परिणाम हो सकते हैं। वह यह भी जानता था कि उसकी अपनी बेटी जस्सी भी जिद्दी स्वभाव की है। उसे भी अपने इरादे से हटा पाना उसके लिये मुश्किल होगा। जोर-ज़बरदस्ती करने पर वह कोई खतरनाक कदम उठा सकती है। कहीं निराश होकर उसने आत्महत्या कर ली तो क्या होगा। तब क्या उसकी, उसके परिवार की बदनामी न होगी। यह भी हो सकता है कि इन्द्र व मोहर की मदद से हरनाम उसे कहीं भगाकर ले जाए, किसी दूसरे शहर में जाकर उससे शादी कर लें। और अगर कहीं ऐसा हो गया तब क्या उसकी नाक नहीं कट जाएगी। तब क्या उसके परिवार पर कलंक नहीं लगेगा। अपनी इसी आशंका को व्यक्त करते हुए उसने दलीप सिंह से कहा—भाई, मेरा दिमाग तो बिल्कुल काम नहीं कर रहा। क्या करूँ क्या न करूँ। कहीं ऐसा न हो कि तीनों दोस्त मिलकर जस्सी को कहीं दूसरी जगह ले जाकर अपनी मनमानी कर ले मतलब उन दोनों का ब्याह करवा दे।

दलीप सिंह जानता था कि हालात ने अगर उन्हे मजबूर किया तो वे लोग ऐसा कदम भी उठा सकते है। यही सोचकर उसने कहा—तुम जो सोच रहे हो वह भी हो सकता है। यह न भूलो कि जस्सी व हरनाम सिंह बालिग हैं। उन्हे आपस मे शादी करने का कानूनी हक भी हासिल है। वे विवश होकर अदालत मे जाकर शादी कर सकते है। और अगर उन्होंने ऐसा कर लिया तब तुम क्या कर सकोगे। तब कानून उनकी पूरी मदद करेगा। इसलिये दोस्त, मेरा तो यही कहना है कि दुनिया को लात मारो, मूर्ख लोगों की बेकार की बकवास से मत डरो और जल्दी से जल्दी बिटिया का ब्याह हरनाम सिंह से कर डालो। ज्यादा सोच-सोचकर अपना दिमाग खराब न करो। गुरु महाराज पर भरोसा रखो। सब ठीक ही होगा।

—अच्छा दलीप सिंह, अब मैं चलता हूँ। तुमसे मिलकर मेरे मन का बोझ हल्का हो गया है। मै हमेशा तुम्हें मानता रहा हूँ और अब भी तुम्हारी राय की कद्र करता हूँ। मैं वही करूँगा जो तुम कह रहे हो। अभी घर जाकर तुम्हारी भरजाई को भी तुम्हारे विचारों की जानकारी देता हूँ।

अट्ठाईस

गत बीस-पच्चीस दिनों से प्रीतो का स्वास्थ्य ठीक नही चल रहा था। मन मे लगी चिन्ता से वह दिनोदिन दुर्बल होती जा रही थी। उसके पिता प्रताप सिंह को जब से बलदेव के साथ उसके प्रेम-सम्बन्ध के बारे मे मालूम हुआ था उसी दिन से उस पर बिना बताए घर से बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगा दिया था। बलदेव को उसने स्पष्ट तो नहीं पर सांकेतिक भाषा में बता दिया था कि वह नही चाहता कि वह उसके यहाँ आए-जाए अथवा प्रीतो से मेल-मिलाप रखे। अक्लमन्द के लिये इशारा बहुत होता है। बलदेव उसका मतलब समझ गया था और उसने उसके यहाँ आना बन्द कर दिया था। प्रीतो को पढ़ाने का अब प्रश्न ही नही रह गया था।

प्रीतो का ताया जोधा सिंह लुधियाना के समीप स्थित गोविन्दपुर गाँव मे उसके रिश्ते की बात कर आया था। वहाँ के सरदार तारा सिंह का लड़का बोध सिंह उसने पसन्द किया था। तारा सिंह के पास गाँव में लगभग तीस एकड़ की खेती थी। घर मे गुज़र-बसर मज़े में हो रही थी। उसके दो लड़के और एक लड़की थी। बोध सिंह बड़ा लडका था। उसकी उम्र पैंतीस वर्ष के आसपास थी। उसकी पत्नी का दो वर्ष पहले निधन हो गया था। उसकी दो वर्ष की एक बच्ची थी जिसके लालन-पालन की जिम्मेदारी उसकी माता व छोटी बहन पर थी। बोध सिंह की उम्र ऐसी थी कि अभी उसकी दोबारा शादी हो सकती थी। गोविन्दपुर से लौटकर जोधा सिंह ने अपने छोटे भाई प्रताप सिंह को बताया था कि लड़के को वह पसन्द कर आया है। बेशक लड़के की उम्र प्रीतो के मुकाबले थोड़ी ज्यादा है पर दीगर बातों को देखते हुए वह ठीक ही है। परिवार मे किसी बात की कमी नहीं और प्रीतो उस घर मे सुखी रहेगी। सरदार नानक सिंह भला आदमी है और उसका गाँव में इज्जत-मान है। लडका दुबला व लंबा है। शरीर का रंग तनिक साँवला है। चेहरे पर चेचक के हल्के निशान है पर देखने मे वह अच्छा लगता है। चरित्र की दृष्टि से भी ठीक ही सुना है। पिता और छोटे भाई के साथ खेती का काम करता है। बड़े भाई की बात पर सोच-विचार करके प्रताप सिंह ने मन में निर्णय ले लिया था कि वह किसी समय गोविन्दपुर जाकर लड़का देख आएगा और अगर उसे रिश्ता पसन्द आ गया तो वह कुछ पत्र-पुष्प भेंट करके

रिश्ते की बात तय कर आएगा। कुछ माह बाद कुड़माई की रस्म और ब्याह कर दिया जाएगा। प्रसिन्नी मन से न चाहते हुए भी पति की बात मानने के लिये विवश हो गयी थी।

पिता के निर्णय से प्रीतो की आशाओं पर तुषारपात हो गया था। उसे अब जीवन नीरस लगने लगा था। चिन्ता मे डूबी वह सोचती रहती कि क्या अब वह कभी अपने बलदेव से नही मिल पाएगी। जो सपने उसने मन-प्राणों मे सँजोए थे क्या वे साकार नही होंगे। जीवन मे जिन बहारों की कल्पना की थी क्या वे अब कभी नही आएँगी, क्या उसके मन-आँगन मे मोहक कलियाँ नहीं चटखेंगी। क्या उसकी ज़िन्दगी किसी ऐसे मरुस्थल की तरह बन जाएगी जहाँ प्रायः तन-मन को झुलसा देने वाली गर्म हवाएँ ही चलती रहती है, क्या अमृत-बूँदों के लिये यह तरसती ही रहेगी। उसने बलदेव को जो वचन दिये थे क्या वह उनको पूरा नही कर पाएगी, क्या वह उसके साथ विश्वासघात करेगी। उफ़! अब उसका भविष्य क्या होगा। क्या वह घुट-घुट कर भीतर ही भीतर पिघलती रहेगी, क्या उसे तिल-तिल मरना होगा।

प्रसिन्नी व प्रताप सिंह समझ नही पा रहे थे कि उनकी बेटी को क्या रोग हो गया है। उसकी सेहत दिनोदिन क्यों गिरती जा रही है। गाँव के हकीम मिल्खी राम से उसका इलाज करवाया जा रहा था। पर उसकी दवाई से प्रीतो के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो रहा था। उसकी काया कमज़ोर होती जा रही थी। चेहरे की रौनक व लालिमा मालूम नही कहाँ लुप्त होती जा रही थी। होंठ जो कभी गुलाबी-चिकने-मोहक थे अब सूखे-मुरझाए से नजर आते थे। आँखें भीतर धँसती जा रही थी। आकर्षक व्यक्तित्व मुरझाता जा रहा था। देह तपती रहती थी। कभी-कभी सूखी खाँसी से वह परेशान हो उठती थी। स्वभाव में कुछ चिड़चिड़ापन आ गया था। अब उसे किसी की कोई बात नही सुहाती थी। प्रायः वह तनाव की स्थिति में रहती। उसकी यह स्थिति तथा बदले हुए स्वभाव को देखकर प्रताप सिंह व प्रसिन्नी भी परेशान नजर आते। लेकिन उन दोनों को मन मे यह भी आशा थी कि जब उसका ब्याह हो जाएगा तब उसकी मनःस्थिति ठीक हो जाएगी, उसका स्वास्थ्य सुधर जाएगा।

बहन की दशा देख-देख कर मोहर सिंह भी मन ही मन परेशान रहता। पर पिता की ज़िद के सामने वह कुछ कर पाने में स्वयं को [illegible] रहा था। वह यह भी अनुभव कर रहा था कि माँ इस सम्बन्ध [illegible] है, पर वह पति के दबाव के कारण चुप रहती है। [illegible]

मे विचार आता कि वह पिता की बात को नकारकर बलदेव और प्रीतो की सिविल मैरेज करवा दे। इस तरह का विचार कुछ क्षणों के लिये ही आता। ऐसा बडा कदम उठाने के लिये उसे अपने भीतर साहस का अभाव लगता। वह यह भी सोचता कि इस मामले मे वह अपने दोस्त इन्द्र सिंह से विचार-विमर्श करे बल्कि प्रीतो व बलदेव का व्याह करवाने के लिए उसका सहयोग प्राप्त करे। परन्तु मालूम नही क्या सोचकर वह चुप रह जाता। उसकी उदार, विद्रोही व क्रांतिकारी भावनाओं को पता नही कैसा काठ मार गया था। पिता व ताया मे टक्कर लेने की उसे हिम्मत नही पड रही थी। शायद वह उपयुक्त समय की प्रतीक्षा कर रहा था।

अभी कुछ दिन पहले सरदार जोधा सिंह को गोविन्दपुर से सरदार तारा सिंह का पत्र प्राप्त हुआ था। तारा सिंह ने लिखा था कि जल्दी ही कोई शुभ महूर्त निकलवाकर वह उन्हे पत्र द्वारा सूचित करेगा कि वे लोग कब गोविन्दपुर आकर ठाके (रोक) की रस्म अदा कर जाएँ। दोनों भाई जोधा सिंह व प्रताप सिंह उत्सुकता से उसके पत्र का इन्तजार कर रहे थे। पत्र न आने से उन्हें मन में कुछ चिन्ता सी हो रही थी। वे सोच रहे थे कि कहीं ऐसा न हो कि वह अपनी बात से हट जाए और अपने बेटे का रिश्ता कहीं दूसरी जगह तय कर ले।

एक सप्ताह बाद जोधा सिंह को गोविन्दपुर से आया एक पत्र मिला। पर वह पत्र सरदार तारा सिंह का न होकर उसके बेटे बोध सिंह द्वारा लिखा हुआ था। पत्र पढकर जोधा सिंह विचलित हो उठा। वह समझ नही पा रहा था कि बोध सिंह के दिमाग को क्या हो गया है। उसने इस तरह का पत्र क्यों लिखा। अगर उसके मन मे कोई ऐसी बात थी तो उसे उस समय ही इन्कार कर देना चाहिये था जब वह उसके बाप से बात करने उनके यहाँ गोविन्दपुर गया था।

पत्र में बोध सिंह ने जो कुछ लिखा था उसकी जानकारी वह प्रताप सिंह को कैसे दे और कहाँ दे, इस बारे में वह निर्णय नही कर पा रहा था। वह जानता था कि पत्र मे दी गयी सूचना को जानकर उसके मन को आघात पहुँचेगा। पर उसे बताना भी जरूरी था। अब आगे इस विषय मे क्या कार्यवाही करनी होगी उस पर भी सोचना-विचारना था। पहले उसके मन में आया कि वह अभी पत्र लेकर उसके घर पर पहुँचकर बात करे। पर फिर लगा कि घर पर इस दुखद खबर को सुनाना उचित न होगा। प्रसिन्नी यह बात जानकर दुखी होगी। प्रीतो बीमार पड़ी है। अगर यह बात उसके कानों तक पहुँच गयी तो उसका मन भी मुरझा जाएगा। फिर जोधा सिंह को पत्र के

विषय के बारे में भी शंका थी । उसके मन में धारणा थी कि यह पत्र नानक सिंह के किसी दुशमन ने बोध सिंह के नाम से लिख दिया होगा । उसका विचार था कि कई रिश्तेदार ऐसे भी होते है जो दूसरे की भलाई नही देख पाते । बल्कि वे प्रायः ईर्ष्यावश ऐसे अवसरों की टोह में रहते हैं जिससे दूसरों का अहित कर पाएँ । यह जरूर ही किसी ऐसे ही पट्टीदार का काम है । आखिर काफी विचार करने के बाद उसने निश्चय किया कि वह प्रताप सिंह के घर पर जाने के बजाए उसे रहट पर बुलवाकर एकान्त मे बात करेगा ।

अपराह्न मे संयोग से प्रताप सिंह अपने बड़े भाई के रहट पर पहुँच गया । उसको देखकर जोधा सिंह ने कहा—प्रताप ! अच्छा किया जो तुम यहाँ आ गये । मैं किसी को भेजकर तुम्हें यहाँ बुलवाने ही वाला था । दरअसल जो समस्या पैदा हो गयी है उस पर घर में अन्य लोगो के सामने बात करना, उस बारे मे सलाह-मशविरा करना ठीक नही है ।

बडे भाई का कुछ उतरा हुआ चेहरा व उसके शब्द सुनकर प्रताप सिंह के मुख पर भी चिन्ता की परत उभर आयी । उसको लगा कि अवश्य ही सरदार नानक सिंह का खत आया होगा और उसने इस रिश्ते के लिये इन्कार लिखा होगा । वह असलियत को जानने के लिये बेचैन हो उठा । उसने पूछा—भैया ! कौन सी समस्या पैदा हो गयी है । क्या किसी से कुछ कहा-सुनी लडाई-झगड़ा हो गया है या कोई और बात है ?

—कहा-सुनी किससे होगी । आओ उधर जरा खेत की ओर चले । वहाँ एकांत मे बात करना चाहूँगा । और इतना कहकर वह उसे हाथ से पकड़कर उधर खेत की तरफ ले गया ।

वहाँ एकांत में उसने कहा—प्रताप ! गोविन्दपुर से चिट्ठी आयी है । पर मेरा विचार है कि सरदार नानक सिंह के किसी दुशमन या शरीक (पट्टीदार) ने ही यह चिट्ठी लिखी या लिखवाई है ।

—कहाँ है वह चिट्ठी ? देखूँ उस में क्या लिखा है ।

जोधा सिंह ने अपने लम्बे कुरते की जेब को टटोला और फिर हाथ से पत्र निकालते हुये बोला—पत्र पर लिखने वाले का नाम बोध सिंह लिखा हुआ है । पर मुझे विश्वास है कि यह उसने स्वयं नही लिखा । यह शरारत उसके किसी दुशमन ने की है । बोध सिंह भला अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी क्यों मारेगा । यह ठीक है कि वह अच्छा व कमाऊ लडका है, उसके खानदान का भी नाम है । लेकिन हमारा घर-परिवार क्या उनसे किसी तरह कम है ।

मालूम नही जमाने को क्या होता जा रहा है। लोग बिना मतलब आकाश में उडने की कोशिश करते रहते हैं। हमारी प्रीतो बेटी में क्या कमी है। पढी-लिखी है, देखने में सुन्दर है। यह बोध सिंह लाख कोशिश करके देख ले फिर भी उसको प्रीतो जैसी लड़की नही मिलेगी। लोगों के पास दो पैसे क्या हो जाते हैं खुद का रानीखां का साला समझने लगते हैं।

प्रताप सिंह को जाहिर हो गया कि जो अनुमान उसने लगाया था वह सही निकला है। अवश्य ही बोध सिंह ने इस रिश्ते से इन्कार कर दिया है। फिर उसने कहा—भैया ! पत्र तो पढ़कर सुनाओ। मेरा दिल तो घबरा रहा है। मुझमें हिम्मत नही कि मैं पत्र को पढ़ पाऊँ। तुम ही पढ़कर सुनाओ।

—ठीक है तुम कहते हो तो पढ़ देता हूँ। पर यक़ीन रखो यह पत्र बोध सिंह ने नहीं लिखा है। यह भी हो सकता है कि हमारे ही किसी दुश्मन का काम हो। खैर पत्र सुनो। पत्र में लिखा था—

श्रीमान जी,

मेरा यह पत्र पढकर आपके मन को दुख पहुँचेगा। लेकिन बहुत सोच-विचार के बाद यह पत्र लिखने के लिये मैं मजबूर हुआ हूँ। दरअसल अभी मेरा शादी करने का कोई विचार नही है। कुछ महीनों से मेरी सेहत खराब चल रही है। मैंने अपने दार जी को भी साफ कहा था कि वे मेरे ब्याह की बातचीत कही न चलाएँ। किन्तु उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नही दिया। वे मुझे डरा-धमकाकर मेरी शादी आपकी भतीजी के साथ करना चाहते हैं। पर मुझे यह रिश्ता मंजूर नही है। इसका मतलब कहीं आप यह न लें कि आपकी बेटी में कोई दोष है। कोई ऐसा दोष लगाकर मैं अपने सिर पर पाप नहीं लेना चाहता। मेरे अपने हालात कुछ ऐसे हैं कि मैं अभी इस सम्बन्ध को स्वीकार कर पाने में असमर्थ हूँ। अगर आप लोगों ने व मेरे दारजी ने मिलकर ज़ोर-ज़बरदस्ती से यह ब्याह करवाया तो उसका नतीजा ठीक नही होगा। फिर जो परिणाम होंगे उसके ज़िम्मेदार आप लोग होंगे। अभी तक तो दोनों परिवारों मे केवल बातचीत ही चली है, कोई लेन-देन तो हुआ नही। इस कारण रिश्ता तोडने का आरोप भी आप मुझ पर नही लगा सकते। हाँ कुड़माई या ठाका हो जाने के बाद मैं इन्कार करता तो मैं ज़रूर दोषी होता। आशा है आप मेरी इस-साफगोई के लिये मुझे क्षमा करेंगे और इस सम्बन्ध में कोई बातचीत नहीं करेंगे। मेरे इस पत्र के पाने पर आपके मन को जो

कष्ट पहुँचेगा उसके लिये में माफी चाहता हूँ। उम्मीद है आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे।

शुभचिन्तक
बोध सिंह साकन गोविन्दपुर।

पत्र सुनकर प्रताप सिंह के चेहरे पर चिन्ता व दुख की रेखाएँ उभर आयीं। उसने अपने बाँए हाथ से अपने माथे व आँखों को तनिक मलकर कहा—इन हरामजादों को अगर यही करना था तो बात ही शुरू क्यो की। तुम बेकार में उनके यहाँ गये। ऐसा तो हो नही सकता कि बेटे ने बाप से बात न की हो। जब बेटा हाँ नहीं कर रहा था तो नानक सिंह ने क्यों उस पर दबाव डाला। यह तो अच्छा हुआ कि लड़के ने पहले ही हमको लिख दिया। अगर कही शादी हो गयी होती तो उसका परिणाम क्या होता। बच्चों की इच्छा के विरुद्ध की गयो शादी का नतीजा आम तौर पर खराब ही रहता है।

ये शब्द कहने को तो प्रताप सिंह ने कह दिये पर सहसा उसे याद आया कि वह स्वयं भी तो अपनी बेटी का ब्याह उसकी इच्छा के विरुद्ध ही करने जा रहा है। तो क्या इस शादी का परिणाम सुखमय न होगा। वह अभी इस बात पर विचार कर ही रहा था कि जोधा सिंह बोला—प्रताप, असलियत का तो पता करना ही है। मेरा विचार है कि हम दोनो दो-एक दिन मे ही गोविन्द-पुर चलें, वहाँ नानक सिंह से बात करके वास्तविकता मालूम करें। मुझे तो पूरा विश्वास है कि यह काम किसी दुश्मन ने ही किया है। वहाँ पहुँचने पर ही सही बात का पता चलेगा।

—मेरे विचार में तो वहाँ जाना बेकार ही होगा। खैर तुम चाहते हो तो चले जाएँगे। लेकिन यह बात सिरे नही चढ़ेगी ऐसा मुझे लग रहा है।

इसके बाद प्रताप सिंह घर लौट आया। दोनों भाइयो ने यही निश्चय किया था कि बात को अधिक टालना ठीक न होगा, वे दोनों कल ही गोविन्द-पुर रवाना हो जाएँगे।

घर पहुँचकर प्रताप सिंह ने अपनी पत्नी प्रसिन्नी को सारा विवरण सुनाना। प्रसिन्नी का चिंतित होना भी स्वाभाविक ही था। वह धर्मनिष्ठ महिला थी। कुछ देर तक तो वह चिंता में डूबी सोचती रही कि अब क्या होगा, उसकी बेटी का भविष्य क्या होगा। लेकिन कुछ ही क्षणों बाद [illegible] चिन्ता कम होनी शुरू हो गयी। उसने मन ही मन स्वयं को

कहा कि गुरु महाराज जो करेंगे ठीक ही करेंगे। हो सकता है जो कुछ हो रहा है उसी में ही उसकी बेटी का हित हो।

रात को जब मोहर सिंह घर आया तो प्रसिन्नी ने उससे भी इस बात का उल्लेख किया। लेकिन मोहर की प्रतिक्रिया कोई विशेष न रही। बल्कि उसको मन में कहीं संतोष की अनुभूति ही हुई। उसने ऊपरी तौर पर तो माँ में हमदर्दी प्रकट की पर उसकी भाव-भंगिमा से लग रहा था मानो वह भीतर से कही खुश था। जो वह चाहता था उसके पूरा होने की सम्भावना उसे नजर आ रही थी।

अगले दिन दोनों भाई गोविन्दपुर पहुँच गये। गाँव में पहुँचकर उन्होंने सोचा कि दोपहर का समय है। इस वक्त नानक सिंह घर पर नहीं अपने रहट पर हा होगा। वहां जाकर ही उससे बात करना ठीक रहेगा। लेकिन जब वे रहट पर पहुँचे तो पता चला कि कुछ देर पहले सरदार जी खाना खाने घर गये हैं और एक-डेढ़ घंटे बाद वापस पहुँचेंगे। इतनी देर तक वहाँ इन्तजार करना उन्होंने उचित न समझा और वे उसके घर की ओर चल पड़े। जैसे ही वे दोनों चलने को हुए तभी रहट पर काम करने वाला एक कारिन्दा अपने मालिक नानक सिंह के घर की ओर तेजी से लपका। दोनों भाइयों के पहुँचने से पहले ही उसने जाकर नानक सिंह से कहा—सरदार जी! राणीपुर से सरदार जोधा सिंह और उसका भाई आए हैं। वे दोनों अभी रहट पर पहुँचे थे और अब वे यहां घर पर आ रहे हैं।

कारिन्दे की बात सुनकर नानक सिंह के मन को एक झटका सा लगा। वह सोचने लगा कि बिना कोई इत्तला दिये अचानक दोनों भाई क्या करने यहाँ आए है। कही ऐसा तो नही कि वे रिश्ता तोड़ने के लिए आए हो। फिर उसने आवाज देकर पत्नी को दूसरे कमरे से अपने पास बुलाया और बोला—अभी रामू बता गया है कि राणीपुर वाले सरदार जोधा सिंह व उसका भाई सरदार प्रताप सिंह यहाँ आए हैं। वे अभी घर पहुँचने हो वाले हैं। पता नही वे क्यों आए हैं।

उसकी पत्नी भी कुछ चकित सी रह गयी और बोली—क्या मालूम क्यों आए हैं। हो सकता है कि आसपास के किसी गाँव मे आए हों और सोचा हो कि आपसे भी मिलते जाएँ और आगे जो काम करना है उसके बारे में बातचीत कर लें। अब परेशान होने की क्या बात है, वे आ ही गये हैं तो उनका स्वागत होना चाहिये। तुम दरवाजे पर खड़े होकर देखो, वे आते ही होंगे, मैं जरा कमरा ठीक-ठाक कर दूं। और इतना कहकर वह दूसरे कमरे में गयी

और फुर्ती से एक काला-सफेद खानेदार खेस बड़े पलंग पर बिछा दिया । तख्त की चादर भी बदल दी ।

नानक सिंह जल्दी से कुरता, तहमद और पगड़ी बदलकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया । कुछ देर बाद उसने दोनों भाइयों को गली में प्रवेश करते हुए देखा और भीतर आकर पत्नी से बोला—बोध की माँ ! वे लोग आ रहे हैं ।

जैसे ही नानक सिंह की उन दोनों से निगाह मिली उसने दोनो हाथ जोड़कर तपाक से 'सत सिरी अकाल' कहकर उनका स्वागत किया । उन दोनों ने भी बारी-बारी उससे हाथ मिलाया और भीतर कमरे मे आ गये । नानक सिंह ने पलँग की ओर संकेत करते हुए उनसे कहा—बैठिये । और कहें सब कुशल-मंगल है । आपके पधारने की खबर अभी हमारा कामा (नौकर) देकर गया है । उसकी बात सुनकर मुझे थोड़ा आश्चर्य सा हुआ कि आप एकाएक बिना कोई पता दिये कैसे आए हैं । फिर सोचा कि हो सकता है कि आप यहीं-कहीं आसपास के गाँव में आए हों और सोचा हो कि मिलते चलें । वैसे बड़ा अच्छा किया जो दर्शन देने की कृपा की । फिर उसने पत्नी को आवाज देकर कहा—बोध की माँ, देखो राणीपुर से भाई साहब आए हैं ।

उसकी पत्नी सिर पर दुपट्टा ठीक करती हुई कमरे मे प्रविष्ठ हुई और दोनों को तनिक सिर झुकाकर सत सिरी अकाल कहा । फिर बड़े विनम्र भाव से बोली—आज का दिन तो बड़ा शुभ है जो हमारी कुटिया पर आपके चरण पड़े । जैसे ही इन्होंने बताया कि आप आए हैं तो यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई । वहाँ घर मे बहन जी व बच्चे मज़े मे है ?

—हाँ सब गुरु महाराज की कृपा है, प्रताप सिंह ने उत्तर मे कहा ।

फिर नानक सिंह पत्नी से बोला—तुम कुछ जलपान लाओ या फिर भोजन लगाओ । यह सुनकर जोधा सिंह बोला—नही नानक सिंह जी, खाना हम दोनो खाकर ही चले थे । आप कष्ट न करे । फिर मतलब की बात की ओर आते हुए उसने कहा—हमारा यहाँ आने का खास मतलब है । हमने सोचा कि आपसे आमने-सामने बात करके ही असलियत का पता चलेगा । फिर उसने जेब से पत्र निकालकर उसके हाथ मे देते हुए कहा—बोध सिंह का यह पत्र मुझे मिला है । अगर वह शादी के लिये आमादा नही था तो उसे उस वक्त ही साफ बता देना चाहिये था जब मैं पिछली बार आपसे मिलने यहाँ आया था । तब तो उसकी बातों से अथवा उसके व्यवहार से कहीं ऐसा नही लगा था कि उसको इस सम्बन्ध के लिये कोई एतराज़ है ।

जोधा सिंह की बात सुनकर नानक सिंह कुछ चौंकता हुआ बोला—सरदार साहब ! यह आप क्या कह रहे हैं। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। बोध सिंह ने मुझसे बिना पूछे आपको पत्र लिखा है यह मैं मान नहीं सकता। वह तो साधारण काम भी मुझसे पूछकर मेरी राय लेकर करता है। फिर आप जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति को पत्र अपनी मर्जी से लिखने की हिम्मत कैसे करेगा।

—नानक सिंह जी, पत्र आपके हाथ में है। उसकी लिखावट तो आप पहचान ही लेंगे। जरा पढ़कर देखें कि उसने क्या लिखा है, ये शब्द प्रताप सिंह ने कहे।

पत्र को सरसरी तौर से देखकर नानक सिंह बोला—हाँ लिखाई व दस्तखत तो बोध के ही हैं। फिर उसने पत्र पढ़ना शुरू किया। पत्र पढ़ते समय उसके मुख पर तरह-तरह के भाव आ-जा रहे थे। पढ़ चुकने के बाद वह बोला—उस नालायक ने इस तरह का पत्र लिखने की हिम्मत कैसे की। समझ मे नहीं आता कि कब और किससे सलाह-मशविरा करके उसने यह आपको लिखा। यह तो उसने बहुत बड़ी नीचता का काम किया है। उस उल्लू के पट्ठे को मेरे भी वचनों का कोई ख्याल नहीं रहा। मुझे तो लगता है कि उसने जरूर किसी दबाव में आकर इसे लिखा है। वह अपनी मर्जी से कभी इस तरह की हरकत नहीं कर सकता। मैं अभी उसे बुलवाकर असलियत मालूम करता हूँ।

इतना कहकर वह बाहर गली में आया। कुछ ही क्षणों बाद उसे एक लड़का दिखाई पड़ा। उसने उसे अपने पास बुलाकर कहा—गुरबचन ! बोधा चौपाल में या तावे शाह की दुकान पर होगा। तुम अभी जाकर उसे बुला लाओ, कहना कि तुम्हारे दार जी ने अभी तुरन्त तुमको घर पर बुलाया है। उसके शब्द सुनकर 'अच्छा ताया जी' कहकर गुरबचन बड़ी तेज़ी से चौपाल की ओर चला गया। नानक सिंह ने कमरे मे प्रवेश करते हुए कहा—मैंने मुहल्ले के एक लड़के को भेजकर उसे बुलवाया है। अभी दो-तीन मिनटो मे आ जाएगा।

उसने एक बार फिर पत्नी को आवाज़ देकर कहा—सुनो बोध की माँ, अगर भोजन मे अभी देर हो तो तब तक एक-एक कटोरा दूध ही लेती आओ।

उसके ये शब्द सुनकर जोधा सिंह ने कहा—नानक सिंह जी, यह आप क्या कह रहे हैं। आप तो सब रीति-रिवाजों को अच्छी तरह से जानते-समझते

हैं। आपको मालूम है कि हम लड़की वाले हैं। दूध क्या हम तो आपके घर का पानी तक नही पी सकते।

—आपका कहना उचित है। पर अभी हमारा-आपका रिश्ता कहाँ तय हुआ है। हाँ जब किसी रस्म की अदायगी हो जाएगी तब मैं खुद ही आपको जलपान के लिए नही पूछूंगा। अभी तो आप वेखटके खा-पी सकते हैं।

खटका किस बात का है। परम्परा होती है, पारिवारिक मर्यादाएँ होती हैं। उनको तो निभाना ही पड़ता है। हमने जब मन मे इस सम्बन्ध का संकल्प कर रखा है तो हम आपके यहाँ कैसे जलपान कर सकते हैं। इसके लिए आप हमें क्षमा करें। तो आपका क्या ख्याल है कि यह काम आपके किसी दुशमन या शरीक ने किया होगा, जोधा सिंह ने पूछा।

—मैं क्या कह सकता हूँ। मेरा तो गाँव भर में हर किसी से अच्छा व्यवहार है। मैंने कभी किसी के काम में कभी कोई अडंगा नहीं लगाया। बल्कि इस तरह के कामों में सहयोग ही दिया है। मुझे तो नही लगता कि गाँव का कोई आदमी मेरे साथ इस तरह की शत्रुता कर सकता है। पर बोध सिंह ने यह पत्र क्यों लिखा, इस बात के लिए मैं भी हैरान हूँ। आपकी परेशानी व चिन्ता को मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ। आखिर मैं भी बाल-बच्चेदार हूँ, मेरी भी एक बेटी है। अगर आपकी जगह मैं होता और मुझे भी इस तरह का पत्र किसी ने लिखा होता तो मुझे भी आपकी तरह ही दुख होता। बेशक अभी तक कुड़माई नही हुई पर मैंने आपको वचन तो दिया है।

वचन की बात सुनकर प्रताप सिंह को मन मे कुछ तसल्ली हुई। उसे लगा कि अगर किसी भावना या साधारण सी बात से वशीभूत होकर लड़के ने यह पत्र लिखा है तो बात खत्म नहीं समझनी चाहिए। हो सकता है पिता के समझाने पर, थोड़ा दबाव डालने पर लड़का राजी हो जाए। यही सोच-कर उसने कहा—हमें तो आपके वचनो पर विश्वास है। आप अपनी बात से नही हटने वाले। लेकिन आज के जमाने को क्या कहा जाए। आजकल लड़के-लडकियो का दिमाग़ कब बदल जाए, वे क्या कर बैठें, इस बारे में कुछ कहा नही जा सकता। सरदार साहब! भैया ने आपके लडके पर इतना ध्यान नही दिया था। उन्होने आपको व आपके सुच्चे-ऊँचे खानदान को देखकर ही आप से इस रिश्ते के बारे में बात शुरू की था। अकाल पुरख गुरु महाराज की हमारे परिवार पर कृपा है। अगर लड़के की दहेज आदि में किसी खास

चीज़ की माँग हो तो वह हमें बता सकता है। हम हर तरह से उसे पूरा करने की कोशिश करेंगे।

छोटे भाई की बात को आगे बढ़ाते हुए जोधा सिंह बोला—बेशक हमारी बच्ची लाड़-प्यार व नाज़ों में पली है। पर वह आपके घर में आपकी दासी बनकर रहेगी। उसके व्यवहार उसकी सेवा-टहल में आपको कभी कोई कमी महसूस न होगी। नानक सिंह जी, बेशक आजकल अच्छे चरित्रवान रोज़गार में लगे लड़के आसानी से नही मिलते पर अच्छी सुशील पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी तो भाग्य से ही मिल पाती हैं।

वे बातें कर ही रहे थे कि सहसा बोध सिंह कमरे में दाखिल हुआ। बाप के पास बैठे जोधा सिंह व प्रताप सिंह को देखकर उसके चेहरे का रंग उड़ गया। उसने नही सोचा था कि जैसे ही वह घर में पहुँचेगा उसे ये दोनों व्यक्ति नज़र पड़ जायेंगे। किसी तरह उसने हाथ जोड़कर दोनों को पैरी पोना कहा और बाप के बग़ल में तख्त पर बैठ गया। अब हर क्षण उसकी घबराहट बढ़ रही थी। उसे लग रहा था कि किसी भी समय उसे कुछ हो सकता है। उसके हृदय की धड़कन तेज़होती जा रही थी। उसे लग रहा था कि वह किसी प्रश्न का उत्तर नही दे पाएगा। उसे अपना गला सूखता हुआ अनुभव हो रहा था। गले को तर करने के लिए उसने दो-तीन बार थूक का गुटका, होठों पर जीभ फेरी।

लड़के की शक्ल-सूरत व उसकी यह दशा देखकर प्रताप सिंह के मन को भी एक ज़बरदस्त झटका-सा लगा। लड़के में उसे किसी भी तरह का कोई आकर्षण नज़र नही आ रहा था। बल्कि वह उसे कुरूप ही लग रहा था। सहसा उसको आंखो के सामने अपनी इकलौती लाडली बेटी की सूरत घूम गयी। बोधा उसे एकदम काठ के उल्लू की तरह नज़र आ रहा था। दुबला-पतला शरीर, कमज़ोर से मुख पर साधारण-सा नाक-नक्शा। उसके अलावा चेचक के अनेक दाग। उसे लगा कि भगवान की बड़ी कृपा रही कि अभी तक उसने लेन-देन की कोई रस्म नही की थी। अगर उसे यह पत्र न मिला होता और भाई के आश्वासन पर वह ठाके की सामग्री आदि लेकर आया होता तो क्या होता। गुरु महाराज ने जो किया है ठीक ही किया है। उसने बैठे-बैठे ही मन में संकल्प कर लिया कि यदि बाप के दबाव डालने पर लड़का मान भी जाएगा तब भी वह फिलहाल बात को टालकर वापस चला जाएगा। वह अपनी सुन्दर पढ़ी-लिखी गाय जैसी भोली लड़की का इस लंगूर के साथ ब्याह नही करेगा। उसे मन में अपने बड़े भाई पर भी क्रोध आ रहा था।

वह समझ नही पा रहा था कि उसका अपना भाई उससे किस बात का बदला लेने जा रहा था। अगर प्रीतो उसकी अपनी लड़की होती तो क्या वह उसका ब्याह इस लड़के से करता। फिर वह सोचने लगा कि क्या छोटे भाई की लड़की अपनी नही होती। क्या भाई भी किसी शरीक की तरह व्यवहार कर सकता है। उसने सोचा कि अब अगर बडा भाई भी उस पर दबाव डालेगा तो वह किसी भी हालत में इस रिश्ते को नही मानेगा। यही उसका आखिरी फैसला है। इतनी सारी बाते प्रताप सिंह कुछ ही क्षणो मे सोच गया।

फिर जोधा सिंह ने सिर झुकाए हुए लड़के से पूछा—बेटा, क्या यह पत्र तुमने ही लिखा था?

बोध सिंह का चेहरा हर क्षण सफेद पडता जा रहा था। उसकी भाव-भंगिमा बडी बदली हुई अजीब-सी लग रही थी। लग रहा था कि वह अपने आपको किसी तरह सम्भालने का प्रयास कर रहा है। जब उसने कोई जवाब नही दिया तो नानक सिंह थोडा क्रोधभरे लहजे मे बोला—बोलते क्यों नही ? सरदार साहब ने तुमसे कुछ पूछा है। सच बताओ क्या यह चिट्ठी तुमने अपनी मर्जी से लिखी है या किसी ने डरा-धमकाकर तुमसे लिखवाई है ?

पूर्व इसके कि वह कोई जवाब दे पाता वह बैठा-बैठा तख्त से नीचे गिर पडा। उसकी यह दशा देखकर दोनो भाई सकते मे आ गये। वह जमीन पर अचेत पडा था। उसके मुख से थोडा-सा फेन निकल आया था। उसके बाप को समझने मे देर नही लगी कि उसे मिर्गी का दौरा पड गया है। उसने तुरन्त पत्नी को बुलाकर कहा—बोध की माँ, देखो बच्चे को दौरा पड गया है। उसकी पत्नी लडके की दशा देखकर घबरा उठी। पर इस समय क्या करे वह कुछ समझ नही पा रही थी।

तभी जोधा सिंह ने कहा—लगता है इसे मिर्गी आ गई है। क्या पहले भी कभी इसके साथ ऐसा हुआ है ? यह तो बड़ी खतरनाक बीमारी है।

नानक सिंह भी लडके की दशा देखकर परेशान हो उठा। वह समझ नही पा रहा था कि क्या उत्तर दे। अचानक उसके मुख से शब्द निकले—इधर चार-पाँच सालो से उसे दौरा नही पडा था। हाँ पहले कभी-कभी कुछ देर के लिए बेहोशी जरूर आती थी। पर अब तो वह ठीक हो गया था। मालूम नही आज क्यों ऐसा हो गया।

तभी उसकी पत्नी बोली—नन्दपुर वाले बाबा जी से दवाई लाए थे। उस दवा से बोधे को बहुत लाभ हुआ था। जब तक यह उस दवा को लेता रहा तब तक कभी इसे दौरा नही पड़ा था। पिछले साल बाबा जी

चलाना (निधन) हो गया। तब से वह दवाई नहीं मिल पाई। अगर वही दवा यह लेता होता तो आज बच्चे को दौरा न पड़ता। फिर वह पति से बोली—आप देख क्या रहे हैं। जाकर हकीम चन्दन मल को बुला लाएँ।

तभी प्रताप सिंह ने जोधा सिंह की ओर देखा और संकेत से वहाँ से चल देने को कहा। फिर उसने उठते हुए कहा—अच्छा सरदार नानक सिंह जी, अब हमें आज्ञा दें। आप बच्चे का दवा-दारू करवाएँ। हम फिर कभी मिलेंगे।

—आप बैठें। इतनी जल्दी क्या है। यह अभी थोड़ी देर में ही होश में आ जाएगा···

—नहीं-नहीं, अब आप इसे देखें। सुना है रोगी को जूता सुंघाने पर होश आ जाता है। आप वैसा करके देखें। अच्छा हम चलते हैं। ये शब्द कहकर जोधा सिंह अपने भाई प्रताप सिंह के साथ घर से बाहर आ गया। नानक सिंह बुझे मन से उन्हें अलविदा कहने दरवाजे तक आया। रिश्ते के बारे में अब आगे क्या कार्यवाही होगी इसका अनुमान उसने लगा लिया था। दोनों भाई बस अड्डे की ओर चले गये।

राणीपुर पहुँचकर प्रताप सिंह ने पूरा विवरण अपनी पत्नी प्रसिन्नी को सुनाया। सारी बात सुनकर वह पति से बोली—गुरु महाराज ने हमें समय रहते बचा लिया। अगर कहीं ब्याह हो गया होता तो हमारी बेटी का जीवन बर्बाद हो जाता। यह मिर्गी का रोग कभी जाता भी है। मैं समझ नहीं पा रही कि जेठ जी ने क्या देखकर वहाँ बात चलाई थी। क्या वे नहीं जानते थे कि लड़के को मिर्गी के दौरे पड़ते हैं। अपने ही परिवार के लोग ऐसा कर सकते हैं, पिता समान लडकी का ताया यह कुछ करेगा ऐसा तो मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी।

तभी पास बैठा मोहर सिंह बोला—कुछ आदमी अपने स्वभाव से मजबूर होते हैं। वे दूसरों के लिए कुछ अच्छा करने के बारे में सोच ही नहीं सकते। ताया जी का स्वभाव आज से नहीं वर्षों से जानता हूँ। अब तो आप उन्हें समझ ही गये होंगे। मेरा तो यही कहना है कि अब कहीं भी लड़का खोजने न जाएँ। प्रीतो की हालत को देखें। उसकी सेहत बड़ी तेजी से गिरती जा रही है। भगवान न करे उसे कुछ हो गया तो हम जिन्दगी भर रोते रहेंगे। बलदेव प्रकाश में क्या कमी है? आप लाख कोशिश करके देख लें। हर तरह से योग्य वैसा वर कहीं नहीं मिलेगा। बिना मतलब जिद करके मेरी देवी जैसी बहन की जिन्दगी से खिलवाड़ न करें।

प्रसिन्नी को बेटे के शब्द अच्छे लग रहे थे। वह समझ रही थी कि जो कुछ उसने कहा है ठीक ही कहा है। वैसा करने पर बेटी का हित ही होगा, हानि नही। वह चाह रही थी कि कितना अच्छा हो यदि गुरु महाराज उसके पति को भी सुबुद्धि देदें और वह बेटी की इच्छानुसार उसका व्याह बलदेव के साथ करने को तैयार हो जाय।

प्रताप सिंह कुछ देर तक चुपचाप बैठा रहा। वह समझ नही पा रहा था कि बेटे की बात का क्या जवाब दे। फिर उसकी बात का जवाब न देकर बोला—हम दोनो गोविन्दपुर तो हो आए पर यह पता न चल पाया कि नानक सिंह के लड़के ने वह पत्न क्यों लिखा था, किसके कहने पर लिखा था। बात करने पर ही वह बेहोश हो गया। इस बारे में कुछ बता भी नहीं पाया।

मोहर सिंह ने सोचा कि अब असलियत बता देने में क्या हर्ज है। जो योजना उसने बनाई थी वह तो सफल हो ही गयी थी। वहाँ रिश्ता करने का अब कोई प्रश्न ही नही रह गया था। कुछ सोचकर वह बोला—यह तो आप मानेंगे ही कि भगवान ने जो किया है ठीक ही किया है। अपनी बहन की खुशी, उसके भविष्य के लिये मुझे कुछ करना पड़ा। कुछ दिन पहले लुधियाना मैंने अपने मित्र राम कृपाल को पत्न लिखा था। उसे पूरी योजना समझा दी थी कि गोविन्दपुर पहुँचकर उसे क्या कुछ करना है। राम कृपाल हमारी पार्टी का जाना-माना नेता है। उस जैसा धाकड़ वर्कर उस पूरे इलाके में नहीं है। वह शरीफों के साथ शरीफ और गुण्डों के साथ गुण्डा है। इलाके के बड़े-बड़े गुण्डे व शोहदे उसकी ताकत व प्रभाव का लोहा मानते हैं। बोध सिंह जैसे बिल्कुल साधारण लड़के की क्या मजाल थी जो उसकी बात से इन्कार कर पाता। कृपाल ने जैसा पत्न उससे लिखवाया वैसा उसने लिख दिया। अब तो आप दोनों मानेंगे कि मैंने अपनी बहन के लिये जो कुछ किया ठीक ही किया।

प्रताप सिंह उस समय तो उसे कोई जवाब न दे पाया। लेकिन वह मन ही मन मान गया कि बेटे ने अपने दोस्त द्वारा जो काम करवाया है वह ठीक ही करवाया है। अभी तक वह मोहर सिंह को नाकारा और नालायक ही समझता आया था। आज बेटे की बात सुनकर सहसा उसे वह कहावत याद आ गयी कि नालायक पुत्र और खोटा सिक्का कभी-कभी अवसर पड़ने पर बहुत काम आते हैं। उसकी दृष्टि में उसके नालायक बेटे ने वह काम कर दिखाया था जो बड़े से बड़े योग्य बेटे नही कर पाते। वह मन ही मन उसे

शाबाशी दे रहा था। वह अकाल पुरुख गुरु महाराज को भी धन्यवाद दे रहा था जिन्होंने समय रहते उसका पर्दा ढक लिया, उसकी प्यारी बेटी का जीवन बर्बाद होने से बचा लिया। अब प्रताप सिंह को कहीं अन्तर्मन में यह एहसास भी हो रहा था कि मोहर का सुझाव मान लेने में बुराई भी क्या है। वह ठीक ही तो कहता है कि बलदेव जैसा काबिल लड़का आसानी से कहाँ मिल पाता है। क्या उसे अपनी बेटी की खुशी के लिये उसका सुझाव मान लेना चाहिये अथवा नहीं, इस बारे में वह अभी कोई अंतिम निर्णय नहीं ले पा रहा था। वह इस समस्या पर अभी कुछ और सोच-विचार करना चाहता था।

● ●

उन्तीस

शुरू-शुरू में इन्द्र सिंह शम्मी से मिलने व उसकी संगति का थोड़ा सुख पाने के लिये दो-चार बार उसके मकान पर गया था। पर बाद में उसने जाना बहुत कम कर दिया था। जब कभी जाता भी था तो केवल दो-तीन मिनट के लिये ही। शम्मी व शेर सिंह समझ रहे थे कि वह मात्र औपचारिकता निभाने के लिये ही आता है। इन्द्र के नजरिये में यह बदलाव क्यों आया था इसका कारण वे दोनों व जोधा सिंह आदि समझ नहीं पा रहे थे।

इन्द्र सिंह का स्वभाव आम युवकों से थोड़ा हटकर था। वह प्रायः महिलाओं की संगति से दूर रहने का ही प्रयास करता था। दो-चार मुलाकातों में ही उसे आभास होने लगा था कि शम्मी का रहन-सहन आम घरेलू औरतों जैसा नहीं है। उसके व्यवहार व हरकतों में उसे कुछ बाजारूपन दिखाई पड़ रहा था। कोई भी पारिवारिक महिला इस तरह खुलेपन व बेशर्मी से बातें नहीं कर पाती जिस तरह शम्मी करती थी। औरत में जो स्वाभाविक लज्जा व संकोच की भावना होती है वह उसमें कहीं दिखाई नहीं पड़ती थी। उसने यह भी देख लिया था कि वह जब भी शम्मी के घर जाता था या वहाँ से लौटता था, बाहर गली में या उस घर के आसपास मँडराता कोई न कोई लड़का उसे दिखाई पड़ जाता। शम्मी के व्यवहार तथा जिस ढंग से उसके आने-जाने पर निगरानी रखी जा रही थी इससे उसे साफ लगने लगा था कि यह सब कुछ किसी षड्यन्त्र का ही भाग है। वह अब शम्मी के यहाँ जाता

था तो महज खानापुरी करने के लिये ही, मात्र अपने मित्र सुच्चा सिंह की बात को रखने के लिये।

जितना ही इन्द्र सिंह शम्मी से दूर हट गया था उससे कहीं ज्यादा शेर सिंह उसके निकट आ गया था। उस हसीना का सम्मोहन उस पर प्रभाव डालता जा रहा था। जो जाल उसने इन्द्र को फाँसने के लिये फैलाया था उसमे वह स्वयं फँस चुका था। वह दिन में दो-तीन बार तो अवश्य ही उसके यहाँ जाता और ज्यादा से ज्यादा देर तक उसके पास बैठकर बातें करता। हँसी-मजाक छेड़छाड़ करता। दोनों ओर से प्रेमपूर्ण भावनाओं का आदान-प्रदान होता। शम्मी को जो कुछ चाहिये था वह उसे शेर सिंह से मिलने लगा था और निकट भविष्य में और मिलने की संभावना उसे साफ नज़र आ रही थी। ऐसा नहीं था कि शेरे की हरकतों की जानकारी उसके बाप जोधा सिंह या उसके भाई दौलत सिंह को नहीं मिल रही थी। उन तक सभी खबरें पहुँच रही थीं। बाप ने दो-एक बार बेटे को समझाने का प्रयास भी किया था। लेकिन बेटे ने बड़ी चालाकी से कोई न कोई बहाना बनाकर बात को टाल दिया था। शेर सिंह शम्मी के इश्क में अब इस सीमा तक डूब चुका था कि उसे न बाप को और न किसी अन्य की परवाह रह गयी थी। अब तो वह गम्भीरतापूर्वक शम्मी से ब्याह करने के बारे में सोचने-विचारने लगा था। शम्मी भी उसे आश्वासन दे रही थी कि वह भी दिलोजान से उसे चाहने लगी है और वह सदैव के लिये उसके साथ रहने को तैयार है। लेकिन अभी शेरा यह समझ नहीं पा रहा था कि माँ-बाप से कैसे इस बारे में बात करे, कैसे उन्हे अपने अन्तिम निर्णय से अवगत कराए। वह बखूबी जानता था कि उसके इस फैसले को कभी उसके माँ-बाप स्वीकार नहीं करेंगे। वह मन ही मन इस बात से भी खुश था कि चलो अच्छा ही हुआ जो इन्द्र ने शम्मी से मिलना-जुलना बन्द कर दिया। उसके रास्ते का काँटा दूर हो गया॥

अभी आठ-दस दिन पहले वह रात के प्रथम पहर मे शम्मी के पास बैठा रंग-रलियाँ मना रहा था। शम्मी पलंग पर उसके पहलू मे बैठी थी और वह उसकी काली-चमकीली जुल्फ़ो से, उसके रसीले होंठो से, गोरे-गुलाबी कपालों से व उसके अंग-अंग से खेल रहा था। वह पूरी तरह भावनाओं मे वह रहा था। शम्मी भी अपना भरपूर प्यार उस पर लुटा रही थी, उसे तरह-तरह से पुलकित करने की कोशिश कर रही थी। शेरा मन ही मन अपने भाग्य को सराह रहा था।

तभी उसके कोमल हाथों को अपने कठोर हाथों में लेते ;हुए उसने कहा —मेरी शम्मी ! मैंने तुम्हें अपने मन की रानी बनाने का पक्का इरादा कर लिया है। चाहे कोई कुछ भी कहे, मेरे माँ-बाप मानें न मानें मैं तुमसे शादी करके।ही रहूँगा, तुम्हे अपनी पत्नी बनाकर ही रहूँगा। अपने इस फैसले को पूरा करने में मैं किसी विरोध को सहन नही करूँगा।

—यह तो वक्त ही बताएगा कि तुम अपने वादे को कहाँ तक पूरा कर पाते हो। हाँ अगर यह काम सफल हो गया, तुमने मुझे हमेशा के लिए अपना लिया तो अवश्य ही मैं अपने आपको भाग्यशाली समझूँगी। अच्छा हुआ उस इन्द्र से पिंड छूट गया। वह मुझे आदमी कम राक्षस ज्यादा लगता है। बस दिल मे यही डर है कि अगर तुम्हारे माता-पिता न मानें तो क्या होगा। हम दोनों की आशा कैसे पूरी होगी।

शम्मी के ये प्यारपगे शब्द सुनकर शेरे का हृदय गदगद हो उठा। उसने एक बार फिर उसे अपनी सुदृढ़ बाँहो में भरते हुए कहा—उनकी चिन्ता करना तुम्हारा काम नही। मैं परिवार का बड़ा लड़का हूँ। खेती व दीगर कामकाज की देखभाल ज्यादातर मैं ही करता हूँ। रुपये-पैसे का लेन-देन मेरे ही हाथो में रहता है। अगर माँ-बाप सुलह-सफाई से मेरी बात को मान लेंगे तो ठीक ही रहेगा। और अगर वे न झुके तो हम दोनों अदालत में जाकर शादी कर लेंगे।

अभी कुछ दिन पहले शेर सिंह शम्मी से घुलमिल कर बातें कर रहा था कि सहसा उसकी कोमल-नाजुक कलाईयों में काँच की चूड़ियाँ देखकर उसके मन मे आया कि इन गोरी कलाईयों मे यदि सोने की चूड़ियाँ हों तो कितना अच्छा लगेगा। उसने सोचा कि हाँ इन कलाईयो मे वह सोने की चूड़ियाँ पहनाएगा। उसे मालूम था कि माँ की रंगीन पिटारी में चार सोने के गोखड़ू रखे हुए हैं। उसे याद है माँ ने कुछ समय पहले एक दिन स्नेहभाव से कहा था कि इन चार गोखड़ुओ मे से दो वह शेरे की पत्नी को पहनाएगी और दो दौलत की पत्नी को। परिवार के गहने आदि जिस अलमारी में रखे रहते थे उसकी चाबी शेरे के पास ही रहती थी। एक बार उसके मन में आया कि वह वहाँ से चुपचाप दो गोखड़ू निकालकर शम्मी को पहना दे। लेकिन कुछ सोचकर उसने यह विचार छोड़ दिया। उसे आशंका थी कि अगर माँ को पता चल गया, अगर उस पर शक किया गया तो बात बिगड़ जाएगी। नही अभी ऐसा करना उचित न-होगा। उसने सोचा कि कभी बाबा बकाला या जालन्धर जाकर अपनी शम्मी के लिए सोने की दो चूड़ियाँ खरीद लाएगा और फिर उसने ऐसा ही किया।

रुपये-पैसे उसके पास रहते ही थे। खेतों से पैदा हुए अनाज व बाग के फलों को मन्डी में बेचने का काम प्रायः उसके जिम्मे ही रहता था। वह जालन्धर से दस-दस ग्राम की दो चूड़ियाँ खरीद लाया था और शम्मी के प्रति अपने प्यार के प्रतीक के रूप में उसे उसने बड़े स्नेहभाव से पहना दी थीं। उसने पहनाते समय उसे इस बात की ताकीद भी कर दी थी कि वह उन्हें छुपाकर ही अपने पास रखे, बस उसके आने पर कभी-कभी उसकी उपस्थिति में ही पहने। वह नही चाहता था कि किसी को कभी उस पर शक हो। शेरे से भेट स्वरूप चूड़ियाँ पाकर शम्मो कितनी पुलकित हुई होगी इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। वह जानती थी कि यह तो अभी शुरूआत ही है। आगे उसे और अधिक माल मिलने की सम्भावना साफ नजर आ रही थी। शेरा हर पाँचवें-सातवें दिन उसे कभी सो तो कभी दो सौ रुपये भी दे देता था। उसके खानपान, उसके वस्त्र आदि व अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति का वह ध्यान रखने लगा था। शम्मी उसके इस रुख से प्रसन्नचित रहने लगी थी। जो वह चाहती थी वह पूरा होने लगा था।

इधर सुच्चा सिंह कई दिनों से राणीपुर नही आया था। हाँ उसकी मानसिकता मे बड़ी तेजी से परिवर्तन आने लगा था। वह स्वयं को कुछ अजीब तरह की उधेड़बुन व परेशानी में पाने लगा था। वह प्रायः सोचता कि मालूम नही वह कौन सी मनहूस घड़ी थी जो वह इन्द्र सिंह को फांसने के लिये शेर सिंह की बातों में आ गया था। केवल धन के लोभ में पड़कर वह अपने प्यारे मित्र इन्द्र सिंह के साथ धोखा कर रहा था। उसे अपनी इस करनी के लिये मन मे ग्लानि की अनुभूति होने लगी थी। वह सोचता कि इन्द्र शरीर से लम्बा-ऊँचा व शक्तिशाली है। देखने में वह सिंह व हाथी की तरह तगड़ा लगता है। पर उसका हृदय तो मोम का बना हुआ है। वह बहुत भावुक व संवेदनशील है। आज तक उसने उसे सदैव प्यार दिया है, जरूरत पड़ने पर उसने उसकी सहायता भी की है। और इसके बदले वह उसे धोखा दे रहा है। वह कितना बडा विश्वासघात मित्रघात कर रहा है। उसे मन में यह भी डर रहता था कि जब कभी इन्द्र को वास्तविकता का पता चलेगा तो उसके मन पर क्या बीतेगी, वह उसके बारे मे क्या सोचेगा। बहुत सम्भव है कि प्रति-शोध की भावना से वशीभूत होकर वह उसे हानि पहुँचाए, उससे फौजदारी कर बैठे। उसके साथ-साथ कही शम्मी को भी कुछ न कर बैठे। नही उसे अपने प्यारे दोस्त के साथ ऐसा पाप नही करना चाहिये था। उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह जल्दी ही राणीपुर जाकर इन्द्र को वास्तविकता से,

अवगत करा देगा, अपनी भूल के लिये हाथ जोड़कर उससे क्षमा-याचना करेगा। उसे मन में यह भी विश्वास था कि इन्द्र सिंह हमेशा अपने दोस्तों के प्रति उदार रहा है। वह उसे अवश्य ही माफ कर देगा। उससे कोई बदला नहीं लेगा। अब और ज्यादा देर करना ठीक न होगा। वह यथाशीघ्र उससे मिलकर उसे स्थिति से अवगत कराएगा।

और फिर सुच्चा सिंह ने वैसा ही किया। राणीपुर आकर इन्द्र सिंह से एकान्त में मिलकर उसे उस षड्यन्त्र के बारे में बता दिया जो शेर सिंह के साथ मिलकर रचा गया था। पूरा विवरण सुनकर इन्द्र को आश्चर्य व दुख तो हुआ ही था। पर जैसा सुच्चा सिंह का अनुमान था वैसा ही हुआ। इन्द्र सिंह ने उसे क्षमा कर दिया था। शम्मी से मिलने पर सुच्चा को जो नयी बदली हुई स्थिति की जानकारी मिली थी उसके सम्बन्ध में सुच्चे ने इन्द्र को बता दिया था। इन्द्र खुश व सन्तुष्ट था कि चलो अच्छा ही हो रहा है। शेरे ने जिस जाल में उसे फँसाने की कोशिश की थी अब वह स्वयं उस में बड़ी तेजी से फँसता जा रहा है। और अगर भावावेश में शेरे ने शम्मी से अदालत में सिविल मैरेज कर ली तो मजा आ जाएगा। तब जोधा सिंह के खानदान की रही-सही नाक भी कट जाएगी। जब लोगों को पता चलेगा कि गाँव के जाने-माने व्यक्ति सरदार जोधा सिंह के बेटे ने एक तवायफ से ब्याह कर लिया है तो वे क्या-क्या बातें नहीं करेंगे। यह खबर उनके लिये बहुत बड़े मनोविनोद का विषय बनेगी। वाह! तब कितना मजा आएगा। जोधा सिंह गाँव में किसी को अपनी सूरत दिखाने के काबिल न रह जाएगा। अब इन्द्र सिंह सुच्चा सिंह को पूरा सहयोग देने लगा था। सुच्चे के समझाने पर जोधा सिंह को धोखे में रखने के लिये वह कभी-कभी शम्मी से मिलने उसके यहाँ चला जाता था। इस नयी योजना के बारे में सुच्चे ने शम्मी को भली प्रकार से समझा दिया था। दोनों मित्रों का संरक्षण पाकर वह और अधिक उत्साह से शेरे को अपने जाल में फाँसने के लिये प्रयत्नशील रहने लगी थी। और शेरा बड़ी तेजी से उसके अधिकार में आता जा रहा था। शम्मी को साफ लगने लगा था कि शेरा अपनी बात को पूरा करके रहेगा, वह जरूर उससे ब्याह करेगा। और जो कुछ उसने मन में सोच रखा है वह पूरा हो जाएगा।

इधर कुछ समय से सरदार वरियाम सिंह जेतली व उसकी पत्नी हरदई एक बार फिर से कोशिश कर रहे थे कि उनकी बेटी बसन्ती का ब्याह इन्द्र सिंह से हो जाए। इन्द्र उन्हें हर तरह से पसन्द था। उन दोनों की इच्छा थी कि उनकी इकलौती पुत्री उनकी आँखों के सामने ही रहे। इन्द्र सिंह से ब्याह

हो जाने पर उनकी इस इच्छा की पूर्ति हो जाती थी। अपनी कामना को पूरा करने के लिये पति-पत्नी ने पंडित दीवान चन्द व उसके परिवार के सदस्यों से मेलजोल बढ़ा लिया था। इस सिलसिले में वरियाम सिंह दीवान चन्द से दो-तीन बार बात कर चुका था। हरदई भी दीवान चन्द की पत्नी लछमी देवी से मिलकर इस सम्बन्ध को बनाने के लिये प्रयास कर रही थी।

वरियाम सिंह को यह भी मालूम था कि मोहर सिंह की इन्द्र सिंह से अच्छी खासी दोस्ती है। अतः उसने मोहर सिंह से भी अनुरोध किया था कि वह अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके इन्द्र सिंह को इस सम्बन्ध के लिये तैयार करे। मोहर जानता था कि सरदार वरियाम सिंह निहायत भला आदमी है। उसकी बेटी वसन्ती भी हर प्रकार से इन्द्र सिंह की पत्नी बनने के योग्य है। अतः उसने पूरी लगन के साथ अपने मित्र को इस रिश्ते को स्वीकार करने के लिये जोर डालना शुरू कर दिया था। सुच्चा सिंह जब अभी हाल ही में राणी-पुर आया तो मोहर ने वरियाम सिंह की इच्छा का उससे उल्लेख किया था। उसके कहने पर सुच्चे ने भी हर प्रकार से इन्द्र को समझाया था कि वह वसन्ती से ब्याह करने के लिये राजी हो जाए। दोनों मित्रों के समझाने-बुझाने पर अब इन्द्र सिंह ने अपनी सहमति दे दी थी।

पंडित दीवान चन्द शायद इस रिश्ते को स्वीकार न करता। लेकिन इधर जो नयी स्थिति पैदा हो रही थी, उसने उसे अपने पूर्व-निर्णय पर पुनः विचार करने के लिये मजबूर कर दिया था। नयी स्थिति यह थी कि जब से जोधा सिंह को लगने लगा था कि उसका बेटा शेर सिंह शम्मी में जरूरत से ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा है वह उसकी शादी जल्दी से जल्दी करने के लिये उतावला हो उठा था। चुन्नी शाह के सुझाव पर उसने सरदार वरियाम सिंह से उसकी बेटी का रिश्ता शेर सिंह के लिये मांगा था। वरियाम सिंह शेरे के स्वभाव व चरित्र से भली भाँति परिचित था। उस लम्पट से अपनी बेटी का ब्याह करने के बारे में वह सोच भी नहीं सकता था। उसने जोधा सिंह को बातों में ही टाल दिया था। जोधा सिंह ने जो कोशिश की थी इसकी भी जानकारी वरियाम सिंह द्वारा पंडित दीवान चन्द को मिल गयी थी। वह नहीं चाहता था कि जिस लड़की से उसके बेटे की बातचीत चली थी उससे उसके दुश्मन के लड़के का ब्याह हो जाए। अब जेतली दम्पति द्वारा दोबारा अनुरोध किये जाने पर उसने इस सम्बन्ध के लिये अपनी स्वीकृति दे दी। ऐसा होने पर उसे दो बातें अपने हित में नज़र आ रही थी। एक तो उसके लड़के का

अपने ही गाँव में एक भले परिवार में ब्याह हो जाएगा, दूसरे इस सम्बन्ध के कायम हो जाने पर जोधा सिंह के मुंह पर अच्छी-तगड़ी चपत पड़ेगी, उसका व उसके खानदान का सिर नीचा हो जाएगा। अपने पिता की यह मनोभावना भी इन्द्र सिंह को पसन्द आयी थी और वह बसन्ती से शादी करने के लिये तैयार हो गया था। दीवान चन्द व इन्द्र सिंह के इस निर्णय से बसन्ती, उसके माता-पिता व इन्द्र सिंह के शुभचिन्तक सभी हर्षित नज़र आ रहे थे। दोनों परिवार ब्याह की तैयारियों में लग गये थे। इन्द्र सिंह व मोहर सिंह यह जानकर भी खुश थे कि जल्दी ही हरनाम सिंह की जस्सी से और बलदेव की प्रीतो से शादी होने वाली है।

● ●

तीस

हरनाम सिंह व जस्सी, इन्द्र सिंह व बसन्ती तथा बलदेव व प्रीतो के होने वाले ब्याह के समाचार गाँव में फैल गये थे। राणीपुर के अधिकांश लोग बड़े उत्साह व उत्सुकता से इन शुभ कार्यों के सम्पन्न होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। नाखुश था तो केवल सरदार जोधा सिंह का परिवार। उनकी आँखों के सामने वे काम होने वाले थे जिनकी कभी उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी। जोधा सिंह का अपना सगा भाई प्रताप सिंह और शंगारा सिंह जैसा मित्र उसके सीने पर मूँग दलने की तैयारियों में लगे हुए थे। सरदार वरियाम सिंह सिख होते हुए भी अपनी बेटी बसन्ती का ब्याह उसके बेटे शेर सिंह से करने के बजाए उसके जानी दुश्मन पंडित दीवान चन्द के पुत्र इन्द्र सिंह से करने जा रहा था। इसके अलावा वह भीतर ही भीतर इस दुख से भी घुल रहा था कि उसका अपना बेटा शेरा एक बाजारू औरत के पीछे दीवाना हो रहा था, मजनू बनता जा रहा था। दिनोंदिन वह उसके काबू से बाहर होता जा रहा था। शम्मी को लेकर पिता-पुत्र के सम्बन्ध तेज़ी से बिगड़ते जा रहे थे। जोधा सिंह अब स्वयं को पूरी तरह से हारा हुआ महसूस कर रहा था।

परस्पर सलाह-मशविरे के उपरांत यह निश्चय किया था कि दो माह बाद पूर्णमाशी के शुभ दिन हरनाम सिंह व जस्सी तथा इन्द्र सिंह व बसन्ती की शादी एक साथ ही सम्पन्न की जाएगी। दोनों बारातें साथ-साथ आएँगी और एक ही पंडाल में दोनों की दावत की व्यवस्था की जाएगी। अगले दिन

दोनों जोड़ियों के आनन्द कारज (विवाह) गुरुद्वा में सम्पन्न किये जाएँगे। और एक सप्ताह बाद बलदेव तथा प्रीतो का ब्याह हिन्दू रीति के अनुसार होने वाला था।

दो माह बाद पूर्णिमा के दिन स्कूल के खुले आहाते मे एक भव्य शामियाना लगा हुआ था। पहले यह सोचा गया था कि दोनो बारातों के लगभग डेढ सौ बारातियों के बैठने व भोजन आदि करने की व्यवस्था ज़मीन पर ही की जाएगी। पर बाद में यह विचार छोड दिया गया था। बाबा बकाला की गुप्ता टेन्ट हाउस फर्म को फर्नीचर आदि का प्रबन्ध करने का आदेश दे दिया गया था। उस फर्म के कामगरो ने पडाल मे यथास्थान भोजन आदि करने के लिये मेज-कुरसियाँ लगवा दी थी। पूरा पंडाल रग-बिरंगी झडियो, सुनहरे व रंगीन कागज का झालरो व कुशल प्रकाश-व्यवस्था से शोभायमान हो रहा था। पंडाल के प्रवेश-द्वार की शोभा देखते ही बनती थी। कलात्मक ढङ्ग से सजाए गये मंगल-कलश इस द्वार की शोभा मे चार चाँद लगा रहे थे। वधू पक्षों के रिश्तेदार तथा गाँव के अनेक लोग बारातियों के स्वागतार्थ प्रतीक्षारत थे। पूरा वातावरण उत्साही युवकों, सजी-सँवरी महिलाओं तथा लड़कों-बच्चो के मिश्रित स्वरों से चहक रहा था। सरदार शंगारा सिंह व सरदार वरियाम सिंह आ रहे मेहमानो का हाथ जोड़कर स्वागत कर रहे थे।

रात के करीब आठ बजे सामने कच्ची सडक पर बैंड-बाजे की आवाज सुनाई पडने लगी। दस-बारह गैसों की चमचमाती रोशनी मे बाराती खरामा-खरामा उत्साह मे झूमते-गाते, कुछ उत्साही युवक भांगड़ा नृत्य करते हुए पंडाल की ओर आ रहे थे। गोलों-पटाखों के धमाके हो रहे थे। रंग-बिरगी आतिशबाजी से माहौल झिलमिला रहा था। हर किसी के मुख पर खुशी की परतें चढी हुई थी। इस प्रकार का उत्साह व हर्ष इससे पूर्व राणीपुर गांव मे देखा-सुना नही गया था। पंडाल से थोड़ा आगे कन्या-पक्ष के लोग बारातियो का स्वागत करने हेतु फूल-मालाएँ लिये खड़े थे।

शामियाने के सामने पहुँचने पर दोनो बारातों के साथ बारी-बारी मिलनी की रस्म सम्पन्न हुई। समधी व कुछ निकट के सम्बन्धी परस्पर गले मिले। कन्या-पक्ष की ओर से दूल्हो के पिता व मामे आदि को आवश्यक पत्र-पुष्प, बड़े आदरभाव से भेंट किये गये। फिर सेहरे पढ़े गये। स्वागत व मिलनी आदि की रस्मे होने के बाद बाराती पंडाल मे पहुँच गये। तरह-तरह के व्यंजनों से युक्त भोजन बारातियो के सामने परोसा गया। प्राय: हर कोई बारात के स्वागतार्थ की गयी व्यवस्था से सन्तुष्ट व हर्षित दिखाई पड रहा था।

अगले दिन गुरुद्वारे में आनन्द कार्य में सम्मिलित होने के लिये दोनों पक्षों के लोग पहुंचे। गुरुद्वारे का हाल अच्छी तरह से सजाया गया था। प्रातः करीब दस बजे से विवाह-कार्य शुरू हुआ। हाल में सामने की ओर स्थायी रूप से निर्मित मंच पर गुरु ग्रन्थ साहब प्रकाशमान थे। शुभ्र कुरता-पायजामा व पगड़ी पहने तथा गले में सफेद लंबा अँगोछा धारण किये ग्रन्थी जी पाठ कर रहे थे। उनके पीछे खड़े दो सेवक धीरे-धीरे चंवर हिला रहे थे। मंच के समीप ही पाँच प्यारे केसरिया परिधान पहने अपनी विशेष मुद्रा में खड़े थे। हाल की दीवारों पर सिख गुरुओं व कतिपय अन्य महान विभूतियों के चित्र हाल की शोभावृद्धि कर रहे थे। पूरा माहौल बड़ा सुखद व पावन प्रतीत हो रहा था। बनी-सँवरी व चमकीली-भड़कीली पोशाकें पहने पचासों महिलाएँ हाल में बाईं ओर बैठी बड़े उत्साह व हर्ष से समारोह को देख रही थीं। पुरुषों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक थी।

आगे की पंक्ति में हरनाम सिंह व इन्द्र सिंह दूल्हे की वेशभूषा में बैठे हुए थे। दोनों की रंगीन पगड़ियों पर चमचमाते-सुनहरे सेहरे बँधे हुए थे। गले में लंबे तिल्लेदार हार सुशोभित हो रहे थे। हथेलियाँ मेंहदी से लाल थीं। दोनों की कलाई पर गाना (कँगना) बँधा हुआ था। वैसे तो इन्द्र भी प्रसन्न नज़र आ रहा था पर हरनाम की भाव-भंगिमा से अपेक्षाकृत अधिक खुशी प्रकट हो रही थी। वह स्वयं को एक विजेता की तरह समझ रहा था। वह हर्षित था कि जिस मंज़िल को पाने का उसने संकल्प कर रखा था वह आज उसे मिलने जा रही थी। हरनाम और इन्द्र के पास ही मोहर सिंह, बलदेव तथा कतिपय अन्य मित्र बैठे हुए थे। वे धीरे-धीरे आपस में गप्पें लड़ा रहे थे मज़ाक कर रहे थे। उनकी प्रसन्नता उनके चेहरों, उनकी बातों व हरकतों से ज़ाहिर हो रही थी।

बाईं ओर महिलाओं में जस्सी व बसन्ती दुल्हन के रूप में सजी-सँवरी मन ही मन पुलकित हो रही थीं। उनकी सहेलियों ने बड़ी लगन तथा उत्साह से उन दोनों का बनाव-शृंगार किया था। गोटा-किनारी लगे विवाह के लाल रेशमी परिधान पहने वे महिलाओं के बीच घिरी बैठी थीं। दोनों के ललाट पर स्वर्ण-टीके चमक रहे थे। गोरे कोमल हाथ व पाँव मेंहदी से रचे हुए थे। कलाइयों में हाथी-दाँत का लाल चूड़ा व चाँदी के कलीरे खनखना रहे थे। वे दोनों भी प्रसन्न थीं। गुरु महाराज ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली थी।

उन दोनों को अपनी इच्छा के अनुरूप वर मिलने वाले थे। कुछ समय पहले तक उन दोनों के मन में जो आशंकाएँ थी, भय था वह अब पूरी तरह से मिट चुका था। उन्होंने कभी कल्पना नही की थी कि उनकी मनोकामनाएँ इस तरह आसानी से पूरी हो जाएगी।

हरनाम सिंह तो कुछ वर्ष पहले ही अमृत-पान कर चुका था लेकिन इन्द्र सिंह को अभी यह रस्म पूरी करनी थी। उसके विवाह की रस्म पूरी करने से पूर्व इस शुभ कार्य का होना ज़रूरी था। ग्रन्थी के निर्देशन में लोहे के बाटे मे अमृत तैयार कर लिया गया था। रीति के अनुरूप गुरुवाणी का पाठ करके ग्रन्थी ने इन्द्र को अमृत-पान करवाया। उसे भली प्रकार अमृत-पान के महत्व को समझाने के उपरान्त उससे वचन लिया कि वह मुख्य रूप से चार शिक्षाओं का पालन अवश्य करेगा। उन चार महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए ग्रन्थी जी ने उसे समझाया कि अब उसे जीवनभर केश रखने होंगे, नारी जाति को आदर-मान देना होगा, वह तम्बाकू का सेवन नही करेगा तथा झटका माँस के अलावा वह किसी अन्य प्रकार का माँस नही खाएगा। इनके अलावा वह सिख धर्म के पाँच आवश्यक अंशो को सदैव धारण किये रहेगा। वे पाँच अंश है केश, कंघा, कड़ा, कच्छ और कृपाण। अमृत-पान की रस्म पूरी होने पर हाल का पूरा वातावरण 'जो बोले सो निहाल' 'सत सिरी अकाल' तथा 'वाहे गुरु का खालसा वाहे गुरु की फतेह' के नारों से गुंजायमान हो उठा। पंडित दीवान चन्द को हर कोई बधाई दे रहा था।

अमृत-पान संस्कार सम्पन्न होने के बाद आनन्द कारज प्रारम्भ किया गया। पहले इन्द्र सिंह व बसन्ती की गुरु ग्रन्थ साहब के सामने फेरों की रीति पूर्ण की गयी। ग्रन्थी ने ग्रन्थ के कतिपय आवश्यक अंशों का पाठ करके वर-वधू को सिख धर्म के अनुसार अपने दाम्पत्य जीवन को चलाने की शिक्षा दी। इसके बाद हाल मे उपस्थित लोगो ने वर-वधू पर पुष्प-वर्षा करके अपना आशीर्वाद अपनी शुभ कामनाएँ व्यक्त कीं। हर कोई पंडित दीवान चन्द, हरनाम के बडे भाई सतनाम सिंह, सरदार वरियाम सिंह व शंगारा सिंह को बधाई देकर अपनी प्रसन्नता दर्शा रहा था। जिस प्रकार इन्द्र-बसन्ती का आनन्द कारज सम्पन्न हुआ ठीक उसी ढंग से हरनाम व जस्सी का विवाह-संस्कार पूरा किया गया। चारो परिवारो के सदस्य प्रसन्न व सन्तुष्ट दिखाई पड़ रहे थे।

तभी पंडित दीवान चन्द ने ग्रन्थी के कान में धीरे से कुछ कहा। उसकी बात सुनकर ग्रन्थी जी धीरे से मुसकराए और फिर उन्होंने वहाँ उपस्थित जनसमूह के सामने घोषणा करते हुए कहा—गुरु महाराज के आशीर्वाद से आनन्द कारज पूरा हो गया है। अब आप लोगों को मैं एक और बड़ा शुभ समाचार सुनाने जा रहा हूँ। अभी-अभी पंडित दीवान चन्द जी ने मुझे बताया है कि आगामी बुधवार को उनके भांजे श्री बलदेव प्रकाश का शुभ विवाह सरदार प्रताप सिंह जी की पुत्री बीबी प्रीतकौर से सम्पन्न होगा। हमें यह शुभ सूचना पाकर बड़ी प्रसन्नता अनुभव हो रही है। मैं अपनी ओर से व सारी संगत की ओर से पंडित जी को तथा सरदार प्रताप सिंह जी को साधुवाद देता हूँ। जिस प्रकार आज यह कार्य हर्षोल्लास के बीच पूर्ण हुआ है वैसे ही बुधवार को होने वाला संस्कार सम्पूर्ण हो इसकी मैं गुरु महाराज से प्रार्थना करता हूँ।

आनन्द कारज पूरी तरह से सम्पूर्ण हो चुका था। और अब लोग हाल से बाहर आने के लिए उठ खड़े हुए थे। हर कोई एक दूसरे के साथ अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहा था। हाँ कुछ लोग सरदार जोधा सिंह व उसके परिवार के लोगों द्वारा इस समारोह का बहिष्कार करने पर आश्चर्य व नाराजगी प्रकट कर रहे थे। उन्हें इस बात से भी आश्चर्य हो रहा था कि कल दोपहर से ही किसी ने जोधा सिंह व उसके लड़के शेर सिंह को नही देखा था। वे दोनों बाप-बेटा कहाँ चले गये थे इसका अंदाज उन्हें नही मिल रहा था। तभी सहसा गाँव का चोकीदार बलकार सिंह वहाँ पहुँचा। उसने वहाँ उपस्थित लोगो को बताया कि वह अभी-अभी बाबा बकाला से लौटा है। वह वहाँ थाने में अपने एक परिचित कर्मचारी को मिलने गया था। वहाँ उसे सरदार जोधा सिंह दिखाई पड़े थे। थाने के उस परिचित कर्मचारी ने उसे बताया है कि जोधा सिंह का लड़का शेर सिंह राणीपुर की शम्मी नाम की किसी औरत के साथ कही भाग गया है। शेर सिंह अपने घर से कुछ सोने के जेवरात व नकद रुपये भी अपने साथ ले गया है। सरदार जोधा सिंह ने इस बारे में थाने में रपट लिखवाई है।

बलकार सिंह के शब्दों से लोगों को वास्तविकता मालूम हो गयी थी। जोधा सिंह के आनन्द कारज मे सम्मिलित न हो पाने का कारण वे जान गये थे। शेर सिंह ने अपने पिता व अपने खानदान पर जो कलंक लगाया था उसके कारण कुछ व्यक्ति दुखी नजर आ रहे थे। पर अधिकाश लोगों की यही

धारणा थी कि स्वयं जोधा सिंह कौन-सा भला आदमी है। उसने प्रायः दूसरों का अहित ही किया है। उसने व उसके बेटों ने जो बोया है वही उनको काटना पड़ेगा। जो कर्म उन्होंने किये हैं उसका फल तो उन्हे भोगना ही पड़ेगा।

● ●
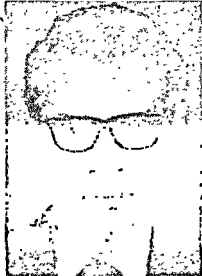
तिलकराज गोस्वामी

जन्म : १३ अक्तूबर, १९३० जम्मू में।

शिक्षा : एम० ए० (अंग्रेजी), अदीब आलम।

प्रकाशित : हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी व डोगरी भाषाओं में लेखन। सुपरिचित पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों रचनाएँ प्रकाशित। कतिपय रचनाएँ अन्य भाषाओं में अनूदित। आकाशवाणी व दूरदर्शन से भी प्रसारण।

उजली पीली धूप (उपन्यास)
समयान्तर (उपन्यास)
अपना अपना आकाश (उपन्यास)
चन्दनमाटी (उपन्यास)
नया सवेरा (कहानी-संग्रह)
इतिहास गवाह है (ऐतिहासिक ललित निबंध)

प्रकाश्य : महाराजा रणजीत सिंह (उपन्यास), जहाँ रोशनी है (उपन्यास), कुहरा और सूरजमुखी (उपन्यास), सूरज की शहादत (काव्य-संग्रह), अपना घर अपने लोग (कहानी-संग्रह), दिन यहाँ रात वहाँ (यात्रा-संस्मरण), कौण चंगा कौण मंदा (पंजाबी कहानी-संग्रह), मट्टी जजर (उर्दू कहानी-संग्रह), रंगोए दे हत्थ (डोगरी कहानी-संग्रह)।

पता : ९/७, अलोपीबाग कॉलोनी, इलाहाबाद-६